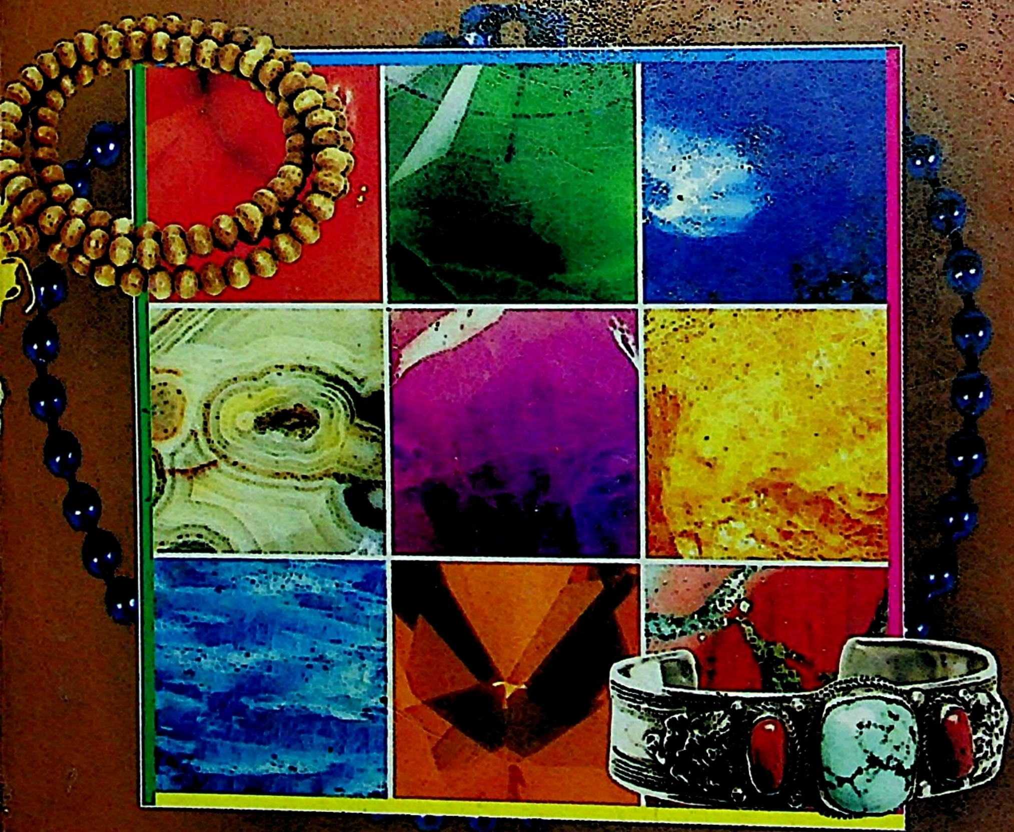
61
अनमोल सीरीज़

पं. शशि मोहन बहल

रत्न रंग और रुद्राक्ष

रत्न और रुद्राक्ष का ग्रहों से सम्बन्ध
बतलाने वाली एकमात्र अनुपम पुस्तक



- पुस्तक : रत्न, रंग और रुद्राक्ष
- प्रस्तुति : पं० शशि मोहन बहल
- प्रकाशक : मारुति प्रकाशन, 33, हरी नगर, मेरठ-250 002
  ✆(0121)3255234,2518025
- कम्प्यूटरीकृत पृष्ठसज्जा : मित्तल कम्प्यूटर्स, मेरठ।
- मुद्रक : संजय प्रिन्टर्स, देहली।

- मूल्य : सत्तर रुपये केवल (70.00)

रत्न, रंग और रुद्राक्ष

रत्न, रंग और रुद्राक्ष को अनेक अध्यायों में माला की तरह पिरोकर, सुधि पाठकों के लाभार्थ इस पुस्तक की रचना की गयी है।

रत्न जहां सम्पन्नता, सुन्दरता और कल्याण के प्रतीक हैं, वहीं रुद्राक्ष हमारी धार्मिक भावनाओं और अनेक जटिल रोगों के उपचार हेतु हैं।

जिस प्रकार एक पदार्थ से दूसरे पदार्थ में विद्युत् प्रवाहित की जा सकती है, उसी प्रकार रत्न, रुद्राक्ष रश्मियों को ग्रहण कर मानव-शरीर में नयी शक्ति प्रवाहित करता है। इस आदान-प्रदान के कारण मानव-जीवन सुखी, मंगलमय और आनन्द से भरपूर हो जाता है।

राशि क्या हैं? नक्षत्र क्या हैं? ग्रह क्या हैं? यह हमारे जीवन पर किस प्रकार प्रभाव डालते हैं? यही इस पुस्तक का विषय वस्तु है।

रत्न, रंग और रुद्राक्ष पुस्तक केवल पढ़ने के लिए ही नहीं है, वरन् व्यवहार में लाने योग्य भी है।

रत्न, रंग और रुद्राक्ष पर एक प्रामाणिक पुस्तक
पण्डित शशि मोहन बहल की अनमोल रचना

1 विषय प्रवेश

अभी कुछ ही समय पूर्व एक सब्जी मण्डी में भयंकर बम-विस्फोट हुआ। अनेक लोगों की धज्जियां उड़ गयीं। घायलों की संख्या भी कुछ कम न थी। हमारे युवा मित्र की आंख, टांग और बांह उड़ गयीं। कुछ समय पश्चात् हमने देखा कि घायल पड़ोसी की पत्नी अपने इकलौते बेटे के साथ उसी दुर्घटना स्थल पर तरकारी खरीद रही है।

इसी प्रकार किसी अधिकारी का बेटा स्कूटर दुर्घटना में 'आधा' उड़ गया। उसे तुरन्त अस्पताल पहुंचाया गया। हमने देखा उस अधिकारी का पुत्र उस दुर्घटनाग्रस्त स्कूटर पर ही रिश्तेदारों और रक्त देने वालों के साथ सम्पर्क स्थापित कर रहा है।

वैज्ञानिक चिन्तन और असुरक्षा के वातावरण में लगभग सब लोग ''रिस्कप्रूफ' हो गए हैं। कहते हैं—''डरना-झिझकना व्यर्थ है। तेजतर्रार जीवन में ख़तरे मोल लिए बिना कोई काम पूरा नहीं हो सकता। मरना तो एक दिन सबको है, फिर प्रतिदिन भय से क्यों मरा जाए? जो गोली या बम हमें लगना है, वह तो लगना ही है। जो नहीं लगना है, वह कभी नहीं लगेगा...।''

मेरे एक अन्तरंग साथी, बलिष्ठ शरीर और आकर्षक व्यक्तित्व का सहयोग लेकर कुछ ही वर्षों में कई तरक्कियां लेकर बहुत बड़े अफसर बन गए हैं। अवस्था, अनुभव और शिक्षा में उनसे सीनियर होते हुए भी कुछ लोग तरक्की के विषय में दो कदम से अधिक, आज तक नहीं चल पाए हैं। मित्र महोदय हमारे साथ पहले से भी अधिक प्यार और सम्मान के साथ पेश आते हैं। बात-बात में, एक ही बात कहते हैं—मित्र, परिश्रम या प्रयत्न से कुछ नहीं बनता। सब भाग्य की बातें हैं। मुझे ही देख लो!

आज स्थिति यह है कि ज्योतिष को "ढकोसला" कहने वाले भी "अच्छे" ज्योतिषियों के चक्कर में देखे जा सकते हैं। सभी ज्योतिष पर जान देते हैं। पत्र-पत्रिकाओं के "आपका भविष्य" सम्बन्धी स्तम्भ बहुत लोकप्रिय हैं। पढ़कर, पाठक मन-ही-मन प्रसन्न होते हैं। छोटे-बड़े, अनाड़ी-अनुभवी ज्योतिषियों की बाढ़ आयी हुई है। चाँद पर कदम रखने वाला उन्नत इंसान अब व्यापार स्थल पर जाने का "मुहूर्त" पूछने लगा है। हस्त-रेखा और ज्योतिष सम्बन्धी बहुभाषीय किताबें, अधिक बिक रही हैं। टेवे और वर्ष-फल अब फोन, दूरसंचार और कम्प्यूटर के माध्यम से शुद्ध वैज्ञानिक रूप ले चुके हैं। करोड़ों स्त्री-पुरुषों की रोजी-रोटी, ज्योतिष के सच्चे, अधकचरे, मनोवैज्ञानिक काल्पनिक या सटीक चमत्कारों के बल पर चल रही है।

अनेक जाने-माने ज्योतिषियों की दक्षिणा और "पहुंच" इतनी अधिक है कि एक ही श्रद्धालु की फीस से ही, ज्योतिषी का भाग्य जगमगाने लगता है। प्रथम श्रेणी के लगभग निन्यान्वे प्रतिशत ज्योतिषी देश के महंगे होटलों में बैठकर भविष्य बतलाते हैं। लोग भी बड़े दूरदर्शी हैं। 'जिस बात से डर लगे, वही करो' आज की जनता का नियम बन चुका है।

सड़कछाप हस्तरेखा-विशेषज्ञों, ज्योतिषियों और तोता-मैना से भविष्य बतलाने वाले ज्योतिषियों की भी चाँदी है। गण्डे-ताबीज, दवाइयां और दूसरी प्रभावतक अंगूठियां देने वाले ज्योतिषी भी कम नहीं हैं। भार करने वाली मशीनों में से निकलने वाली "चिटों" की पुश्त पर भी, ज्योतिष सम्बन्धी भविष्यवाणी पढ़कर, लोग प्रसन्न हो जाते हैं। पढ़-पढ़कर, दूसरों को सुनाते हैं। अगर आप पत्र-पत्रिकाओं के ज्योतिष-स्तम्भों को पढ़ें तो आप पाएंगे कि उन स्तम्भों में आशा, आशीष और मार्गदर्शन की मात्रा ही अधिक है। नकारात्मक बातों, सूचनाओं का विवरण लगभग नहीं के बराबर है। पांव फिसलने के भय के स्थान पर आंखें चार होने की आशा अधिक दीखती है। यह एक शुभ संकेत है। ऐसे स्तम्भों को पाठक एकान्त और खाली समय में पढ़ते हैं।

भविष्यफल लिखने वाला यह तथ्य भली-भांति जानता है कि मैंने पाठकों को 12 हिस्सों में बांट दिया। हर राशि में लिखे दो-एक वाक्य कुछ पाठकों के लिए सटीक बैठेंगे ही। जिनका सही नहीं निकलेगा, अगले सप्ताह या उससे अगले सप्ताह कोई-न-कोई वाक्य उन पर फिट बैठ जाएगा। ज्योतिषी लोगों का भविष्य जाने या न जाने, अपना वर्तमान अवश्य जानता है और उसका भविष्य है उसके भाग्य में लिखा है लोगों का भविष्य बताना और इसी से उसकी आजीविका चल रही है और चलती रहेगी।

इस सब का मुख्य कारण है मानव की भविष्य जानने की इच्छा। हर व्यक्ति यह जानना चाहता है कि उसके भविष्य में क्या लिखा है? ज्योतिष एक शुद्ध विज्ञान है। भविष्य बतलाना एक कला है, जो लम्बे अनुभव के पश्चात् ही प्राप्त होती है। वास्तव में होता क्या है जिसने भी दो-चार पुस्तकें पढ़ लीं, बन गया ज्योतिषी, जिसने भी किसी बाबा का धूना फूंक लिया बन बैठा तांत्रिक। यह सर्वथा गलत है।

विश्व का शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो जो ग्रहों के प्रभाव को नहीं मानता हो। संसार की अधिकांश जनसंख्या अंधविश्वासी है। इस कारण ग्रहों के विषय में कितनी ही गलत धारणाएं प्रचलित हैं। प्रश्न उठता है कि एक मीटर की दूरी पर रखी आग हमें हानि-लाभ नहीं पहुंचा सकती तो करोड़ों मील दूर अपनी कक्षा में घूमते ग्रह हमें किस प्रकार हानि अथवा लाभ पहुंचाते हैं और फिर ग्रहों के रत्न धारण से क्या लाभ हैं?

ब्रह्माण्ड असंख्य नीहारिकाओं से भरा पड़ा है जिसमें एक नीहारिका है—मंदाकिनी। इस मंदाकिनी में भी असंख्य आकाश-गंगाएं हैं और इन्हीं में से एक आकाश-गंगा का भाग है—हमारा यह सौर मण्डल। सौर मण्डल का प्रधान सूर्य है जो सर्वाधिक तप्त और प्रकाशवान् पिण्ड है। हालांकि सूर्य से लाखों गुणा बड़े और प्रकाशवान् अन्य पिण्ड भी ब्रह्माण्ड में हैं किन्तु वे सूर्य से भी करोड़ों मील दूर हैं, उनका प्रकाश पृथ्वी पर अनगिनत वर्ष बाद ही पहुंच पाता है, अतः सर्वाधिक निकटवर्ती पिण्ड सूर्य ही हमें सर्वाधिक तप्त और चमकदार अनुभव होता है। सूर्य पराबैंगनी और अवरक्त किरणों से निर्मित श्वेत प्रकाश का प्रधान और प्रकाश का अक्षय भण्डार है। सूर्य के क्रोड से आग की लपटें निरन्तर उठती हैं जिसके कारण प्रकाश एवं ताप का विकिरण होता रहता है। सभी ग्रह सूर्य की आकर्षण शक्ति के अधीन होकर उसकी निरंतर परिक्रमा करते रहते हैं। इस प्रकार सभी ग्रहों का वह आधा भाग जो सूर्य के सामने रहता है एक परावर्तक सतह का काम करता है।

सौर मण्डल में सात ग्रहों—सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि के वर्णक्रम क्रमशः लाल, नारंगी, पीला, हरा, आसमानी, नीला और बैंगनी होते हैं और इन्हीं का मिश्रित प्रकाश हमें वायुमण्डल से प्राप्त होता है जिसे हम श्वेत सौर-किरण के रूप में जानते हैं। सौर-किरणों के इन वर्णक्रमों को प्रिज्म द्वारा देखा जा सकता है।

आपने संत-महात्माओं, देवी-देवताओं के ऐसे अनेक चित्र अवश्य देखे होंगे, जिनमें उनके सिर के चारों ओर एक प्रकाशवृत्त (प्रभा मण्डल) बना दिखलायी देता है। यह ही आभा मण्डल है।

हम जिसे प्रभा मण्डल कहते हैं, वह केवल मानवों तक ही सीमित नहीं है, पशुओं तक भी नहीं, सामुद्रिक जीवन और वनस्पति जगत तक भी नहीं अपितु निर्जीव पदार्थों तक भी विस्तृत है। हम स्वयं पृथ्वी को ही देखें। इसकी गुरुत्वाकर्षण शक्ति इसका आभा मण्डल है, जो कहा जाए तो इसके चारों ओर लाखों मील तक फैला हुआ है और प्रसिद्ध वैज्ञानिक न्यूटन के अनुसार, प्रत्येक पदार्थ की अपनी एक गुरुत्वाकर्षण शक्ति है। वह इस बात को सिद्ध करता है स्प्रिंग-तुला की अंकुड़ीं में एक पदार्थ लटकाकर तथा यह पर्यवेक्षण करके कि इसका भार बढ़ जाता है, जब इसके नीचे इससे भारी पदार्थ रखा जाता है, क्योंकि वे पदार्थ स्प्रिंग-तुला में लटके हुए ऊपर वाले पदार्थ की ओर खिंचाव करते हैं।

यह ठीक ही है कि जितने रहस्यों को मानव के विचारणीय क्षेत्र में लाया जा सकता है, विश्व में उनसे भी अधिक रहस्य है। ऐसी ही एक शक्ति रहस्यमय रूप में उन वस्तुओं में छिपी हुई है जिनको हम मणि, रत्न, बहुमूल्य पत्थरों आदि के नाम से जानते हैं और जो आपके भाग्य का निर्णय करने में समर्थ हैं।

इनमें से अधिकांश रत्न प्रकाश देते हैं। उनकी विरली चमक ही स्वयं में इस बात का प्रमाण है कि वे अन्य वस्तुओं से भिन्न हैं। भूमि के पर्तों के गहन गर्तों में दबे रहने पर भारी दवाव के कारण उनमें एक विशेष प्रकाश संचित हो जाता है—जिसे कान्ति कहते हैं—जो बिना जलाए ही अपनी चमक को फेंकता है।

यह भी हो सकता है कि इनमें से कुछ तो उन वास्तविक आकाशीय पिण्डों के अंश भी हो सकते हैं जो उल्काओं आदि के रूप में पृथ्वी से आ टकराते हैं। पृथ्वी की गहनतर गहराइयों की भट्टी में, पृथ्वी की उलट-फेर तथा ब्रह्माण्ड की उथल-पुथल में तथा अन्य ग्रहों द्वारा अपनी विद्युत्चुम्बकीय धाराएं भेजने के कारण इन रत्नों में एक जादूगरी प्रभाव उत्पन्न हो जाता है जो जातक के भाग्य का निर्णय करने वाली शक्ति का कारण बनते हैं।

प्रकाश का हमारे जीवन में अत्यन्त महत्व है, न केवल उस आनन्द व मार्गदर्शन के लिए जो यह प्रदान करता है अपितु जीवन बनाए रखने के गुणों के कारण भी है। उदाहरण के लिए, पृथ्वी पर 2 घण्टों सीधी अथवा चन्द्र के द्वारा प्रतिबिम्बित होकर आने वाली सूर्य की किरणों के अभाव में पृथ्वी पर कोई जीवन ही नहीं होगा। मानव-जीवन पर नक्षत्रीय मणियों के प्रभाव का सर्वप्रथम परिचय सुविख्यात नाटककार महाकवि कालिदास विरचित सुप्रसिद्ध संस्कृत नाटक "अभिज्ञान शाकुन्तलम्" में मिलता है। उस नाटक में नायिका शकुन्तला है। वह कण्व ऋषि की दत्तक दुहिता, कन्या है। वह वन में आखेट के लिए आए और उसकी कुटिया

के निकट पड़ाव डाले हुए राजा दुष्यन्त के साथ प्रेम करने लगती है। वह उसे एक रत्नजड़ित अंगूठी दे जाता है। बाद में शकुन्तला राजा के राजमहल के लिए प्रस्थान करती है। मार्ग बीहड़ों, जंगलों और पर्वतों में से था। मार्ग में एक झरने पर स्नान करते समय उसकी प्रेम-मुद्रिका अंगुली में से फिसल जाती है और गुम हो जाती है। कठिन, कष्टमय प्रवास के पश्चात् जब वह राजमहल में पहुंचती है, तो वह उसे पहचान नहीं पाता। राजा द्वारा वन में शकुन्तला से प्रणय-याचना करने की सभी बातें, स्मरण दिलाने के उसके सभी प्रयत्न निष्फल रहते हैं। उनको राजमहल से बाहर निकाल दिया जाता है। कुछ दिनों के पश्चात् एक मछियारा कुछ मछलियों की भेंट राजा के सम्मुख प्रस्तुत करता है और आश्चर्य है कि जब उनमें से एक मछली काटी जाती है, तो वही मुद्रिका बाहर गिर पड़ती है। वह छोटा-सा आभूषण राजा को उस वन की अप्सरा के साथ अपने प्रेमाचार का स्मरण दिलाने में सहायक होता है। वह फिर खोज करता है और शकुन्तला से विवाह करता है। यह कथा स्पष्ट रूप में दर्शाती है कि नक्षत्रीय मणि के प्राप्त करने अथवा गुम कर देने से भाग्य किस प्रकार उलट-पुलट होता रहता है।

एक बड़ा पन्ना धारण करने वाले मित्र का कहना है कि जब से मैंने इसे पहिनना प्रारम्भ किया है, तब से इस मणि ने शारीरिक और व्यावसायिक दोनों ही हित किए हैं। ऐसे अनेक उदाहरणों का वर्णन दिया जा सकता है।

स्पष्टीकरण खोजना कठिन नहीं है। हम सब जानते हैं कि काले वस्त्र किरणों को आत्मसात् कर लेते हैं, उसके कारण पहनने वाले को गर्मियों में असुविधा होती है। इसके विपरीत, श्वेत परिधान अधिक शीतल और सौम्य होते हैं। विभिन्न रंगों की बोतलों में भरा हुआ जल सूर्य की गर्मी से भिन्न-भिन्न गुणों वाला हो जाता है। चिकित्सा की एक ऐसी प्रणाली भी है जिसमें रोगी का उपचार विभिन्न रंगों वाली बोतलों में जल भरकर किया जाता है। अगर केवल रंगमात्र से इतना अन्तर पड़ सकता है तो कोई आश्चर्य नहीं है कि मणियों, रत्नों में संगृहीत प्रकाश-पुंज तथा अन्य गुण जातक पर प्रभाव डालते हैं। एक मणि, रत्न भी इसके धारण करने वाले को लू अथवा हृदयघात से बचा सकता है, केवल सही प्रकार का हो। एक छतरी भी अत्यन्त सस्ती विधि है जो किसी को भी गर्म सूर्य और वर्षा तथा परिणामस्वरूप लू और ठण्ड से बचाती है। जब ऐसी बात है ही, तब बहुमूल्य मणियों का प्रभाव सन्देहास्पद कैसे हो सकता है?

बाल-अवस्था में, बहुत लोगों ने देखा होगा कि सूर्य की किरणें एक शीशे के टुकड़े में से गुजारने पर कागज जलने लगता था। इसी प्रकार लोगों ने सूचित किया

है कि उनके घरों में अनायास अग्नि प्रज्जवलित होने लगी थी।

ऊपर उद्धृत उदाहरणों से स्पष्ट है कि मनुष्य का भाग्य अच्छे से बुरा अथवा बुरे से अच्छा बनाने में नक्षत्रीय मणियों, रत्नों का कुछ-न-कुछ प्रभाव अवश्य होता ही है।

जातक की जन्मकुण्डली से इस बात का ज्ञान हो सकता है कि उसको कौन-सा रत्न लाभदायक होगा? इस सम्बन्ध में विभिन्न धारणाएं हैं कि जातक को कौन-से रत्न धारण करने चाहिएं? जन्मकुण्डली में अच्छे ग्रहों द्वारा अनुमोदित रत्नों को धारण करना चाहिए अथवा हानिकर तथा नीचस्थ ग्रहों के प्रतीक रत्नों को लेने से लाभ होगा। हमारा विश्वास है कि उच्चस्थ अथवा अन्यथा सुखद स्थान पर स्थित ग्रहों को अपनी प्रभावी शक्ति बढ़ाने के लिए किसी रत्न की आवश्यकता नहीं है; किन्तु जन्मकुण्डली में घातक ग्रहों के रत्नादि धारण किए जाएं तो वे धारण करने वाले से उन ग्रहों की हानिप्रद किरणों को अथवा उनके दुष्प्रभाव को दूर प्रतिबिम्बित कर सकेंगे। संक्षेप में, उनको वही प्रयोजन सार्थक करना चाहिए।

प्रायः उचित यही है कि पहले ही निश्चित कर लिया जाए कि रत्न से कौन-सा प्रभाव अभीष्ट है। जब यह मालूम हो, तो जातक की जन्मकुण्डली में उस विषय-विशेष का घर तथा ग्रह की स्थिति मालूम करके रत्न का विचार करना सरल हो जाता है। कुछ विद्वानों के मतानुसार, प्रभावी होने के लिए चुना गया रत्न वजन में कम-से-कम 3·½ कैरेट होना चाहिए; किन्तु चाहे जिस भी विधि से किसी रत्न को लेने का, धारण करने का निश्चय किया जाए, उत्तम यही है कि इसे एकदम खरीदना नहीं चाहिए। नक्षत्रीय रत्न सदैव परीक्षणात्मक रूप में लेने चाहिएं। अगर उस अवधि में, रत्न धारण करने वाले को कोई अच्छा समाचार प्राप्त हो, तो वह रत्न खरीद लिया जाना चाहिए। अगर यह रत्न कोई अशुभ सूचना लाए, तो उसे खरीद कर धन-व्यय करने में कोई लाभ नहीं है।

ज्योतिष विज्ञान जातक के भाग्य और भविष्य की विवेचना करता है। जन्म-कुण्डली बनायी जाती है तो उसका केवल यही उद्देश्य होता है कि शिशु के जन्म के समय कौन-सा ग्रह किस स्थान पर था और उसका कितना प्रभाव शिशु के जन्म पर पड़ रहा था। ऐसी स्थिति में ग्रह की पुष्टता के लिए उससे सम्बन्धित धातु एवं रत्न धारण करना आवश्यक है।

नवग्रह क्या है, किस ग्रह का रत्न पहनें, रत्न किस धातु में पहनें? यही इस पुस्तक का विषय है।

अन्त में एक सत्य घटना लिख देना ठीक ही रहेगा। घटना कुछ इस प्रकार

है—मित्र ज्योतिषी के पास एक रत्न खरीदने गया। रत्न के साथ-साथ ही उसके पास उसके द्वारा लिखित एक पुस्तक पास ही में रखी थी। आने वाले ज्योतिष-प्रेमियों को वह पहले उस पुस्तक को देता फिर रत्नों को दिखाता था। मेरी बारी आने पर भी उसने ऐसा ही किया। 16 पृष्ठों की उस लघु पुस्तक को मैंने बारीकी से अध्ययन-मनन कर डाला। उस पुस्तक के अध्ययन करने के पश्चात् मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि ग्राहकों को गलत ज्ञान देकर वो विक्रेता जनता की आंखों में धूल झोंक रहा है।

मुझे बड़ी ही ग्लानि हुई। इस प्रकार का व्यापार देखकर मैंने पुस्तक लिखने का निश्चय किया, श्री अरुण जैन स्वामी मारुति प्रकाशन का सहयोग मिला, परिणामस्वरूप पुस्तक आपके हाथों में है। यह पुस्तक कैसी बन पड़ी? इसका निर्णय तो अब आप ही करेंगे।

—पं० शशि मोहन बहल
"तंत्र सबके लिए मिशन"
डी-4, राधापुरी, कृष्ण नगर (जमुनापार)
देहली-110 051

2 रत्नों के चयन से पहले

प्रस्तुत राशियों का विवरण भारतीय ज्योतिष के अन्तर्गत चन्द्रराशि के द्वारा अपने जन्मकालीन नाम एवं राशि के अनुसार देखा जा सकता है। अगर आपको अपनी चन्द्रराशि का पता नहीं है तो आप अपने नाम के प्रथम अक्षर के अनुसार पड़ने वाली राशि निम्न तालिका से ज्ञात करें और देखें। वह इस प्रकार हैं—

	मेष	चू चे चो ला ली लू ले लो आ।
	वृषभ	इ उ ए ओ वा वी वू वे वो।
	मिथुन	का की कू घ ड़ छ के को हा।
	कर्क	ही हू हे हो डा डी डू डे डो।
	सिंह	मा मी मू मे मो टा टी टू टे।
	कन्या	टो पा पी पू ष ण ठ पे पो।
	तुला	रा री रू रे रो ता ती तू ते।
	वृश्चिक	तो ना नी नू ने नो या यी यू।
	धनु	ये यो भा भी भू धा फा ढ़ा भे।
	मकर	भो जा जी खी खू खे खो गा गी।
	कुम्भ	गू गे गो सा सी सू से सो दा।
	मीन	दी दू थ क्ष त्र दे दो चा ची।

बारह राशियों की यह एक स्थूल विवेचना है। इसको शत-प्रतिशत अपने पर ही लागू नहीं मानें, क्योंकि आपके ही नाम और राशि के लाखों-करोड़ों जातक हैं जिनकी प्रकृति, आयु, कर्म विचार अलग-अलग हैं। फिर भी मेरे द्वारा यह चेष्टा की जाती है कि मैं अधिक-से-अधिक मनोवैज्ञानिक और व्यावहारिक दृष्टि से आपका मार्गदर्शन करूं।

अगर आपको अपनी चन्द्रराशि का ज्ञान नहीं है, तो आप उसे मालूम करने के लिए मुझसे सम्पर्क करें।

इससे पहले कि आप अपने लिए उपयुक्त रत्न का चुनाव करें, पहले यह पढ़ें और समझें कि राशियां क्या हैं, उनका रूप क्या है, उनका रंग कैसा है और वह सौर मण्डल के कौन-से भाग में स्थित हैं? जो 12 राशियां भारतीय ज्योतिष शास्त्र में आविष्कृत की गयी हैं, वह अत्यन्त वैज्ञानिक और अंकगणित की गणना तथा सिद्धान्तों के अनुसार एकदम सटीक हैं। आज का विज्ञान, इनका वर्गीकरण, विभाजन और नामकरण इनको गलत ठहरा नहीं सकता है। सामान्य परिचय में हमने सौर मण्डल, भचक्र और ब्रह्माण्डों की झलक दी है। यहां इनका अर्थ भी समझ लेना चाहिए।

जिस प्रकार विश्व के देशों में नक्शे की सही स्थिति जानने के लिए नक्शे पर आड़ी-टेढ़ी रेखाएं खिंची रहती हैं, वैसे ही सौर मण्डल के लिए भी है। नक्शे में खिंचे अक्षांश-देशांश क्या दुनिया में बने हैं? नहीं, वह काल्पनिक रेखाएं हैं। समय रेखा भी एक काल्पनिक रेखा है। यह नगरों, देशों की स्थिति मौखिक रूप में समझने के लिए किया गया है। पृथ्वी के लिए बनी अक्षांश-देशांश का कल्पित रेखाओं के समान सूर्य-पथ को "भचक्र" मानकर उसके चारों ओर एक कल्पित वृत्त 360 अंश का बनाकर 30-30 के अंश में विभाजित कर दिया। भचक्र कल्पित वृक्ष है, अक्षांश-देशांश के समान अब 30-30 की 12 रेखाएं या भाग बनाकर एक-एक भाग को एक राशि का नाम दे दिया गया। पृथ्वी के अक्षांश-देशांश डिग्री अंक में हैं। सूर्य-पथ का भचक्र राशि नामावलियों में है। ठीक पृथ्वी की चाल, गति नापने की जो वैज्ञानिक विधि अपनायी गयी है, वह सूर्य-पथ के लिए भी है। इसमें अवैज्ञानिकता का अंश मात्र नहीं है।

भचक्र सूर्य-पथ को कहते हैं। यह अपने अनुचरों के साथ क्रियारत है। सूर्य क्या है, कैसी महाज्वालाएं वहां सुलग रही हैं, कैसा भयानक अकल्पनीय तापमान है सूरज का? इसकी कल्पना खोजी वैज्ञानिकों ने की है। रोंगटे खड़े हो जाते हैं। क्या आज का विज्ञान इतनी ऊर्जा उत्पन्न कर सकता है? सर्वथा असम्भव। सूर्य

का निर्माण, निरन्तर प्रज्जवलित रूप में एक चमत्कार है, जो हमें सहसा परमेश्वर का अस्तित्व मानने के लिए बाध्य कर देता है। कोई शक्ति कहीं है। आप कुछ भी उसको नाम दो, पर शक्ति है।

सूर्य के साथ ग्रह-नक्षत्र, तारागण हैं। यह सौर मण्डल कहलाता है। हमारे सिर पर लटका रहने वाला वह नीला आसमान ब्रह्माण्ड है, अनन्त है, असीम है। इसका कहीं आदि है, न अन्त है। विज्ञान मानता है कि इस ब्रह्माण्ड में अनेक सौर मण्डल हैं, अनेक सूर्य हैं। अनन्त की दूरी नापने में "अंक" फेल हो गये। अरबों की संख्या असहाय हो गयी। तब वैज्ञानिकों ने दूरी नापने के लिए "प्रकाशवर्ष" का आविष्कार किया है। ब्रह्माण्ड में प्रकाश की गति सबसे तेज है। एक सेकण्ड में 186282 मील जाता है। कल्पना करें, एक मिनट में कितना जाएगा? और जब यह कहा जाता है कि अमुक ग्रह हमारी पृथ्वी से 2 प्रकाशवर्ष दूर है तो क्या आप इन रोमांचकारी आंकड़ों को याद रख सकते हैं? या इनका उच्चारण कर सकते हैं?

मैं असीम हूं, अनन्त हूं। यह बात बार-बार ब्रह्मा ने कही है। हमारे ग्रंथों ने लिखा, पूर्वजों ने बताया, पर हम नहीं माने, अब उन्हीं तथ्यों और सत्य को पश्चिम का विज्ञान अंकों के अनुसंधान की मात्रा में पेश कर रहा है, तो हम नतमस्तक हैं।

इसका अर्थ यह नहीं कि मैं प्रकाण्ड पण्डित हो गया हूं, वरन् मेरा उद्देश्य केवल इसकी वैज्ञानिकता को प्रमाणित करना है और इसमें रुचि रखने वाले व्यक्तियों से मेरा नम्र निवेदन है कि इसका और गहराई से अध्ययन करें और इसका स्वयं लाभ उठाने के साथ-साथ मानव समाज का भी कल्याण करें।

भचक्र को 12 राशियों में विभाजित कर दिया गया है, इस भचक्र का एक-एक ग्रह उसका देवता बना दिया गया, और ग्रह के साथ नक्षत्रों का रिश्ता बना दिया गया। फिर 12 महीनों का नामकरण कर दिया गया।

भचक्र का केन्द्र सूर्य है। अतएव जिस दिन भचक्र में प्रवेश करता है, राशि में वो उसी दिन से सौरमास शुरू हो जाता है।

सूर्य (सौर) मास के अलावा चान्द्रमास भी माना जाता है। इसमें मास का नाम उस नक्षत्र पर आया है, जो किसी मास की पूर्णमासी के दिन पड़ता है। सौर मास 30-31 दिनों का होता है, जबकि चान्द्रमास 27 से 29 दिनों का। चन्द्रमा सबसे तेज गति से भ्रमण करता है। इस कारण संसार में पंचांग का भविष्य-कथन सौरपद्धति, चन्द्रपद्धति पर चलता है। दोनों का उद्देश्य एक है, पर मार्ग अलग-अलग हैं।

हमारा ज्योतिष शास्त्र चन्द्रपद्धति पर चलता है। दोनों का उद्देश्य एक है, पर राह अलग-अलग हैं।

हमारा ज्योतिष शास्त्र चन्द्रपद्धति पर है। इस कारण चान्द्रमास प्रचलन में है।

पश्चिम में हम इतने रंग गए हैं कि खेद के साथ कहना पड़ता है, हमें अपने चान्द्रमास भी बहुतों को याद न होंगे। जनवरी से दिसम्बर तक तो गिना देंगे पर चैत्र से फाल्गुन तक चुप—यह दशा है हमारी।

प्रत्येक व्यक्ति के शरीर में इस प्रकार से बारह राशियों का निवास माना गया है। उसके शरीर का नियंत्रण, संचालन यह राशियां अपने-अपने स्वामी ग्रहों के प्रभाव के अनुसार करती हैं। ग्रहों के विकिरण के फलस्वरूप शरीर में कौन-कौन-से अंग प्रभावित होते हैं, यह "काल-पुरुष" के चित्र से स्पष्ट है। वास्तव में संसार के सभी चेतन-अचेतन इसी से प्रभावित हैं। किसी की भी अपनी स्वतंत्र अस्तित्व संज्ञा नहीं है। श्रीकृष्ण गीता में कहते हैं, "मैं ही सबको नियन्त्रित कर रहा हूं। सब मेरे इशारे पर नाच रहे हैं।"

हर राशि एक निश्चित स्थान पर मानव-शरीरं में निवास करती है, जो निम्नलिखित हैं—

क्र०सं०	राशि का नाम	मानव शरीर अंग
(1)	मेष	सिर, चेहरा, आंख, दांत, कान।
(2)	वृषभ	गला, चेहरा, कण्ठ।
(3)	मिथुन	वक्ष, बाजू, चेहरा।
(4)	कर्क	हृदय, सीना, फेफड़े, कोहनी।
(5)	सिंह	पेट, पीठ, हाथ का निचला भाग।
(6)	कन्या	कमर, हाथ, पेट में लीवर, आंख।
(7)	तुला	गुर्दे, पेट के नीचे योनि के समीप।
(8)	वृश्चिक	गुदा, योनि, लिंग।
(9)	धनु	जांघ, नितम्व।
(10)	मकर	दोनों घुटने।
(11)	कुम्भ	नितम्ब, पैर।
(12)	मीन	पांव, एड़ी।

पृथ्वी की उत्पत्ति कब हुई? मनुष्य कब पैदा हआ? यह आज भी विज्ञान में विवाद का विषय है, पर एक बात विज्ञान स्पष्ट रूप से मानती है कि समूचा

ब्रह्माण्ड कभी जलता पिण्ड था। इस पिण्ड से सूर्य की उत्पत्ति हुई और फिर वह सब कुछ बना, जिसे हम सौर मण्डल कहते हैं। सूर्य सबका जनक है। हमारे पूर्वजों ने सूर्य को सर्वोपरि माना है और हर क्षेत्र में उसे प्रथम स्थान दिया है। सूर्य के उपरान्त कौन-सा ग्रह बना या नहीं बना, तमाम वर्तमान सौर जगत के ग्रह-नक्षत्रों का क्या क्रम है? यह भी विवाद में है। पर यह बात तो निर्विवाद है कि सम्पूर्ण सौर जगत के ग्रह सूर्य की परिक्रमा कर रहे हैं और सूर्य स्थिर है। सभी ग्रह सूर्य से प्रभावित हैं। हमारी पृथ्वी विशाल अनन्त ब्रह्माण्ड का एक कण भी नहीं है। मात्र परमाणु या परम क्षुद्र कण मात्र है। यह क्षुद्र पृथ्वी सूर्य से प्रभावित है। प्रभाव के कारण—दिन-रात, ऋतुएं तथा जीवन हैं। कल्पना कीजिए, अगर सूर्य न हो तो...?

पृथ्वी का अणु-अणु, चेतन और अचेतन, निर्जीव-सजीव सभी सूर्य से प्रभावित हैं। सूर्य का प्रभाव तेजस्वी है। तेजस्वी पिता की संतानें अन्य ग्रह हैं। क्या तेजस्वी पिता की इन संतानों में इतना भी प्रभाव न होगा कि वह इस क्षुद्र पृथ्वी पर अपना प्रभाव डाल सकें? यह कैसे हो सकता है? परम तेजस्वी पिता सूर्य के समान नहीं, कुछ तो प्रभाव डाल ही रहे हैं। चर-अचर पर इसी प्रभाव की नाप-जोड़ भारतीय ज्योतिष ने की है और उसका अत्यन्त वैज्ञानिक विश्लेषण किया है।

पृथ्वी को 360 रेखाओं में (रात -दिन मिलाकर एक वर्ष) विभाजित कर प्रत्येक 12 रेखा के समूह को एक नाम दिया है। प्रत्येक माह 12 समूह में 30 रेखाएं ली हैं। इस प्रकार 12 राशियां, 12 माह, रात-दिन के अलग-अलग 12 घण्टे बने और 30 रेखाओं का एक माह बना। सौर मण्डल निरन्तर चलायमान है। अतएव करोड़ों वर्ष बाद नाप-जोड़ में अन्तर आ जाता है। सूर्य की आकर्षण-शक्ति में उत्पन्न भिन्नता के कारण ग्रह-गति अनियमित हो जाती है। पृथ्वी अपनी धुरी पर भ्रमण करती सूर्य की परिक्रमा कर रही है। अतएव 30 रेखाओं की दूरी पार करने में सेकण्ड के करोड़वें हिस्से का भी अन्तर आने पर 360 दिन का वर्ष नहीं स्थिर रह सकता। फलतः 365 कर दिया गया और रेखाएं भी घट-बढ़ कर दी गयीं। गणित की दृष्टि से यह अत्यन्त जटिल विषय है। हमारा तात्पर्य यही है कि 30 दिन का ही माह क्यों नहीं रहा आया ? 27, 28, 29 और 31 दिन का ही माह क्यों कर दिया गया? इस शंका का समाधान कर दिया जाए।

जिस प्रकार पृथ्वी को 12 खण्डों में विभाजित कर दिया गया, तो सौर मण्डल से उसका नाता समझने के लिए उसे भी ''भचक्र'' (जाडियाक) नामकरण कर दिया गया। यह भचक्र सूर्य के दोनों ओर 9 अंश तक फैला है। भचक्र अपनी धुरी पर

हमारी पृथ्वी से पूर्व से पश्चिम की ओर घूमता दिखलाई पड़ता है। पृथ्वी के 12 खण्डों को राशि का नाम दिया गया और भचक्र के उपर्युक्त 9 अंशों को ग्रह नाम दिया गया। फलतः भारतीय ज्योतिष (विज्ञान) शास्त्र में 12 राशियों और नवग्रहों ने जन्म लिया। वह निम्न प्रकार हैं—

ग्रह	राशियां
(1) सूर्य	(1) मेष
(2) चन्द्र	(2) वृषभ
(3) मंगल	(3) मिथुन
(4) बुध	(4) कर्क
(5) बृहस्पति (गुरु)	(5) सिंह
(6) शुक्र	(6) कन्या
(7) शनि	(7) तुला
(8) राहु	(8) वृश्चिक
(9) केतु	(9) धनु
	(10) मकर
	(11) कुम्भ
	(12) मीन

सौर मण्डल का ज्ञान रखने वाला प्रत्येक पाठक जानता है कि ग्रह केवल 1 से 7 तक ठोस पिण्ड हैं तथा 8-9 क्रमशः राहु और केतु गैसीय पिण्ड मात्र हैं। सौर मण्डल में यह बड़ा उत्पात करते हैं। वास्तव में यह छाया ग्रह कहलाते हैं। सौर मण्डल में उन दो स्थानों पर जहां चन्द्र अपने भ्रमण—सूर्य के पथ को काटता है, वहीं पर उत्तर वाला स्थान राहु और उसके ठीक सामने 180 अंश वाला स्थान केतु कहलाता है। यह दोनों सूर्य की परिक्रमा भी नहीं करते। यह सब ग्रह अपनी धुरी पर पूरब से पश्चिम की ओर घूमते हैं। यह दोनों भाई पश्चिम से पूर्व की ओर घूमते हैं। सूर्य-चन्द्र आगे चलेंगे तो यह दोनों सदा पीछे चलेंगे। इसी विशेष गुण के कारण राहु-केतु का शब्द हमारे जीवन में किसी पर चिपकाने का व्यंग्य चल गया है, अर्थात् वक्री है वह।

मुख्य ग्रह इस प्रकार 7 आए। फलतः रेखाओं या माह को 7 में विभाजित कर दिन का नामकरण कर दिया गया। मोटे तौर पर माह में 4 सप्ताह बन गए। गणित ठीक करने के लिए इनमें बराबर अन्तर पड़ता रहता है। आशय यह 7 दिन

का एक सप्ताह बना दिया गया। यह सब समय का माप करने के लिए किया गया है। इस प्रकार 7 ग्रह (मुख्य) के नामानुसार दिनों का नामकरण आया।

ग्रह	दिन या वार
(1) सूर्य (रवि)	(1) रविवार
(2) चन्द्र (भौम)	(2) सोमवार या भौमवार
(3) मंगल	(3) मंगलवार
(4) बुध	(4) बुधवार
(5) बृहस्पति (गुरु)	(5) बृहस्पतिवार (गुरुवार)
(6) शुक्र	(6) शुक्रवार
(7) शनि	(7) शनिवार

समय का नाप जोड़, घण्टा, मिनट, सेकण्ड—यह सुविधा के लिए किया जाता है। 12 घण्टे का दिन, 12 घण्टे की रात , 60 मिनट का घण्टा, 60 सेकण्ड का मिनट। इसी प्रकार उपर्युक्त भचक्र का भी यह विभाजन सर्वथा वैज्ञानिक है। कोई पाठक बताए इसमें कहां अंधविश्वास, कपोल-कल्पना, ढकोसला हैं। यह तो शुद्ध वैज्ञानिक विधि है।

इस प्रकार जब पृथ्वी और भचक्र, सौर मण्डल का वर्गीकरण कर लिया गया तो पृथ्वी पर विद्यमान चराचर पर परस्पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसकी नाप-जोड़ शुरू हुई। यही प्रभाव और नाप-जोड़ इसी से शुरू हुई। यही प्रभाव और नाप-जोड़ ज्योतिष बन गयी। भचक्र—सौर मण्डल का प्रभाव देखकर पृथ्वी के चराचर पर उसको पहचाना जाने लगा। आपको पता ही है कि कुछ ग्रहों का प्रकाश पृथ्वी तक आने में कितना समय लगाता है, इसका अलग-अलग विवरण विज्ञान में है। ग्रहों की चाल, स्थिति में परिवर्तन आज आया तो उसका प्रभाव (प्रकाश) पृथ्वी पर आते-जाते समय लगता है, जब आएगा तो क्या प्रभाव होगा? इसका पूर्वानुमान तो लगाया ही जा सकता है। जिस प्रकार आकाशदीप स्थिति से वैधशाला आने वाला मौसम बतलाती है उसी प्रकार भचक्र, सौर मण्डल में ग्रह-स्थिति परिवर्तित होते ही उसके प्रभाव को पृथ्वी पर आने से पूर्व जान सकता है। यह बताया जा सकता है कि चराचर पर क्या प्रभाव आ रहा है? इस प्रकार की पूर्वसूचना को उपर्युक्त गणित द्वारा जान लेना ही ज्योतिष विद्या है। ज्योतिष के सिद्धान्तों के अनुसार, आगामी प्रभाव (जो भचक्र सौर मण्डल में बना है) को बतला देना ''भविष्य-कथन'' (भविष्यवाणी) कहा गया है। अब इसमें कौन-सी अवैज्ञानिकता या उपहास की बात

है, आने वाले प्रभाव की भाषा मूक होती है। उसके न समझ पाने के कारण अनाड़ी अपना मनमाना निष्कर्ष बतला देता है, तो इसमें बेचारी ''ज्योतिष विद्या'' का क्या दोष है? आप स्वयं सोचिए।

भविष्य-कथन एक सर्वथा वैज्ञानिक प्रणाली है। कठिनाई यह है कि भचक्र पर गहन अध्ययन और भविष्य-कथन के समय परिवर्तन का ठीक-ठीक ज्ञान न होने से भविष्य-कथन असत्य हो जाता है। बड़ा गूढ़ विषय है।

समय क्या है?

आइंस्टाइन के शब्दों में—''छलना, एक धोखा, मिथ्याडम्बर। वायुयान से यात्रा करते समय, समय रेखा पर आते ही यात्रियों को घड़ी ठीक करनी पड़ती हैं।''

क्यों?

अतीत क्या है? वर्तमान क्या है? भविष्य क्या है?

यह सब माया-जाल है। बरसों आपको कोठरी में रखा जाए तो क्या आप समय बता सकेंगे? तब समय एक कल्पना मात्र है। इसी कारण हमारे धर्मशास्त्रों में कहा गया है, कृष्ण के शब्दों में—''मैं अनन्त हूं, अनादि हूं, समयहीन हूं।'' बार-बार जयघोष किया गया है—''एकोअहम्, द्वितीयोनागीता'' केवल एक मैं हूं। दूसरा कोई नहीं।

''जगन्मिथ्या'' संसार झूठा है, मिथ्या है। मरीचिका क्या है? मृगतृष्णा क्या हैं? राम मृग का वध करने, पकड़ने दौड़े—सब आंखों का धोखा, मस्तिष्क की कल्पनाएं....। मनुष्य यह जानते हुए भी कि मैं मरूंगा, मनुष्य जीता है, संघर्ष करता है, संचय करता है, हाय-हाय करता है, माया-मोह, ममता जानता है कि मिथ्या हैं। कोई प्रियतमा, साथ देने वाला नहीं है आया है अकेला, जाएगा अकेला। हाय-हाय कर कमाया गया धन यहीं रहता है। आया खाली हाथ, जाएगा खाली हाथ। यह कैसा मोह-जाल है! इसी मोह-जाल को गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने भंग किया और आइंस्टाइन ने विज्ञान में टाइम थ्योरी—समय सिद्धान्त—सापेक्षवाद, उनका कथन है कि टाइम थ्योरी से हम अतीत में जा सकते हैं। अगर महाभारत युद्ध हुआ है, तो हम अतीत में प्रवेश कर देख सकते हैं गति ''प्रकाश'' की चाहिए। जिस दिन वह गति (एक सेकण्ड में लगभग 186283 मील) प्राप्त कर लेगा, उसी दिन अतीत में प्रवेश कर देख सकेगा। भविष्य जान सकेगा। विज्ञान स्वयं कहता है—जिस बालक की आयु पृथ्वी पर 25 वर्ष होगी, मंगल पर 18 वर्ष होगी, क्योंकि मंगल का दिन लगभग 24 घण्टे 37 मिनट 25 सेकण्ड का होता है। वह 687 दिनों में एक परिक्रमा करता है, अर्थात् एक वर्ष पूरा होता है। मंगल का वर्ष हमारी धरती के दो वर्ष

से थोड़ा कम है। समय मिथ्या हो गया। इसी प्रकार पृथ्वी का 1 किग्रा० वजन चन्द्रमा पर 6 किग्रा० हो जाएगा। भार भी मिथ्या हो गया। इसीलिए वेदों में कहा गया—"जगन्मिथ्या" सब कुछ मिथ्या है—झूठा है।

इसी माया-जाल को साकार रूप देने के लिए विज्ञान ने समय को बांधा है। उसकी प्रणाली का अध्ययन करके प्रामाणिक सटीक भविष्य बतलाया जा सकता है। इस कारण राशिफल, वर्षफल, भविष्यकथन, रूढ़िवादिता, पण्डितों का ढकोसला नहीं है, वरन् विज्ञान-सम्मत सिद्धान्त है।

इसी दृष्टिकोण से पूरी परख के साथ इस वर्ष का भविष्य अंकन किया है, त्रुटियां स्वाभाविक हैं। फिर भी मेरा ध्यान नहीं गया होगा। अतएव विज्ञ पाठक मुझे ज्ञान दें तथा परख कर लिखें कि यह कहां तक सटीक है, जो दावा मैंने किया है।



मेष

21 मार्च से 19 अप्रैल

(चू चे चो ला ली लू ले लो आ)

मेष राशि को भारतीय ज्योतिष में प्रथम स्थान प्राप्त है। इसको भेड़ की आकृति का माना गया है और इसका निवास गुर्दे में ऊपर के भाग में माना गया है। सौरपद्धति में इसका समय 20 अप्रैल से 19 मई; चन्द्रपद्धति में अप्रैल, मई; पाश्चात्य मत के अनुसार—मार्च 21 से अप्रैल 21 तक और भारत सरकार के द्वारा प्रकाशित राष्ट्रीय पंचांग में अप्रैल 15 से मई 14 तक इसका समय माना गया है।

कालपुरुष के शरीर में मेष राशि उसके सिर का प्रतिनिधित्व करती है; इसलिए मनुष्य के सिर भाग में सबसे पहले हलचल होती है। इस राशि का स्वामी मंगल माना गया है। इस राशि में पैदा जातक दुबले-पतले और लम्बे चेहरे वाला होता है। अधिकांश जातकों के बाल घुंघराले होते हैं। इस राशि में अश्विनी, भरणी तथा कृत्तिका नक्षत्र का पहला चरण स्थित है। अतः एक राशि के लोग भी अगर अलग-अलग नक्षत्र में पैदा हुए हैं तो उनकी प्रवृत्ति, बनावट और आदतें एक-दूसरे से भिन्न होंगी; जैसे कि गुण-स्वभाव से मेष राशि में ही अश्विनी नक्षत्र में पैदा जातक अन्तर्मुखी और शांत होगा, जबकि भरणी नक्षत्र में पैदा जातक चंचल और उतावला होगा। उधर कृत्तिका नक्षत्र के पहले चरण में पैदा जातक में अधिक

आत्मविश्वास, बुद्धिमत्ता और सौजन्यता होगी। आगे चलकर इन तीनों का व्यक्तित्व भी नक्षत्र-गुणों के अनुसार ही काफी हद तक भिन्नता लिए हुए भी कुछ मामलों में एकजैसा होगा, जैसे कि सभी मेष जातक मित्रों और सम्बन्धियों द्वारा पीड़ित होंगे, सभी-के-सभी अनुशासनप्रिय; किन्तु काम में गलतियां करने वाले होंगे।

मेष राशि चर राशि मानी गयी है। यह एक जगह रहना या जीवन में सरसता पसन्द नहीं करती है। बदलाव या घूमना-फिरना इसको अधिक पसन्द होता है। आम तौर पर इसे सेना, पुलिस, निर्माण कार्य, इंजीनियरी, अभिनय, अन्वेषण और अनुसंधान आदि क्षेत्र अधिक पसन्द होते हैं। स्वभाव से बनवाल, उदार, भ्रमणशील और ठाठ-बाट के इच्छुक होते हैं, जिससे मित्रता करते हैं उसको समर्पित रहते हैं; परन्तु आए दिन मित्रगण भी बदलते रहते हैं। खाने-पीने के बहुत शौकीन होते हैं लेकिन खाते बहुत कम हैं। बड़ी शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं, तो बिना किसी कारण नाराज भी। आम तौर पर जीवन का प्रारम्भिक भाग संघर्षमय और कष्टप्रद होता है। जीवन के मध्य भाग में उन्नति करते हैं। 36 वर्ष के बाद विशेष प्रगति और भाग्योदय देखते हैं।

इस राशि का अधिपति स्वामी क्रूर एवं तेजस्वी ग्रह मंगल माना गया है। यह चर राशि है और अश्विनी, भरणी और कृत्तिका नक्षत्र इसमें आते हैं। इसका तत्व अग्नि है और इसकी गणना पृष्ठोदय (पिछले भाग से उदय होने वाली) राशि में है। इसकी दिशा पूर्व है, रंग लाल माना गया है, कद छोटा और रहने का स्थान वन माना गया है। जाति इसकी क्षत्रिय है। इसकी गणना पुरुष श्रेणी में है। यह चतुष्पदा राशि है। इसका अधिपति स्वामी गृह के देवता विघ्न विनाशक श्री गणपति हैं। इसकी धातु मज्जा है। इसके देवता मंगल को सौर मण्डल के मंत्रिमण्डल में सेनापति का स्थान प्राप्त है। इसका इन्द्रियज्ञान नेत्र हैं। कुण्डली में इसकी राशि उच्च मानी गयी है। इसका आकार ढोल के समान माना गया है। इसका वेद सामवेद है। बुध शाखा का स्वामी माना गया है। इसका क्रम अयन (दिन) है। इसका फल दिन भर में मिल जाता है क्योंकि इसका और पृथ्वी का दिन करीब-करीब बराबर हैं। यह एक राशि पर डेढ़ दिन रहता है।

मैं इन सबका वर्णन और विवरण इसलिए दे रहा हूं, ताकि पाठकों को रत्नों का चयन करते समय इन बातों का ध्यान रहने पर वह रत्नों की प्रामाणिकता पर विश्वास भी करेंगे क्योंकि सब तथ्य इतने वैज्ञानिक हैं कि इनकी व्याख्या के अनुसार ही फल मिलता है। इस सब विवरण का अर्थ भी आपको आगे मिल जाएगा। इस प्रकार के नाम, गणना और वर्गीकरण का क्या अर्थ है? आप पढ़कर हैरत में रह

जाएंगे कि भविष्यफल का भविष्य-कथन अन्य भविष्यफलों से भिन्न है, क्योंकि मैं इस विद्या को "विज्ञान" के रूप में मानता हूं, और विज्ञान सदैव प्रमाणित होता है। अतएव यह सब वर्णन स्वयं आपको भी मेरी बात को विज्ञान की कसौटी पर परखने में सहायक बनेगा। इस राशि के देवता की आयु 50 वर्ष मानी गयी है। यह सत्वगुणी है। प्रकृति कफ है। रत्न इसका मूंगा है और स्वाद तिक्त है। ऋण ग्रीष्म है। सूर्य, चन्द्र, बृहस्पति (गुरु) इसके मित्र हैं। बुध इसका परम शत्रु है। शुक्र और शनि से इसकी साधारण मैत्री मात्र है।

आकार के अनुसार कमर पतली है। बाल चमकते घुंघराले हैं। आंखें रक्तवर्ण हैं। स्वभाव क्रूर और अस्थिर है। हृदय उदार है। वार करने में यह बड़ा अचूक निशानेबाज है। शरीर में आघात या जलने का चिह्न है। वीर है पर अनुशासित है। अत्यन्त कामुक और शीघ्र गुस्से में आने वाला है। इसका शुभांक 9 है। इसकी अंक गणना 3 से 11 है।

पुराणों में मंगल को "महिसुत" अर्थात् पृथ्वी पुत्र कहा गया है। वेदकालीन पंचग्रहों में इसकी गणना है। महाभारत के कर्ण पर्व में इसकी विशेष चर्चा है। यह ग्रह पृथ्वी के मानव के लिए विशेष महत्व रखता है। इस ताम्रवर्णी ग्रह और पृथ्वी में अनेक समानताएं हैं। इसका व्यास मात्र 4215 मील है। पृथ्वी से इसकी निकटतम दूरी लगभग 34600650 मील है। इसका तापमान 85° फारेनहाईट से 190° फारेनहाईट है।

इसका एक नाम भौम भी है। सूर्य से इसकी दूरी लगभग 14,730,000 मील है। पृथ्वी के 657 दिनों में यह सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करता है। मंगल का एक वर्ष पृथ्वी के 2 वर्ष से थोड़ा छोटा होता है, पर दिन लगभग बराबर है। साधारणतः इसका दिन 24 घण्टे और 37 मिनट का होता है। सूर्य की परिक्रमा करते समय वह हर 15वें वर्ष में पृथ्वी के एकदम निकट आ जाता है। यूनान में इसे युद्ध का देवता माना है। 1877 में पहली बार मिलान की वेधशाला में इसका सम्पूर्ण वैज्ञानिक अध्ययन किया गया। 1907 में इटली के एक खगोलशास्त्री गियोपान्नी शिया पारती ने इसमें 700 जल-नहरों का होना प्रमाणित किया और सबसे पहले मंगल पर आबादी होने की सम्भावना प्रकट की।

अमेरिका ने अपना "वाईकिंग" रॉकेट मंगल ग्रह तक भेजा। मंगल ग्रह का वायु-दबाव पृथ्वी के वायु-दबाव का केवल सौवां अंश है। इस पर उल्कापात के गहरे गड्ढे हैं। ज्वालामुखी पर्वत है। मौसम की दृष्टि से ग्रह सजीव है। बादल, तेज हवाएं, धूल की आंधियां चलती हैं।

भारतीय ज्योतिष शास्त्र "पराशर संहिता" में मंगल ग्रह को रुधिर का देवता और जीव की उत्पत्ति का केन्द्र माना है। हस्तरेखा में यह मनुष्य की हथेली पर दो स्थानों पर अपना अधिकार रखता है।

अब हम पौराणिक और आज के वैज्ञानिक तथ्यों को मिलाकर देखेंगे। हमारी पौराणिक मान्यता, गणना किस प्रकार वैज्ञानिक तथ्यों से मेल खाती है। वेदों में भी मंगल का श्लोक आया है। वेदों का रचनाकाल अनादि है। आज तक यह प्रमाणित नहीं हो सका कि वेदों की रचना किसने की और कब की? हमारे यहां वेद स्वयं ब्रह्मा रचित मानते हैं। जो हो, लाखों वर्षों पूर्ववर्णित विवरण आज भी विज्ञान की खोज में सटीक उतर रहा है।

पौराणिक तथ्यों पर आधारित और विज्ञान द्वारा प्राप्त निष्कर्षों के अनुसार, मेष राशि कैसी बनती है, यह तो आगे वर्णित है।

रूप-रंग–इस राशि के अधिकतर जातकों का रंग गोरा होता है। उनके रक्त में लाल कणों की अधिकता के कारण प्रायः रंग गोरा, ताम्रवर्ण (तांबे के समान दमकता), गेहुंआ होता है। अश्विनी या भरणी नक्षत्र में जन्मे बालक का सही रंग होता है। इनका गोरा, श्यामल भी होता है, काला रंग बहुत कम होता है। कद सामान्यतः छोटा होता है। लम्बे-चौड़े इस राशि के व्यक्ति अपवाद हो सकते हैं। बदन गठीला तथा बाल घुंघराले होते हैं। इस राशि की महिलाओं के बाल अधिकतर लम्बे और घने होते हैं। आंखें बहुत सुन्दर होती हैं। उनकी आंखों में चमक, चंचलता बेहद होती है। पुरुष की आंखों के कोरों में ललाई अवश्य होती है। अगर ऐसा नहीं होगा तो उनका शरीर ढाल के समान होगा अर्थात् तोंद वाला, मोटा, थुल-थुल होगा।

स्वभाव–इस राशि का जातक अस्थिर स्वभाव का होता है। इसे बहुत शीघ्र गुस्सा आता है, पर ठण्डा भी शीघ्र होता है और हृदय का बड़ा कोमल होता है। इसे तिक्त पदार्थ विशेष पसन्द होते हैं। यह डरपोक, कायर नहीं होता। मौका पड़ने पर मरने-मारने के लिए तैयार रहता है। उस समय यह अत्यन्त क्रूर होता है। अपने दुश्मन के टुकड़े-टुकड़े करने के बाद भी शांत नहीं होता है।

सत्वगुणी होने के कारण सच्चरित्र, दृढ़निश्चयी और संकल्प पूरा करने वाला व्यक्ति होता है। केवल अस्थिर स्वभाव के कारण इसे कम सफलता मिलती है। इसका तत्व अग्नि होने के कारण यह उग्र स्वभाव का होता है। नेतृत्व गुण अधिक होता है। चतुष्पदी राशि होने के कारण यह बार-बार गिरने पर भी उठकर शीघ्र

खड़ा हो जाता है। अपना लक्ष्य नहीं भूलता, प्राप्त करके ही दम लेता है। पृष्ठोदय राशि के कारण यह दुश्मन की ओर पीठ कर देने पर ही मात खा सकता है, वरना सामने से इसको कोई भी पराजित नहीं कर सकता। यह अत्यन्त कामुक होता है। हरियाली (पेड़-पौधे, बगीचे) इसको बड़े पसन्द होते हैं। लाल सफेद और हरा रंग इसे प्रिय होता है। अपनी आकृति भेड़ होने के कारण इसके गुण-अवगुण, स्वभाव भेड़ से बहुत कुछ मिलते हैं।

आयु—इस राशि के जातक की आयु, अगर देवयोग पक्ष में रहता है, तो कम से कम 55 वर्ष अवश्य ही होती है। इस राशि का जातक प्रायः दीर्घायु माना जाता है। दुर्घटना या चोट के कारण इसकी मृत्यु सम्भव रहती है।

स्वास्थ्य—अपने प्रकृति रूप के कारण इसका स्वास्थ्य नरम-गरम बना रहता है। गर्मी, विषप्रभाव, चोट, घाव, कोढ़, नेत्र-पीड़ा, खुजली, ब्लड प्रेशर, निर्बलता हड्डियों पर चोट, ट्यूमर, कैंसर, बवासीर, गर्दन पीड़ा जैसी असाध्य बीमारियां होती हैं। शरीर में आघात और जलने का चिह्न बतलाया गया है। अतएव इस राशि की महिलाएं भाग-भागकर आत्महत्या करती हैं। जातक का शरीर एक-न-एक बार अवश्य जलता है तथा आघात खाता है।

विवाह—इसका विवाह-प्रेम मेष, वृषभ, तुला राशि की स्त्री से होने पर सुखमय एवं सफल रहता है। वृश्चिक, मकर राशि से सामान्य सुखी। मिथुन, कन्या राशि से होने पर प्रायः क्लेशपूर्ण रहता है। कामुकता के कारण अपनी स्त्री से इसकी पटती नहीं। कामवासना की तृप्ति के लिए यह भटकता रहता है। परिवार के प्रति इसका व्यवहार अस्थिर रहता है।

जीवन-निर्वाह—जीवन-निर्वाह इसका जनरल (सेना में) या अन्य पदों पर, संगठनकर्त्ता, डॉक्टर, व्यापारी, वकील, दवा विक्रेता, नेता के रूप में होता है।

इस व्यक्ति के लिए पूर्व, उत्तर-पूर्व, दक्षिण दिशाएं विशेष शुभ होती हैं। इन्डोनेशिया, कलकत्ता, शिमला, पेरिस, कनाडा, बैलग्रेड स्थानों में बड़ा भाग्योदय होता है।

शुभ तिथियां, शुभ दिन, शुभ माह—मेष राशि वालों को 1/2/3/6/11/13/16/21/23/28/30 तिथियां शुभ रहती हैं।

सोमवार, मंगलवार, गुरुवार आदि दिन अधिकतर शुभ रहते हैं।

जनवरी, मार्च, अक्टूबर एवं दिसम्बर माह प्रायः शुभ रहते हैं।





वृष

20 अप्रैल से 21 मई

(इ उ ए ओ वा वी वू वे वो)

वृषभ या वृष राशि का स्थान दूसरा है। इसका शाब्दिक अर्थ होता है "बैल"। आकाश खण्ड में विभाजन और इसका नक्शा बैल की आकृति बनता है। इस कारण इसका नामकरण वृष किया गया है। ज्योतिष शास्त्र में इसके नक्षत्रों में "कृत्तिका" के 2-3-4 चरण, "रोहिणी" के चारों चरण व मृगशिरा के 1-2 चरण सम्मिलित हैं। इसका उद्गम "पृष्ठोदय" है। इसकी दिशा "पूर्व" है। रंग सफेद, कद विकृत, रहने का स्थान "श्वेत" माना गया है। इसका समय 20 अप्रैल से 21 मई है। राशि स्वामी ग्रह शुक्र है, जिसे शास्त्रों में असुरों का गुरु माना गया है। "शुक्र" स्वामी होने के कारण, नेत्र, जल, वीर्य और कफ पर इसका अधिकार है। यह वसन्त ऋतु का स्वामी है। इसकी अधिपति देवता "लक्ष्मी" हैं। सौर मण्डल की मन्त्रिपरिषद् में इसे मंत्रीपद का दर्जा प्राप्त है। इस ग्रह का सम्बन्ध "जिह्वा" से है। इसके मित्र ग्रह बुध और शनि हैं। सूर्य, चन्द्र इसके शत्रु ग्रह हैं। मंगल और बृहस्पति (गुरु) से इसका सम्बन्ध सामान्य है। इसका आकार अष्टकोण, कद सामान्य, विशिष्ट अंग "गुप्तांग" है। इसका वेद यजुर्वेद है। यह बुध शाखा का स्वामी है। वृषभ की राशि शूद्र है। यह एक राशि पर एक माह रहता है।

आकाश-गंगा के तारों के बीच 31° से 60° के उत्तर गोल में वृष राशि स्थित है। यह राशि शुक्र ग्रह के स्वामित्व में आती है। यह एक स्थिर राशि है। इसमें कृत्तिका, रोहिणी और मृगशिरा नामक नक्षत्र आते हैं। इस राशि का प्रतिनिधि पशु बैल है, जो मानव संसार में जन्मजात रूप से अपनी सेवा देने में तत्पर रहा है। बेशक आजकल कृषि से बैल पीछे हटता जा रहा है, परन्तु अपरिह परिस्थितियों में वह दूसरे तरीकों से पशु समुदाय का सबसे प्रमुख प्रतिनिधि है। नंदी के रूप में भगवान शिव को समर्पित यही बैल भारत तथा नेपाल के कई मन्दिरों में पूजा-अर्चना का प्रतीक भी है।

वृष राशि कन्या संततिप्रधान कही गयी है। संतान से इसे विशेष तनाव रहता

है। शान्त स्वभाव की यह राशि आधुनिक युग में खेत-खलिहान, डेयरी उद्योग, कृषि विपणन तथा खाद्य प्रसंस्करण के क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व तो करती है, साथ ही साथ अनुषंगी व्यापार-कला, संस्कृति शिक्षण, राजनीति और साहित्य के क्षेत्र में भी अपनी पहचान बनाए रखती है। वृष राशि के जातक आज की दुनिया में जहां बड़े-बड़े निर्माण कार्यों से जुड़े हैं, वहां नवीन कार्यक्षेत्र ढांचागत सुधार, सामाजिक संस्थाओं के उन्नयन, स्थायी कारोबार एवं पुश्तैनी पेशे का भी प्रतीक है। व्यापार ज्योतिष में गेहूं, चावल, दलहन, चीनी, शक्कर, घी, दूध, कपास, मूंगफली, फल, फूल, नींबू-अचार से लेकर सोना, चांदी, हीरा, कोयला, बिजली के उपकरण भी इसकी प्रभाव सीमा में आते हैं। यह राशि व्यावहारिक जीवन में जहां अत्यधिक गम्भीर और प्रयोगवादी कही गयी है, वहां उदारता और लोकप्रियता भी विशेष गुण हैं।

राशि की दृष्टि से यह राशि चेहरा और गले का प्रतिनिधित्व करती है। स्वामी ग्रह का लिंग स्त्री है। स्वामी ग्रह शुक्र की जाति ब्राह्मण है। गुण इसका रजोगुणी है।

इस राशि का यह विवरण तो ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि से है। अब इसका वैज्ञानिक रूप भी देखना आवश्यक है। विज्ञान की दृष्टि से शुक्र को पृथ्वी का निकटतम पड़ोसी माना गया है। यह ग्रह सौर मण्डल की अपेक्षा सूर्य के अधिक निकट है। यह हमारी पृथ्वी से 6,70,20,510 मील दूर है तथा पृथ्वी से इसकी निकटतम दूरी 25,700,500 मील है। इसकी सतह का तापमान 899° फारेनहाईट है। पृथ्वी से इस ग्रह को नंगी आंखों से देखा जा सकता है। इसका एक वर्ष 255 दिन का है। यह 255 दिन में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी कर लेता है। अतएव पृथ्वी का 18 वर्ष का युवक शुक्र पर 27 वर्ष का तरुण बन जाएगा। यह लगभग 22 मील प्रति सेकण्ड की गति से सूर्य की परिक्रमा कर रहा है, जबकि पृथ्वी की गति प्रति सेकण्ड 18 मील है। यह ग्रह सुबह-शाम अवश्य दिखेगा, पर मध्य रात्रि में कभी नहीं दिखाई देगा। इसका धरातल सफेद बादलों से ढका हुआ है। इसके बादल तेल के कणों से बने हैं। शुक्र के चारों ओर एक सफेद धुंध-सा छाया रहता है। देखिए पूर्वजों ने किस प्रकार लाखों वर्ष पूर्व इसके वर्ण का रंग सफेद (श्वेत) बतलाया है। शुक्र से बराबर रेडियो तरंगें उठती हैं। इसके धरातल पर पानी की सम्भावना है। इस ग्रह पर जीवन की कोई सम्भावना नहीं है।

ज्योतिष शास्त्र में यह वृषभ (वृष) व तुला का स्वामी माना गया है। हस्त रेखा में इसकी गणना पर्वत शुक्र के रूप में है। यह प्रेम (सैक्स), विवाह, पारिवारिक

जीवन, कला, शारीरिक सुख का निर्णय करने वाला है। हस्तरेखा में इस ग्रह के स्थान को बड़ा महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है और लगभग जातक के सम्पूर्ण करतल को प्रभावित करता है। जन्मकुण्डली में जिस भवन में (भाव में) यह बैठता है, वहीं से यह अन्य 11 भावों (घरों) को प्रभावित करता है। वृषभ (वृष) राशि ऐसे ही तेजस्वी, महत्वपूर्ण, प्रभावशाली ग्रह के अनुचर के रूप में आती है।

रूप-रंग—जातक के जन्म लेने के समय इस राशि का उपस्थित होना ही उस जातक की राशि को निर्धारित करना है। इस राशि के स्वामी का रंग-रूप बतलाते हुए कहा गया है कि उसका शरीर स्थूल है, घुंघराले काले बाल हैं, वर्ण गेहुंआ है। व्यक्तित्व आकर्षक और मिलनसार है। आंखें बड़ी-बड़ी और वीर्यवान् है। इस प्रकार के वर्ण के कारण वृष राशि के जातक प्रायः हृष्ट-पुष्ट, अच्छे डीलडौल वाले, कर्मठ, आकर्षक, गौरे, चुम्बकीय व्यक्तित्व के धनी होते हैं। अधिकांश का वर्ण गौरा होता है।

बड़ी-बड़ी सुन्दर आंखों वाली स्त्रियों की राशि अधिकतर वृष ही होती है। इस राशि में जन्मी बालिकाएं अनुपम सुन्दरी होती हैं। इस राशि की महिलाएं रूप-रंग बनावट की नजर से मनमोहिनी होती हैं। अपने आकर्षक व्यक्तित्व के कारण इनके मित्रों और शत्रुओं की संख्या सबसे अधिक होती है।

स्वभाव—इस राशि के जातकों का स्वभाव घमण्डी और क्रोधी होता है। यह सबको प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं। अपने कार्य के लिए पूर्णतः समर्पित होते हैं। मेहनत और लगन में कोई कमी नहीं आने देते हैं। पूर्णतः व्यावहारिक होते हैं। यह योजना के अनुसार ही काम करते हैं, एक बार योजना बनाने के बाद उसी के अनुसार कार्य करना इन्हें पसन्द होता है। विपरीत परिस्थितियों में भी नहीं घबराते।

यह कलाप्रेमी, नाच-गाने के अभिनय के शौकीन होते हैं। मनोरंजन इनको प्रिय होता है, पर मनोरंजन को यह प्राथमिकता नहीं देते हैं। इनका दाम्पत्य जीवन सुख-दुःख मिश्रित होता है। इनका यौवनकाल एवं वृद्धावस्था सुखमय होते हैं, यौवन में यह काफी परिश्रम करते हैं। खर्च के मामले में संकोची होते हैं।

आयु—इस राशि के व्यक्ति की आयु 60 वर्ष तक मानी जाती है। 60 वर्ष की अवस्था पार करने के पश्चात् भी इसका जीवन रहता है, तो नर्कतुल्य होता है। इस आयु के बाद इस राशि का जातक मात्र चलती-फिरती मूर्ति बनकर रह

जाता है। जीवन में प्रायः बीमार कम होता है; पर अगर बीमार होता है तो देर से ठीक होता है।

स्वास्थ्य—इसका स्वास्थ्य सामान्यतः यौवनकाल तक श्रेष्ठ रहता है। यौवन-काल के उपरान्त इसका स्वयं की लापरवाही से स्वास्थ्य बिगड़ता है। प्रायः पथरी, सांस में कष्ट आदि होता है। नेत्र व चेहरे की पीड़ा घेरे रहती है। उदर-सम्बन्धी रोग शीघ्र घेरते हैं।

इस राशि की महिलाओं को श्वेत प्रदर अनिवार्य रूप से होता है। पेट-पेढ़ू में सदैव शिकायत रहती है। सिरदर्द, नेत्रपीड़ा, अपच लगी रहती है।

विवाह—इस राशि के जातक का विवाह सुख-दुःख मिश्रित रहता है। अपने अहम्, घमण्डी एवं कंजूस स्वभाव के कारण पत्नी से खटपट रहती है। मिथुन, मकर, कुम्भ राशि वाली स्त्रियों से या पुरुषों से विवाह-सम्बन्ध उत्तम रहता है। सिंह, कर्क, वृश्चिक राशि वालों से विवाह-सम्बन्ध अशुभ व कलहकारी सिद्ध होता है। मेष, वृश्चिक तथा धनु राशि वाले इनके लिए सामान्य रहते हैं।

इनका आम तौर पर दाम्पत्य जीवन नरम-गरम रहता है। इनका सैक्स व्यावहारिक होता है। यह कोरी भावुकता पर आधारित नहीं होता है। इस राशि वाले की सन्तानें कम होती हैं, जो भी होती हैं उनको कड़े अनुशासन में रखना चाहते हैं।

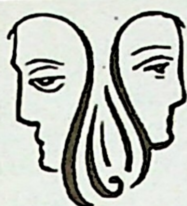
इस राशि की महिलाओं को पुत्र-प्राप्ति का योग 26 वर्ष की आयु के पश्चात् ही बनता है।

जीवन निर्वाह—इस राशि के जातकों को पश्चिम, उत्तर-पूर्व, उत्तर-पश्चिम दिशा या पश्चिमी दिशाएं शुभ रहती हैं। इनका मुख्य जीवन निर्वाह मूल्यांकनकर्त्ता, नाप-तौल विभाग, बैंकर, निर्माता, जौहरी, उपन्यास लेखन, व्यापारी, प्रैस लाइन से होता है। वैसे सब कार्य कर लेना इनकी मुख्य विशेषता है।

रत्न रंग—इस राशि वालों के लिये के शुभ रंग नीला और सफेद हैं। मोती, हीरा एवं सफेद हकीक शुभ रत्न हैं। अनामिका या कनिष्ठिका में इनको धारण करना विशेष लाभप्रद है।

परामर्श—इस राशि वालों को परामर्श दिया जाता है कि वह अपने खाने-पीने का विशेष ध्यान रखें। अधिक परिश्रम न करें। मितव्ययिता एक अच्छी आदत है, पर आवश्यकता से अधिक कंजूसी भी उचित नहीं है।





मिथुन

22 मई से 20 जून

(का की कू घ ड छ के को हा)

सौर मण्डल में जिन 30 रेखाओं को लेकर विभाजन "मिथुन" के नाम से किया गया है, उसका आकार जुड़वां बच्चों के समान दिखलायी पड़ता है। आधुनिक शक्तिशाली दूरबीन लगे कैमरों से लिए गए चित्रों से भी ऐसा ही आकार सामने आया है। कुछ लोग "मैथुन" शब्द से इसका अर्थ लगाते हैं। यह अर्थ एकदम गलत है। ध्यान से देखा जाए तो दोनों आकृतियां सितार-वीणा वादन-सा करती लगती हैं। कैमरे से लिए गए बोस्टन वेधशाला (अमेरिका) से प्राप्त चित्रों को देखने से यह बात और अधिक स्पष्ट हो जाती है।

आकाश मण्डल में तीसरी राशि मिथुन राशि के नाम से जानी जाती है। इसका क्षेत्र 62 अंश से 90 अंश तक स्थित है। भारतीय पद्धति के अनुसार, मध्य जून से मध्य जुलाई तक सूर्य इस राशि पर रहता है, फलतः भीषण गर्मी के उपरान्त वर्षा ऋतु का आगमन इस बीच होता है। जब सूर्य आर्द्रा नक्षत्र पर पहुंचता है, उस दौरान पूरे भारत में मानसून का आगमन हो जाता है। इसके अलावा मृगशिरा और पुनर्वसु नक्षत्र भी इस राशि में ही पड़ते हैं। यह एक विषम राशि कहलाती है, जो आधी चर और आधी स्थिर स्वभाव की होती है। इसका स्वामी बुध, प्रतिनिधि अंक 5 और रंग हरा होता है। यह राशि वायु तत्वप्रधान होती है। इस राशि में जन्म लेने वाले व्यक्ति मध्यम आकृति वाले, श्याम वर्ण के और पश्चिम दिशा से लाभ उठाने वा‍ले होते हैं।

मिथुन राशि शिल्पकला और ज्ञान-विज्ञान से जुड़ी रहती है। शारीरिक और मानसिक रूप स सुदृढ़ यह राशि महत्वाकांक्षी विचारों की भी होती है। राष्ट्रीय ज्योतिष में अमेरिका, उत्तरी अफ्रीका, फ्रांस आदि देश मिथुन राशि के प्रतिनिधि हैं। खाद्य वस्तुओं में ज्वार, मोठ, मूंगफली, तिलहन और दलहन सभी प्रकार के सुगंधित पदार्थ, कागज, स्याही आदि भी मिथुन राशि की देन है। तकनीकी पक्ष के अनुसार—लेखन, पत्रकारिता, प्रकाशन, सम्पादन के अलावा शिल्प, पेन्टिंग, गायन, वादन और खजांची, बिक्रीकर्त्ता, मध्यस्थता करने वाले दलाल आदि का प्रतिनिधित्व भी यह राशि करती है। अगर बुध बलवान् हो तो इस राशि के जातक

विशेष यश और ख्याति प्राप्त करने वाले धनी, लोकप्रिय, समाज और संस्कृति के प्रतिनिधि होते हैं।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, मिथुन राशि का स्वामी ग्रह बुध माना गया है, जो बुद्धि और विद्या का देने वाला है। इसका अंक 5 है। इसके नक्षत्रों में आर्द्रा के चारों चरण, मृगराशि के 3-4, पुनर्वसु के 1-2-3 चरण होते हैं। इस राशि का स्वभाव द्विस्वभाव है। इसका तत्व आकाश है। यह राशि पृष्ठोदय, शीर्षोदय, दोनों प्रकार के उदय होने के कारण ''उभयोदय'' मानी गयी है। इसका लिंग पुरुष है। इसकी दिशा दक्षिण-पूर्व है। रंग हरा है इसका निवास गांव या शयनकक्ष माना गया है। कद लम्बा बतलाया गया है। शरीर में इसे गले और बांहों का स्थान प्राप्त है। यह शरद् ऋतु का स्वामी है। इसका रत्न पन्ना है। प्रकृति पित्त है। इस कारण इसके स्वामी ग्रह का अधिकार पेट, जीभ, फेफड़ों, स्नायु केन्द्रों, पित्त और मांसपेशियों पर है। इस ग्रह का अधिपति देवता विष्णु है। इसका स्वाद अम्ल और मिश्रित है। रक्त और चर्म इसकी धातु हैं। सौर मंत्रिमण्डल में इसको राजकुमार का पद प्राप्त है। इसका आकार त्रिकोण के समान है। इसका आयन दो मास का है। इसका वेद अथर्ववेद है। सिंह, वृष, तुला इसकी मित्र राशियां हैं और कर्क, मेष, वृश्चिक राशियों से इसकी शत्रुता है। बाकी राशियों से इसका भाव समान है।

इस राशि में दो रंग की झलक बतलायी गयी है। इसकी नसें स्पष्ट दिखलायी पड़ती हैं। इसे मिष्ठभाषी और विनोदप्रिय माना गया है। इसकी लाल और बड़ी आंखें हैं। यह बुद्धिमान् और राजनीति में दक्ष है। इसे विद्वान् माना गया है। इसकी शरीर रचना संतुलित मानी गयी है।

प्राचीन काल से ही हमारे विद्वान् पूर्वजों को इस ज्योति-पिण्ड का ज्ञान था। इसकी स्थापना पंचदेवों में की गयी है। महाभारत के भीष्म पर्व में बुध ग्रह का उल्लेख मिलता है।

आधुनिक विज्ञान से इसकी दूरी सूर्य से 351983 मील दूर मानी है। यह सूर्य के सबसे पास है। इसका तापमान 770° फारेनहाईट है। इस तापमान में शीशा और टिन भी पिंघल जाते हैं। इसकी गति 36 मील प्रति सेकण्ड है। बुध पर हरे रंग की परत पड़ी है। यह लगभग 87 दिन में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी कर लेता है।

रूप-रंग—ज्योतिष और विज्ञान से प्राप्त इन निष्कंर्षों के आधार पर मिथुन राशि के जातकों का रूप-रंग और भविष्य प्रायः एकदम स्पष्ट हो जाता है। इस राशि के जातकों का व्यक्तित्व आकर्षक होता हैं। यह स्वस्थ एवं हृष्ट-पुष्ट होते हैं। इनमें बातचीत करने का बड़ा सफल गुण होता है। अपनी वाणी और तर्कों

के प्रभाव से दूसरे को वश में कर लेते हैं। इनका बचपन बड़ा ही अस्त-व्यस्त होता है। बचपन से ही लिखने-पढ़ने के शौकीन होते हैं। दिन-रात परिश्रम करते हैं। यह शारीरिक परिश्रम की अपेक्षा मानसिक श्रम अधिक पसन्द करते हैं। द्विस्वभाव राशि होने के कारण यह किसी एक काम पर, किसी एक बात पर नहीं जमते। उत्साह से कार्य शुरू कर शीघ्र ही ठण्डे हो जाते हैं। एक काम पूरा हो या न हो, दूसरे काम में हाथ डाल देते हैं। इसी दुहरे स्वभाव के कारण योग्यता और क्षमता के बावजूद यह किसी कार्य को सफलता के साथ नहीं कर पाते हैं। इनका स्वभाव बड़ा ही भावुक होता है। बचपन में माता-पिता का सुख इन्हें नहीं के बराबर ही मिलता है। इस राशि के जातक अपने जीवन का निर्माण प्रायः स्वयं ही करते हैं।

स्वभाव–आकाश तत्व रहने के कारण यह कल्पनाओं में बहते रहते हैं तथा प्रायः हवाई महल बनाया करते हैं। राशि उभयोदय होने के कारण यह अपनी किसी बात पर अटल नहीं रहते हैं। सुबह कुछ, तो शाम को कुछ इनकी बात होती है। वैसे यह बहुत ईमानदार होते हैं। इस राशि का रंग हरा होता है। शुभ रत्न इसका पन्ना है। अंग-स्थान गले और बांह में होने के कारण इनको इसी प्रकार के रोग होते हैं, जिनका सम्बंध इन अंगों से है। स्नायुविक विकार, मस्तिष्क रोग, त्वचा रोग, मिरगी, रक्त की कमी आदि प्रमुख हैं।

शुभ तिथियां–5, 14, 23 होती हैं। शुभ दिन बुधवार होता है। बुधवार का प्रथम प्रहर अधिक लाभप्रद है। मिथुन राशि के शुभ माह मई, जुलाई और अगस्त हैं। इस राशि की शुभ दिशाएं उत्तर-पूर्व, उत्तर-पश्चिम हैं।

जीवन-निर्वाह–व्यवसाय से इस राशि के जातक लेखक, इंजीनियर, व्यापारी एकाउन्टेंट, प्रोफेसर, डॉक्टर, सम्पत्ति-दलाल, समाचार-पत्र का मालिक, सम्पादक, तम्बाकू विक्रेता, शिक्षाशास्त्री, इतिहासवेत्ता, राजनेता, प्रकाशक, पुस्तक-विक्रेता होते हैं। सदैव बाजार में यह सफल रहते हैं एवं इनकी धाक रहती है। विदेशी व्यापार में प्रायः सफल रहते हैं।

इस राशि के जातक बहुत अच्छा झूठ बोलने और जनता को विश्वास में लेने में सफल होते हैं। इस राशि के नेता प्रायः सफल रहते हैं। स्वभाव से कंजूस होते हैं। 29-30 साल की आयु के बाद इनके जीवन में स्थायित्व आता है। 40 वर्ष की आयु के बाद पूर्ण रूप से सफल होते हैं। 20-22 वर्ष की आयु में मरण-तुल्य कष्ट पाता है। साधारणतया इस राशि के जातक की आयु 70 वर्ष की होती है। जीवन का अन्तिम, समय सुख और ऐश्वर्य से बीतता है।

इनका दाम्पत्य जीवन कलहपूर्ण और मानसिक तनाव देने वाला होता है, पर अन्त तक निभ जाता है। संतान-सुख उत्तम होता है। इस राशि के जातक नौकरी से संतोष नहीं पाते हैं, उन्नति के लिए सतत् प्रयत्नशील रहते हैं। स्वतंत्र व्यवसाय करना इस राशि के जातक की विशेष इच्छा होती है।

स्वास्थ्य रोग–सामान्यतः स्वास्थ्य उत्तम रहता है। जीवन में कफ, नाक, कान, गला एवं वायु से सम्बंधित रोग घेरे रहते हैं। कई बार शल्य चिकित्सा की भी आवश्यकता पड़ती है।

प्रेम के मामले में प्रायः असफल रहते हैं। जीवन में कई प्रेम-प्रसंग होते हैं, पर पूर्णता प्राप्त नहीं करते। स्त्रियों के प्रति आकर्षण रखते हैं, पर कलंकित होने से डरते भी है। इसलिए असफल हो जाते हैं।

कुल मिलाकर मिथुन राशि का सम्पूर्ण जीवन साधारणतया उतार-चढ़ाव भरा, पर अन्ततः सुखमय होता है। चित्रकला, संगीत, लेखन के क्षेत्र में प्रायः वह अमर हो जाया करते हैं। पैतृक सम्पत्ति-प्राप्ति का योग जीवन में एक बार अवश्य बनता है। ❑



कर्क
21 जून से 23 जुलाई
(ही हू हे हो डा डी डू डे डो)

कर्क स्त्री राशि है। आकाश में इसकी आकृति केकड़े के समान है। स्वभाव बड़ा शुभ है। चर राशि है और इसका उदय पृष्ठोदय है। दिशा दक्षिण है। अंक 2 है। ग्रह-स्वामी चन्द्रमा है। रंग गुलाबी है और कांटे (पतंगों) में गणना है। जाति ब्राह्मण है। शरीर में हृदय पर इसका स्थान है। ऋतु वर्षा है। रत्न मोती है। स्वाद लवण (नमकीन) है। धातु इसकी अस्थि और चर्म है। आकार गोल है। सौर मण्डल में राजा का स्थान प्राप्त है। ग्रह की अधिपति देवी पार्वती हैं। इसकी गणना श्रावण मास में है। अंग्रेजी मास जुलाई-अगस्त हैं। 20 जुलाई से 19 अगस्त, 22 जून से 23 जुलाई, 15 जुलाई से 14 अगस्त इसकी अवधि मानी गयी है। चन्द्रमा एक राशि पर सवा दो दिन रहता है। पुनर्वसु का केवल चौथा चरण (चतुर्थ), पुष्य भी पूर्ण इसमें आता है, आश्लेषा के सम्पूर्ण चरण इस राशि में हैं। इसका निवास बाल-अवस्था माना गया है। इन्द्रियज्ञान जिह्वा है।

सांसारिक ज्योतिष में यह राशि सहानुभूति, कोमलता, सामाजिक सुयश, राजसत्ता का सुख, मिलनसारिता का प्रतीक भी मानी जाती है।

इस राशि के व्यक्ति हृदय और चेहरे से विशाल, परिवर्तनवादी, भ्रमण और यात्राप्रिय होते हैं। यह एक जलराशि है अतः अग्नि तत्व राशियों से इसका प्राकृतिक वैर रहता है। यह राशि झील, नदी के किनारे, तालाब, जलाशय अथवा सुरम्य स्थलों पर निवास करने वाली होती है। सफेद वस्त्र, सोमवार का दिन तथा पूर्ण चन्द्र इसके प्रतिनिधि हैं। इसके अंक 2 और 7 हैं तथा आराध्य देव शिव तथा आराध्य देवी पार्वती अथवा दुर्गा हैं। शरीर भाग में हृदयस्थल, फेफड़े, गुर्दे आदि का अध्ययन इससे किया जाता है। राष्ट्रीय ज्योतिष में चीन, दक्षिणी अमरीका, आस्ट्रेलिया कनाड़ा, रूस, भारत में काठियावाड़, रामेश्वरम्, उड़ीसा आदि का विचार कर्क राशि से करते हैं। आधुनिक युग की पनडुब्बी, नौसेना अथवा समुद्र के गर्भ से किए जाने वाले सभी कार्यकलापों में कर्क राशि के जातकों की महत्वाकांक्षा रहती है। जलमार्ग से माल-असबाब पहुंचाने वाले यातायात, जलपोत, नौका संचालन और नौकायन जैसे प्रतिनिधि कार्य इस राशि की गतिविधियों में आते हैं। इस राशि में पैदा जातक लम्बे अथवा मध्यम कद के गौर वर्ण, क्रोधी तथा संवेदनशील स्वभाव के होते हैं। जहां भी इन्हें सुगमता या ढलान नजर आए, उसी ओर उन्मुख हो जाते हैं। समाजशास्त्र एवं राजनीति में इनका वर्चस्व कायम हो जाता है। बोलचाल में कुशल, मितव्ययी तथा राष्ट्रप्रेमी भी होते हैं। भाग्योदयी वर्ष 28 से 32 वर्ष के बीच तथा कुछ को 40 से 47 वर्ष के मध्य अच्छा समय लौटकर आता है।

चन्द्रमा के विषय में आज विज्ञान से कुछ भी छिपा नहीं है। मनुष्य के चरण उस पर पड़ चुके हैं। चन्द्रमा पृथ्वी के निकट सबसे पास का ग्रह है। इस कारण इस ग्रह का सबसे अधिक प्रभाव पृथ्वी पर पड़ता है। पृथ्वी की रात के कृष्ण और शुक्ल पक्ष चन्द्रमा के उदय और अस्त की गति के कारण होते हैं।

वैज्ञानिक निष्कर्षों और ज्योतिष के तथ्यों के अनुसार, इस राशि के जातक के गुण, स्वभाव, विवाह, दाम्पत्य जीवन, सैक्स, संतान सबका ज्ञान हो जाता है और भविष्य के जीवन-साथी का भी एक अस्पष्ट चित्र सामने आ जाता है, बशर्ते ध्यानपूर्वक गणना की जाए।

चन्द्रमा का सीधा सम्बन्ध मन और मस्तिष्क से है। अतएव चन्द्र ग्रह के कारण इस राशि के जातक भावुक, चंचल एवं काव्यात्मक प्रवृत्ति के होते हैं।

स्वभाव-रंग-रूप—इस राशि के जातक भावुक, चंचल एवं रसिक होते हैं। हथेलियों में इसका स्थान कनिष्ठिका के नीचे माना गया है। विवाह रेखा इसके

मध्य से ही गुजरती है। चन्द्र का तत्व भी जल है। इस राशि के जातक स्त्री-पुरुष दोनों ही सुन्दर होते हैं। रंग प्रायः गौरवर्ण होता है। चेहरा चन्द्रमा के समान गोल और बदन सामान्य होता है, कृशकाय या स्थूल नहीं। इनको बनाव-सिंगार और सौन्दर्य से बड़ा लगाव होता है। भावुकता के कारण छोटी-सी बात भी इनको चुभ जाती है। उसका बुरा मान जाते हैं। इनका सैक्सी जीवन काफी तेज होता है। गुप्त प्रेम बहुत करते हैं। शुक्ल पक्ष में इनमें कामवासना काफी होती है। जलक्रीड़ा में आनन्द का अनुभव करते हैं। इस राशि के जातक कुशल तैराक होते हैं। केकड़ा इनकी राशि का चिह्न है, अस्तु इनकी खाल मोटी होती है, सहनशील अत्यधिक होते हैं। घोर कष्ट या पीड़ा के समय भी उफ नहीं करते। शारीरिक श्रम की अपेक्षा मानसिक श्रम में अधिक विश्वास रखते हैं। यह समय के पाबंद होते हैं। आज का काम कल पर नहीं टालते हैं। इनका शरीर कोमल होता है, पर पंजा मजबूत होता है। यह तुनुकमिजाजी व गर्वीले होते हैं। स्मरण शक्ति बहुत तेज होती है और गृहस्थ जीवन इनको प्रिय होता है। अपने अनुभव सुनाने में बड़ा मजा लेते हैं।

शुभ समय—इनका प्रारम्भिक जीवन-काल अच्छा होता है। विरासत में प्रायः धन-सम्पत्ति मिलती है पर मध्य अवस्था में ही इनका जीवन सुदृढ़ हो जाता है। इसके पहले बचपन के बाद इनका जीवन प्रायः संघर्षमय होता है। घूमने-फिरने का इनको बड़ा शौक होता है। प्रायः लम्बी-लम्बी यात्राएं करते हैं। वृद्धावस्था में प्रायः तीर्थयात्रा या देशाटन पर जाते हैं।

इनका दाम्पत्य जीवन साधारणतया सफल ही रहता है। स्वभाव नरम-गरम रहता है। अपनी संतान व पत्नी पर इनका अनुशासन कम ही होता है। लाड़-प्यार से बिगाड़ दिया करते हैं।

प्रायः इनको हृदय से सम्बन्धित बीमारियां हुआ करती हैं। उत्तर-पश्चिम, उत्तर-पूर्व दिशा में यह सफलता प्राप्त करते हैं। तेल या द्रव पदार्थों का व्यवसाय, यात्रा संयोजक, सेल्समैन, नाविक, बावर्ची, लेखक पत्रकार, गायक, नर्तक, बर्फ से सम्बन्धित कार्य, चीनी, खेती-बाड़ी, रत्न व्यवसायी, घी विक्रेता, जल-कल आदि इनके उत्तम व्यवसाय हो सकते हैं। इनसे ही इनका जीवन सुखमय रहता है।

शुभ दिन, शुभ माह, शुभ वर्ष—इनकी शुभ तारीखें हैं—2, 4, 6, 9, 11, 13, 29, 31। शुभ दिन हैं—सोमवार, मंगलवार एवं शुक्रवार। शुभ माह हैं—फरवरी, अप्रैल, जून, सितम्बर और नवम्बर। शुभ वर्ष हैं—28, 35, 40 45, 55, 65।

पारिवारिक जीवन—इस राशि वाले का पारिवारिक जीवन प्रायः तनाव से भर

जाता है और पति-पत्नी हफ्तों एक-दूसरे से बात नहीं करते हैं। इसके बावजूद दोनों में गहरा प्रेम होता है। इस राशि की स्त्रियां प्रायः सुन्दर होती हैं पर चंचलता अत्यधिक होती है। इनके मन बड़े भावुक होते हैं। रुचि जल्दी-जल्दी बदलती है। इस राशि की स्त्रियां प्रेम में अपने चंचल स्वभाव के कारण ठगी जाती हैं।

इस राशि के जातक कुशल सेल्समैन और राजनीतिज्ञ होते हैं। बातें बनाने में कुशल होते हैं। यौवन काल तक इनका जीवन काफी संघर्षमय होता है। उसके बाद तीव्रता से उन्नति करते हैं। इनके जीवन में 35, 45, 55, 65 वर्ष विशेष शुभ होते हैं। व्यापारी के रूप में चल और अचल सम्पत्ति काफी बनाते हैं।

वृद्धावस्था इनकी नरम-गरम दोनों प्रकार की हो सकती है। प्रारम्भिक जीवन संघर्षमय बिताने के बाद, यौवन काल में सर्वसुख पा लेते हैं। वृद्धावस्था में नीरसता आने के कारण कभी-कभी दूसरों का मोहताज होना पड़ता है। भावुकता के कारण अपना समय स्वयं नष्ट किया करते हैं। उदार हृदय के कारण शत्रु-संख्या कम होती है। मित्रजन, परिजनों का विशाल समुदाय होता है। जीवन उतार-चढ़ाव, संघर्ष की कहानी होती है। कल्पना के लोक में विचरना, आलस्य करना इनका स्वाभाविक दुर्गुण होता है।

कुल मिलाकर इस राशि के जातकों का जीवन सुखमय होता है। केवल थोड़ी समझदारी के बल पर अपने को भाग्यशाली बना सकते हैं। समाज में इनकी प्रतिष्ठा होती है। सफलतापूर्वक जीवन व्यतीत करते हैं। गुप्त शत्रु बने रहते हैं। अधिक समय और धन स्त्रियों के चक्कर में बरबाद करके पछताते हैं। □



सिंह

24 जुलाई से 22 अगस्त

(मा मी मू मे मो टा टी टू टे)

भारतीय ज्योतिष के अनुसार, सिंह पांचवीं राशि है। इस राशि में मघा के चारों चरण, पूर्वाफाल्गुनी के भी चारों चरण तथा उत्तराफाल्गुनी का केवल एक चरण सिंह राशि के अन्तर्गत आता है। यह राशि सबसे तेजस्वी है। चन्द्रमास में इसका माह भाद्रपद है। सौरमास में यही सिंह मास अर्थात् 20 अगस्त से 15 सितम्बर तक माना गया है तथा पूरब-पश्चिम ज्योतिष में इसका दिनांक 23 जुलाई से 23 अगस्त, 15 अगस्त से 15 सितम्बर माना गया है। इस राशि का स्वामीग्रह तेजस्वी

ग्रह सूर्य है। सूर्य के अधिपति देवता स्वयं रुद्र या शिव हैं। सूर्य ग्रह के चारों ओर सारे ग्रह नाच रहे हैं। सूर्य ही ब्रह्माण्ड का नियंत्रण करता है। इस कारण यह राशि समस्त राशियों में सर्वोपरि है। हर राशि के जातक इस राशिं के जातक से सम्बन्ध रखना चाहते हैं।

आकृति शेर के समान, वनराज सिंह निवास गुफा या पहाड़ है। इस राशि का लिंग पुरुष है। जाति क्षत्रिय है। अंक 1 है। स्थिर राशि है। शीर्षोदय में गणना है। तत्व इसका अग्नि है। रंग भूरा है। पद चतुष्पदी है।

अंगस्थान इसका पैर है। प्रकृति मित्र है। दिशा पूर्व है। ऋतु इसकी ग्रीष्म है। रत्न मानक है। स्वाद कटु है। इन्द्रियज्ञान नेत्र हैं। सौरमण्डल में यह राजा (पुरुष लिंग चन्द्रमा भी राजा है पर लिंग स्त्री है) है।

आकाश मण्डल में पांचवीं राशि सिंह का स्थान 120° से 150° के मध्य में है। इस राशि का अधिपति सूर्य और सौर मण्डल का राजा कहलाता है। सिंह राशि के प्रधान तारे मघा, पूर्वाफाल्गुनी और उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के रूप में माने जाते हैं। जब सूर्य इस राशि पर आता है तब बरसात थमने के बाद भाद्रपद महीने का प्रचण्ड सूर्य खाद्यान्नों में खड़ी फसल की उपज को परिपक्वता प्रदान करता है। इस दौरान सूर्य धरती के बहुत पास होता है। सिंह राशि का सूर्य जहां पशु समुदाय के चारे के लिए भी प्रयोजन सिद्धि में सहायक होता है, वहां जंगलों के भयानक जन्तु अपने चरम उफान में होते हैं। इसका अधिपति सिंह यानी शेर अपनी मर्यादा और कट्टरता के लिए विख्यात है, वहां वह अपने प्राकृतिक धर्म और सहअस्तित्व के लिए भी माना जाता है।

व्यवहारजगत् में इस राशि को स्वाभिमानी, स्वतंत्रताप्रेमी, शोर्ययुक्त, उदार और ईमानदार, आत्मविश्वासी भी कहा गया है। आदिकाल से ही यह जन्तु जंगल के राजा के नाम से जाना गया है। यही कारण है कि इस राशि के जातक भी राजयोग यानी सर्वोच्च सत्ता को पाने की होड़ में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देते हैं। महत्वाकांक्षा और अधिकार दोनों ही इनके लिए सम्मान के प्रतीक हैं। अपने शत्रुओं पर हावी रहने वाला सिंह जातक किसी से भी डरकर या दबकर नहीं रहता है। गुलामी और दासता भी उसकी कट्टर शत्रु हैं। इन्हीं लक्षणों से मिलते-जुलते सिंह जातक आज दुनिया भर में नामी-गिरामी जातकों में गिने जाते हैं, वहां प्रशासन से लेकर राजनीति और व्यापार में भी उनका एकमत सामान्य कायम रहता है। किसी के द्वारा दी गयी चुनौती या उलाहना उनके लिए जीवन-मरण का प्रश्न बन जाता है।

अपने सिद्धान्तों में अडिग और अपने उत्तरदायित्व में परिपक्व सिंह राशि को अपने परिवार, स्त्री, पुत्र आदि से विशेष लगाव रहता है। जीवन में चाहे कितनी ही आपदाएं और संकट आ जाएं; सिंह राशि कभी भी गीदड़ों के बीच में सहायता के लिए नहीं जाती है। शरीर विज्ञान के अनुसार, यह राशि आमाशय, उदर और जिगर सहित पावन क्रिया पर विशेष रूप से सक्रिय रहती है, हमारे शरीर का ऊर्जा और ऊष्मा प्रदायक क्षेत्र सिंह राशि के आधिपत्य में आता है। तांत्रिक ज्योतिष में भूमध्य रेखा का सम्पूर्ण गर्म प्रदेश मध्य अफ्रीका, दक्षिण भारत और पूर्वोत्तर में रेगून, मलाया, बर्मा, इटली, रोमानिया, अफगानिस्तान और महाराष्ट्र आदि इसके प्रभाव क्षेत्र में आते हैं। सिंह राशि में पैदा हुए जातक अधिकतर प्रशासक, प्रबंधक, जंगलात या वन सम्बन्धी कार्यों में रुचि रखने वाले, शिकारी, मांसाहारी, खाने-पीने के शौकीन, क्लर्क, लेखक, नाटककार, फिल्म और टी०वी० के अग्रणी नायक बनते हैं।

विज्ञान की दृष्टि से सूर्य का महत्व छिपता नहीं है। सूर्य के विषय में कुछ लिखना सूर्य को दीपक दिखलाना है। सभी पाठकों को इसके गुण और स्वभाव का ज्ञान है। अतएव विज्ञान और भारतीय ज्योतिष की दृष्टि से इस राशि का जो चित्र सामने आता है, वह एकदम समूचा भविष्य एवं वर्तमान स्पष्ट रूप में प्रकट करता है।

स्वभाव–इस राशि के जातकों का कन्धा चौड़ा तथा सिर चौकोर होता है। उसके पंजे मजबूत होते हैं। इसका आकार चतुष्कोण है। इस कारण राशि में शेर के समान स्फूर्ति तथा छल-बल होता है। स्त्रियों की कमर शेर की कमर के समान पतली तथा बल दीखने वाली होती है। नजर बड़ी तेज होती है तथा आंखों में बहुत कुछ कह जाती है। इस राशि के जातक आंखों और प्रभाव से अधिक काम लेते हैं। प्रेमी-प्रेमिका और पति-पत्नी आंखों-ही-आंखों में बात कर जाते हैं। तत्व अग्नि होने के कारण अति क्रोधी होते हैं। स्वभाव क्रूर होता है और बड़ी शीघ्र क्रोधित हो जाते हैं। सब पर अपना अधिकार, रुआब जमाना चाहते हैं। शीर्षोदय राशि के कारण मुंह पर ही सब कुछ कह डालते हैं। जो भी कहते हैं सारपूर्ण एवं सटीक कहते हैं। एक नम्बर के लड़ाकू तथा बहादुर होते हैं।

मारपीट में अपने नाखूनों और दांतों का सबसे पहले और अधिक प्रयोग करते हैं। इस राशि की स्त्रियों का स्वभाव भी उग्र होता है। वह पति व बच्चों पर अपना शासन रखना चाहती है। इस राशि का जातक दबकर नहीं रहता है। क्रोध, अहंकार तथा शूरता इनका विशेष गुण होता है। स्वाद कटु है। इस कारण

कड़वा बोलते हैं। फलतः मित्रों की संख्या कम होती है। इनकी चाल बड़ी अकड़भरी (शेर के समान) होती है। अपने उत्तेजक स्वभाव और दबंग होने के कारण वह परिस्थिति अपने अनुकूल बना लेते हैं। अपने आत्मविश्वास के कारण आज का काम कल पर टाल देते हैं। शेर की ही तरह आलसी होते हैं। एक शिकार मार लिया—फुरसत। जब तक कसकर भूख न लगे तब तक दूसरा शिकार नहीं करता है। इसी तरह इनके सिर पर जब चाल आ जाती है तब यह जी-जान से काम करते हैं, वरना आज का काम कल पर टालते रहेंगे और आराम करते रहेंगे।

इस राशि के जातक प्रबल भोगी होते हैं। इनकी वासना हिंसात्मक होती है, मैथुन के समय नोच-खसोट, उठापटक इनको विशेष प्रिय होती हैं। स्वभाव से निर्भीक और निष्पक्ष होते हैं और शरीर में इनको उदर सम्बन्धी रोग प्रायः होते हैं।

जीवन के प्रारम्भ और यौवनकाल में इनका जीवन सुखमय और सफल होता है; पर वृद्धावस्था में प्रायः इनकी दशा बड़ी हीन रहती है। जीवन में सन्तान पक्ष में लड़कियां अधिक होती हैं। हस्तरेखा में सूर्य का स्थान अनामिका का तल माना गया है। सूर्य रेखा यश की रेखा मानी गयी है।

जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश सब ओर चमकता है, उस प्रकार प्रबल सूर्य रेखा वाले जातक का नाम चहुं ओर चमकता है।

शुभ तिथियां, शुभ वार, शुभ माह, शुभ वर्ष—1, 3, 5, 7, 10, 11, 15, 16, 25, 26, 30 इस राशि वालों की शुभ तिथियां हैं। शुभ वार—रविवार, बुधवार और बृहस्पतिवार (गुरुवार) हैं। शुभ माह—जनवरी, मार्च, जुलाई, अगस्त, अक्टूबर और दिसम्बर हैं। इसकी शुभ दिशा है—पश्चिम, उत्तर-पूर्व, उत्तर-पश्चिम।

व्यवसाय—इस राशि वाले जातक का मुख्य व्यवसाय मुनीम, सेना में, पुलिस में, सर्जन, राजदूत, शिकारी, अग्नि तत्व का निर्माता (जैसे आतिशबाजी, विस्फोटक) आविस्कारक, तानाशाह नेता, अधिकारी होता है। यह सब पर अपना प्रभुत्व जमाकर रखते हैं।

इनका दाम्पत्य जीवन प्रायः कलहपूर्ण होता है। परिवार में अपना अधिकार जमाना चाहते हैं। जरा-जरा-सी बात पर क्रोधित हो जाते हैं। इस राशि के पुरुष का परिवार में बडा आतंक होता है। सन्तान पर अंकुश—अनुशासन रखना, पत्नी पर पाबन्दी लगाना इनका ध्येय होता है। सन्तान कम होती हैं।

इस राशि की महिला अच्छी प्रशासनिक महिला पुलिस होती है। इस राशि की महिला, निडर, निर्भीक एवं साहसी होती है। इस राशि वाले जीवन में कई सम्पर्क रखते हैं।

सिंह राशि के जातक की वृद्धावस्था अपवादस्वरूप ही सुखमय होती है। बाल्यकाल, यौवनकाल जीवन का आकर्षणकाल होता है। अपने शेर जैसे साहसिक स्वभाव के कारण जीवन के हर क्षेत्र में उन्नति करते हैं। इनको उदर सम्बन्धी रोग अधिक होते हैं। इस राशि के व्यक्तियों के शरीर का आकार सिंह के समान होता है। वैसे इनको सब कुछ हजम हो जाता है, पर अपने पेटूपन या स्वाद के लोभ में अधिक खा लेते हैं। अस्तु, नाना प्रकार के रोग सताते रहते हैं।

इस राशि के जातक का वृद्धावस्था को छोड़कर शेष समय उत्तम रहता है। मस्त शेर के समान निर्भीक, तेजस्वी होते हैं। इनको सन्तान का बड़ा ख्याल रहता है और उस पर कड़ी दृष्टि और अनुशासन रखते हैं। जंगल से सम्बन्धित कार्य करने वाले जातक प्रायः सुखी और समृद्ध देखे गए हैं। अंक एक होने के कारण जुआ, सट्टा, लॉटरी में भी इनका भाग्य प्रबल रहता है। मित्र कम होते हैं, जो होते हैं, अच्छे होते हैं। स्पष्टवादिता और सिंह स्वभाव के कारण शत्रुओं की भी कमी नहीं होती। सामने से चेतावनी देकर इनसे जीत पाना कठिन होता है। भ्रमण करना पसन्द करते हैं। यदाकदा पिकनिक, यात्रा पर जाते रहते हैं। इस राशि के जातक के लिए सूर्य की उपासना करना उत्तम रहता है।

कुल मिलाकर इस राशि का जातक शानदार होता है और प्रायः सफल भी होता है। □



कन्या
23 अगस्त से 22 सितम्बर
(टो पा पी पू ष ण ठ पे पो)

पिछली मिथुन राशि के समान ही इस राशि का स्वामीग्रह बुध ही है, पर मिथुन से अलग इसकी आकृति और नक्षत्र हैं। वास्तव में कुछ ग्रहों का प्रभावक्षेत्र इतना विशाल है कि उन्होंने दो राशियों को घेर रखा है। सौर मण्डल में अपनी इस प्रभावशीलता के कारण उनके पल्ले एक से अधिक राशियां आयी हैं। बुध भी एक ऐसा ही ग्रह है। इसने मिथुन और कन्या का राशि क्षेत्र प्रभावित कर रखा है। आकृति हाथ में दीप लिए कन्या के समान है और उत्तराफाल्गुनी के तीन चरण, हस्त के चारों चरण एवं चित्रा के 1-2 चरण शामिल हैं। इसका तत्व पृथ्वी है। शीर्षोदय

राशि है, दिशा दक्षिण-पश्चिम हैं, निवास हरियाली या गीली भूमि है। जाति शूद्र है और शरीर में इसका स्थान कमर है। यह द्विपद राशि है, लिंग नपुंसक है। गुण में रजोगुणी है। ऋतु शरद् है। स्वादमिश्रित रस। धातु रक्त और चर्म हैं। मन्त्रिमण्डल में राजकुमार का स्थान प्राप्त है। आकार त्रिकोण है।

वैज्ञानिक दृष्टि से बुध का विवेचन मिथुन राशि में आ चुका है। अतएव उसका वर्णन दुहराने की कोई आवश्यकता नहीं है।

विज्ञान और ज्योतिष की इस गणना के अनुसार, इस राशि के जातक का विवरण कुछ इस प्रकार बनता है—

आकाश मण्डल की छवि राशि कन्या का विस्तारक्षेत्र 151° से 180° तक निर्धारित किया गया है। नक्षत्र पट्टिका के तीन नक्षत्र उत्तराफाल्गुनी, हस्त और चित्रा इस राशि में पड़ते हैं। मानव-शरीर-युक्त कन्या राशि का स्वामी बुध, वार—बुध और अंक 5 माना गया है। पृथ्वी तत्व से युक्त यह राशि अनेक प्रकार के अन्न, फल, साग-सब्जी, जड़ी-बूटी एवं फूल-पुष्प और हरियाली आदि का प्रतिनिधित्व करती है। आकाश मण्डल में कन्या राशि के तारों को अत्यधिक शुभ और हर्षोल्लासमय मौसम का प्रतीक माना गया है। यही कारण है कि आश्विन मास में जब सूर्य इस राशि में संचार करता है तो पृथ्वी के उत्तरी भाग में भयानक मानसूनी मौसम खत्म हो जाता है। धान, दलहन आदि अनेक प्रकार की वाणिज्यिक फसलों से खेत, खलिहान, मण्डियां आदि भरने लगते हैं। व्यापार का एक नया दौर शुरू होता है। अनेक प्रकार के पर्व-त्यौहार भी आश्विन मास में पितृ पक्ष समाप्त होने के उपरान्त ही शुरू हो जाते हैं। नवरात्रों में भारतीय समाज में कन्याओं की पूजा का आयोजन भी सम्भवतः इस राशि में सूर्य के प्रवेश पर प्राचीन काल से होता है।

रूप-रंग—मिथुन राशि के जातक किसी भी वर्ण (गोरे या काले) के क्यों न हों, उनका शरीर बड़ा कोमल होता है। लिंग नपुंसक होने के कारण पुरुष जातक में स्त्रीत्व के गुण अवश्य अधिक होंगे, उनमें थोड़ा जनानारण होगा। स्त्रियों में मामूली बातों को लेकर कलह होती रहती है। उधर रजोगुणी होने से पत्नी का स्वभाव मेल नहीं खाता है। तामस स्वभाव के कारण पति बराबर पत्नी को परेशान रखता है।

सन्तान-सुख मध्यम नहीं होता है। सन्तान या तो बिल्कुल नहीं होगी या फिर एकदम अधिक होगी। जो भी सन्तान होती है वह क्षीण, दुर्बल और सदा किसी-न-किसी बीमारी का चक्कर लगा रहता है। सन्तान की किसी-न-किसी समस्या से पति-पत्नी परेशान रहते हैं।

परिवार का बजट प्रायः असन्तुलित रहता है। केवल व्यापारी वर्ग, उच्च-

पदाधिकारी एवं स्वतंत्रपेशा व्यक्ति, वकील, डॉक्टर, इंजीनियर, ठेकेदार, फेरी करने वाले जातक ही अपना बजट ठीक रख पाते हैं। बाकी इस राशि के पुरुष परेशान एवं समस्या से घिरे रहते हैं। पारिवारिक खर्च हमेशा कलह का कारण बनता है।

इस सबके बावजूद किसी-न-किसी प्रकार जीवन की गाड़ी खींच ले जाते हैं। इस राशि का गृहस्थ जीवन तनावपूर्ण बना रहता है।

व्यवसाय—इस राशि के जातकों का व्यवसाय, मिथुन राशि के समान ही होता है; पर कुछ जातक राजनेता, भविष्यवक्ता तथा विदेशी व्यापारी, बड़ी कम्पनी के मालिक होते हैं। इनका जीवन प्रायः दो व्यवसायों से सम्बन्धित रहता है। रंग, रसायन एवं ऋतु बदलने का असर इन पर शीघ्र होता है। जीवन के लगभग हर क्षेत्र में सफल रहते हैं।

रत्न एवं रंग—इस राशि का शुभ रंग सलेटी है, हरा और काला भी शुभ रंग है। रत्न इसका पन्ना, ओनेक्स एवं हरा हकीक भी है। यह रत्न सबसे छोटी अंगुली में धारण करना उत्तम रहता है।

शुभ दिन, शुभ वार, शुभ वर्ष—अंक ज्योतिष की सूक्ष्म गणना से इस राशि का अंक 5 है। फलतः दिशा उत्तर-पूर्व, उत्तर-पश्चिम शुभ हैं। शुभ तारीख सामान्यतः 1, 3, 5, 8, 10, 16, 24, 25, 26, 30 हैं। यात्रा के लिए 2, 5, 10, 16, 22 लाभदायक हैं।

रविवार, बुधवार और शनिवार शुभ दिन हैं। जनवरी, मार्च, मई, जुलाई, अगस्त, अक्टूबर और दिसम्बर शुभ माह हैं।

इस राशि के जातक के लिए शुभ वर्ष हैं—25, 30, 34, 42, 51, 60।

इस राशि के जातकों की आयु प्रायः 75 से 80 वर्ष तक जाती है; पर बीच में 20, 30, 38 वर्ष की आयु में भय बना रहता है। इस राशि वालों की वृद्धावस्था मिश्रित फल वाली होती है। सुखी भी हो सकती है और नहीं भी। दुःखी भी हो सकती है और नहीं भी।

बहुत-से संकट और दुःख इस राशि के जातक अपने कोमल स्वभाव, दुहरे स्वभाव और कल्पनाओं में डूबे रहने के कारण पाते हैं। इस राशि के जातक साधारण तौर पर हीनता के शिकार होते हैं।

इस जातक में अगर दृढ़ निश्चय हो तो वह राशिगत प्रभाव और हस्तरेखा को भी बदल सकता है।





तुला

23 सितम्बर से 22 अक्टूबर

(रा री रू रे रो ता ती तू ते)

यह राशि भी वृषभ से अपना सम्बन्ध रखती है। शुक्र अपने दीर्घाकार के कारण 30 रेखाओं के इस अंश पर भी अपना प्रभाव डालता है और इस राशि का स्वामी ग्रह बन गया है। केवल आकृति तथा अन्य गुणों में अन्तर है। आकाश मण्डल में इसके विभाजन की आकृति तराजू के समान है। ऐसा प्रतीत होता है मानो दो बराबर पलड़े वाली आकृति है। इस तराजू के कारण ही इस राशि का नाम तुला है। इसका भी अंक वृषभ राशि के समान 7 है।

चित्रा के 3-4 चरण, स्वाति के चारों चरण तथा विशाखा के 1-2-3 चरण इस राशि के अंक में हैं। इसका माह कार्तिक है। वृषभ स्थिर राशि है और यह चर है। इसका तत्व वृषभ से भिन्न आकाश है। यह पृष्ठोदय नहीं है, शीर्षोदय है। लिंग इसका पुरुष है। दिशा पश्चिम है। निवास-स्थान बाजार व हाट हैं। रंग, रंग-बिरंगा है। द्विपद राशि है। शरीर में इसका स्थान नाभि है। प्रकृति वात और कफ है। ऋतु बसन्त है। स्वाद अम्ल है। सौर मण्डल में मंत्रीपद से सम्बन्ध है। इन्द्रियज्ञान स्वाद है। आकार अष्टकोण है। जाति वैश्य है।

आकश मण्डल में एकदम मध्य भाग में स्थित इस राशि का क्षेत्र 180° से 210° तक निर्धारित किया गया है। इसको प्रकृति के न्याय का तराजू माना गया है, परन्तु आज यही न्याय का तराजू व्यापार का तौल तराजू बन गया है। सूर्य जब इस राशि पर आता है तो शस्य-श्यामला धरती पर अन्न के भरपूर भण्डार होते हैं। व्यापारिक मण्डियां सजने लगती हैं और तीज-त्यौहार, पर्व आदि के अलावा धार्मिक जगत् की गतिविधियां बढ़ जाती हैं। तुला राशि केवल व्यापार की ही अधिनायक नहीं है; बल्कि नीति, न्यायपालिका सहित लोकतंत्र की राजनीति, आज का सिनेमा और कला जगत्, साहित्य संगीत से लेकर उच्चस्तर के सलाहकार एवं सम्पादन सेवाओं से भी जुड़ी रहती है।

इस व्यापारकुशल राशि में शुक्र ग्रह की प्रधान भूमिका रहती है, परन्तु नक्षत्र मण्डल के चित्रा, स्वाति और विशाखा नक्षत्र हैं, जिनके स्वामी क्रमशः मंगल, राहु और बृहस्पति माने जाते हैं, के आधार पर भी यह राशि सौर मण्डल में जीव जगत् को सबसे अधिक प्रभावित करती है। विश्व की कुल जनसंख्या में एक-चौथाई जातक

तुला राशि के हैं। अधिकांश जातकों के नाम भी देवी-देवताओं के प्रतीकात्मक नामाक्षर से रखे जाते हैं। वामपंथी विचारों की बजाए इस राशि के जातक धर्म-कर्म और श्रद्धा-विश्वास की ओर अटूट रूप से अपने व्यवहार में सम्मिलित करते हैं। तुला राशि अन्य सभी राशियों के लिए एक पुल जैसा सम्बन्ध बनाए रखती है। यही कारण है कि राजमहल से लेकर झोपड़ी तक आपको तुला राशि के जातक अपने कार्य या व्यापार में तत्पर दिखायी देंगे। राष्ट्रीय ज्योतिष में पुर्तगाल, मध्य अमेरिका, अरब देश बगदाद से लेकर भूमध्यरेखीय प्रदेशों में इसका प्रभाव रहता है। भारत में राजस्थान, बिहार, कलकत्ता और बम्वई (मुम्वई) जैसे महानगर तुला राशि का प्रतिनिधित्व करते हैं।

इस राशि में पैदा जातक देखने में सुन्दर, लम्वे या मध्यम कद के शांतिप्रिय, प्रसन्न हृदय और बाह्य एवं आंतरिक रूप से चैतन्य रहते हैं। वाणिज्य, व्यापार से लेकर राजनीति, संगीत और क्रय-विक्रय में इनका विशेष रुझान होता है। वकील, जज, कलाकार, गायक, राजदूत और परामर्शदाता भी इस राशि के जातक देखे गए हैं।

इसके स्वामीग्रह शुक्र का वैज्ञानिक विवेचन वृषभ राशि में दिया जा चुका है। अतएव इसका वर्णन पुनरावृत्ति होगी। पाठकगण अपनी सुविधा के लिए देखें वृषभ राशि।

ज्योतिष और वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर इस राशि के जातक का जीवन इस प्रकार उभर कर आता है—

इस रूप में तुला राशि के पुरुष अत्यन्त भाग्यवान् होते हैं।

इस राशि के व्यक्ति वृषभ राशि से ही सम्बन्धित जीविका के साधन अपनाते हैं, पर इनमें और वृष राशि में एक अन्तर होता है। इसका कारण है, इस राशि का अपना तुला स्वभाव। तुला स्वभाव के कारण वह सब काम खास तौर से व्यापार जोर-शोर से करता है। वह अपने व्यापार के कार्य में सफल भी होता है। अपने कार्य को समय पर और निश्चित ढंग से करने में निपुण होता है। न्यायालय के कामों में निष्पक्षता और सही निर्णय देने में नाम कमाते हैं।

रत्न, रंग और स्वास्थ्य—इसका रंग रंग-बिरंगा है। नाना प्रकार के सभी रंग, विशेष रूप से नीला और सफेद, रत्न इसका हीरा है।

इस राशि के जातक का स्वास्थ्य सामान्यतः ठीक रहता है। मिरगी, नेत्र, गुप्त रोग, मूत्ररोग, कामुकता, मधुमेह, गुर्दे से सम्बन्धित रोग हो जाया करते हैं। इसके बावजूद यह रोग से शीघ्र मुक्ति पा जाते हैं।

शुभ तिथियां, शुभ दिन, शुभ वार, शुभ माह, शुभ वर्ष—इस राशि के जातक

के लिए 2, 4, 6, 9, 15, 18, 20, 24, 27, 29, 31 तारीखें शुभ हैं। शुभ दिन–सोमवार, मंगलवार और गुरुवार हैं। शुभ माह हैं–फरवरी, अप्रैल, जून, नवम्बर। शुभ वर्ष हैं–25, 30, 34, 42, 51।

इस राशि के जातक का जीवन तीनों कालों–बचपन, यौवन, वृद्धावस्था में सामान्यतः ठीक रहता है। इतना अवश्य है कि इस राशि के व्यक्ति अपने जीवन का स्वयं निर्माण करते हैं और इन्हें सफलता मिलती है। जीवन में अधिकांश सफलतम पुरुषों की राशि तुला ही है।

रूप-रंग और स्वभाव–इस राशि के जातक न्याय और आदर्श को बड़ा महत्व देते हैं। धार्मिक परम्पराओं और समाज के रिवाजों का यह उल्लंघन नहीं करते हैं। इनका कद प्रायः मध्यम होता है। नाक व नक्शा भी मध्य स्तर का होता है। वाक्पटु (वार्णिक) होते हैं। ललाट सुन्दर, आंखें बड़ी सौम्य होती हैं। इनका शरीर-निर्माण बड़ा सन्तुलित होता है। इस राशि कीं स्त्रियां बड़ी आकर्षक और बात बनाने की कला में प्रवीण होती हैं।

वणिक वृत्ति के कारण यह अपना स्वार्थ हर काम में देखते हैं। बिना नाप-तौल किए न ही कोई काम करेंगे और न ही कोई कदम उठाएंगे। इनका हर क्रियाकलाप नपा-तुला होता है। यह बड़ी ही सरलता से आदमी को तौल लेते हैं कि उसके भीतर क्या है? मनुष्य को पहचान लेने में यह बहुत पारखी होते हैं। बात शिष्ट स्वभाव से करते हैं। इस राशि की स्त्रियों में धार्मिक प्रवृत्ति बहुत होती है। स्त्री-पुरुष दोनों शांत एवं मृदु स्वभाव के होते हैं। यह कल्पनाशील नहीं होते और न ही हवाई किले बनाते हैं, वरन् एकदम ठोस और सादा व्यवहार से कार्य करते हैं। अपना काम समय पर करते हैं और समय के पाबन्द होते हैं।

दाम्पत्य जीवन, जीविका–इस राशि वालों का दाम्पत्य जीवन अगर पुरुष तुला राशि है तो बड़ा सन्तुलित होता है। अगर पति की तुला राशि नहीं है, पत्नी की है, तो वह भरसक अपना दाम्पत्य जीवन सन्तुलित रखने की चेष्टा करेगी, जितना उससे हो सकेगा, वह करेगी और अगर पति उसकी सलाह मानेगा तो वह अवश्य ही दाम्पत्य सुख प्राप्त करके रहेगा अन्यथा नहीं।

नपा-तुला दाम्पत्य जीवन, न अधिक प्यार, न ज्यादा प्रगाढ़ता और न ही अति का मनमुटाव और नपा-तुला समुचित शोचनीय सैक्स और बीमारी तथा सन्तुलित परिवार इस व्यक्ति का होता है। एक प्रकार से इस राशि के लोग आदर्श दम्पति होते हैं, सन्तान में एकदम परिवार नियोजन का पालन करते हैं। बड़ा ही सन्तुलित परिवार होता है।

❑



वृश्चिक

23 अक्टूबर से 21 नवम्बर

(तो ना नी नू ने नो या यी यू)

यह मेष राशि के साथ की राशि है। इसका अंक भी 9 है और स्वामीग्रह मंगल है। इस राशि में विशाखा नक्षत्र का चतुर्थ चरण, अनुराधा के चारों चरण तथा ज्येष्ठा के चारों चरण आते हैं। यह स्थिर राशि है। तत्व जल है। शीर्षोदय है। दिशा पश्चिम है। लिंग स्त्री है। जाति ब्राह्मण है। निवास-स्थान पेड़ या दिन है। योनि कीट है। रंग काला है। शरीर पर इसका स्थान गुप्तांग है।

सौर मण्डल में इसका आकार डंक उठाए बिच्छू के समान है। इस कारण इसका नामकरण (बिच्छू) वृश्चिक है।

इसके स्वामीग्रह मंगल का वैज्ञानिक विश्लेषण मेष राशि में आ चुका है। पाठक वहां देख सकते हैं।

इस प्रकार ज्योतिष और विज्ञान के आधार पर इस राशि का विवरण इस प्रकार बनता है—

राशि मण्डल की आठवीं राशि वृश्चिक का नभमण्डल में क्षेत्र 210° से 240° तक माना गया है। जुलाई से अक्टूबर के मध्य की रात्रियों में विशालकाय वृश्चिक राशि को रात्रि के समय पूर्वी आकाश में साफ-साफ देख सकते हैं। इसका तारा समूह एक बिच्छू के जैसा आकार लिए रहता है। नक्षत्र मण्डल के विशाखा, अनुराधा और ज्येष्ठा नक्षत्र इस राशि-क्षेत्र में आते हैं जिनके स्वामी क्रमशः बृहस्पति, शनि और बुध हैं मंगल ग्रह इस राशि का अधिपति होता है। सौर मण्डल के ग्रहों में सबसे अधिक साहसी, बलवान् होता है। सामाजिक व्यवस्था में मंगल ग्रह जहां व्यवस्था और अनुशासन का नियामक है; वहां सेनानायक बनकर अपने अधिकार क्षेत्र और उत्तरदायित्व की रक्षा करता है।

प्रकृति तत्व के अनुसार, यह एक ऐसी जलराशि है, जिसमें अग्नि (मंगल) का भी समावेश रहता है अर्थात् सभी ज्वलनशील, घुलनशील आग्नेय तरल पदार्थों सहित विभिन्न प्रकार के रसायन तेल और तरल गैस आदि भी इस राशि के पदार्थ होते हैं। वृश्चिक राशि बृहत्काय राशि मानी जाती है।

व्यावहारिक जगत् में यह राशि अनुराग, आसक्ति और मैत्री-सम्बन्धी की भी

प्रतीक होती है। अगर मंगल ग्रह खराब हो तो इस राशि के जातक निकृष्ट और खतरनाक कार्यक्षेत्र से जुड़े रहते हैं। चूंकि यह शीर्षोदय और समराशि है, अतः इसके भाग्योदय के लिए 30, 40, 50 वर्ष के दायरे में सफलताएं अधिक मिलती हैं। मंगलवार और अंक 9 सहित 3 अथवा 6 भी इसके लिए भाग्यशाली होते हैं। राष्ट्रीय ज्योतिष में नार्वे, मास्को, वाशिंगटन लिवरपुल, जर्मनी, शिकागो सहित दक्षिण भूभाग के समुद्र और डेल्टाओं से आच्छादित क्षेत्र भारत में सिंध और गंगा मैदान, पंजाब, उत्तर प्रदेश, पश्चिमी बंगाल क्षेत्र वृश्चिक राशि के नियंत्रण में रहते हैं।

वृश्चिक राशि की तुलना प्रायः विषैले जन्तु बिच्छू से की जाती है, जोकि अपना प्राकृतिक स्वभाव कभी नहीं त्यागता है। प्राकृतिक अवस्था यह राशि उदारता, परिश्रम, स्पष्टवादिता, विचारशीलता और सदैव ही आशावादी दृष्टिकोण का परिचायक है। प्रतिभाशाली इंजीनियर मैकेनिक, अनुसंधानकर्त्ता, गणितज्ञ, ज्योतिषी, दंत चिकित्सक, कैमिस्ट, ड्रगिस्ट और राष्ट्रीय स्तर पर जासूसी करने वाले ख्यातिप्राप्त जासूस, मंत्रज्ञ, जादूगर और भूगोल विशेषज्ञ से लेकर लेखक, साहित्यकार और आलोचक, आधुनिक जगत् में अण्डरवर्ल्ड के बादशाह, राजनीतिक ठग आदि भी वृश्चिक राशि की देन है।

वृश्चिक राशि की महिलाएं भी कर्मठ और जीवट्धारी होती हैं। संवेदनशीलता और उग्रता भी मंगल ग्रह के कारण विद्यमान रहते हैं। बौद्धिक एवं रहस्यमय विमान में ये उन्नति हासिल कर सकते हैं। कार्यशैली में अगर व्यवधान, झंझट न आए तो अपूर्व ख्याति अर्जित कर सकते हैं।

रूप-रंग, स्वास्थ्य और दाम्पत्य जीवन—इस राशि के अधिकांश स्त्री-पुरुष श्यामल होते हैं। सामान्य कद-काठी के होते हैं। उनके हाथ-पैर बिच्छू के समान शनैः-शनैः कार्य करते हैं। स्वभाव कुटिल होता है तथा बदला अवश्य लेता है। कुछ इस राशि के जातक, स्वस्थ हृष्ट-पुष्ट तथा मोटे होते हैं। नाक सुतवा होती है। चेहरा तेजस्वी होता है; पर बहुत साहसी, तेजस्वी और क्रोधी होते हैं। यह बहुत अवसरवादी होते हैं, समय पड़ने पर पैर छूना और काम निकल जाने पर जूते मारने के लिए तैयार हो जाना इनके लिए साधारण बात है। अपने रिश्तेदारों और मित्रों को भी डंक मारने से नहीं चूकते हैं। व्यंग्य-बाण छोड़ना, दूसरों का उपहास करना इनका विशेष स्वभाव होता है। जवाब के बहुत ही कटु होते हैं। गजब की चालाकी और फुर्ती इनमें होती है। अपना वार कर छुप जाते हैं। ऐसा दिखावा करते हैं कि जैसे कुछ किया ही नहीं है। इस राशि का जातक अपराध। हो जाने पर शीघ्र पकड़ में नहीं आता है।

इस राशि का जातक ज्यादा बीमार नहीं पड़ता है। फिर भी ब्लड प्रेशर, गरमी, बवासीर, नासूर, कैंसर आदि रोग इसे हो सकते हैं। इस राशि की स्त्रियों को मासिक धर्म की गड़बड़ बराबर बनी रहती है। साधारणतया इस राशि के जातक को कड़वी, नशीली चीजें शीघ्र हजम हो जाया करती हैं।

व्यंग्य-बाण या डंक मारने की अपनी आदत के कारण इस जातक के दाम्पत्य जीवन में आए दिन कलह होती रहती है। इस राशि के पति प्रायः व्यंग्यात्मक व्यवहार पत्नी के साथ कर उसे दुःखी रखता है। इस राशि की पत्नी अपने पति को इस प्रकार के व्यंग्य बोलेगी कि उसका दिमाग खराब हो जाएगा। कटु व्यंग्य के कारण आए दिन उठा-पटक होती रहती है। केवल कर्क और इस राशि की पटरी बैठ जाती है। एक कछुआ (कड़ी खाल) उस पर बिच्छू (वृश्चिक) का क्या असर। फिर भी जीवन की गाड़ी लड़ते-झगड़ते खींच ले जाते हैं। इस राशि का जातक प्रायः परस्त्रीगामी होता है। दूसरों के दिल में घुस जाना इसका स्वभाव है। यह विशेष रूप से विवाहित स्त्रियों से अपना सम्पर्क बढ़ाता है। इस राशि की स्त्री जातक प्रायः कामुक होती है, पर अवैध सम्बन्ध प्रायः नहीं होते हैं। इसका व्यवहार कुछ ऐसा होता है कि इस राशि की महिला में व्यंग्य-बाण होने के कारण पुरुष जातक कतराते हैं।

संतान यह अधिक पैदा करता है। यह व्यक्ति झूठ बोलने में बड़ा ही पटु होता है। राजनीति में इसी कारण यह पुरुष बहुधा सफल हो जाया करता है। कुल मिलाकर इसका दाम्पत्य जीवन अत्यन्त कलहपूर्ण होता है।

व्यवसाय, रत्न और रंग–मेष राशि के समान इसके भी व्यवसाय वैसे ही होते हैं। इस राशि का जातक साहित्य के क्षेत्र में अच्छा व्यंग्यकार हो सकता है। सेना में, पुलिस में अधिक सफल होता है। युद्ध-सामग्री तैयार करने वाला, औषधि निर्माता, रसायन व व्यापारी होना लाभदायक रहता है। इसके अलावा साधारण व्यापार में भी जम जाता है।

काला रंग इसका प्रिय रंग है। रत्नों में मूंगा, लालड़ी और लाल हकीक इसके विशेष रत्न हैं।

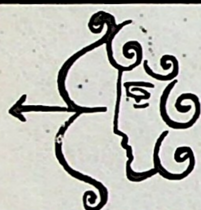
शुभ दिन, शुभ तिथियां, शुभ वार, शुभ माह तथा शुभ वर्ष–1, 3, 4, 6, 9, 11, 12, 15, 19, 21, 24, 25, 28, 31 शुभ तारीखें हैं। शुभ दिन–सोमवार, मंगलवार, बृहस्पतिवार (गुरुवार) हैं। फरवरी, मार्च, अप्रैल, जून, जुलाई, नवम्बर शुभ माह हैं। अपने जीवन में 15, 30, 35, 45, 46, 55वें वर्ष में कष्ट पाता है। शुभ वर्ष–25, 40, 45 हैं। जीवन का प्रारम्भिक भाग (बचपन) कष्टमय होता है,

युवावस्था में काफी प्रगति करते हैं; पर स्वजन का दुःख भी देखते हैं। वृद्धावस्था में प्रायः शान्त जीवन व्यतीत करते हैं। इनके पास वृद्धावस्था तक काफी धन हो जाता है। इसलिए यह वृद्धावस्था में किसी के आगे हाथ नहीं फैलाते हैं।

इस राशि का जातक विदेश यात्रा से लाभ प्राप्त कर सकता है। इस राशि की जातक महिला शुक्रवार का व्रत रखे तो उसे पुत्र संतान अवश्य प्राप्त होती है। यह राशि अपने जीवन के 32वें वर्ष में विशेष रूप से उन्नति करती है। इस साल वह अपने जीवन का स्वतंत्र निर्णय करने में समर्थ हो जाता है। इस वर्ष तक जातक अगर स्वस्थ रहा तो 75 वर्ष की आयु अवश्य ही पाता है।

इस राशि के शत्रु इसकी डंक मारने की आदत के कारण बहुत होते हैं। अपने पर नियंत्रण कर यह बहुत-से अपने काम बिगड़ने से बचा सकता है। वैसे इस राशि वाले का जीवन मध्यम सुख वाला तो निंश्चित रूप से होता है। इस राशि के जातक का भाग्योदय निश्चित रूप से 35 वर्ष की आयु के पश्चात् होता है।

❑



धनु
22 नवम्बर से 21 दिसम्बर
(ये यो भा भी भू धा फा ढ़ा भे)

सौर मण्डल में इस राशि की आकृति को आकाश में देखने पर ऐसा लगता है, मानो अगला भाग किसी मनुष्य का है, जो अपने हाथ में तीर ताने है और पिछला भाग घोड़े के समान लगता है। इस कारण इस राशि का नाम धनु किया गया है। यह राशि वर्ग की नौवीं राशि है और इसका सभी राशियों में नौ के कारण महत्व है। इस राशि का अधिपति देवता ग्रह गुरु या बृहस्पति है। बृहस्पति देवताओं के गुरु हैं, बृहस्पति को कालपुरुष में ज्ञान के स्थान पर माना गया है। इस ग्रह के बारे में कहा गया है कि यह शरीर से सामंत है, नेत्र शहद के समान हैं, गौर वर्ण और श्याम केश तथा लम्बे कद का है।

मधुनिभनयनो मतिमानुपचित मांसः कफात्मको गौरः।
ईषत्पिंगल केशो भेद सारो गुरुदीर्घः॥

इसका माह पौष (दिसम्बर-जनवरी) माना गया है। 20 दिसम्बर से 19 जनवरी तक माना गया है। द्विस्वभाव की राशि है। पृष्ठोदय है। तत्व अग्नि है। दिशा

उत्तर-पश्चिम है। लिंग पुरुष है। इसका निवास युद्धस्थल माना गया है। इसका प्रथम भाग द्विपद और पिछला भाग चतुष्पद माना गया है। एक यही राशि है जो आधी द्विपद और आधी चतुष्पद है। शरीर में इसका स्थान जांघ और नितम्ब में माना गया है। इसकी ऋतु हेमंत है। रंग सुनहरा है। सत्वगुणी है। अधिपति ग्रह का रत्न "पुखराज" है। ग्रह के देवता स्वयं ब्रह्मा या शिव हैं। मंत्रिमण्डल में शुक्र के समान मंत्री-पद प्राप्त है। आकार कांति व्रत के समान है। अंक 3 है। वैदिक कालीन आर्यों को भी इसका ज्ञान था। तंत्र दीप में बृहस्पति (गुरु) के जन्म का उल्लेख है। महाभारत में वेदव्यास ने भी इसका वर्णन किया है।

आकाश मण्डल में राशि चक्र की नवीं राशि धनु का क्षेत्र 241° से 270° दक्षिण देशांतर माना गया है। धनु का पर्याय "धनुष" इसलिए प्रचलित है, क्योंकि इसके क्षेत्र में पड़ने वाले मूल, पूर्वाषाढ़ा और उत्तराषाढ़ा नक्षत्र एक धनुर्धारी की आकृति बनाते हैं। इसके अलावा सूर्य जब इस राशि में पहुंचता है तो कृषि-कार्य से निबट कर कृषकगण जंगल में शिकार के लिए निकल जाते थे। भौगोलिक स्थिति के अनुसार पौष मास का सूर्य जो कि पृथ्वी से अत्यधिक दूर होता है, धरती पर चारों ओर शीत ऋतु के प्रकोप के कारण घरों में अग्निमय वातानुकूल की स्थिति पैदा करता है। इस मौसम में ही सारे विश्व में कुछ ऐसे पर्व मनाए जाते हैं, जो जीवन यापन के अलावा.साहसिक कार्यों से भी जुड़े रहते हैं। यही कारण है कि धनु राशि के जातक उच्च स्तर के बौद्धिक सम्पदावान्, समृद्ध जीवन-शैली वाले, सभी प्रकार के सांसारिक और भौतिक सुखों के कुशल प्रबंधक और खाने-पीने के विशेष शौकीन होते हैं।

धनु राशि सम देह वाली, विशाल सिर और चौड़े माथे से युक्त पुरुष स्वभाव की गम्भीर और मनस्वी राशि है। वैसे यह अग्नि तत्व प्रकृति की है, परन्तु जीव संज्ञक होने से इसका क्रोध अकारण नहीं, बल्कि किसी-न-किसी तथ्य से जुड़ा रहता है। धनु राशि सौम्य और कठोर धर्म वाली और शांत लक्षणों से युक्त दोहरे स्वभाव वाली होती है। यह बाल्यावस्था से ही बलवान्, मेधावी और रजोगुणी और चंचल प्रकृति की मानी गयी है। शरीर भाग में जंघाएं और उदर से नीचे का भाग इस राशि के प्रभाव क्षेत्र में आता है। देवगुरु बृहस्पति इस राशि का प्रतिनिधि ग्रह है। इसका वार गुरु और अंक 3 है। इस राशि से युद्ध-सम्बन्धी सामग्री प्रक्षेपास्त्र और तीर, तलवार, तोप आदि हथियार से लेकर दंड प्रक्रिया, न्याय और साहित्यिक मीमांसा जैसे बौद्धिक कार्य भी सम्बन्ध रखते हैं। अश्व वाहन इसके प्रतिनिधि जन्तु हैं। जबकि व्यापार जगत् में गेहूं, चना, खांड, कागज, ज्ञान-विज्ञान के अभिलेख

के अलावा जीवनरक्षक दवा, जड़ी-बूटियों, नमक, आलू तथा विभिन्न प्रकार के मीठे स्वादिष्ट फल एवं तिलहन आदि भी प्रतिनिधि जिंस और भोज्य सामग्री है। राष्ट्रीय ज्योतिष में स्पेन, अरब, हंगरी, ब्राजील और मध्य अमेरिका, रूस, जर्मनी आदि सहित इंग्लैंड और हॉलैंड, स्विट्जरलैंड जैसे हथियार बनाने वाले देश इसके प्रभाव-क्षेत्र में आते हैं। इस राशि में पैदा जातक दार्शनिक विचारों के धनी होते हैं। ईश्वर एवं देवी-देवताओं पर उनकी दृढ़ आस्था रहती है। अपने लक्ष्य की प्राप्ति में वे चेष्टाशील रहते हैं। किसी भी विषय के गहन विद्वान् और साहित्य के ज्ञाता धनु जातक होते हैं। आज के समय में उच्चकोटि के सलाहकार, महंत-पुजारी, वकील, डॉक्टर और कलाकार, उपदेशक, वैद्य आदि धनु राशि का प्रतिनिधित्व करते हैं।

विज्ञान के अनुसार, इस ग्रह का आकार इतना विशाल है कि सौर मण्डल के सभी ग्रहों के आकार के दुगने से भी अधिक है। पृथ्वी से कई गुना बड़ा है। सूर्य से इसकी दूरी लगभग पचास करोड़ मील की है। यह प्रति घण्टे 25000 मील की गति से घूम रहा है। वैज्ञानिकों का मत है कि बृहस्पति के बादलों के नीचे विशाल क्षेत्र और सामान्य तापमान वाला वातावरण है। वहां के वायुमण्डल में अमोनिया और हाइड्रोजन के साथ पानी भी है। इस कारण वहां जीवन की सम्भावना अधिक है। इसी कारण भारतीय ज्योतिष में इसे "जीव" माना गया है। वहां तेज गति और कम आयु वाले जीवों की सम्भावना है। इस कारण इसका रंग सुनहरा बतलाया गया है।

इस ज्योतिष विज्ञान विवेचन के अनुसार, इस राशि के जातकों का विवरण इस प्रकार बनता है–

रूप-रंग, स्वभाव और स्वास्थ्य–इस राशि के जातक अच्छे खासे डीलडौल वाले और आकर्षक होते हैं। इनकी आकृति प्राचीन आर्यो के समान तथा यूनानी-सी लगती है, खास तौर से इस राशि के जातक की जांघें बड़ी सुडोल होती हैं। इसकी जंघाओं में मछलियां पड़ती हैं। नेत्र सुन्दर और सीना प्रायः चौड़ा होता है। यह शानदार ढंग से चलते हैं मानो युद्धस्थल की ओर जा रहे हों। इस राशि की स्त्रियों की चाल बड़ी ही गर्वीली होती है। सामान्य रूप से इस राशि के जातक सुदर्शन होते हैं। भिन्नता के बावजूद इनमें चुम्बकी ा आकर्षण होता है।

इस राशि के जातक फुर्तीले, चुस्त, व ार्यकुशल, वाक्पटु और हमेशा मन लगाकर अपना कार्य करने वाले होते हैं। इनका निश्छल हृदय होता है और तीर के समान गति से यह अपना लक्ष्य प्राप्त करने के लिए सर्वदा क्रियारत रहते हैं। दूसरों को जल्दी पहचान लेते हैं।

इनका स्वभाव क्रोधी होता है। थोड़ा-सा भी हास्य इनको पसन्द नहीं है। अपने मान-अपमान का ध्यान रखते हैं। थोड़ी-सी बात पर इतने क्रोधित हो जाते हैं कि इनको होश नहीं रहता है कि क्या कर रहे हैं या क्या कह रहे हैं? बहुत शीघ्र क्रोधित हो जाते हैं। समय के पाबन्द होते हैं। कठोर परिश्रम करते हैं। दिखावा, ढोंग, तड़क-भड़क, साज-सज्जा इनको अच्छी नहीं लगती। यह साधारण जैसे हैं वैसे ठीक रहते हैं। इस राशि की स्त्रियां विशेष शृंगारीय नहीं होती हैं। अपने से विपरीत लिंग वाले के प्रति प्रबल आकर्षण रखते हैं, और निभाते हैं। विश्वासघात, छलावा नहीं करते हैं। इसमें कामवासना होती है, पर संयमित एवं शिष्ट ढंग से। इस राशि की महिलाएं प्रायः पतिव्रता होती हैं। व्यापारी किस्म की भावना इस राशि के जातक में अवश्य होती हैं। अपनी इच्छाएं, भावनाएं गुप्त रखते हैं। चुपचाप रहकर उन पर अमल करते हैं। बहुत सोच-समझकर यह अपनी योजना बनाते हैं। अधिकतर चुप रहकर दूसरों की बात सुनते हैं, अपनी नहीं कहते।

प्रायः हृदय रोग, बायीं आंख, सीना, किडनी (गुर्दे), कान की बीमारी इनको होती हैं। विशेष रूप से जांघों में इनको नाना प्रकार की पीड़ा हो सकती है।

जीविका, दाम्पत्य जीवन, रत्न और रंग—इनका स्वयं का व्यवसाय या जीविका का साधन स्वयं के कारण चला होता है। भवन निर्माता, वैज्ञानिक, बैंकर, डिजाइनर क्लर्क, लेखक, अध्यापक, उच्च पदाधिकारी, ज्योतिषी, वायुयान चालक आदि के रूप में कार्य करते हैं। इनका प्रत्येक व्यवसाय किसी-न-किसी प्रकार की शिक्षा अथवा ज्ञान से ही सम्बन्धित होता है। इनका कार्यक्षेत्र विशाल होता है, जन-सम्पर्क का दायरा काफी बड़ा होता है।

सामान्यतः इनका दाम्पत्य जीवन सुखी होता है, यह इसके क्रोध या कामवासना की अधिकता के कारण कलहपूर्ण होता है। अपने द्विस्वभाव और द्विपद या चतुष्पद के कारण टकराव होता रहता है। फिर भी गाड़ी चल जाती है। सन्तान को नियंत्रण में रखते हैं और सन्तान भी अधिक होती हैं।

इनका प्रारम्भिक जीवन साधारण-सा होता है, पर 40-45 वर्ष की आयु के बाद इनके जीवन में स्थायित्व आ जाता है। वृद्धावस्था प्रायः सुखद होती है। आयु लगभग 75-80 वर्ष तक मानी गयी है।

इनका शुभ रत्न पुखराज, सुनहरा या पीला हकीक है। भाग्योदय एवं संकटों से बचने हेतु इन नगों का धारण करना ठीक रहता है।

शुभ दिशा, तिथियां, वार, माह तथा वर्ष—इनकी शुभ दिशा—दक्षिण-पश्चिम

और दक्षिण-पूर्व हैं। 1, 3, 5, 7, 9, 11, 14, 21, 23, 27, 30 तारीखें शुभ हैं। रविवार, मंगलवार, बृहस्पतिवार (गुरुवार) शुभ दिन हैं। मार्च, मई, जुलाई, अक्टूबर, दिसम्बर इनके शुभ माह हैं। 3, 12, 21, 30 इनके लिए शुभ वर्ष हैं।

इस राशि के जातक पैसे को बड़ा महत्व देते हैं। कंजूस होते हैं तथा राजनीति के क्षेत्र में अपने उग्र स्वभाव के कारण आलोचना का केन्द्र बने रहते हैं। इस राशि की स्त्रियां स्वयं नौकरी करती हैं। उत्तम होती हैं।





मकर

22 दिसम्बर से 19 जनवरी

(भो जा जी खी खू खे खो गा गी)

ज्योतिष में इस राशि का आकार मगरमच्छ बतलाया गया है। इसका स्वामीग्रह सौर मण्डल का सबसे अधिक रहस्यमय ग्रह शनि है। इसका अंक 8 है। शनि के बारे में पुरातन धारणा है कि यह क्रूर एवं पाप ग्रह है। इसका समय सायं माना गया है। 20 जनवरी से 19 फरवरी, 22 दिसम्बर से 19 जनवरी, 15 जनवरी से 14 फरवरी माना गया है। इसमें उत्तराषाढ़ा के तीन चरण, श्रवण के चारों चरण व धनिष्ठा के दो चरण सम्मिलित हैं। राशि चर है। तत्व पृथ्वी है। पृष्ठोदय है। जाति शूद्र है। दिशा उत्तर है। केवल इसका प्रथम भाग चतुष्पद है। निवास—वन है; जहां पर पर्याप्त जल है, यह माना गया है। शरीर में इसका स्थान पैर माना गया है। इसके ग्रह शनि का अधिपति देवता यम। रुद्र माना गया है। इसका इन्द्रियज्ञान स्पर्श है। लिंग स्त्री है। इसका ग्रह सौर मण्डल में दूत माना गया है। यह धातु में स्नायु माना गया है।

ज्योतिष में संकेतों और प्रतीकों के रूप में दिए गए विवरण का वास्तविक अर्थ आज की वैज्ञानिक खोज में भी मिलता है। हजारों वर्ष पूर्व हमारे पूज्य पूर्वजों ने जो कहा था वह सारी बातें आज की इस खोज में निहित हैं।

मकर राशि का आकाश मण्डल में दसवां स्थान है। देशांतर रेखा 271° से 300° तक इसका क्षेत्र नियम है। जब सूर्य इस राशि पर संक्रमण करता है, तब धरती पर उत्तरायण शुरू हो जाता है। सूर्य के मकर में प्रवेश के दौरान पवित्र मकर संक्रांति का पर्व समस्त भारत में मनाया जाता है। यह राशि एक जलमृग के आकार

की है। उत्तराषाढ़ा, श्रवण और धनिष्ठा नक्षत्र का पूर्वार्द्ध तथा कई अज्ञात तारों से बनी यह राशि त्रिभुजाकार नजर आती है।

मकर की संज्ञा जहां मगरमच्छ से दी गयी है, वहां जलराशि को चर स्वभाव और पृथ्वी तत्व से युक्त माना गया है। यह राशि सेवा, सहकारिता, परिश्रम और कृषि-कार्यों का प्रतिनिधित्व करती है। शनि इस राशि का अधिपति ग्रह है, जबकि मंगल इस राशि का परम मित्र ग्रह माना जाता है। कर्क तथा सिंह राशियों से इसका बैर है।

शरीर विज्ञान के अनुसार, घुटनों और हड्डियों के जोड़ों पर इस राशि का वास होता है। इसका वार शनि और अंक 8 तथा धातु लोहा, सीसा, जस्ता, कोयला आदि हैं। राष्ट्रीय ज्योतिष में अल्बानिया, पश्चिमी बंगाल, केरल आदि प्रांतों का इससे विचार किया जाता है। बहुत ही सौम्य, चंचल और कूटनीति से भरी हुई यह राशि अनुशासनप्रिय, पुरुषार्थी और पदयात्रा में सक्रिय रहती है। इस राशि में पैदा हुए अधिकांश जातक उच्चकोटि के तकनीशियन, इंजीनियर, वैज्ञानिक, कृषक, जमींदार, पशुपालक, नाविक और मज़दूर वर्ग के लोगों में सम्मिलित होते हैं। इसका स्वामी शनि होने से यह एक भृत्य राशि कहलाती है। व्यवसाय हो या नौकरी आदि सभी मामलों में यह राशि भाग्यशाली होती है, क्योंकि अधिकांश मकर जातकों को छोटी अवस्था से ही धनोपार्जन का माध्यम बनाना पड़ता है। कुछ लोग जहां शारीरिक परिश्रम से दूसरों के लाभ के लिए परिश्रम करते हैं, वहां अनेक बौद्धिक जातक अपनी युक्ति और तकनीक के द्वारा मानवीय सेवा करके धन कमाने की प्रबल इच्छा रखते हैं। अधिकांश मकर जातक स्वयं को उपेक्षित, शोषित, पीड़ित जैसा महसूस करते हैं। स्वाभाविक गुण-दोष को अगर त्याग दें तो यह राशि उच्च-कोटि के उर्वर मस्तिष्क वाली, अध्यात्म एवं ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण, दीन-दुःखी एवं गरीब बेसहारा लोगों की पक्षधर मानी गयी है।

इस राशि में पैदा अधिकांश जातक लम्बे शरीर के सामान्य तथा श्याम वर्ण या अत्यधिक गोरे रंग के भी होते हैं। अगर शनि खराब हो तो जातक अधिक शिक्षा से वंचित रहते हैं और छोटी-मोटी आजीविका से जुड़े रहते हैं। कुछ लोग जहां वास्तविक जीवन के लक्ष्य से भटक जाते हैं, वहां पर्याप्त अर्थोपार्जन न हो पाने के कारण साधारण या अभावग्रस्त जीवन भी व्यतीत करते हैं। अधिकांश जातक गैर सरकारी या निजी संस्थाओं में कार्यरत रहते हैं, जबकि अनेक जातक अपने ही बलबूते पर व्यापार आदि के द्वारा धन समृद्धि भी प्राप्त कर लेते हैं।

"शनि" सौर मण्डल का सबसे सुन्दर मनोरम पिण्ड माना गया है। इसके चारों

ओर नीले किंकण बराबर घूम रहे हैं। वैंज्ञानिकों ने भी उनका रंग नीला बतलाया है। दूर से नीला रंग काला भी दिखलायी पड़ता है। यह मन्द गति से सूर्य की परिक्रमा करता है। पृथ्वी के 25000 दिन के बराबर इसका एक वर्ष है। यह इतना विशाल है कि इसमें 700 पृथ्वी समा सकती हैं तथा 75 पृथ्वी के समान वजनदार है। यह पृथ्वी के साढ़े उन्तीस वर्ष में सूर्य की परिक्रमा करता है और 88,60,00,000 मील दूर है। इसके वातावरण में हाइड्रोजन है। तापमान 240° फारेनहाईट शून्य से नीचे है। यही एक ऐसा ग्रह है, जहां पर पृथ्वी का मानव सरलता से चल-फिर सकता है। इसी कारण हमारे विद्वान् ज्योतिषियों ने इसका तत्व पृथ्वी माना है। भीष्म पर्व में भी इसका उल्लेख आया है। शनि का पर्वत मध्यमा के नीचे माना गया है, और मणिबंध से निकली रेखा भाग्य रेखा, शनि रेखा, कर्म रेखा कहलाती है। शनि का प्रभाव जीवन पर पड़ता है। हमारे पूर्वजों ने इन तमाम वैज्ञानिक तथ्यों का पहले ही अन्वेषण कर लिया था। यह मकर और कुम्भ दो राशि का स्वामी है। इस रूप में शनि की वैज्ञानिक तथा ज्योतिष गणना के साथ इस राशि के निम्नलिखित गुण बनते हैं–

रूप-रंग, स्वभाव, दाम्पत्य जीवन–इस (मकर) राशि के जातक प्रायः दुबले-पतले तथा सामान्य स्वास्थ्य वाले होते हैं। इसके बाद भी इनका व्यक्तित्व आकर्षक होता है। वैसे इनका व्यवहार व जीवन बड़ा रहस्यमय होता है। अपने बारे में यह किसी को जल्द बतलाते नहीं, या इनके विषय में प्रायः रहस्य फैला रहता है। इनके जीवन की वास्तविकता को कोई जान नहीं पाता है। वैसे इनमें आत्मविश्वास कमाल का होता है। वाणी मधुर और प्रभावशाली होती है। साधारण शरीर के बावजूद यह लोगों पर अपना प्रभाव बनाए रखने में सक्षम होते हैं।

इस राशि के जातक धर्म को मानते हैं। देवी-देवताओं में पूर्ण विश्वास रखते हैं। परलोक-इहलोक मानते हैं और भूत-प्रेत भी। गुप्त विद्या में इनकी रुचि होती है, और इसमें प्रायः सफल भी हो जाते हैं। यह बड़े उर्वरक मस्तिष्क के होते हैं। नई-नई योजनाएं बनाकर लोगों को चकित कर देते हैं, दृढ़ता और आत्मबल इनमें बेहद होता है। जिस काम में लग जाते हैं, उसकी अति कर देते हैं। इनकी यह विशेषता होती है। यह एक साथ कई योजनाएं बना सकते हैं, कई काम कर सकते हैं। इनमें "अहंकार" खूब होता है। और अपने मुंह मियां मिट्ठ बनने की आदत होती है। यह दिखावा अधिक करते हैं तथा डींगें बड़ी-बड़ी मारते हैं। चित्त इनका अस्थिर होता है। दिन की अपेक्षा रात में काम करना ज्यादा पसन्द करते हैं। दिन

में काम करने से इनको बड़ा आलस्य लगता है। यह अपना जीवन स्वयं रहस्यमय बनाए रखते हैं। अपने सम्बन्ध में लोगों को नाना प्रकार की सूचना देकर भ्रम में डाले रहते हैं। इनकी वास्तविकता को समझ पाना बड़ा कठिन है।

इनका पारिवारिक जीवन प्रायः मिश्रित सुख देने वाला होता है। पति पत्नी पर अपने विचार लादते हैं। इस कारण पटरी कम बैठती है। इनकी चंचलता, अस्थिरता बाधक होती है। व्यर्थ का व्यय अधिक करते हैं। अपना बड़प्पन, शान दिखलाने के चक्कर में प्रायः धनाभाव से घिरे रहते हैं। विपरीत लिंग के प्रति इनके मन में प्रबल आकर्षण होता है। कामुकता भी इनमें अधिक होती है। अपने बड़प्पन का प्रदर्शन करने और अपने अहंकारी स्वभाव के कारण जुबान पर इनकी लगाम नहीं होती है। इस कारण इनके शत्रुओं की संख्या अधिक होती है। कभी-कभी मित्र भी शत्रु बना लेते हैं। पत्नी-पति की प्रायः पटरी न बैठने से मनमुटाव बना रहता है।

कार्यक्षेत्र-रंग-रत्न–इनका कार्यक्षेत्र पहलवानी, खिलाड़ी, इंजीनियर, पुलिस सेवा, सेना, ठेकेदारी, इमारती लकड़ी का व्यापारी, वकील, ज्योतिषी, तांत्रिक, वैज्ञानिक, गायक, कफन विक्रेता, जेलर होता है। कोयला विक्रेता, लोहा विक्रेता तथा खदान के कार्य में यह बहुत सफल होते हैं।

रंग भी नीला, काला तथा रत्न नीलम, नीली है। नीलम सावधानी के साथ जानकार विद्वान् ज्योतिषी से समझकर ही धारण करना चाहिए, अन्यथा अनर्थ भी हो सकता है।

स्वास्थ्य, शुभ दिन, शुभ वर्ष–इस राशि के जातक का स्वास्थ्य साधारण तौर पर अच्छा होता है; पर जोड़ों में दर्द, उदर विकार, दिमागी परेशानी, लकवा, बवासीर, बहरापन आदि रोग प्रायः हो ही जाया करते हैं। इस राशि की महिलाओं का मासिक धर्म प्रायः अनियमित ही रहता है। उनको गर्भाशय से सम्बन्धित बीमारियां लगी ही रहती हैं।

इनकी शुभ दिशा–दक्षिण, दक्षिण-पश्चिम, दक्षिण-पूर्व हैं। शुभ तारीखें–3, 4, 5, 7, 9, 16, 21, 23, 25, 30, 31 हैं। शुभ दिन–बुधवार, बृहस्पतिवार (गुरुवार), शनिवार हैं। जनवरी, मार्च, जुलाई, अगस्त, सितम्बर, दिसम्बर शुभ माह हैं।

इनके शुभ वर्ष हैं–15, 35, 39, 45, 51, 55।

इस राशि के जातकों में यह विशेषता होती है कि इनका काम रुकता नहीं है। कुल मिलाकर दुःख-सुख-मिश्रित जीवन सफल ही रहता है।



ओर नीले किंकण बराबर घूम रहे हैं। वैंज्ञानिकों ने भी उनका रंग नीला बतलाया है। दूर से नीला रंग काला भी दिखलायी पड़ता है। यह मन्द गति से सूर्य की परिक्रमा करता है। पृथ्वी के 25000 दिन के बराबर इसका एक वर्ष है। यह इतना विशाल है कि इसमें 700 पृथ्वी समा सकती हैं तथा 75 पृथ्वी के समान वजनदार है। यह पृथ्वी के साढ़े उन्तीस वर्ष में सूर्य की परिक्रमा करता है और 88,60,00,000 मील दूर है। इसके वातावरण में हाइड्रोजन है। तापमान 240° फारेनहाईट शून्य से नीचे है। यही एक ऐसा ग्रह है, जहां पर पृथ्वी का मानव सरलता से चल-फिर सकता है। इसी कारण हमारे विद्वान् ज्योतिषियों ने इसका तत्व पृथ्वी माना है। भीष्म पर्व में भी इसका उल्लेख आया है। शनि का पर्वत मध्यमा के नीचे माना गया है, और मणिबंध से निकली रेखा भाग्य रेखा, शनि रेखा, कर्म रेखा कहलाती है। शनि का प्रभाव जीवन पर पड़ता है। हमारे पूर्वजों ने इन तमाम वैज्ञानिक तथ्यों का पहले ही अन्वेषण कर लिया था। यह मकर और कुम्भ दो राशि का स्वामी है। इस रूप में शनि की वैज्ञानिक तथा ज्योतिष गणना के साथ इस राशि के निम्नलिखित गुण बनते हैं–

रूप-रंग, स्वभाव, दाम्पत्य जीवन–इस (मकर) राशि के जातक प्रायः दुवले-पतले तथा सामान्य स्वास्थ्य वाले होते हैं। इसके बाद भी इनका व्यक्तित्व आकर्षक होता है। वैसे इनका व्यवहार व जीवन बड़ा रहस्यमय होता है। अपने बारे में यह किसी को जल्द बतलाते नहीं, या इनके विषय में प्रायः रहस्य फैला रहता है। इनके जीवन की वास्तविकता को कोई जान नहीं पाता है। वैसे इनमें आत्मविश्वास कमाल का होता है। वाणी मधुर और प्रभावशाली होती है। साधारण शरीर के बावजूद यह लोगों पर अपना प्रभाव बनाए रखने में सक्षम होते हैं।

इस राशि के जातक धर्म को मानते हैं। देवी-देवताओं में पूर्ण विश्वास रखते हैं। परलोक-इहलोक मानते हैं और भूत-प्रेत भी। गुप्त विद्या में इनकी रुचि होती है, और इसमें प्रायः सफल भी हो जाते हैं। यह बड़े उर्वरक मस्तिष्क के होते हैं। नई-नई योजनाएं बनाकर लोगों को चकित कर देते हैं, दृढ़ता और आत्मबल इनमें बेहद होता है। जिस काम में लग जाते हैं, उसकी अति कर देते हैं। इनकी यह विशेषता होती है। यह एक साथ कई योजनाएं बना सकते हैं, कई काम कर सकते हैं। इनमें "अहंकार" खूब होता है। और अपने मुंह मियां मिट्ठ बनने की आदत होती है। यह दिखावा अधिक करते हैं तथा डींगें बड़ी-बड़ी मारते हैं। चित्त इनका अस्थिर होता है। दिन की अपेक्षा रात में काम करना ज्यादा पसन्द करते हैं। दिन

में काम करने से इनको बड़ा आलस्य लगता है। यह अपना जीवन स्वयं रहस्यमय बनाए रखते हैं। अपने सम्बन्ध में लोगों को नाना प्रकार की सूचना देकर भ्रम में डाले रहते हैं। इनकी वास्तविकता को समझ पाना बड़ा कठिन है।

इनका पारिवारिक जीवन प्रायः मिश्रित सुख देने वाला होता है। पति पत्नी पर अपने विचार लादते हैं। इस कारण पटरी कम बैठती है। इनकी चंचलता, अस्थिरता बाधक होती है। व्यर्थ का व्यय अधिक करते हैं। अपना बड़प्पन, शान दिखलाने के चक्कर में प्रायः धनाभाव से घिरे रहते हैं। विपरीत लिंग के प्रति इनके मन में प्रबल आकर्षण होता है। कामुकता भी इनमें अधिक होती है। अपने बड़प्पन का प्रदर्शन करने और अपने अहंकारी स्वभाव के कारण जुबान पर इनकी लगाम नहीं होती है। इस कारण इनके शत्रुओं की संख्या अधिक होती है। कभी-कभी मित्र भी शत्रु बना लेते हैं। पत्नी-पति की प्रायः पटरी न बैठने से मनमुटाव बना रहता है।

कार्यक्षेत्र-रंग-रत्न--इनका कार्यक्षेत्र पहलवानी, खिलाड़ी, इंजीनियर, पुलिस सेवा, सेना, ठेकेदारी, इमारती लकड़ी का व्यापारी, वकील, ज्योतिषी, तांत्रिक, वैज्ञानिक, गायक, कफन विक्रेता, जेलर होता है। कोयला विक्रेता, लोहा विक्रेता तथा खदान के कार्य में यह बहुत सफल होते हैं।

रंग भी नीला, काला तथा रत्न नीलम, नीली है। नीलम सावधानी के साथ जानकार विद्वान् ज्योतिषी से समझकर ही धारण करना चाहिए, अन्यथा अनर्थ भी हो सकता है।

स्वास्थ्य, शुभ दिन, शुभ वर्ष--इस राशि के जातक का स्वास्थ्य साधारण तौर पर अच्छा होता है; पर जोड़ों में दर्द, उदर विकार, दिमागी परेशानी, लकवा, बवासीर, बहरापन आदि रोग प्रायः हो ही जाया करते हैं। इस राशि की महिलाओं का मासिक धर्म प्रायः अनियमित ही रहता है। उनको गर्भाशय से सम्बन्धित बीमारियां लगी ही रहती हैं।

इनकी शुभ दिशा—दक्षिण, दक्षिण-पश्चिम, दक्षिण-पूर्व हैं। शुभ तारीखें—3, 4, 5, 7, 9, 16, 21, 23, 25, 30, 31 हैं। शुभ दिन--बुधवार, बृहस्पतिवार (गुरुवार), शनिवार हैं। जनवरी, मार्च, जुलाई, अगस्त, सितम्बर, दिसम्बर शुभ माह हैं।

इनके शुभ वर्ष हैं—15, 35, 39, 45, 51, 55।

इस राशि के जातकों में यह विशेषता होती है कि इनका काम रुकता नहीं है। कुल मिलाकर दुःख-सुख-मिश्रित जीवन सफल ही रहता है।

❑



कुम्भ
20 जनवरी से 19 फरवरी
(गू गे गो सा सी सू से सो दा)

सौर मण्डल में जो घड़े के समान दिखलाई पड़ता है, वह "कुम्भ" राशि का भाग है। भारतीय ज्योतिषियों ने इसे कुम्भ की संज्ञा दी और तीन नक्षत्रों को इसकी सीमा में रखा। धनिष्ठा के दो चरण, शतभिषा के चारों चरण और पूर्वाभाद्रपद के तीन चरण। इनको मिलाकर राशि कुम्भ बनायी और उसके स्वामी देवता शनि, राहु को माना। मुख्यतः शनि को ही माना जाता है, पर कुछ विद्वान् ऋषियों ने; जैसे समुद्र ऋषि, पराशर आदि ने राहु को भी इसका स्वामी माना है। ज्योतिष अंक में इसका अंक 4 माना गया है।

इस राशि का अधिपति देवता शनि और मण्डल का सबसे खूबसूरत ग्रह माना गया है। इसका उल्लेख महाभारत के भीष्म पर्व में आया है। शनि को क्रूर एवं पाप ग्रह कहा गया है। इसका तत्व पृथ्वी माना गया है। राशि स्थिर शीर्षोदय मानी गयी है। दिशा उत्तर है। जाति वैश्य और मानव-शरीर में इसका स्थान घुटना माना गया है। इसका निवास कुम्भ का चाक या मटका माना गया है।

आकाश मण्डल में राशि चक्र की ग्यारहवीं राशि कुम्भ का क्षेत्र 300° से 330° देशान्तर निर्धारित किया गया है। इसका अधिपति शनि ग्रह है, जबकि राहु और यूरेनस भी इस राशि पर अपना स्वामित्व रखते हैं। आकाशगंगा के प्रमुख नक्षत्रों में धनिष्ठा, शतभिषा और पूर्वाभाद्रपद इस राशि में पड़ते हैं। पौराणिक दंत कथाओं के अनुसार, कुम्भ एक जलवाहक राशि है, जोकि बसंत के आगमन से पूर्व धरती पर वर्षा करके फल, फूल आदि बाग-बगीचों को रसपूर्ण बनाती है। यह मूलसंज्ञक और वायु तत्व राशि है। इस राशि में 14 फरवरी से 15 मार्च के मध्य सूर्य की स्थिति भी रहती है। धरती पर समुद्र और जलक्रीड़ा के कार्यक्षेत्र के अलावा बांध नहर और कैनाल प्रबंधन सहित जल वितरण प्रणाली भी कुम्भ राशि के ही कार्यक्षेत्र में आती है। इसका वार शनि और अंक 8 और दिशा पश्चिम मानी गयी है।

शरीर विज्ञान के अनुसार, यह कालपुरुष के दौरों के ऊपर पिण्डलियों में निवास करती है। यह राशि स्वामीभक्ति का प्रतीक, धर्म-कर्म में रुचि रखने वाली,

विचारशील और राष्ट्रभक्त भी मानी जाती है। प्रधानतः स्थिर स्वभाव की जल्दी ही वृद्धावस्था को प्राप्त होने वाली इस राशि का स्वामी ग्रह शनि अपने जातकों को किशोरावस्था से ही परिपक्व कर देता है। तुला राशि के बाद अधिकतम संख्या के लोग कुम्भ राशि के होते हैं। इस तमोगुणी राशि को दूर-दूर देशों का भ्रमण और पर्यटन बहुत ही प्रिय है। इसे चालबाज, जुएबाज और सट्टेबाज राशि भी कहा जाता है। होटल, शराबखाने, जुआघर चलाने वालों में भी कुम्भ राशि के बलवान् जातक होते हैं। आधुनिक जगत् में उच्च स्तर के शिल्पी इंजीनियर और वैज्ञानिक शोध से जुड़े हुए आविष्कारक और कूट बुद्धि के लोग भी कुम्भ राशि में पैदा होते हैं। अधिकांशतः जातक अपने घर परिवार से दूर एक से अधिक विवाह करने वाले आकर्षक व्यक्तित्व के प्रभावशाली और दमदार लोगों में से कुम्भ राशि उभरती है। बड़े-बड़े उद्योग और व्यापारिक स्थलों के स्वामी विशाल कल-कारखानों के अधिनायक, एक्सपोर्टर, पर्यटक, वायु सेना, वाहन, उद्योग आदि के कल-पुर्जों और टायर-पहिए बनाने वालों में कुम्भ राशि के जातक अधिक होते हैं। परम्परागत और एकरस व्यवसाय इन्हें अच्छे नहीं लगते हैं, अतः किसी पुराने मुद्दे को ही नए ढंग से पेश करने में इनका मस्तिष्क बहुत तेजी से काम करता है। शनि इसका अधिपति है, अतः दूसरों के प्रति जहां अत्यधिक संवेदनशील, दयालु और कृपालु होते हैं, वहां अपने स्वजनों-परिजनों को बिना किसी कारण के त्याग देने या सम्बन्धविच्छेद करने में भी पीछे नहीं हटते हैं। भौतिक जीवन की सभी लालसाओं को पूरी करना इनकी विशेषता होती है। जीवन के मध्य भाग और उत्तर भाग में भाग्योदय देखते हैं।

ज्योतिष का यह प्रतीकात्मक वैज्ञानिक विवरण आज के वैज्ञानिक अनुसंधान के साथ कितना मेल खाता है, यह आश्चर्य की बात है, सौर मण्डल में शनि की दूरी पृथ्वी से बहुत ही अधिक है। सूर्य से ही यह 80,60,000 लाख मील दूर है। तीन किंकड़ इसके लगातार चक्कर लगा रहे हैं, जैसा कि मकर राशि में बतलाया गया है। इसका दूसरा ग्रह राहु गैसीय पिण्ड मात्र है। इसमें गैस के अलावा कुछ भी नहीं है, पर इसके बावजूद यह राहु एक ग्रह इसलिए गिना जाता है कि अपनी इस गैस नियंत्रण व्यवस्था के कारण यह सौर मण्डल में बड़ी अव्यवस्था फैलाता है। इसका पर्यावरण अन्य ग्रहों को प्रभावित करता है। इसकी चाल हमेशा ग्रहों से विपरीत दिशा में रहती है। इसके इस उपद्रव के कारण इसकी गणना भी ग्रहों में हो गयी है।

शनि के बाद राहु और केतु को भी दो पिण्डीय ग्रह न मानकर गैसीय ग्रहों में तुलना की गयी है। एक प्रकार से यह धूमकेतु के समान है। धूमकेतु भी हमारा सारा जीवन अपनी ऊष्मा के कारण प्रभावित करते हैं।

इस कारण ज्योतिषीय और वैज्ञानिक दृष्टि से इस राशि के जातकों का फल इस प्रकार बनता है–

रूप-रंग, स्वास्थ्य और रंग-रत्न–इस राशि के जातक कृशकाय पर आकर्षक व्यक्तित्व के होते हैं। उनका शरीर विशेष मोटा नहीं होता है। दुबलापन इनमें होता है, पर शारीरिक क्षमता तथा आत्मविश्वास इनमें बहुत होता है। इस राशि की महिलाएं प्रायः छरहरे बदन की आकर्षक होती हैं। इनका यौवन छलकते घड़े के समान होता है। इनकी वाणी में बड़ी मिठास तथा यह दूसरे पर प्रभाव डाल सकने में समर्थ होती हैं। इस राशि के जातकों की पुतलियों का रंग गहरा काला होता है।

राशि स्थिर होने के कारण यह बहुत आत्मविश्वासी होते हैं और बड़ी लगन के साथ अपना काम पूरा करते हैं। समय के पाबन्द, वाक्पटु और ईमानदार होते हैं। इनमें दार्शनिक प्रवृत्ति अधिक होती है तथा यह नए-नए ख्यालों में हमेशा डूबे रहते हैं। इनके स्वभाव में शक की मात्रा बहुत अधिक होती है तथा प्रत्येक पर शक करते हैं। इन्हें वहम भी बहुत होता है। धर्म-कर्म और भूत-प्रेत तथा गुप्त विद्याओं में इनके मन में बड़ी रुचि होती है, अपने इस स्वभाव के कारण यह मित्र को भी शत्रु बना लेते हैं।

इनको रंग नीला और काला प्रिय होता है तथा इनका शुभ रत्न नीलम, नीली और नीला हकीक है। नीलम को धारण करने से पूर्व किसी योग्य ज्योतिषी से इसकी विधि और क्रियाओं को समझ लेना अति आवश्यक है।

जीवन, व्यवसाय, स्वास्थ्य और शुभ दिन–इस राशि के जातकों में उतार-चढ़ाव बने रहते हैं, जीवन का प्रारम्भिक काल प्रायः बहुत अच्छा होता है। यौवन काल में यह अपनी उन्नति की चरम सीमा को छू लेते हैं, पर इनकी वृद्धावस्था का समय बहुत ही क्षीण होता है। वैसे अध्यापक, लेखक, दार्शनिक, वैज्ञानिक, ज्योतिषी होने पर इनकी वृद्धावस्था में सम्मान तथा पदक मिलते हैं। वैसे इनकी वृद्धावस्था का काल दुर्बल होता है।

रेलवे, हवाई अड्डे, खदानें, टैक्नीकल कार्यों, मैकेनिक, वैज्ञानिक, अध्यापक, क्लर्क आदि इनका व्यवसाय होता है। यह लेखन व पत्रकारिता आदि के क्षेत्र में

बहुत सफल होते हैं। इस राशि के लोग बड़ी सटीक सही भविष्यवाणियां भी करते हैं। इस राशि के लोगों को इन्द्रियज्ञान कुछ अधिक होता है।

स्वास्थ्य साधारणतः इनका कमजोर रहता है। सीने की बीमारियां, टखने की बीमारियां, बवासीर, चर्म आदि रोगों से ग्रसित रहते हैं, पर अपने आत्मविश्वास के बल पर यह शीघ्र स्वास्थ्य लाभ कर लेते हैं।

शुभ दिशा, तिथि, वार, माह तथा वर्ष—इस राशि की शुभ दिशा दक्षिण-पूर्व, दक्षिण-पश्चिम हैं। 2, 4, 5, 8, 11, 17, 22, 24, 27, 31 इनकी शुभ तिथियां हैं। सोमवार, मंगलवार, गुरुवार, शनिवार शुभ दिन हैं। फरवरी, अप्रैल, जून, अगस्त, सितम्बर इनके शुभ माह हैं। 5वां, 17वां, 26वां, 41वा, 53वां तथा 62वां वर्ष इनके शुभ वर्ष हैं।

दाम्पत्य जीवन—इस राशि वालों का दाम्पत्य जीवन सांधारण तौर पर सामान्य सुखदायक रहता है। यह बदनामी और अपमान से डरते हैं। स्वभाव से समझौतावादी होने के कारण प्रेम के मामले में असफल रहते हैं। सन्तान मध्यम होती हैं। जो भी सन्तान हों उनसे इस राशि के जातक को सुख मिलता है। इस राशि की महिलाएं घर को घर समझने वाली, पतिपरायण और धार्मिक स्वभाव की होती हैं। परिजनों व मित्रों में इनका मान-सम्मान बना रहता है। कुल मिलाकर एक अच्छा जीवन व्यतीत करते हैं और हर क्षेत्र में सफल होते हैं।





मीन

20 फरवरी से 20 मार्च

(दी दू थ क्ष त्र दे दो चा ची)

ज्योतिष की इस बारहवीं और अन्तिम राशि का आकार सौर मण्डल में तैरती हुई दो मछलियों के समान है। यह मछलियां एक-दूसरे की विपरीत दिशा में तैरती हैं। अतएव इनका आकार अंगुली के 69 के समान बनता है। पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद तथा रेवती के क्रमशः 1, 4, 4 चरण इसमें हैं। इस राशि के महाधिपति बृहस्पति और केतु को माना गया है। बृहस्पति का उल्लेख धनु राशि में आ चुका है। केतु भी राहु के समान गैसीयपिण्ड है। यह केतु-राहु का सहोदर माना गया है।

इस राशि का माह चैत्र (मार्च-अप्रैल) माना गया है। 20 मार्च से 29 अप्रैल,

19 फरवरी से 20 मार्च, 15 मार्च से 14 अप्रैल माना गया है। अंक ज्योतिष में इसका अंक 7 है। द्विस्वभाव है। तत्व जल है। पृष्ठोदय है। दिशा उत्तर है। लिंग स्त्री है। जाति ब्राह्मण है। निवास जल है और योनि कीट है। शरीर में पैरों का तलुवा इसका निवास स्थान है।

केतु, बृहस्पति के वैज्ञानिक निष्कर्ष और ज्योतिष की सूक्ष्म गणना के अनुसार, इस राशि का विवरण इस प्रकार बनता है—

आकाश मण्डल में बारहवीं और अंतिम राशि का मीन का विस्तार क्षेत्र 330° से 360° पर्यन्त रहेगा। पंचतत्वों में जलतत्व प्रधान मीन राशि देव गुरु बृहस्पति के स्वामित्व में आती है। इसका स्वामी बृहस्पति और नेपच्यून को भी माना गया है। वार बृहस्पति, अंक 3 और दिशा उत्तर है। पौराणिक आख्यानों के अनुसार मीन को भगवान के मत्स्य अवतार से सम्बन्धित माना जाता है। इसी कारण यह राशि नदी और समुद्र तट के अलावा जलाशय और बांधी के अंदर, समुद्र के गर्भ में छिपे अनमोल रत्न और सम्पदा का अनुसंधान करने वाली पौराणिक संस्कृति इतिहास, कला, साहित्य और शिक्षापद्र कार्यक्षेत्रों से जुड़ी एक बौद्धिक और ज्ञानवान् राशि है। इस राशि का प्रतीक मत्स्य युगल अन्तर्राष्ट्रीय खेलकूद, मित्रता, राजनयिक सम्बन्ध तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान का प्रतिरूप है।

यह मध्यम शरीर वाली, स्त्रीवर्गीय राशि है। उदार एवं शांत लक्षणों से युक्त, कफ प्रवृत्ति की, उजले रंग सतोगुणी, ब्राह्मण जाति की वयोदय राशि है। कालपुरुष के शरीर में मीन राशि के अंगस्थान दोनों पैर, एड़ी, तलुवे आदि हैं जो हमें इस धरती में एक-स्थान से दूसरे-स्थान तक पहुंचाने में सक्रिय रहते हैं। सांसारिक जीवन में फिल्म, चलचित्र, फैशन, मनोरंजन सम्बन्धी व्यवसाय के अलावा सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा विभिन्न प्रकार के आध्यात्मिक अभियानों से भी इस राशि के जातक जुड़े रहते हैं। राष्ट्रीय परिवेश में लक्षद्वीप, अण्डमान, श्रीलंका, बर्मा, मलाया, हांगकांग, धरती के दक्षिणी भाग के छोटे-मोटे द्वीप समूह भी मीन राशि का प्रतिनिधित्व करते हैं।

इस राशि में पैदा जातक श्रद्धालु, मेहमानप्रिय, सामाजिक रूढ़ियों का पालन करने वाले और बातचीत में प्रवीण होते हैं। यह जातक चिंताओं से दूर रहनेवाले कर्मठ, आस्तिक और सामर्थ्यवान् तथा परोपकारी भी कहे जाते हैं। आधुनिक युग में ऐसे जातक या तो अत्यधिक संवेदनशील कार्यों से जुड़े हुए या फिर दूसरों के लिए प्रेरणादायक, मार्गदर्शक गतिविधियों में संलग्न रहते हैं। अनेक जातक अध्ययन,

अध्यापन, लेखन, इतिहास, पत्रकारिता में भी रुचि रखने वाले होते हैं। कुछ जातकों में दिखावटीपन और स्पष्टवादिता अधिक रहती है, जबकि कई जातक आत्मश्लाघा और कठोर अनुशासन से बंधे रहते हैं। आम तौर पर इनके भाग्योदय कारक वर्ष 21, 28, 30 और 32 होते हैं। 14 मार्च से 13 अप्रैल के मध्य सूर्य इस राशि पर रहता है। जिन जातकों का वृहस्पति और सूर्य बलवान् होता है, उन्हें सरकार और शासन तथा राज्य द्वारा भी पद-सम्मान और अधिकार सुख का लाभ होता है। यदि शुभ ग्रहों का योग हो तो मीन राशि विश्वविख्यात चरित्र के लोगों में अपना नाम लिखा सकती है।

रूप-रंग, स्वभाव और स्वास्थ्य–इस राशि के बालक साधारण रूप-रंग और साधारण स्वास्थ्य वाले होते हैं। इनका स्वभाव चंचल होता है। हमेशा कुछ-न-कुछ उधेड़-बुन में पड़े रहते हैं। इनमें शारीरिक क्षमता बहुत कम होती है पर आत्मविश्वास कुछ अधिक होता है। वहमी और शक्की होते हैं। कुल मिलाकर इनका व्यक्तित्व बड़ा प्रभावशाली होता है तथा चाल में बड़ी फुर्ती होती है। खास तौर से आंखें मछलियों के समान जलज और नासिका मत्स्याकार होती है।

अस्थिरता, चंचलता, चपलता इनका विशेष स्वभाव होता है। छिछोरापन पसन्द नहीं करते। एकान्त पसन्द करते हैं, अधिक हँसी-मजाक इनको पसन्द नहीं होता है। अपना काम ठीक समय पर और सटीक करते हैं, पर दुविधा में डूबे रहते हैं।

इस राशि के जातक फेफड़े, बुखार, आंख, पेट में गैस आदि बीमारियों से ग्रसित रहते हैं, पर शीघ्र स्वास्थ्य लाभ कर लेते हैं। इनको प्रायः रहस्यमय बीमारियां हो जाया करती हैं। इस राशि की महिलाएं प्रायः ऊपरी बाधा से पीड़ित रहती हैं।

दाम्पत्य जीवन, जीविका, रत्न रंग–मीन राशि वाले जातक का आर्थिक पक्ष हमेशा कमजोर रहता है। इस कारण इसकी गृहस्थी की गाड़ी बड़ी कठिनता से चल पाती है। इ के पल्ले पैसा आता है, पर वह टिकता नहीं है। इनका पारिवारिक जीवन बड़ा कलहमय रहता है तथा अपनी कामुकता के कारण इनका मैथुन अपनी राशि के आकार के समान विकृत होता है। इनसे प्रेम-सम्बन्ध स्थायी और पक्के होते हैं। सन्तान की तरफ से इनको सामान्य सुख ही मिलता है।

फिल्म व्यवसाय, हवाई सेना, डेरी कार्य, स्टेनोग्राफर, मछली पालन का व्यापार, कृषि, द्रव्य व्यवसाय, गुप्तचर विभाग, तांत्रिक, भूमिगत कार्यकर्त्ता, गुप्तचर सेवा, राजनीति, सर्जन आदि इनके प्रमुख व्यवसाय होते हैं। द्रव्य से सम्बन्धित कार्य, बैंकर, व्यापार में इन्हें अधिक सफलता मिलती है।

इस राशि के रत्न पुखराज, सुनहला, पीला हकीक और लहसुनिया हैं। इस राशि का रंग गहरा भूरा है।

शुभ दिशा, शुभ तारीखें, शुभ वार, शुभ माह और शुभ वर्ष–दिशा–उत्तर-पूर्व, उत्तर-पश्चिम शुभ हैं। 1, 2, 4, 7, 8, 10, 19, 20, 21, 23, 25, 27, 30 तारीखें शुभ हैं। बुधवार, बृहस्पतिवार (गुरुवार), शनिवार शुभ हैं। जनवरी, फरवरी, मई, जुलाई, सितम्बर, अक्टूबर, दिसम्बर इसके शुभ माह हैं। 25, 30, 45, 55, 60, 65 इस राशि के जातक के शुभ वर्ष हैं।

इस राशि के जातक का जीवन एक बड़ी विशेषता रखता है। यह राशि अपने जीवन का स्वयं निर्माण करती है। अपने पैरों पर खड़े होकर ही यह अपना काम करते हैं और इसके लिए यह किसी और की सहायता नहीं लेते हैं। अपना स्वनिर्मित जीवन इनको प्रिय होता है।

परामर्श–मीन राशि के जातकों को सलाह दी जाती है कि वह केवल भावनाओं में बहकर या द्रवित होकर जीवन के महत्वपूर्ण निर्णय न लें। गलत तरीके से या जोश में आकर पैसे का दुरूपयोग न करें, अन्यथा पछताना पड़ सकता है।

❑❑❑

3 रत्नों एवं उपरत्नों का परिचय और इतिहास

रत्न शब्द श्रेष्ठत्व का परिचय देता है। इसे एक विशेषण के रूप में प्रयुक्त किया जाता है, पुरुषों में श्रेष्ठ किसी व्यक्ति के लिए "नर-रत्न", स्त्रियों में श्रेष्ठ किसी महिला के लिए "नारी-रत्न", धार्मिक क्षेत्र में विशिष्ट स्थान रखने वाले व्यक्ति के लिए "धर्म-रत्न", उत्तम कवि के लिए "कवि-रत्न" कहते हैं। आदिकाल से "रत्न" शब्द का अर्थ भूगर्भ अथवा समुद्रतल से प्राप्त होने वाले मोती, हीरा, माणिक्य आदि नगीने भी रत्न हैं।

आधुनिक काल में मूल्यवान् धातुओं तथा अन्य वस्तुओं की रत्न की परिभाषा अलग है अतः अब यह शब्द केवल "जवाहरात" के अर्थ में ही प्रयुक्त होता है।

रत्न मुख्यतः खनिज पदार्थ माने गये हैं। प्रकृति द्वारा विभिन्न प्रकार के तत्वों के मिश्रण से विभिन्न वातावरण में इनका जन्म होता है। रत्नों में मुख्यतः निम्नलिखित तत्व पाए जाते हैं–

(1) कार्बन, (2) एल्युमीनियम, (3) बैरिकयम, (4) बेरिलियम, (5) कैल्शियम, (6) तांबा, (7) हाइड्रोजन, (8) लोहा, (9) फॉस्फोरस, (10) मैंगनीज, (11) पोगशियम, (12) गन्धक, (13) सोडियम, (14) टिन, (15) जिकोनियम तथा (16) जस्ता।

रत्नों में उपस्थित तत्वों के रासायनिक संकेत (अंग्रेजी में)

Al	ALUMINIUM	Mg	MAGNESIUM
Ag	SILVER	Mn	MANGANESE
A4	GOLD	Na	SODIUM
B	BORON	O	OXYGEN
Ba	BARIUM	P	PHOSPHOROUS
Be	BERYLLIUM	Pb	LEAD
C	CARBON -	Pt	PLATINUM

Ca	CALCIUM	S	SULPHER
Cl	CHLORINE	Si	SILICON
Cr	CHROMIUM	Sn	TIN
C4	COPPER	Sr	STRONTIUM
F	FLUORINE	Ti	ii TANIUM
Fe	IRON	W	TUNGSTEN
H	HYDROGEN	Zn	ZINC
K	POTASSIUM	Zr	ZIRCONIUM
Li	LITHIUM		

रत्न किसी एक रासायनिक तत्व से निर्मित नहीं होते हैं। विभिन्न रत्नों में विभिन्न रासायनिक मिश्रण विभिन्न मात्रा में होते हैं। इनके रंग-रूप, कठोरता, चमक आदि में भी विभिन्नताएं पायी जाती हैं, इन्हें विभिन्न वर्गों में बांटा गया है। कुछ रत्नों के केवल रंगों में विभिन्नता होने के कारण ही विभिन्न नाम दिए गए हैं। खनिज रत्नों के अतिरिक्त जैविक और वानस्पतिक रत्न भी पाए जाते हैं। मोती तथा मूंगा जैविक रत्न हैं तथा तृणमणि तथा जेट की गणना वानस्पतिक रत्नों में की जाती है। खनिज रत्नों की खानें होती हैं। जैविक रत्नों को समुद्र से सीधे निकाला जाता है तथा वानस्पतिक रत्नों को वन-पर्वतों से प्राप्त किया जाता है।

पर्वतों की चट्टानों तथा सागर की तलहटी में भी अनेक प्रकार के रत्न पाए जाते हैं। कृत्रिम रत्नों का निर्माण भी संसार में प्राचीन काल से होता आ रहा है। आजकल तो वह बड़े पैमाने पर होता है। कृत्रिम रत्नों का निर्माण भी कर लिया गया है, जिन्हें पहचानने में जौहरी तक धोखा खा जाता है। पर फिर भी वह गुण सौन्दर्य तथा प्रभाव में प्राकृतिक रत्नों का मुकाबला करने में सक्षम नहीं होते हैं, अतः प्राकृतिक रत्नों का अपना महत्व यथास्थान बना हुआ है।

भारत में विभिन्न कोनों वाले रत्नों के प्रचलित नाम इस प्रकार हैं–

(1) **कुतुबी**–चौकोर काट के रत्नों को कुतुबी कहा जाता है।

(2) **छैवास**–छः कोनों वाले रत्नों का छैवास कहते हैं।

(3) **अठवास**–आठ कोनों वाले रत्नों को अठवास कहते हैं।

(4) **दराबघाट**–पानी की शक्ल वाले रत्न को दराबघाट कहते हैं।

(5) **किरदा**--गौ काट के रत्न को गिरदा कहते हैं।

इनके अलावा पंचकोण, तिकोना, सिंघाड़ा, पतंग, मकर-पारा, अर्द्धचन्द्राकार, वेसई, मारकीस आदि कई प्रकार के अन्य काट के भी होते हैं।

पहले रत्नों की तौल जानने के लिए अनेक प्रकार की तौलें प्रचलित थीं—तोला, माशा, रत्ती आदि। आधुनिक समय में रत्नों की सर्वमान्य तौल का नाम **कैरेट** है। कैरेट शब्द अरवी भाषा के "फिरात" तथा ग्रीक भाषा के "केराशन" शब्द से लिया गया है। "किरात" का अर्थ होता है—कैरव नाम के वृक्ष के बीज से तौलना। एक कैरट 1/5 ग्राम के बराबर होता है। रत्नों की तौल के लिए अब सर्वत्र इसी को स्वीकृत किया जाता है।

विभिन्न रत्न संसार के विभिन्न भागों में पाए जाते हैं। आदिकाल में तो रत्नों की खोज पर्वतों, नदियों, वनों, समुद्रों तथा भूगर्भस्थ स्थानों में अव्यवस्थित रूप में की जाती थी, परन्तु जब से रत्नों के क्रय-विक्रय ने एक व्यवसाय का रूप ग्रहण कर लिया है तब से रत्नों के प्राप्ति-स्थलों की वैज्ञानिक रूप में खोज एवं खुदाई आदि का कार्य भी नियमित रूप में किया जाने लगा है।

वर्तमान युग में रत्नों को उपलब्ध करने के तरीकों को इस प्रकार से विकसित किया गया है कि उनके द्वारा रत्नों को नियमित रूप से प्राप्त किया गया है कि उनके द्वारा अब रत्नों को नियमित रूप से प्राप्त किया जाता है, साथ ही विश्व भर में फैले रत्नों के बाजार में उपयुक्त मूल्य पर रत्नों का क्रय-विक्रय का कार्य भी होता रहता है।

प्राचीन काल से ही रत्नों की कुल संख्या 84 मानी जाती है। इसी गणना में अनेक ऐसे नाम भी सम्मिलित हैं, जिनका अब कहीं पता तक नहीं चलता अथवा जिन्हें रत्नों की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। इन 84 प्रकार के रत्नों में 5 मुख्य रत्न तथा 5 मुख्य मणियां हैं, उनके नाम इस प्रकार हैं—

पांच मुख्य रत्न—(1) हीरा, (2) मोती, (3) माणिक्य, (4) पन्ना, (5) नीलम।

पांच मुख्य मणियां—(1) पुखराज, (2) वैडूर्य, (3) गोमेद, (4) मूंगा, (5) फिरोजा।

84 रत्नों के नामों की सूची में—मणि, उपरत्न, पत्थर आदि सभी सम्मिलित हैं। इस सूची में अनेक नाम ऐसे हैं, जो अब उपलब्ध नहीं होते तथा अनेक ऐसे हैं, जिनकी नई खोज की गयी है।

नामों की सूची निम्न प्रकार है—

रत्न और उपरत्न

(1) माणिक
(2) हीरा
(3) पन्ना
(4) नीलम
(5) लहसुनिया
(6) मोती

(7) मूंगा
(8) पुखराज
(9) गोमेद
(10) लालड़ी
(11) फिरोजी
(12) रोमनी
(13) जबरजद्द
(14) ओपल
(15) तुरमनी
(16) नरम
(17) सुनेहला
(18) कटैला
(19) सनसितारा
(20) फिटका (स्फुटिक)
(21) गौदन्ता
(22) तामड़ा
(23) लूधना
(24) मरियम
(25) मकनातीस
(26) सिन्दूरिया
(27) नीली
(28) धुनेला
(29) बेरुज
(30) मरगज
(31) पितौनिया
(32) बांसी
(33) द्रर्वेनक
(34) सुलेमानी
(35) आलेमान
(36) जजेमान
(37) सावोर
(38) तुरसावा
(39) अहवा
(40) आवरी
(41) लाजवर्त
(42) कुदूरत
(43) चित्ती
(44) सगसन
(45) लारू
(46) मारवर
(47) दानाएफिरंग
(48) कसौटी
(49) दारचना
(50) हकीक कलबहार
(51) हालन
(52) सीजरी
(53) मुबेनज्फ
(54) कहरुवा
(55) झना
(56) संगबसरी
(57) दांतला
(58) मंकड़ा
(59) संगीया
(60) गूदड़ी
(61) कामला
(62) सिफरी
(63) हरीद
(64) हवास

(65) सीनली
(66) ढेड़ी
(67) हकीक
(68) गौरी
(69) सीया
(70) सीमाक
(71) मूसा
(72) पतधन
(73) अमलिया
(74) डुर
(75) लिलियार
(76) खारा
(77) पाराजहर
(78) सैलखड़ी
(79) जहरमोहरा
(80) खात
(81) सोहनमक्खी
(82) हजरतेऊद
(83) सुरमा
(84) पारस

(1) **अजूबा**–यह पत्थर सफेद तथा खाकी रंग का होता है।

(2) **अहवा**–यह पत्थर गुलाबी रंग का, धब्बेदार तथा नरम होता है।

(3) **अबरी**–यह पत्थर काले अथवा पीले रंग का संगमरमर जैसा होता है।

(4) **अमलिया**–यह पत्थर काले रंग में गुलाबी झांई लिए होता है।

(5) **अलेमानी**–यह पत्थर भूरे रंग का होता है।

(6) **उपल**–यह रत्न काला, पीला, सफेद आदि कई रंगों का चमकदार तथा नरम होता है। इसमें चमकदार आभायुक्त लाल सितारे भी होते हैं।

(7) **उदाऊ**–यह (वैक्रान्ति) जाति का रत्न है।

(8) **कपिशमणि**–यह भूरे तथा बादामी रंग का पत्थर होता है।

(9) **कसौटी**–यह पत्थर नरम काले रंग का होता है। यह सोना जांचने के काम भी आता है।

(10) **कठेला**–यह पत्थर बैंगनी रंग का तथा पारदर्शी होता है। इसे "नीला-रागमणि" भी कहते हैं।

(11) **कांसला**–यह सब्ज तथा मैलापन लिए सफेद रंग का "तुरमसी" जाति का पत्थर है।

(12) **कुरण्ड**–यह पत्थर मैलापन लिए गुलाबी रंग का तथा गुम होता है। इसकी सान बनायी जाती है तथा इस पर रत्न भी घिसे जाते हैं।

(13) **कुवूरत**–यह पत्थर काले रंग का तथा गुम होता है। इस पर छींटे पाए जाते हैं।

(14) **गुदड़ी**–यह पत्थर सीमेन्ट कंक्रीट की भांति पीले रंग का होता है।

(15) **गौदन्ती**–यह पत्थर सफेद रंग का होता है तथा इसे औषधीय उपयोग में भी लिया जाता है।

(16) **गोमेद**–यह रत्न लाल गौमूत्र के रंग जैसा होता है तथा लाल, पीली एवं काली आभायुक्त वाला पाया जाता है।

(17) **गौरी**–यह पत्थर हकीक से मिलता-जुलता धारीदार तथा कठोर होता है। इसके खरल बनते हैं।

(18) **चकमक**–यह पत्थर काले रंग का होता है।

(19) **चन्द्रकान्ता**–यह पत्थर नीला, हरा अथवा मैलापन लिए भी होता है।

(20) **चित्ती**–यह पत्थर काला-पीला मिश्रित रंग का तथा सफेद डोरे वाला होता है। इसे "दरियाई लहसुनिया" भी कहते हैं।

(21) **चुम्बक**–यह पत्थर काला, रूखा काला तथा गहरे लाल रंग का होता है। यह लोहे को अपनी ओर खींच लेता है।

(22) **जबरजद्द**–यह पत्थर हरे रंग का आभायुक्त तथा नरम अंग वाला होता है।

(23) **जहरमोहरा**–यह पत्थर हरे-पीले मिश्रित रंग का होता है। इसका उपयोग औषधियों में भी किया जाता है।

(24) **जजेमानी**–यह पत्थर भूरे रंग का होता है। इसके ऊपर क्रीम रंग का डोरा होता है।

(25) **झरना**–यह पत्थर मटियाले रंग का होता है।

(26) **ढेड़ी**–यह पत्थर अपारदर्शी तथा कठोर होता है।

(27) **हर**–यह पत्थर गहरे कत्थई रंग का तथा अपारदर्शी होता है।

(28) **तिलिपर**–यह पत्थर तिल के समान काले रंग का होता है।

(29) **तुरसावा**–यह पत्थर समुद्री पानी जैसी आभा वाला, श्वेत, हरा एवं लाल रंग का नरम, हल्का तथा अधिक कान्ति वाला होता है।

(30) **तृणमणि**–यह लाल तथा पीले रंग का, नरम एवं पारदर्शक होता है। इसे "कहरुवा" भी कहते हैं। यह एक वृक्ष की गोंद जैसा होता है।

(31) **दाने फिरंग**–यह पत्थर मैलापन लिए गहरा, हरे रंग का तथा लहरदार और पारदर्शक होता है। इस पर गुर्दा बना होता है।

(32) **दांतला**–यह पत्थर चिकना, पानीदार, पारदर्शक, सफेद तथा हरे रंग का होता है। इसे दांतों की बीमारियों में प्रयुक्त किया जाता है।

(33) **दारचना**–यह पत्थर कत्थई रंग का होता है। इस पर पीले तथा धूमिल रंग के छींटे होते हैं।

(34) **दूरेनजफ**–यह पत्थर धानी रंग का होता है और फर्श बनने के काम आता है।

(35) **धुनैला**–धूम्रवर्ण का चमकदार तथा पारदर्शी पत्थर होता है। इसके चश्मे तथा कई प्रकार के नगीने बनाये जाते हैं।

(36) **नरम**–रक्तवर्ण, हल्की गुलाब की पत्ती जैसी कान्ति वाला पत्थर होता है। इसे "लालड़ी" भी कहते हैं।

(37) **नीलोपल**–मोर की गर्दन जैसा नीलवर्ण तथा अपारदर्शी पत्थर होता है। इसमें सोना भी होता है। इसे लाजवर्त या राजावर्त भी कहते हैं।

(38) **नीलम**–यह रत्न मोर की गर्दन के समान नीले रंग का हल्का नीला, पारदर्शी चमकदार तथा लोचदार होता है। यह शनि का रत्न माना गया है।

(39) **पन्ना**–यह रत्न हरापन लिए सफेद, नीम की पत्ती जैसे रंग का, बेतली, लोचदार तथा पारदर्शी होता है। हरे रंग का सर्वोत्तम माना जाता है। इसे बुध का रत्न कहा गया है।

(40) **पनघट**–यह पत्थर हकीक जाति का होता है। यह अनेक रंगों में पाया जाता है। इसका मध्य भाग पीला होता है, जिसमें सफेद रंग पाया जाता है।

(41) **पारस**–यह पत्थर काले रंग का बताया जाता है और कहा जाता है कि इसके स्पर्श से लोहा सोना बन जाता है। यह पत्थर दुर्लभ तथा अमूल्य है।

(42) **पुखराज**–यह रत्न पीले, सफेद तथा नीले रंग का पाया जाता है। पीले रंग के पुखराज को गुरु ग्रह का रत्न माना जाता है।

(43) **फातेजहर**–यह पत्थर बर्फ की भांति सफेद होता है। यह विष के घाव को भी ठीक कर देने वाला माना जाता है।

(44) **फिरोजा**–यह रत्न फिरोजी रंग का नरम तथा चमकदार होता है। यह केतु का रत्न माना गया है।

(45) **बसरी**–मटमैले रंग का तथा सुन्न होता है।

(46) **बांसी**–यह पत्थर काई जैसे रंग का, मोटे पानी का तथा नरम होता है।

(47) **बेरुज**–यह पत्थरं पीले रंग का, समुद्री पानी के समान कान्ति वाला होता है।

(48) **मरगज**–यह पत्थर हरे रंग का होता है।

(49) **मकड़ी**–यह पत्थर हल्के काले रंग का होता है। इसमें मकड़ी का जाला जैसा दिखाई देता है।

(50) **मरियम**–यह पत्थर सफेद संगमरमर जैसा होता है। बवासीर में काम आता है।

(51) **मासरमणि**–यह हकीक जैसा पत्थर होता है।

(52) **माक्षिक**–यह पत्थर सोहनमक्खी के रंग का होता है।

(53) **माणिक्य**–यह रत्न गुलाबी तथा सुर्ख रंग का होता है। श्याम रंग का भी पाया जाता है। गुलाब जैसे रंग का माणिक्य श्रेष्ठ माना जाता है। माणिक्य को सूर्य का रत्न माना गया है।

(54) **मूवेनजफ**–यह पत्थर सफेद रंग का होता है। इसमें काली धारी होती है।

(55) **मूंगा**–यह लाल सिन्दूरिया तथा गुलाबी रंग का होता है। सफेद तथा काले रंग के मूंगे भी पाए जाते हैं। यह रत्न समुद्र से सीधा प्राप्त होता है। लाल रंग का मूंगा मंगल ग्रह का रत्न माना जाता है।

(56) **मोती**–यह कई रंगों में मिलता है। यह सीपों से पाया जाता है। मोती को चन्द्रमा का रत्न माना गया है।

(57) **रक्तमणि**–यह नरम पत्थर रक्तवर्ण, जामुनियां, सुर्ख में कात्या तथा गोमेद के रंग का पाया जाता है। तामड़ा भी कहा जाता है।

(58) **रक्ताश्म**–यह पत्थर कठोर अंग वाला, मलिन, पीला तथा नीला रंग लिए, हरे रंग का तथा ऊपर लाल रंग के छींटों वाला होता है और इसे "पित्तोनिया" भी कहते हैं।

(59) **रातरतुआ**–यह पत्थर स्वच्छ लाल तथा गेरुए रंग का होता हैं। यह रात में आने वाले ज्वर को दूर कर देता है।

(60) **लहसुनिया**–यह पत्थर बिल्ली की आंख जैसा होता है। इसमें पीली, काली तथा सफेद झांई भी होती है। यह केतु ग्रह का रत्न माना जाता है।

(61) **लालड़ी**–यह रत्न रक्तवर्ण, पारदर्शक, कान्तिपूर्ण, लाल रंग तथा श्याम

आभायुक्त होता है। इसे सूर्य ग्रह का उपरत्न मानते हैं।

(62) **लास**–यह पत्थर मकराने की जाति का होता है।

(63) **लूधिया**–यह पत्थर गुम तथा मजीठ के समान हरे रंग का होता है।

(64) **शेषमणि**–यह पत्थर काले डोरे वाला सफेद रंग का होता है। इसे "जुजेमानी" भी कहते हैं। ऐसा ही जो पत्थर काले रंग का तथा सफेद डोरे वाला होता है, उसे "सुलेमानी" कहते हैं।

(65) **शैलमणि**–यह नरम, स्वच्छ, सफेद तथा पूर्ण पारदर्शक पत्थर होता है।

(66) **शोभामणि**–यह पत्थर स्वच्छ, पारदर्शक तथा कई रंगों में पाया जाता है। इसे "तुरमली" भी कहते हैं।

(67) **संगीया**–यह पत्थर सैलखड़ी से मिलता-जुलता नरम किस्म का होता है।

(68) **सगेंहदाद**–यह भारी ढलक वाला तथा भूरापन लिए स्याही के रंग का पत्थर होता है। यह औषधियों में काम आता है।

(69) **संगेसीमाक**–यह पत्थर सख्त मलिनता लिए लाल रंग का होता है। सफेद छींटे होते हैं।

(70) **संगमूसा**–काले रंग का पत्थर होता है। इससे प्याले तथा तश्तरियां बनायी जाती हैं। इसे "सिया" भी कहते हैं।

(71) **संगमरमर**–यह सफेद रंग, काला तथा अन्य अनेक रंगों का पत्थर होता है। यह मूर्तियां बनाने तथा इमारतों में काम आता है। इसे मारबल भी कहते हैं।

(72) **संगसितारा**–यह पत्थर गेरुए रंग का होता है जिसमें सोने जैसे छींटे चमकते हैं, इसे तारामण्डल भी कहते हैं।

(73) **सिफरी**–यह पत्थर अपारदर्शी तथा हरापन लिए आसमानी रंग का होता है। यह औषधियों में प्रयुक्त होता है।

(74) **सिन्दूरिया**–यह पत्थर गुलाबी रंग का पानीदार चमकदार तथा नरम होता है।

(75) **सींगलो**–यह पत्थर स्याही तथा सुर्खी मिश्रित माणिक्य की जाति का होता हैं। इसमें सितारे पड़ते हैं।

(76) **सीजरी**–यह पत्थर हकीक के समान, अनेक रंगों की छाप पड़ने वाला तथा फूल-पत्तीदार होता है।

(77) **सुनहला**–यह पत्थर पीले रंग का नरम तथा पूर्णतः पारदर्शक होता है।

(78) **सूर्यकान्त**–यह पत्थर चमकदार होता है।

(79) **सुरमा**–यह पत्थर काले रंग का होता है। यह आंखों का अंजन बनाने के काम आता है।

(80) **सैलखड़ी**–यह पत्थर सफेद रंग का तथा नरम होता है। इसे क्रीम, पाऊडर आदि बनाने के काम में लाया जाता है।

(81) **स्फटिक**–यह नरम, सफेद, पारदर्शी तथा चमकदार होता है। इसे "फिटकिरी" भी कहते हैं।

(82) **सोहनमक्खी**–यह पत्थर कंकड़ के समान हल्के पीले रंग का होता है। इसे औषधीय उपयोग में लेते हैं। इसे स्वर्ण-माक्षिक भी कहते हैं।

(83) **हजरतेबैर**–यह पत्थर बेर के समान मटिया रंग का रवेदार होता है। इसे औषधीय प्रयोग में लिया जाता है।

(84) **हजरतेऊद**–यह पत्थर गुलाबी रंग का लचकदार तथा खुरदरा होता है। इसे ही हासन लरजा भी कहते हैं।

(85) **हरितोपल**–हरे रंग का चमकदार पत्थर होता है।

(86) **हकीक**–यह पत्थर पीला, काला, सफेद, लाल आदि अनेक रंगों में मिलता है। यह अपारदर्शी होता है।

(87) **हरिमणि**–यह पत्थर चिकना, कठोर, अपारदर्शी तथा सफेद, काले, अंगूरी, गुलाबी रंग का होता है।

(88) **हीरा**–यह रत्न सब में सर्वोत्तम माना जाता है। यह सफेद, नीला, पीला, गुलाबी, काला, लाल आदि कई रंगों में मिलता है। सफेद हीरा सर्वोत्तम माना जाता है। यह शुक्र ग्रह का रत्न माना गया है।

नौ प्रकार की मणियां

मणियां अनेक प्रकार की होती हैं। उनमें से 9 मणियों को मुख्य माना गया है। उनके नाम इस प्रकार हैं–(1) घृतमणि, (2) तैलंमणि, (3) भीष्मकमणि, (4) उपलंकमणि, (5) स्फटिकमणि, (6) पारसमणि, (7) उलूकमणि, (8) लाजावर्तमणि तथा (9) मासरमणि।

इन मणियों में से पारसमणि का केवल नाम ही सुना जाता है। इसे पारस पत्थर भी कहते हैं। कहा जाता है कि पारस पत्थर अथवा पारसमणि का स्पर्श पाते

ही लोहा सोना बन जाता है। इस मणि अथवा पत्थर को काल्पनिक माना जाता है, क्योंकि न तो यह मणि किसी के पास है और न किसी ने इसे अब तक देखा है। इस मणि के प्रभाव के विषय में सुना अवश्य जाता रहा है। ग्रह-रत्नों की भांति ही इन मणियों को धारण करने से भी अनेक प्रकार के अनिष्टों की शान्ति तथा मनोकामनाओं की पूर्ति होती है। मणियों का प्रभाव इस प्रकार कहा गया है–

घृतमणि

इसे संस्कृत में गरुड़मणि, फारसी में जबरभट्ट, हिन्दी में करकौतुक अंग्रेजी में पैरीडोट कहा जाता है। हरे, पीले, लाल, श्वेत, श्याम एवं मधु मिश्रित रंग पत्थर का होता है। इस पर मोटे पिस्ते जैसे छींटे पाए जाते हैं।

मिथुन राशि में सूर्य अथवा चन्द्रमा होने पर इस मणि को चांदी की अंगूठी में जड़ें। फिर हस्त नक्षत्र में सूर्य-मंत्र द्वारा रत्नजड़ित अंगूठी को अभिमन्त्रित कर बाएं हाथ की अनामिका अंगुली में धारण करें अथवा कन्या राशि में सूर्य, चन्द्र अथवा बुध को कनिष्ठिका अंगुली में पहिनें।

इस मणि के प्रभाव से धन, सन्तान तथा स्नेह की वृद्धि होकर समस्त कामनाएं पूर्ण होती हैं। छोटे बालकों के गले में इस मणि की माला पहिनाने से नजर तथा मिरगी रोग से रक्षा होती है। इस मणि की माला पर हनुमत-मंत्र का जाप करने से अनेक प्रकार की सिद्धियां प्राप्त होती हैं। लहसुनिया की भांति इस मणि में दोष होते हैं तथा उनका फल भी वैसा ही होता है। अतः सदैव निर्दोष मणि ही धारण करनी चाहिए।

तैलमणि

इसे हिन्दी में "उदउक", अंग्रेजी में टूमेंलीन कहा जाता है। यह वैक्रांत जाति का रत्न है। इसका रंग अरुणाम, श्वेत, पीला तथा काला होता है। यह मणि तेल के समान चिकनी होती है। यदि श्वेत रंग की तैलमणि को अग्नि में रखा जाए तो वह उसी समय पीली हो जाती है और यदि कपड़े में लपेटकर रखा जाए तो तीसरे दिन पीली हो जाती है; पर हवा लगते ही यह अपने असली रंग को पुनः प्राप्त कर लेती है।

मेष राशि के सूर्य में रोहिणी नक्षत्र पूर्णा अथवा जया तिथि एवं मंगलवार के दिन इस मणि को यदि किसी खेत में दो गज गहरा गड्ढा खोदकर गाड़ दिया जाए और ऊपर से मिट्टी डालकर पानी खींच दिया जाए तो उस खेत में सामान्य से बीस गुना अधिक फसल उत्पन्न होती है।

इस मणि को अंगूठी में जड़वाकर धारण करने से बल तथा तेज की वृद्धि होती है तथा शारीरिक अंगों में सुगंध उत्पन्न होती है। संग गुदड़ी तथा संग पितरिया को इस मणि से उत्पन्न माना जाता है। अन्य रत्नों की भांति इसमें भी दोष होते हैं तथा उनका प्रभाव भी अशुभ होता है। अतः सदैव निर्दोष मणि ही धारण करनी चाहिए।

भीष्मकमणि

इस मणि के दो मुख्य भेद माने जाते हैं—(1) मोहिनी भीष्मकमणि, (2) कामदेवी भीष्मकमणि।

मोहिनी भीष्मकमणि को अमृतमणि तथा मोहिनी भीष्मकमणि भी कहा जाता है। इसका रंग सरसों अथवा तोरई के फूल जैसा केले के नवीन पत्र एवं गुलदाऊदी के फूल जैसा पीला होता है। इसमें हीरे जैसी चमक पायी जाती है। कामदेव भीष्मकमणि काली शहद जैसी, दही तथा फिटकिरी के मिश्रण से बने रंग जैसी होती है। यह चिकनी, स्वच्छ, अच्छे घाट की तथा सुन्दर रंग एवं कांति वाली होती है।

जब सूर्य आर्द्रा नक्षत्र पर तथा चन्द्रमा मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु अथवा कुम्भ राशि में हो, तब "मोहिनी भीष्मकमणि को रूई में लपेटकर, पूर्व दिशा की ओर, पानी में डुबाकर रख दें। फिर जब चन्द्रमा वृषभ, कर्क, कन्या, वृश्चिक अथवा मकर राशि पर आये, तब मणि को पश्चिम दिशा में रखकर विधिवत् पूजन करें, ऐसा करने से श्रेष्ठ वर्षा होती है।

यदि मणि का पूजन करने के 5 दिन के भीतर ही वर्षा हो तो फसल अच्छी होगी। यदि 10 दिन के भीतर वर्षा हो तो अन्न का भाव सस्ता होगा—यह समझना चाहिए। यदि वर्षा आरम्भ होने के बाद 5 या 10 दिन तक निरन्तर पानी बरसता रहे तो अन्न का भाव बहुत तेज होगा। यदि 20 दिन तक पानी बरसता रहे तो अकाल पड़ेगा—यह समझना चाहिए और यदि 25 दिन तक पानी बरसता रहे तो भारी संकट आयेगा।

मोहिनी भीष्मकमणि को धारण करने से धन-धान्य, ऐश्वर्य, शारीरिक सुख तथा स्त्री-सुख की वृद्धि होती है। यह मणि प्रसन्नता देने वाली भी है।

"कामदेवी भीष्मकमणि" को धारण करने से शत्रु पर विजय तथा सम्पूर्ण कार्यों में सफलता प्राप्त होती है। हृदय रोग तथा अन्य प्रकार के रोगों को भी दूर करती है।

मोहिनी भीष्मकमणि के संगजहरात, संगपनिया, संगवदिनी, संगसैलखड़ी—यह

चार उपरत्न बताए गए हैं। कामदेव भीष्मक के संगमरमर तथा संगभूरा—ये दो उपरत्न कहे गए हैं। अन्य रत्नों की भांति इस मणि में भी दोष पाए जाते हैं और उनका प्रभाव भी होता है। अतः सदैव निर्दोष मणि ही धारण करें।

उपलकमणि

इसे अपल रत्नोपल तथा अंग्रेजी में ओपल कहते हैं। यह मणि शहद के समान तथा अनेक प्रकार के विचित्र रंगों वाली होती है। इसके ऊपर लाल, पीले, नीले, श्वेत तथा हरे रंग के बिन्दु पाए जाते हैं। यदि इसे तेल, जल अथवा दूध में डाला जाए तो अधिक चमकती है। इस मणि को धारण करने से भक्ति वैराग्य तथा आत्मोन्नति की प्राप्ति होती है तथा अनेक प्रकार की मनोभिलाषाएं पूर्ण होती हैं। संगअजूबा तथा संगअबरी को इस मणि का उपरत्न माना जाता है। इसमें भी अन्य रत्नों की भांति दोष होते हैं और उनका प्रभाव भी अशुभ होता है। अतः सदैव निर्दोष मणि को ही धारण करें। इसको धारण करने पर वाक्‌सिद्धि प्राप्त होती है।

स्फटिकमणि

इसे बिल्लौर तथा अंग्रेजी में क्वाटर्ज कहा जाता है। यह मणि श्वेत रंग की, चमकदार, हल्की या भारी होती है। इस मणियुक्त अंगूठी को धारण करने से सुख, सन्तोष, रूप, बल, वीर्य की प्राप्ति होती है। यदि इस मणि की माला पर मंत्र का जप किया जाए तो वह सिद्ध हो जाता है। संगदूधिया तथा संगबिल्लौर को इस मणि का उपरत्न माना गया है। इसमें भी अन्य रत्नों की भांति दोष होते हैं और उनका प्रभाव भी अशुभ होता है। अतः सदैव निर्दोष मणि को ही धारण करें।

पारसमणि

इसे स्पर्शमणि तथा अंग्रेजी में फिलोस्फर्श स्टोन कहते हैं। इसका रंग काला बताया जाता है पर इसमें से सुगंध आती है। इस मणि को स्पर्श कराने मात्र से ही लोहा सोना बन जाता है, ऐसा माना गया है। यह मणि जिस राजा के पास होती है उसके राज्य में कोई दुःखी अथवा रोगी नहीं रहता है। यह नेत्रज्योतिवर्द्धक, शीतल तथा बल, पराक्रम एवं तेज की वृद्धि करने वाली कही जाती है। संगकसौटी, संग-टेढ़ी, संगचुम्बक को इस मणि का उपरत्न माना जाता है। यह मणि किसी के पास मैंने आज तक देखी-सुनी नहीं है।

उलूकमणि

इसे "उल्लू रत्न" भी कहा जाता है। इसका रंग मटमैला तथा अंग नरम होता है। कहा जाता है कि यह मणि उल्लू के घोंसलों में मिलती है, परन्तु यह भी अभी तक किसी को मिल नहीं पायी है। इस मणि को नेत्ररोग-नाशक बताया जाता है। यह भी कहा जाता है कि यदि किसी अंधे व्यक्ति को अंधेरे स्थान में ज़ाकर तथा वहां दीप जलाकर इस मणि को उसकी आंखों से लगा दिया जाए तो उसे दिखाई देने लगता है। संगवांसी तथा संगबसरो को इस मणि का उपरत्न माना जाता है। यह मणि भी मैंने किसी के पास देखी-सुनी नहीं है। हां, खोज में अवश्य हूं।

लाजावर्तमणि

इसे हिन्दी में लाजावर्त अंग्रेजी में लैपिस लैजूली कहा जाता है। इसका रंग मोरकण्ठ की भांति नीला-श्याम होता है और इस पर सोने के छींटे पाए जाते हैं।

इस मणि को मंगलवार के दिन धारण करना चाहिए। इसके प्रभाव से बल, बुद्धि एवं शक्ति की वृद्धि होती है तथा भूत, प्रेत, पिशाच, दैत्य, सर्प आदि का भय दूर होता है।

संगमूसा तथा संगबादल को इस मणि का उपरत्न माना जाता है। अन्य रत्नों की भांति इस मणि में भी दोष पाए जाते हैं। दोषी मणि को धारण करना अशुभ फलदायक होता है, अतः सदैव निर्दोष मणि ही धारण करनी चाहिए।

मासरमणि

इस मणि को अंग्रेजी में एमनी कहा जाता है। यह हकीक जैसी होती है। यह सफेद, लाल, पीले तथा काले—इन चार रंगों में होती है। इसमें कमल के फूल जैसी चमक तथा चिकनापन पाया जाता है। इस मणि की अग्नि तथा जल—ये दो जातियां होती हैं। अग्निवर्ण वाली मणि को यदि सूत में लपेट कर अग्नि के ऊपर रख दिया जाए तो सूत नहीं जलता तथा जलवर्ण वाली को यदि पानी मिश्रित दूध में डाल दिया जाए तो दूध और पानी अलग हो जाते हैं।

अग्निवर्ण मणि को धारण करने वाला व्यक्ति आग में नहीं जलता तथा जलवर्ण मणि को धारण करने वाला पानी में नहीं डूबता—ऐसा कहा जाता है। यह मणि भूत, प्रेत, चोर, शत्रु, अग्नि आदि के भय को भी दूर करती है। इसको भी मैंने कभी नहीं देखा है, पर सुना अवश्य है।

संगहदीद तथा संगहकीक को इस मणि का उपरत्न माना जाता है। अन्य रत्नों की भांति इसमें भी दोष पाए जाते हैं और उनका प्रभाव अशुभ होता है।

मोहरे

विभिन्न प्रकार के चमकदार पत्थरों को "मोहरा" कहा जाता है। इन पत्थरों पर विभिन्न प्रकार के चिह्न बने होते हैं। उन्हीं के आधार पर इनका नामकरण भी किया जाता है। कुछ मोहरे समुद्र तथा नदियों से और कुछ वृक्ष के तने के भीतर से प्राप्त होते हैं। प्राचीन ग्रंथों के आधार पर इन मोहरों का नामोल्लेख मात्र यहां किया जा रहा है।

इन मोहरों में विभिन्न प्रकार के रोग एवं विषनाशक एवं शक्ति, बुद्धिवर्धक गुण बताये जाते हैं। कुछ मोहरें सर्प, भूत-पिशाचादि के भय को दूर करने वाले तथा कुछ शत्रु आदि पर विजय दिलाने वाले एवं मनोभिलाषा की पूर्ति करने वाले भी कहे जाते हैं। इन मोहरों के विषय में केवल सुना ही जाता है। अब ये किसी के पास पाए अथवा देखे नहीं जाते हैं पर इनका वर्णन है, यह 28 प्रकार के होते हैं–

सूर्यमुखी, चन्द्रमुखी, मंगलमुखी, शिवसुलेमानी, गौरीशंकर, मोहनी, अलेमानी, सुलेमानी, लहरी, सर्व, रतजरी, नक्षत्री, विग्रही, खलास कष्ठीहर, फादेजहर, नजर, जगजीत, हल्दिया सिंधी, सूंठिया, मारू, जलतारन, अग्निशोषण, त्रिवेणी, मोर वच्छनागी, संखिया, जहर।

संसार की सभी वस्तुएं चंचल होने के कारण एक-दूसरे पर अपना न्यूनाधिक प्रभाव डालती हैं। सौर मण्डल के ग्रह-नक्षत्रों पर भूमण्डल के प्राणियों एवं वस्तुओं पर विशेष प्रभाव पड़ता है। यह बात वैज्ञानिक दृष्टि से भी सिद्ध तथा प्रमाणित हो चुकी है। विभिन्न प्रकार के रत्न विभिन्न ग्रहों की रश्मियों को केन्द्रित करने में समर्थ होते हैं तथा कौन-सा रत्न किस ग्रह की रश्मियों को केन्द्रित करने में विशेष रूप से समर्थ होता है, अनुभवों के आधार पर इसका भी निश्चय किया जा चुका है।

रत्नों के मानवोपयोगी प्रभाव का पता आज से हजारों वर्ष पूर्व लग चुका था, यही कारण है कि ग्रहों के अनिष्ट प्रभाव को दूर करने तथा निर्बल ग्रहों की शक्ति को बढ़ाने के उद्देश्य से रत्न धारण करने की प्रथा अत्यन्त प्राचीन काल से ही सर्वत्र प्रचलित है। रत्न केवल सौन्दर्य की वृद्धि अथवा मानव-जीवन पर ग्रहों के अनुकूल प्रभाव में ही वृद्धि नहीं करते, वरन् उनमें विभिन्न रोगों को नष्ट करने की प्रचुर शक्ति भी होती है। इसी कारण प्रत्येक चिकित्सा पद्धति में औषधीय रूप में भी

रत्नों का उपयोग किया जाता है। हमारे धर्म-ग्रंथों—पुराणों, स्मृतियों, महाभारत आदि के अतिरिक्त अन्य धर्मों के प्राचीन ग्रंथों में भी रत्नों के लक्षण, गुण तथा चमत्कारिक प्रभाव का उल्लेख पाया जाता है।

भारतीय ज्योतिष के मतानुसार, किस महीने में जन्म लेने वाले व्यक्ति को कौन-सा रत्न धारण करना शुभ रहता है, इसका उल्लेख इस प्रकार है—

चैत्र (चैत)	कपिशमणि
वैशाख (बैशाख)	हीरा
ज्येष्ठ (जेठ)	पन्ना
आषाढ़ (अषाढ़)	मूंगा
श्रावण (सावन)	माणिक्य
भाद्रपद (भादो)	हरितोत्पल
आश्विन (क्वार)	नीलम
कार्तिक (कातिक)	रत्नोपल
मार्गशीर्ष (अघहन)	पुखराज
पौष (पूस)	फिरोजा
माघ (माह)	रक्तमणि
फाल्गुन (फागुन)	नीलरागमणि

पुरुषोत्तम मास (मलमास या अधिकमास)—इस मास में जन्म लेने वाले व्यक्तियों को 9 मुख्य रत्नों को अंगूठी में जड़वाकर धारण करना चाहिए—

(1) पन्ना, (2) हीरा, (3) मोती, (4) पुखराज, (5) मानक, (6) मूंगा, (7) लहसर्भमा, (8) नीलम, (9) गोमेद।

भारतीय मतानुसार, जन्मराशि या चन्द्रराशि के आधार पर कौन-सा रत्न धारण करना शुभ रहता है, इसे निम्नानुसार समझें।

मेष	मूंगा
वृष	हीरा या पन्ना
मिथुन	पन्ना अथवा मोती
कर्क	मोती अथवा नीलम
सिंह	माणिक्य
कन्या	पन्ना

तुला	श्वेत पुखराज
वृश्चिक	मूंगा
धनु	पीला पुखराज
मकर	नीलम
कुम्भ	फिरोजा
मीन	गोमेद

पाश्चात्य मतानुसार, किस अंग्रेजी महीने में जन्म लेने वाले व्यक्ति के लिए कौन-सा रत्न धारण करना शुभ रहता है, इसे निम्नानुसार समझें–

जनवरी	गार्नेट एवं हायसिय
फरवरी	एमेथाइस्ट
मार्च	जेस्पर एवं हेलिओट्रप
अप्रैल	सेफायर
मई	अगेट
जून	एमराइल्ड मेनू स्टोन एवं केलसेडनी
जुलाई	ओनिक्स सैरडोनिक्स या रूबी
अगस्त	कार्नेलियन या सर्ड
सितम्बर	क्राइसोलिट
अक्टूबर	एक्वोमेरीन
नवम्बर	टोपाज
दिसम्बर	क्राइसोप्रोज एवं टरक्यइज

पाश्चात्य मतानुसार, सूर्य राशि के आधार पर धारण करने योग्य रत्न तथा उपरत्नों की सूची नीचे दी जा रही है–

20 जनवरी से 19 फरवरी तक "कुम्भ" राशि

रत्न – विक्रान्त

उपरत्न – शेषमणि

20 फरवरी से 20 मार्च तक "मीन" राशि

रत्न – नीलरागमणि या एक्वोमेरीन

उपरत्न – कपिशमणि

21 मार्च से 19 अप्रैल तक "मेष" राशि

रत्न	—	कपिशमणि
उपरत्न	—	पुखराज

20 अप्रैल से 19 मई तक "वृष" राशि

रत्न	—	हीरा
उपरत्न	—	पुखराज

20 मई से 20 जून तक "मिथुन" राशि

रत्न	—	सुलेमानी पत्थर तथा पन्ना
उपरत्न	—	लाल विक्रांत

20 जून से 20 जुलाई तक "कर्क" राशि

रत्न	—	विद्रुम तथा सुलेमानी पत्थर
उपरत्न	—	पन्ना ओनेक्स

21 जुलाई से 21 अगस्त तक "सिंह" राशि

रत्न	—	लालड़ी तथा माणिक्य, रूबी
उपरत्न	—	नीलम

22 अगस्त से 22 सितम्बर तक "कन्या" राशि

रत्न	—	सार्डोनिक्स कार्नेलियन एवं गुलाबी पुखराज, सुनेला
उपरत्न	—	हीरा

23 सितम्बर से 22 अक्टूबर तक "तुला" राशि

रत्न	—	नीलम
उपरन्त	—	गोमेद

23 अक्टूबर से 22 नवम्बर तक "वृश्चिक" राशि

रत्न	—	रत्नोपल मणि
उपरत्न	—	सुलेमानी पत्थर

23 नवम्बर से 20 दिसम्बर तक "धनु" राशि

रत्न	—	पुखराज, सुनेला
उपरत्न	—	नीलरागमणि

21 दिसम्बर से 10 जनवरी तक "मकर" राशि

रत्न	—	फिरोजा
उपरत्न	—	वैडूर्य बेरुज तथा गोमेद

ग्रहों के नाम	रत्नों के नाम	धातुओं के नाम
सूर्य	नीलम	स्वर्ण
चन्द्र	राकक्रिस्टल	चांदी
मंगल	हीरा	लोहा
बुध	ब्लड स्टोन	पारस
गुरु	कार्नेलियन	रांगा
शुक्र	एमराल्ड	तांबा
शनि	ओनिक्स	सीसा

भारतीय ज्योतिष के मतानुसार, विभिन्न ग्रहों के रत्न एवं धातुओं के विषय में निम्नानुसार है—

(1) सूर्य	माणिक्य	स्वर्ण (तांबा)
(2) चन्द्र	मोती	चांदी
(3) मंगल	प्रवाल अर्थात् मूंगा	स्वर्ण (लोहा)
(4) बुध	पन्ना	स्वर्ण, कांसा, प्लेटिनम
(5) गुरु	पुखराज	चांदी (टिन)
(6) शुक्र	हीरा	चांदी (तांबा)
(7) शनि	नीलम	लोहा (सीसा)
(8) राहु	गोमेद	पंचधातु (लोहा)
(9) केतु	वैडूर्य	पंचधातु (लोहा)

सोना, चांदी, तांबा, कांसा और लोहा—इन पांचों धातुओं के समभाग के मिश्रण से जो धातु निर्मित की जाती है, उसे "पंचधातु" कहा जाता है।

रत्न धारण करने के विषय में भारतीय तथा पाश्चात्य मत में अन्तर पाया जाता है। उदाहरण के लिए, पाश्चात्य मत में "सिंह" सूर्य राशि वालों के लिए "माणिक" के मुख्य रत्न तथा "नीलम" को उपरत्न के रूप में मान्यता दी गयी है, जबकि भारतीय मत में सूर्य और शनि पिता-पुत्र होते हुए भी एक-दूसरे के घोर शत्रु हैं तथा माणिक्य और नीलम एक-दूसरे के विरोधी रत्न हैं। अतः भारतीय मतानुसार, नीलम माणिक्य का प्रतिनिधि हो ही नहीं सकता।

जो लोग पाश्चात्य मत के ही प्रशंसक हैं, उनके लिए तो जन्म-मास, राशि तथा ग्रहों के आधार पर जो रत्न सूचियां दी गयी हैं, वे ही उपयुक्त रहेंगी, मेरी सम्मति यह है कि वे पाश्चात्य के चक्कर में न उलझें।

भारतीय जन्म-मास तथा जन्म-राशि के आधार पर जो रत्न सूचियां दी गयी हैं, उनकी ओर भी आकर्षित न हों, अपितु अपनी जन्मकुण्डली में ग्रह-स्थिति के आधार पर जो ग्रह दोषी अथवा अनिष्टकर हों, उनके अति अनिष्टकर प्रभाव की शांति तथा शुभ प्रभाव की वृद्धि के लिए नवग्रहों के लिए वर्णित भारतीय मत के रत्नों को ही धारण करें, तो उन्हें अवश्य सफलता प्राप्त होती है। जन्मकुण्डली में कौन-सा ग्रह किन स्थितियों में अशुभ फलदायक होता है और उसकी शांति के लिए किस रत्न की अंगूठी किस विधि से धारण करनी चाहिए, इसका विस्तृत उल्लेख अगले खण्ड में किया जाएगा। अतः उसी के आधार पर रत्न धारण करना उचित रहेगा।

किसी रत्न को अंगूठी में जड़वाने से पहले उसके प्रभाव की परीक्षा कर लेना आवश्यक है। इसके लिए रत्न को किसी वस्त्र में सीकर जिस रत्न के लिए जो दिन शुभ बैठता है, उस दिन उसे अपनी दायीं भुजा में बांध लेना चाहिए। जिस रंग का रत्न हो वस्त्र भी उसी रंग का होना चाहिए। स्त्रियों को रत्न बायीं भुजा में बांधना चाहिए। उक्त विधि से रत्न धारण करने के बाद एक सप्ताह तक उसके प्रभाव की परीक्षा करें। यदि इस अवधि में किसी प्रकार के लाभ का अनुभव हो तो उस रत्न को अपने लिए शुभ समझकर अंगूठी में जड़वा लें और यथाविधि धारण कर लें, पर इस अवधि में कोई अशुभ प्रभाव दिखायी दे तो रत्न को तुरन्त उतार दें और कभी भी धारण न करें। रत्न धारण करने के विषय में मेरा निजी परामर्श है कि आप किसी ज्योतिषी या रत्न विशेषज्ञ से अवश्य परामर्श कर लें, ऐसा करने से आप सम्भावित हानि से बच जाएंगे।

नवग्रहों के रत्न

नवग्रहों के रत्नों का विवरण इस प्रकार है। सम्बन्धित रत्नों का प्रयोग कर इन ग्रहों के अशुभ प्रभाव से रक्षा कर मनुष्य अपने लिए उनको सुख शान्तिदायक बना सकता है। ग्रहानुसार इनका विवरण प्रस्तुत है–

राहु

प्राचीन मतानुसार, राहु अन्य नक्षत्रों की ही भांति सूर्य के 10,000 योजन नीचे है। इसका व्यास 3,00,000 मील तथा पृथ्वी से इसकी दूरी 9,00,00,000 मील है।

"राहु" की राशि कन्या मानी गयी है। वास्तव में यह बुध की राशि है जिस पर "राहु" का भी समान अधिकार है। यह मिथुन राशि में उच्च तथा धनु राशि में नीच का माना जाता है। कर्क एवं कुम्भ राशि में इसे मूल त्रिकोणस्थ माना गया है।

इसकी मित्र राशियां मिथुन, कन्या, तुला, धनु, मकर तथा मीन हैं। कर्क तथा

सिंह इसकी शत्रु राशियां हैं। बुध, शुक्र तथा शनि मित्र हैं।

यह ग्रह गुप्त युक्ति, बल, कष्ट तथा त्रुटियों का कारक है। यह नीलवर्ण, दारूण स्वभाव, अन्त्यज जाति का, वात कृति, वायु तत्व, वृद्ध आयु, स्त्रीलिंग, रात्रिबली, विनाश वृत्ति, दीर्घ कोण, तीक्ष्ण स्वभाव, तीव्र बुद्धि; परन्तु आलसी एवं दीर्घसूत्री तथा राक्षस योनि वाला तमोगुणी पाप ग्रह है। राहु के द्वारा पिता, राजनीति, सर्पविद्या द्यूतक्रीड़ा, मद्यपान, शिकार, हिंसा नौकाचालन, अन्वेषण, यात्रा-विज्ञान, आक्रामणात्मक स्वभाव तथा दुर्गुणों के सम्बन्ध में विचार किया जाता है। इस ग्रह का प्रभाव पांवों पर माना जाता है। यह साहस, परिश्रम, पापकर्म, दुर्भाग्य, विलासिता, अन्याय, संकट, चिन्ता, शत्रुता एवं त्रुटि का कारक माना जाता है।

यह गोमेद काले तिल, सरसों, लोहा, कम्बल, तलवार नीले रंग की वस्तुएं, हड्डी, चमड़ा आदि का स्वामी है। कारखाने, मशीनरी, फोटोग्राफी, मुद्रण कार्य आदि के सम्बन्ध में राहु के द्वारा विचार किया जाता है। मुख्यतः यह ग्रह जिस भाव में बैठा होता है, उस भाव के स्वामी के समान ही फल करता है। राहु प्रायः 42 वर्ष की अवस्था में अपने शुभ अथवा अशुभ प्रभाव को प्रदर्शित करता है।

इसका रत्न "गोमेद" है। जन्मकुण्डली में राहु निर्वल तथा अशुभ हो तो गोमेद धारण करना शुभ फलदायक होता है। चन्दन धारण करने से भी लाभ होता है। गोमेद के प्रभाव में उसके उपरत्न संगतुरसाव को धारण करने से भी शुभ फल प्राप्त होता है।

"राहु" का मंत्र इस प्रकार है—**ॐ छां छीं ध्रौं राहवे नमः।**

जिनकी जन्मकुण्डली में राहु की स्थिति शुभ न हो, उनके लिए गोमेद या गोमेद के उपरत्नों को धारण करना शुभ फलदायक रहता है। गोमेद अथवा राहु के अन्य उपरत्नों को धारण करने से राहु का अशुभ प्रभाव कम होता है।

गोमेद में कई प्रकार के दोष पाए जाते हैं। दोषी-गोमेद को धारण करना अशुभ फलकारक होता है।

गोमेद का रंग गौमूत्र के समान कुछ लालिमा तथा श्याम वर्ण लिए होता है। उसमें शहद के रंग की झांई भी दिखाई देती है। उच्च वर्ग के गोमेद का रवा चतुष्कोण होता है। इसकी द्विवर्णिता नंगी आंखों से भी दिखाई देती है। इसमें नीले और श्वेत रंग दिखायी देते हैं। यह सरलता से चिरता नहीं है। निम्नवर्गीय गोमेद हरे रंग की झांइयों में प्राप्त होता है। भूरे तथा नारंगी रंग के गोमेद भी पाए जाते हैं। इसमें द्विवर्णिता बहुत कम होती है। मध्यम वर्गीय गोमेद गहरे लाल रंग तथा भूरापन लिए लाल रंग का होता है। सामान्यतः गोमेद विविध रंगों में पाए जाते हैं। इसी कारण

इनके अलग-अलग नाम भी रखे गए हैं। लाल अथवा लाल झांई वाले भूरे गोमेद को जैसिथ कहते हैं।

हरे, गहरे लाल तथा सुनहरे पीले रंग के गोमेद बहुत आकर्षक होते हैं। भूरे तथा आसमानी रंग के गोमेद भी प्रचुरता से पाए जाते हैं। हल्के आसमानी रंग का गोमेद हीरा, कुरूविन्द, कंठकिज आदि का भ्रम उत्पन्न करता है।

रंगहीन गोमेद को सर्वाधिक प्रसिद्धि प्राप्त है, क्योंकि उसे हीरों के स्थान पर प्रयोग में लाया जाता है। यह पारदर्शक तथा अपारदर्शक सभी प्रकार का होता है।

गोमेद में निम्न दोष होते हैं। ऐसे गोमेद कभी धारण न करें–

रूक्ष–रूक्ष गोमेद मान-प्रतिष्ठा को नष्ट करने वाला माना जाता है।

दुरंगा–दो रंग वाला गोमेद पिता के लिए कष्टकारक माना जाता है।

श्वेत बिन्दुयुक्त–सफेद धब्बे वाला गोमेद शारीरिक कष्ट एवं भय देने वाला माना जाता है।

सुन्न–चमकहीन गोमेद स्त्री के लिए हानिकर तथा बुद्धि को नष्ट करने वाला माना जाता है।

गुम–सौन्दर्यहीन गोमेद रोगोत्पत्तिकारक माना जाता है।

चीरा–चीरा चिह्न वाला गोमेद रक्त-विकार करता है।

धब्बेदार–धब्बे वाला गोमेद घर को छुड़ाने वाला माना जाता है।

रक्तिम–लाल रंग वाला गोमेद शरीर पर चकत्ते डालने वाला माना जाता है।

लाल बिन्दुयुक्त–लाल धब्बे वाला गोमेद सन्तान के लिए कष्टकारक माना जाता है।

गड्ढेदार–गड्ढेवाला गोमेद धननाशक माना जाता है।

अबरखी–धूम्रवर्ण वाला गोमेद नाशक माना जाता है।

काले बिन्दुयुक्त–काला धब्बेवाला गोमेद स्त्री के लिए कष्टकारक माना जाता है।

निम्नलिखित पत्थरों को गोमेद के पर्याय अथवा राहु के उपरत्न के रूप में स्वीकार किया जाता है–

संग साफी–यह पत्थर हिमालय के क्षेत्र तथा तुर्किस्तान में पाया जाता है। यह रूखा, भारी, मटमैला; पर चिकना होता है।

संग तुरसावा–यह पत्थर हिमालय की नदियों तथा ईरानी एवं अरब क्षेत्रों में पाया जाता है। यह पीला, लाल तथा हरे रंग का चिकना, स्वच्छ हल्का तथा चमकीला होता है। किसी-किसी में हरी झांई भी पायी जाती है।

"गोमेद" को आभूषणों में जड़वाकर धारण किया जाता है, ग्रह-पीड़ा-निवारणार्थ अंगूठी में भी जड़वाया जाता है। यथा विभिन्न रोगों की चिकित्सा में भी इसका प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार इसके अनेक उपयोग हैं।

गोमेद धारण करने से अनेक प्रकार की बीमारियां नष्ट होती हैं तथा धन-सम्पत्ति सुख एवं सन्तान की वृद्धि होती है। गोमेद धारण करने वाले के सामने शत्रु नहीं आता। इस रत्न को पहिनकर शुद्ध क्षेत्र में पहुंचा जाए, तो अवश्य विजय प्राप्त होती है। यदि किसी की जन्मकुण्डली में धनु लग्नस्थ नीच का राहु हो तो गोमेद धारण करने पर राहु शुभ फल देने लगता है।

गोमेद धारण करने अथवा औषधीय रूप में सेवन करने से—(1) दुर्गन्ध, (2) धुन्ध, (3) नकसीर, (4) वायुगोला, (5) कृमि रोग, (6) कफ, (7) ज्वर, (8) तिल्ली, (9) बवासीर, (10) क्षय, (11) पीलिया, (12) उपच, (13) त्वचा रोग तथा (14) मस्तिष्क की दुर्बलता आदि बीमारियां दूर होती हैं। आयुर्वेद ग्रंथों में गोमेद की भस्म को बल-वीर्य एवं बुद्धिवर्धक बताया गया है।

अंगूठी में जड़वाने के लिए गोमेद 4 रत्ती से कम वजन वाला नहीं होना चाहिए।

इसके अतिरिक्त 7, 10 अथवा 6 रत्ती तथा 6, 11 अथवा 13 कैरेट का गोमेद धारण करना भी वर्जित कहा गया है। गोमेद को पंचधातु अथवा लोहे की अंगूठी में जड़वाना चाहिए। स्वाति, शतभिषा अथवा आर्द्रा नक्षत्र वाले दिन प्रातःकाल 10 बजे तक अंगूठी में गोमेद जड़वाना चाहिए। इसके लिए सर्वप्रथम गोमेदजड़ित अंगूठी को रखकर उसका पूजन तथा प्राणप्रतिष्ठा करें।

राहु के मंत्र **'ॐ क्रौं क्रीं हूं'** इत्यादि का उच्चारण करते हुए 1001 आहुतियां देकर हवन करें। तत्पश्चात् अंगूठी को अपने बाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण कर पूर्णाहुति दें। फिर कर्मकाण्ड कराने वाले ब्राह्मण को दान दें।

उक्त विधि से गोमेद की अंगूठी धारण करने से राहु-जन्म-दोषों की शान्ति होती है।

केतु

केतु की राशि मीन है। वास्तव में यह गुरु की राशि जिस पर केतु का भी अधिकार है। यह धनु राशि के 15 अंश तक उच्च तथा मिथुन राशि के 4 अंश तक नीच का माना जाता है। सिंह राशि में इसे मूल त्रिकोणस्थ मानते हैं। यह मलिन रूप, मिश्रित वर्ण, छिद्रयुक्त वस्त्र धारण करने वाला, तमोगुणी, वर्णशंकर जाति, स्त्रीलिंग, वात प्रकृति, वायु तत्व, वृद्धावस्था, रात्रिबली तथा तीक्ष्ण स्वभाव

का ग्रह है। अश्विनी, मघा तथा मूल इसके नक्षत्र हैं। मिथुन, कन्या, धनु, मकर तथा मीन इसकी मित्र-राशियां तथा कर्क एवं सिंह शत्रु-राशियां हैं। ग्रहों की निसर्ग मैत्री में यह बुध, शुक्र तथा शनि के साथ मित्रता, बृहस्पति के साथ समभाव एवं सूर्य, चन्द्र तथा मंगल के साथ शत्रुता रखता है। गुरु के साथ इसका सात्विक व्यवहार बताया जाता है। वृष, धनु एवं मीन राशि में यह बलवान् होता है। क्रूर ग्रह होने पर भी अत्यन्त बली माना जाता है और शुभ फल भी देता है।

यह जिस भाव में बैठा होता है, वहां से पंचम, सप्तम, नवम तथा बारहवें भावों को पूर्ण दृष्टि से देखता है। कुछ ज्योतिषी इसे राहु के समान ही फल देने वाला मानते हैं।

पांवों के तलुवों पर इसका अधिकार रहता है। इसके द्वारा हाथ, पांव, चर्म रोग, क्षुधाजनित कष्ट, कठिन कर्म, गुरु युक्ति बल, भय, गर्मी, दुर्घटना, जल, चर्म रोग, कुष्ठ, मृत्यु, अद्भुत स्वप्न, कठिन कर्म, गुप्त षड्यंत्र, कण्डु, सन्धि रोग तथा स्नायु-सम्बन्धी रोग तथा अशुभ बातों का विचार किया जाता है। ज्ञान तथा माता के सम्बन्ध में केतु द्वारा विचार करते हैं।

केतु धूम्रवर्ण के वस्त्र तथा अन्य वस्तुएं, बकरा, शस्त्र, लोहा, वैडूर्य लहसुनिया, नीलमणि आदि धातुओं का स्वामी है। केतु 48 वर्ष की आयु में अपने शुभ अथवा अशुभ प्रभाव को प्रदर्शित करता है। केतु का रत्न वैडूर्य है। जन्मकुण्डली में केतु निर्बल अथवा अशुभ हो तो वैडूर्य धारण करना शुभ फलदायक होता है। वैडूर्य के अभाव में फिरोजा तथा सम फिरोजा आदि पत्थरों को भी धारण करने से शुभ फल प्राप्त होता है।

''केतु'' का मंत्र यह है—ॐ **स्त्रीं म्रो सः केतवे नमः।**

जिस जातक की जन्मकुण्डली में केतु-स्थिति शुभ न हो, उसके लिए वैडूर्य अथवा उसके उपरत्नों को धारण करना शुभ रहता है। वैडूर्य अथवा केतु के समय उपरत्नों को धारण करने से केतु का अभाव कम होता है।

वैडूर्य में कई प्रकार के दोष पाए जाते हैं। दोषी वैडूर्य को धारण करना अशुभ फलकारक होता है।

केतु का मुख्य लहसुनिया रत्न है। जिसे केट्स आई भी कहते हैं। वैडूर्य मुख्यतः 4 रंगों में पाया जाता है—

(1) काला, (2) सफेद, (3) पीला और (4) हरा।

रत्न का रंग कोई भी क्यों न हो, प्रत्येक रत्न में श्वेत रंग की धारियां अवश्य दिखायी देती हैं। कुछ रत्नों में धूम्रवर्ण की धारियां भी देखने को मिलती हैं। कुछ

रत्न विशेषज्ञ वैडूर्य के 6 रंग—(1) जंद, (2) काला, (3) हरा, (4) सुनहला, (5) धूम्रवर्ण तथा (6) श्वेत भी बताते हैं।

लहसुनिया के विभिन्न रंग अन्धेरे में उसी प्रकार से चमकते हैं, जैसे बिल्ली की आंखें चमकती हैं, इसी कारण इस रत्न को "विडालक्ष" नाम दिया गया है।

इसका रंग हरा होता है तथा चमक रेशम जैसी होती है। इस रत्न को जब कैबोशोंग काट में काटा जाता है, तब इसका प्रकाश एक रेखा में केन्द्रित हो जाता है और वह रत्न की पूरी सतह पर फैलता रहता है। जब रत्न को घुमाया जाता है, तब प्रकाश की रेखा का स्थान बदल जाने से रत्न बिल्ली की आंख जैसा दिखायी देने लगता है—

वैडूर्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस रत्न को जब भी हिलाया-डुलाया जाता है, तभी इसमें से दूधिया सफेद-हरी, सफेद-नीली आभा निकलती है। इसमें 13 प्रकार के दोष पाए जाते हैं, उनके विषय में निम्नानुसार समझ लेना चाहिए—

सुन्न—जिस वैडूर्य में चमक न हो, उसे धननाशक माना जाता है।

गड्ढेदार—जिस वैडूर्य में गड्ढा हो, उसे उदररोगकारक माना जाता है।

काल विन्दु-युक्त—जिस वैडूर्य में काले रंग की बूंद दिखायी दे, वह प्राणनाशक माना जाता है।

जालक—जिस वैडूर्य में जालक जैसा चिह्न दिखायी दे, वह पत्नी के लिए हानिकारक माना जाता है।

अबरसी—जो वैडूर्य धूम्रवर्ण का हो, उसे पुत्र के लिए हानिकारक माना जाता है।

रक्तदोषी—जिस वैडूर्य में लाल रंग के छींटे हों, वह गृहकलहकारक माना जाता है।

डोरेदार—जिस वैडूर्य में कोई धारी अथवा लकीर थरथराती हुई दिखायी दे, उसे नेत्र-विकार उत्पन्न करने वाला माना जाता है।

चीरयुक्त—जिस वैडूर्य में चीर का चिह्न हो वह शस्त्राघात वाला माना जाता है।

पंचदोषी—जिस वैडूर्य में पांच अथवा इससे अधिक धारियां हों, उसे दुर्भाग्य-कारक माना जाता है।

धब्बेदार—जिस वैडूर्य में मूल रंग के अतिरिक्त कोई अन्य धब्बा दिखायी दे, वह शत्रुओं का भय उत्पन्न करने वाला माना जाता है।

मधु विन्दु-युक्त—जिस वैडूर्य में शहद जैसे रंग की बूंद दिखायी दे, वह स्त्री

के लिए कष्टकारक माना जाता है।

सफेद बिन्दु-युक्त–जिस वैडूर्य में सफेद रंग की बूंद दिखायी दे, वह भाइयों के लिए कष्टकारक माना जाता है।

लाल बिन्दु-युक्त–जिस वैडूर्य में लाल रंग की बूंद दिखायी दे, वह पुत्र के लिए कष्टकारक माना जाता है।

काली झाईं-युक्त, पानी जैसे प्रतीत होने वाला दड़करहित, किरकिरा, चपटा तथा जिसकी डोरी में लालिमा-सी हो, ऐसा वैडूर्य भी अशुभ माना गया है। रत्न का टेढ़ा होना तथा मध्य भाग में मिट्टी एवं पथरीले भाग का होना भी लहसुनिये का दोष है।

निम्नलिखित पत्थरों को वैडूर्य के प्रतिनिधि अथवा केतु के उपरत्न के रूप में स्वीकार किया जाता है। वैडूर्य के अभाव में इन्हें भी धारण किया जा सकता है।

वैडूर्य के प्रतिनिधि के रूप में "फिरोजा" नामक रत्न को धारण किया जाता है।

वैडूर्य धारण करने से तेज, पराक्रम, सुख, आनन्द, सम्पत्ति तथा पुत्र आदि की बृद्धि होती है। यह शत्रु पर विजय दिलाकर शस्त्राघात से बचाता है। दुःख, दारिद्रय, व्याधि तथा रोग को भी नष्ट करता है। प्राचीन काल के लोगों का यह विश्वास था कि यह रत्न आने वाले रोगों की पूर्ण सूचना देने का कार्य भी करता है। ज्वर में त्वचा शुष्क हो जाती है तथा जुकाम में गीली हो जाती है। वैडूर्य चूंकि छिद्रयुक्त होता है। अतः यदि यह भुजा आदि पर बंधा हो तो शरीर के तापमान से प्रभावित होकर इसका रंग बदल जाता है।

वैडूर्य को औषधीय रूप में सेवन करने से–(1) वायु गोला, (2) मूत्रकृच्छ, (3) आमवात, (4) अजीर्ण, (5) संग्रहणी, (6) खूनी दस्त, (7) उपदंश, (8) मधुमेह, (9) बवासीर, (10) नपुंसकता, (11) पित्तदोष, (12) आंखों के जख्म, (13) धुंध रोग तथा (14) कफ, वायु से सम्बन्धित रोग दूर होता है।

अंगूठी में जड़वाने के लिए वैडूर्य जितना अधिक वजनी हो उतना ही शुभ रहता है परन्तु यह 5 रत्ती से कम वजन का नहीं होना चाहिए। 14, 5, 11 अथवा 13 रत्ती वजन का वैडूर्य धारण करना भी निषिद्ध कहा गया है। पाश्चात्य मतानुसार, चांदी की अंगूठी में 5 अथवा 7 कैरेट का वैडूर्य धारण करना अधिक शुभ होता है।

भारतीय ज्योतिष के मतानुसार, वैडूर्य को पंचधातु अथवा लोहे की अंगूठी

में जड़वाना चाहिए तथा अंगूठी का वजन 7 रत्ती से कम नहीं होना चाहिए। जिस दिन मेष, धनु अथवा मीन राशि का चन्द्रमा हो अथवा जिस दिन अश्विनी, मघा अथवा मूल नक्षत्र हो अथवा किसी भी बुधवार या शुक्रवार को सायं 6 से 8 बजे के बीच में वैडूर्य-जड़ित अंगूठी तैयार करवायें। उपर्युक्त योगों में से यदि एक से अधिक योग हों, तो उस मुहूर्त को विशेष शुभ माना जाता है तथा शुक्रवार की अपेक्षा बुधवार अधिक श्रेष्ठ माना गया है।

अंगूठी तैयार हो जाने पर शोडषोपचार पूजन करें। फिर निम्नलिखित मंत्र का उपचार करते हुए 2700 आहुतियां देकर हवन करें।

बुधवार अथवा शुक्रवार को सूर्यास्त के बाद, घड़ी के भीतर वैडूर्य जड़ित अंगूठी को धारण करना श्रेष्ठ माना गया है। उक्त विधि से वैडूर्य धारण करने पर केतु-जन्म-दोष दूर होते हैं, शत्रु नष्ट होते हैं; यश, तेज, धन एवं बल की वृद्धि होती है तथा मनोभिलाषाएं पूर्ण होती हैं।

वैडूर्य को जिस दिन अंगूठी में जड़वाया जाता है, उस दिन से आरम्भ करके 5 वर्ष तक यह धारणकर्त्ता पर अपना पूर्ण प्रभाव प्रदर्शित करता है, तत्पश्चात् प्रभावहीन हो जाता है। किसी एक ही व्यक्ति के पास वैडूर्य 3 साल से अधिक समय तक प्रभावी नहीं रह पाता।

''केतु'' का मंत्र इस प्रकार है—*ॐ स्रां स्रीं सः केतवे नमः।*

शनि

पृथ्वी से शनि की दूरी 79,10,00,000 मानी जाती है। इसका व्यास 71,500 मील माना जाता है।

पुराणों के अनुसार, शनि बृहस्पति से 2,00,000 योजन ऊपर स्थित है। शनि को सौर मण्डल में सर्वाधिक ऊंचाई पर स्थित तथा मन्दगामी ग्रह माना जाता है। धीरे चलने के कारण ही इसका नाम ''शनैश्चर'' रखा गया है। शनि अपने बलयों के साथ भ्रमण करता हुआ लगभग 30 वर्षों में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करता है।

सूर्य के समीप पहुंचने पर इसकी गति प्रति घण्टा 60 मील तक हो जाती है। इसे एक राशि पर भ्रमण में ढाई वर्ष का समय लगता है। यह पूर्व में उदय होकर पश्चिम में अस्त होता है।

शनि की राशि मकर तथा कुम्भ है। यह तुला राशि के 20 अंश तक उच्च, मेष राशि के 20 अंश तक नीच तथा कुम्भ राशि के 20 अंश तक मूल त्रिकोणस्थ

माना जाता है। निसर्ग-मैत्री में बुध, शुक्र, राहु तथा केतु शनि के मित्र हैं। गुरु से यह समभाव रखता है तथा सूर्य, चन्द्र एवं मंगल से शत्रुता रखता है।

शनि का बुध के साथ सात्विक, शुक्र के साथ राजस तथा सूर्य एवं चन्द्रमा के साथ शत्रुवत् व्यवहार रहता है। इसके अपने नक्षत्र पुष्य, अनुराधा तथा उत्तरा-भाद्रपद हैं। वृष तथा मिथुन राशि के साथ उसकी मित्रता तथा कर्क, सिंह एवं वृश्चिक राशि के साथ शत्रुता है। यह मकर राशि पर अधिक बली होता है। सप्तम भाव में इसे विशेष बली माना जाता है। किसी वक्री ग्रह अथवा चन्द्रमा के साथ रहने पर यह चेष्टाबली होता है। वृक्ष तथा तुला लग्न में स्थित शनि योग कारक होता है। कृष्ण पक्ष का शनि बलवान् माना जाता है।

शनि को क्रूर एवं पापग्रह माना गया है पर इसका अन्तिम परिणाम सुखद ही होता है। यह मनुष्य को दुर्भाग्य तथा संकटों के चक्कर में डालकर, अन्त में उसे पूर्ण शुद्ध तथा सात्विक स्वभाव का बना देता है।

"शनि" कृष्ण वर्ण अन्त्यज जाति, कफ एवं वात प्रकृति, कृश रूखे केश, सुन्दर नेत्र, दारूण स्वभाव, मोटे नख वाला, आलसी, पश्चिम दिशा का स्वामी, नपुंसक लिंग, वायु तत्व, वृद्धावस्था, सन्ध्याबली तथा तमोगुणी ग्रह है। इसका अधिदेवता ब्रह्मा, रस कशाय तथा कसैला, धातु लोहा-शीशा, ऋतु शिशिर, प्रदेश गंगा से हिमालय तक तथा निवास वन, पर्वत खान एवं बंजर भूमि को माना गया है।

इसके द्वारा योग, मोक्ष, भक्ति, शारीरिक बल, विपत्ति, ऐश्वर्य शौर्य, एकान्तवास, पूंजी विनियोजन के कार्य, भय, शक्ति, साहस, पराक्रम, विपत्ति, नौकरी, विदेशी भाषा, आयु, दृढ़ता, व्यय, शत्रुता, दुःख, चिन्ता, दुर्भाग्य, अन्याय, गांभीर्य, दुर्घटना, दोषारोपण, आलस्य, अन्धकार, संवेदन, विलासिता, संकट, श्रम, संन्यास, दार्शनिक, चिन्तक, मनन, चोरी, नैराश्य, यन्त्रणा, बन्धन, कृपणता, असम्मान, अस्वस्थता, दरिद्रता, प्रसिद्धि, मुत्यु, मृत्यु का कारण, सम्पत्ति, नौकर-चाकर, यज्ञ, कृषि, सम्मान, मोटापा, पिण्डली, घुटने तथा स्नायु आदि विषयों का विचार किया जाता है।

इसे कर्म तथा व्यय भाव का कारक भी कहते हैं। यदि जातक का जन्म रात्रि में हुआ हो तो यह माता-पिता का कारक भी होता है।

यह ग्रह यातायात, पुलिस कारागार, स्थानीय स्वायत्तशासी संस्थाओं के कार्यकर्त्ता जमीन-जायदाद एवं ठेकेदारी का कार्य करने वाले व्यक्ति, कारखाने में, मशीनरी का काम करने वाले, छोटे व्यापारी, मजदूर तथा फेरी वालों का प्रतिनिधित्व भी करता है। यह लोहा, उड़द, तिल, सीसम, नमक, बच, पेल नीलम, भैंस,

राजमहिषी, सर्प तथा काले रंग की वस्तुओं का स्वामी है।

मांसपेशियां, नख, पसली, केश, श्वास, दमा, मूर्च्छा, हड्डी, उदर रोग तथा वात-रोगों से इसका सम्बन्ध माना गया है, इस सबके विषय में शनि द्वारा विचार किया जाता है।

शनि प्रायः 36 वर्ष की अवस्था में अपने शुभ या अशुभ प्रभाव को प्रदर्शित करता है।

शनि का रत्न "नीलम" है। जन्मकुण्डली में शनि निर्बल अथवा अशुभ हो, तो नीलम धारण करना शुभ फलदायक होता है। लोहे की अंगूठी को श्रेयस्कर कहा गया है। नीलम के अभाव में उसके उपरत्न से भी फल प्राप्त होता है।

"**शनि**" का मंत्र इस प्रकार है–ॐ **प्रां प्रीं प्रौं सः शनए नमः।**

जिन लोगों की जन्मकुण्डली में "शनि" निर्बल हो, उनके लिए नीलम अथवा शनि के उपरत्नों को धारण करना शुभ फलदायक रहता है। नीलम अथवा शनि के अन्य उपरत्नों को धारण करने से शनि का अशुभ प्रभाव कम होता है तथा शुभ प्रभाव की वृद्धि होती है।

"नीलम" में कई प्रकार के दोष भी पाए जाते हैं, दोषी नीलम को धारण करना अशुभ फलकारक होता है।

"नीलम" का रंग मोर की गर्दन के समान तथा इन्द्रधनुष के बीच के नीले रंग के समान नीला होता है।

आयुर्वेदिक ग्रंथों के अनुसार, नीलम की दो किस्में हैं–

नलनील–अर्थात् जिस नीलम के भीतर सफेदी हो तथा चारों ओर नीलिमा हो, साथ ही जो हल्का भी हो, उसे "नलनील" कहते हैं।

इन्द्रनील–जिस नीलम के भीतर श्याम आभा तथा बाहर नीलिमा हो, साथ ही जो अपेक्षाकृत भारी हो, उसे "इन्द्रनील" कहते हैं। इन्द्रनील का रंग नीला और लाल मिश्रित अर्थात् बैंगनी होता है।

श्रेष्ठ नीलम में निम्नलिखित विशेषताएं पायी जाती हैं–

चिकनापन, स्वच्छ, चमकदार, पारदर्शी, अच्छे पानी वाला, सुडोल कोण वाला, मोरपंख के समान, जो स्पर्श से मुलायम प्रतीत हो तथा जिनके भीतर से किरणें फूटती हुई-सी लगें, जो एक ही रंग का दिखायी देता है, नीलम के पास यदि तिनके को ले जाया जाए तो वह उससे चिपक जाता है। इसी कारण नीलम का एक नाम "**तृणग्राही**" भी है।

अन्य रत्नों की भांति नकली नीलम भी तैयार किए जाते हैं। नकली नीलम

प्रायः कांच से ही बनाए जाते हैं। असली तथा नकली की परीक्षा के लिए निम्न विधियों को प्रयोग में लाया जाता है–

असली नीलम को स्वच्छ पानीभरे कांच के गिलास में डाल दिया जाए, तो उस पानी में से नीले रंग की किरणें-सी निकलती हुई स्पष्ट प्रतीत होती हैं।

असली नीलम को गाय़ के दूध में डाल दिया जाए, तो दूध का रंग नीला हो जाता है।

असली नीलम को सूर्य की धूप में रख दिया जाए तो उसमें से नीले रंग की तीव्र किरणें-सी निकलती प्रतीत होती हैं।

चांदनी में अगर किसी गौरवर्ण सुन्दर स्त्री को खड़ा करके उसके हाथ में दूध से भरा हुआ एक कटोरा दे दिया जाए, तत्पश्चात् वह अपने दूसरे हाथ में नीलम लेकर, उस दूध के पात्र के ऊपर नीलम का प्रकाश निक्षिप्त करे तो दूध, कटोरा तथा उस सुन्दरी के शरीर पर तुरन्त ही नीली आभा दिखाई देने लगती है।

नकली नीलम में रंगों की धारियां मुड़ी हुई होती हैं, जबकि असली नीलम में सीधी होती हैं।

नीलम यदि दोषयुक्त हो तो उसे धारण करने पर शुभ के स्थान पर अशुभ फल ही प्राप्त होता है। अतः दोषी नीलम धारण करना वर्जित है। नीलम में निम्न 8 प्रकार के मुख्य दोष पाए जाते हैं–

सुन्न–जो नीलम चमकरहित हो, उसे "सुन्न" कहा जाता है। ऐसा नीलम मित्र तथा बन्धुनाशक माना गया है।

चीरा–जिस नीलम में चीरे का चिह्न दिखाई दे, वह शस्त्राघात देने वाला, अपघात कराने वाला और धननाशक माना जाता है।

गड्ढेदार–जिस नीलम में गड्ढा हो, वह शत्रु के भय को बढ़ाने वाला तथा फोड़ा-फुन्सी एवं विष प्रभाव की वृद्धि करने वाला माना जाता है।

जालक–जिस नीलम में जाल जैसा चिह्न हो, वह शरीर में रोगों की वृद्धि करने वाला माना जाता है।

दूधक–जो नीलम दूधिया रंग का हो, वह दरिद्रता को लाने वाला माना जाता है।

सफेद डोरिया–जिस नीलम में सफेद डोरी अथवा धारी-सी दिखायी दे, वह शरीर को पीड़ाकारक तथा आंखों में चोट पहुंचाने वाला माना जाता है।

दुरंगा–जिस नीलम में दो रंग दिखायी दें, वह सन्तान एवं पत्नी के लिए कष्टकारक तथा शत्रुओं से भय दिखाने वाला माना जाता है।

विन्दुयुक्त–जिस नीलम में श्वेत, लाल, काली अथवा शहद के रंग की बूंद दिखायी दे, वह गृहत्याग कराने वाला, पुत्र-सुखनाशक तथा शारीरिक स्वास्थ्य का विनाशक माना जाता है।

"नीलम" के दो उपरत्न माने जाते हैं–

जामुनिया–यह पत्थर भारत में त्रिकूट, विन्ध्याचल और हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों में पाया जाता है। यह जामुन के समान नीले रंग का हल्की लाली, गुलाबीपन अथवा सफेदी लिए हुए स्वच्छ, हल्का, चिकना तथा चमकदार होता है।

नीली–यह पत्थर भारत में नर्मदा एवं गंगा नदी तथा आबू एवं विन्ध्याचल पर्वत के तटवर्ती क्षेत्रों तथा बर्मा आदि देशों में पाया जाता है। यह लालिमा तथा नीलापन लिए हुए चमकदार होता है।

उक्त पत्थरों को नीलम के अभाव में धारण किया जा सकता है; पर नीलम की तुलना में कम प्रभावकारी रहते हैं।

नीलम को आभूषणों में जड़वाकर धारण किया जाता है, गृहपीड़ा-निवारणार्थ अंगूठी में जड़वाया जाता है तथा विभिन्न रोगों की चिकित्सा के लिए इसे भस्म आदि के रूप में भी प्रयोग में लाया जाता है। इस प्रकार इसके अनेक उपयोग हैं। नीलम धारण करने से धन-धान्य, सुख-सम्पत्ति, यश-कीर्ति, सम्मान, बल-बुद्धि एवं वंश की वृद्धि होती है। यह दुःख-दारिद्रय तथा रोग, दोष को भी दूर करता है। नीलम धारण करने पर मुख की कान्ति तथा नेत्रों की ज्योति में वृद्धि होती है। कहा जाता है कि नीलम को यदि हृदय के ऊपर धारण किया जाए तो यह हृदय को शक्ति प्रदान करता है।

नीलम धारण करने तथा औषधीय रूप में सेवन करने से खांसी, विषम ज्वर, हिचकी, मुंह से खून आना, अजीर्ण, दिमागी गरमी, नेत्ररोग, क्षय, दमा, कुष्ठरोग, हृदयरोग, कटिशूल, आधासीसी, मिरगी, जलोदर, मूत्राशय के रोग, गन्ध, कर्णमूल प्रदाह, रसोर्ल गंज, रूसी, खुजली आदि रोगों में लाभ होता है।

नीलम धारण करने के कुछ ही घण्टों के भीतर अपना प्रभाव प्रकट कर देने वाला विशिष्ट रत्न माना जाता है। यदि नीलम अनुकूल पड़े तो धन-धान्य, सुख आदि की वृद्धि करता है और यदि प्रतिकूल पड़े तो बने-बनाये काम को भी चौपट करके रख देता हैं। नीलम को धारण करने के बाद यदि 24 घण्टे के भीतर निम्नलिखित अनुभव हो तो नीलम को अशुभ समझकर तुरन्त उतार देना चाहिए–

यदि धारणकर्त्ता के चेहरे की बनावट में कोई अन्तर आ जाए, यदि नेत्ररोग हो जाए, यदि रात्रि के समय डरावने स्वप्न दिखायी दें, यदि कोई आकस्मिक

दुर्घटना-चोरी, हानि, रोग, भय, अग्नि, शस्त्राघात आदि हो जाएं।

उक्त सभी स्थितियों में नीलम को तुरन्त उतार देना चाहिए।

नीलम को अंगूठी में जड़वाने से पूर्व, पहले उसे किसी स्वच्छ, श्वेत वस्त्र में लपेटकर, भुजा में बांधकर 3 दिन तक उसके प्रभाव का अध्ययन करना चाहिए। यदि इस अवधि में पूर्वोक्त अशुभ घटनाओं में से कोई घटे तो नीलम लौटा देना चाहिए और यदि कोई अशुभ घटना न घटे अथवा कोई शुभ प्रभाव प्रकट हो तो उस नग को अंगूठी में जड़वाकर धारण कर लेना चाहिए। यदि नीलम अनुकूल पड़े तो उसे शनिवार के दिन मध्याह्न काल में दूध एवं जल से स्नान कराके तथा चन्दन, अक्षत आदि से चर्चित एवं विधिवत् पूजन करके धारण करने से शनि की साढ़ेसाती का दुष्प्रभाव दूर हो जाता है।

जिस समय शनि मकर अथवा कुम्भ राशि पर हो, अथवा तुला राशि के उच्च स्थान में हो, अथवा जिस शनिवार को श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराषाढ़ा, चित्रा, स्वाति या विशाखा नक्षत्र हो, उस दिन नीलम को खरीदकर उसे स्वर्ण, लोहे, रांगा, सीसा अथवा पंचधातु—सोना, चांदी, रांगा, सीसा और तांबा या लोहा की अंगूठी में जड़वाएं। अंगूठी में धातु का वजन 9 रत्ती से कम नहीं होना चाहिए। पंचधातु की अंगूठी सर्वश्रेष्ठ मानी गयी है। अंगूठी में जड़वाने के लिए नीलम का जितना अधिक वजन हो, उतना ही शुभ रहता है, परन्तु यह 4 रत्ती से कम वजन का नहीं होना चाहिए। 5 अथवा 7 रत्ती का नीलम अधिक शुभ माना जाता है।

नीलम के ऊपर शनि के अतिरिक्त शुक्र तथा बुध का भी विशेष प्रभाव रहता है। अतः एक ही अंगूठी में इन दोनों ग्रहों शुक्र तथा बुध के रत्नों, हीरा तथा पन्ना के साथ ही यदि नीलम को जड़वाया जाए तो और भी अधिक शुभ फलदायक होता है।

जब अंगूठी तैयार हो जाए, तब किसी शुभ मुहूर्त में शनिवार के दिन "**शनि**" यज्ञ करें तथा "**ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।**" इस मंत्र का उच्चारण करते हुए 6000 आहुतियां दें।

उक्त विधि से धारण की गयी नीलम की अंगूठी शनि के अनिष्टकर प्रभाव तथा दोषों को दूर कर, शुभ प्रभावों की वृद्धि तथा मनोभिलाषा की पूर्ति करती है। आरम्भ में 5 वर्ष तक वह धारणकर्त्ता पर अपना पूर्ण प्रभाव प्रदर्शित करता है, तत्पश्चात् प्रभावहीन हो जाता है।

इस प्रकार प्रति 5 वर्ष बाद नए नीलम की अंगूठी धारण करनी चाहिए तथा

पुराने रत्न को बेच देना अथवा किसी अन्य व्यक्ति को दे देना चाहिए। पुराना नीलम दूसरे व्यक्ति के पास पहुंचकर पुनः 5 वर्ष के लिए प्रभावी हो जाता है। वह व्यक्ति भी 5 वर्ष बाद उस नग को किसी तीसरे व्यक्ति को दे दे तो उसके पास पहुंचकर वह पुनः 5 वर्ष के लिए प्रभावकारी हो जाएगा।

शुक्र

नवग्रह मण्डल में ''शुक्र'' को मंत्री का पद प्राप्त है। इसे कला, प्रेम, सौन्दर्य और आकर्षण का देवता भी माना जाता है। यह ग्रह एक ओर तो विषय-वासना में लिप्त होने की उत्तेजना देता है और दूसरी ओर माता की भांति निःस्वार्थ प्रेम भी प्रदर्शित करता है। जिस प्रकार बृहस्पति देवताओं के गुरु हैं, उसी प्रकार शुक्र को राक्षसों का गुरु माना गया है। सौर मण्डल में यह सूर्य तथा चन्द्रमा के पश्चात् सर्वाधिक तेजस्वी तथा प्रकाशमान है। इसकी कक्षा बुध के ऊपर मानी गयी है।

सूर्य से शुक्र की दूरी 67,00,0000 मील तथा पृथ्वी से 343,00,000 मील मानी जाती है। वर्ष में एक बार यह पृथ्वी के अत्यन्त समीप आ जाता है, तब यह अधिक चमकदार दिखायी देता है। इसका व्यास 7700 मील का है। यह 22 मील प्रति सेकण्ड की गति से चलकर 224 दिन में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी कर लेता है। यह राशि पर एक मास तक रहता है।

यदि यह सीधी गति से चलता रहे तो एक राशि का भ्रमण एक वर्ष में पूरा कर लेता है।

यह पश्चिम दिशा में उदय तथा पूर्व में अस्त होता है। मंगल तथा बृहस्पति की भांति शुक्र ग्रह की खोज के लिए भी वैज्ञानिक प्रयत्न कर रहे हैं।

शुक्र ग्रह स्त्रीलिंग, राजस स्वभाव, पीत रंग, ब्राह्मण जाति, कफ प्रकृति वाला, जलतत्व-प्रधान, घुंघराले केश, सुन्दर नेत्र तथा मोहक शरीर, स्वार्थी, विलासी एवं किशोर आयु वाला तेजस्वी ग्रह है। यह आग्नेय दिशा का स्वामी, द्विपद अम्बल रस वाला, बसन्त ऋतु का अधिपति तथा बली है। इसे वर्षो तथा कामेच्छा का अधिष्ठाता देवता माना जाता है। जलचर तथा शयनागार इसके निवास स्थल हैं। कृष्णा से गोमती नदी तक का सारा प्रदेश इसके आधिपत्य में माना गया है।

इसके नक्षत्र भरणी, पूर्वाफाल्गुनी तथा पूर्वाषाढ़ा हैं। यह मीन राशि के 2 अंश तक उच्च, कन्या राशि के 27 अंश तक नीच तथा तुला राशि के 20 मूल त्रिकोणस्थ माना जाता है।

वृष तथा तुला इसकी अपनी राशियां हैं। तुला राशि पर यह बलवान् होता

है। धनु तथा मकर इसकी मित्र राशियां हैं। कर्क तथा सिंह शत्रु हैं। बुध के साथ इसका सात्विक; शनि एवं राहु के साथ तामस तथा चन्द्र, सूर्य एवं मंगल के साथ इसका शत्रुवत् व्यवहार रहता है। ग्रहों की मैत्री में बुध, शनि, राहु तथा केतु इसके मित्र हैं; मंगल तथा गुरु सम हैं तथा सूर्य एवं चन्द्रमा शत्रु हैं।

गुरु तथा सूर्य इससे शत्रुता रखते हैं तथा चन्द्रमा और मंगल समभाव रखते हैं। यह जिस भाव में बैठा होता है, वहां से सप्तभाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है। मिथुन, कन्या, मकर तथा कुम्भ लग्न में स्थित शुक्र योग कारक होता है। कृत्तिका, ज्येष्ठा, आश्लेषा, रेवती, स्वाति एवं आर्द्रा नक्षत्रों में शुभ फलदायक तथा भरणी, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, मृगशिरा, चित्रा एवं धनिष्ठा आदि नक्षत्रों पर अशुफ फल देता है। छठे भाव में स्थित शुक्र को निष्फल तथा सप्तभाव में स्थित शुक्र को अनिष्टकर माना गया है।

यह शुक्रवार सर्वोच्च राशि तथा तृतीय, चतुर्थ एवं द्वादश भाव में शुभ माना गया है। कुछ षष्ठ भाव में शुभ मानते हैं। शुक्र के द्वारा ऐश्वर्य, भोग, विवाह, प्रेम, संगीत काव्य, चित्रकला, ललित कलाएं, छल-कपट, स्निग्धता, सौन्दर्य, शारीरिक बल, विपरीत नौकरी, पत्नी-प्रेमिका, कामेच्छा, शयनकक्ष, वस्त्राभूषण, आंख, कफ, वीर्य आदि धातुओं "वाहन" अस्त्राभूषण एवं चातुर्य आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है। सांसारिक तथा व्यावहारिक सुख के सम्बन्ध में शुक्र के द्वारा ही विचार किया जाता है।

यह ग्रह पत्नी का कारक है। यह कवि, चित्रकार, संगीतज्ञ, अभिनेता, अन्य कलाओं के कलाकार, सुगन्धित एवं शृंगार प्रसाधनादि वस्तुओं के निर्माता, हलवाई, होटलों के कार्यकर्त्ता आदि का प्रतिनिधित्व करता है। यह श्वेत अश्व, हाथी, श्वेत वर्ण के पुष्प तथा फल, सुगन्धित द्रव्य, हीरा, मणि, चांदी, स्वर्ण आभूषण, स्फटिक, रेशमी वस्त्र, चीनी, चावल, अंजीर, रूई आदि वस्तुओं का स्वामी है। इसके द्वारा मांस अथवा चर्म-सम्बन्धी रोग, रतिज रोग, मूत्राशय, अण्डाशय, मुरदा, कफ, वीर्य, रज, व्यवसाय, धन, वाहन, सौन्दर्य, कामेच्छा, स्त्री-संसर्ग, अन्य योग आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

शुक्र 28 वर्ष की अवस्था में अपने शुभ अथवा अशुभ प्रभाव को प्रदर्शित करता है।

शुक्र का रत्न "हीरा" है। जन्मकुण्डली में शुक्र निर्बल अथवा अशुभ हो तो हीरा धारण करना शुभ होता है। हीरे के अभाव में उसके उपरत्न कांसला और कुरंज आदि धारण करने से भी शुभ फल प्राप्त होता है।

"शुक्र" का मंत्र इस प्रकार है—ॐ **द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।**

जिन लोगों की जन्मकुण्डली में शुक्र निर्बल हो, उनके लिए हीरा अथवा हीरे के उपरत्नों को धारण करना शुभ रहता है।

हीरा अथवा शुक्र के अन्य उपरत्नों को धारण करने से शुक्र का अशुभ प्रभाव कम होता है।

हीरे में कई प्रकार के दोष भी पाए जाते हैं, सामान्यतः दोषी हीरे को धारण करना अशुभ फलकारक होता है।

हीरे का मुख्य रंग श्वेत होता है, परन्तु हीरे अन्य रंगों में भी पाए जाते हैं। प्राचीन ग्रंथों में हीरे के आठ मुख्य भेदों का वर्णन है—

कमलापति—यह हीरा अनार अथवा गुलाबी रंग के कमल पुष्प जैसे वर्ण का होता है।

हंसपति—यह हीरा हंस के पंख, बगुला, दूध तथा दही के समान श्वेत वर्ण वाला होता है।

बसन्ती—यह हीरा गेंदा, जर्द गुलदाऊदी अथवा पुखराज के रंग का होता है।

वज्रनील—यह अलसी के पुष्प अथवा नीलकंठ पक्षी के रंग का होता है।

तैलिया—इस हीरे में जर्मी तथा स्याही पायी जाती है। यह अत्यन्त चिकना होता है।

वनस्पति—यह हीरा जल अथवा सिरस के रंग का होता है।

श्याम वज्र—यह हीरा काले रंग का होता है।

सनलोई—इस किस्म के हीरे का रंग पीला और श्याम, सुर्ख तथा भूरा होता है।

अत्यधिक चमकदार तथा इन्द्रधनुषी लौ देने वाला हीरा पुर्ल्लिग होता है। ऐसे हीरे को यदि पानी में डाल दिया जाए तो उसकी चमक पानी के ऊपर तैरने लगती है। ऐसा हीरा अष्टकोणी तथा श्वेत रंग का होता है। कुछ-कुछ गोल, चपटा, आयताकार, षट्कोणी तथा बिन्दु एवं रेखायुक्त हीरा स्त्रीलिंग होता है। वजन में कुछ अधिक भारी, कोण तथा तीक्ष्ण किनारों से रहित गोल आकार वाला हीरा "नपुंसक लिंग" होता है।

हीरे की विशेषताएं

श्रेष्ठ हीरे में निम्नलिखित विशेषताएं पायी जाती हैं—चिकनापन, चमक, अन्धकार में चमकने वाला, सुन्दरता, कठोरता, अच्छा रंग।

हीरा सबसे कठोर रत्न माना गया है। इसी कारण इसे वज्र नाम भी दिया गया है। यह न तो किसी दूसरे पदार्थ द्वारा घिसा ही जा सकता है और न कोई अन्य पदार्थ इसे खुरच ही सकता है। अत्यधिक कठोरता के कारण ही यह अपनी चमक नहीं खोता।

यह कठोरता ही हीरे का मुख्य गुण माना जाता है; परन्तु सर्वाधिक कठोर होते हुए भी हीरा शीघ्र टूट जाने वाला रत्न है, यदि यह पक्के फर्श पर गिर पड़े तो चोट खा जाता है।

हीरा अत्यधिक ऊंचे तापमान में तपाकर लाल कर देने पर भी कठोर ही बना रहता है, क्योंकि इसका फैलाव बहुत कम होता है। हीरा प्रकाश का पूर्ण परिवर्तन करने वाला रत्न है, अर्थात इसके भीतर गया हुआ प्रकाश भीतर से पूरी तरह लौट आता है। इसी कारण यह सब रत्नों से अधिक चमकदार होता है।

हीरे को यदि पानी में डुबो दिया जाता है, तो भी इसकी चमक में कोई अन्तर नहीं आता, पानी में डालने पर भी यह ऐसा प्रतीत होता है, जैसे पानी के ऊपर तैर रहा हो। प्रायः सभी हीरों में से बिजली की धारा गुजर नहीं पाती, परन्तु ये ताप को अपने में से सफलतापूर्वक गुजरने देते हैं। इसी कारण हीरे शीतल लगते हैं। अलग-अलग स्थान के हीरों में कठोरता भी न्यूनाधिक पायी जाती है। किसी स्थान के हीरे अधिक और कहीं के कम कठोर होते हैं। एक ही नग में कहीं कम और कहीं अधिकता भी पायी जा सकती है। हीरे कुचालक होते हैं।

कठोरता का अर्थ केवल इतना ही है कि इसे किसी अन्य वस्तु से खुरचा नहीं जा सकता, वैसे यह अपने पहलों के समान्तर तलों पर आसानी से चिर जाता है।

प्राकृतिक रूप में हीरे आठ तथा बारह कोणों वाले मिलते हैं। भारतीय हीरे प्रायः आठ तिकोने पहलों के होते हैं तथा ब्राजीली हीरे समान्तर चौकोर बारह पहलों वाले पाए जाते हैं। चौकोर पहलों के लम्बकर्ण के समान्तर पट्टियां अथवा धारियां भी पायी जाती हैं।

यह कोण कुछ उभरे हुए होते हैं तथा इनके किनारे कुछ गोलाई-सी लिए रहते हैं। हीरे पारदर्शक तथा अपारदर्शक दोनों ही प्रकार के पाए जाते हैं। आभूषणों के रूप में पारदर्शक हीरों का ही उपयोग किया जाता है। पारदर्शक हीरे प्रायः दोषरहित होते हैं। रंगहीन तथा सामान्य हीरे अधिक मूल्यवान् माने जाते हैं। कहीं-कहीं हरिताभ हीरे भी पाए जाते हैं। माणिक्य तथा नीलम जैसे चटकीले रंगों के हीरे प्रायः नहीं मिलते।

हीरा यदि दोषयुक्त हो तो उसे धारण करने पर शुभ के स्थान पर अशुभ फल

प्राप्त होता है, अतः दोषी हीरा धारण करना वर्जित है। हीरे में यह मुख्य दोष पाए जाते हैं, उनके विषय में निम्नानुसार समझ लेना चाहिए—

गड्ढेदार—जिस हीरे में गड्ढा हो वह रोग लाने वाला माना जाता है।

कृष्णजवी—जिस हीरे में काले रंग का जौ जैसा चिह्न हो, यह सुख-सम्पत्ति को नष्ट करने वाला माना जाता है।

सुन्न—जिस हीरे में चमक न हो, वह "सुन्न" कहा जाता है। ऐसा हीरा धारण करने में मनोद्वेग तथा शारीरिक अवयवों में सुन्नता आती है। यह धन की हानि करने वाला माना जाता है।

मलदोषी हीरे की धार, कोने तथा मध्यभाग इन तीन स्थानों पर मलदोष हो सकता है। ऐसा हीरा सुख तथा सम्पत्ति के लिए हानिकारक होता है।

काकपद—जिस षट्कोण अथवा अष्टकोण हीरे के मध्य भाग में कौए के पंजे जैसा काला चिह्न हो उसे "काकपद" कहते हैं। ऐसा हीरा मृत्यु देने वाला माना गया है।

अबरखी—जिस हीरे की आभा अभ्रक जैसी धूम्रवर्ण हो वह दुःखदायी होता है।

रक्तमुखी—जिस हीरे में लाल रंग का दाग हो वह धन-धान्य को नष्ट करने वाला माना जाता है।

बिन्दु-युक्त—जिस हीरे में किसी भी प्रकार का छोटा-सा बिन्दु चिह्न दिखायी दे, उसे मृत्युकारक माना जाता है।

आड़ी रेखा-युक्त—जिस हीरे में आड़ी रेखा हो, उसे सुखनाशक माना जाता है।

धारयुक्त—जिस हीरे के मध्य में धार हो, वह रोग, अग्नि का भय उत्पन्न करने वाला होता है।

तिरछी रेखा-युक्त—जिस हीरे में तिरछी रेखा हो, उसे स्त्री के लिए कष्टकारक माना जाता है।

उक्त दोषों के अतिरिक्त सामान्य से अधिक कठोर, तैलियापन, भूरापन, जर्दी, रेखाजाल, निस्तेजप आदि भी हीरे के दोष माने जाते हैं।

गोमेद को हीरे का उपरत्न माना जाता है। हीरा उपलब्ध न होने पर गोमेद को धारण किया जा सकता है। कुछ रत्न-विद्वान् हीरे के अभाव में चांदी में जड़ा हुआ मोती धारण करने की राय देते हैं।

निम्नलिखित 5 किस्म के पत्थरों को हीरे के उपरत्न के रूप में ग्रहण किया जाता है। ये पत्थर हीरे की अपेक्षा कम मूल्य के होते हैं। जो लोग हीरा न खरीद

सकें, वे इन रत्नों को भी अंगूठी में जड़वाकर पहन सकते हैं।

सीमाक—यह पत्थर उत्तर दिशा के पर्वतों में अधिक पाया जाता है। कुछ लोग इसे "सिला" नाम से भी पुकारते हैं। यह हल्का लाल, गुलाबी अथवा हरे रंग का एवं सफेद, काले धब्बे वाला बहुत चिकना होता है।

तुरमुली—यह पत्थर गंगा, बेतवा तथा कावेरी नदियों के तटवर्ती क्षेत्रों, कामरूप देश तथा श्रीलंका में पाया जाता है। यह सफेद गुलाबी, श्याम तथा पीलापन लिए होता है।

कुरंज—यह पत्थर गंडकी नदी के तटवर्ती क्षेत्रों तथा हिमालय, विन्ध्य प्रदेश, काशी एवं गया के इलाकों में पाया जाता है। कुछ लोग इसे "कुरंगी" नाम से भी पुकारते हैं। यह सफेद अथवा गुलाबी रंग का होता है। इसमें पीली-सी झांई भी पायी जाती है।

कांसला—यह पत्थर सोन, तासी तथा सिन्धु नदियों के तटवर्ती क्षेत्रों, हैदराबाद एवं नेपाल में पाया जाता है। यह सफेद अथवा गुलाबी रंग का होता है। इसमें हरे रंग की हल्की झांई भी पायी जाती है। यह पानीदार होता है।

दतला—यह पत्थर सिंधु नदी के तटवर्ती क्षेत्रों, हिमालय तथा बर्मा में पाया जाता है। यह सफेद, चिकना, हल्का तथा चमकदार होता है।

हीरे को आभूषणों में जड़वाकर धारण किया जाता है, ग्रहपीड़ा-निवारणार्थ अंगूठी में जड़वाया जाता है तथा विभिन्न रोगों की चिकित्सा के लिए इसे प्रयोग में लाया जाता है। हीरा धारण करने से भूत-प्रेतादि की व्याधा दूर होती है, टोने-टोटकों का असर भी नहीं होता तथा विष का प्रभाव कम होता है। सहवास क्रिया के समय स्तम्भन शक्ति में वृद्धि होती है, शत्रु वशीभूत होता है, युद्ध में विजय प्राप्त होती है। यह विपरीत लिंगी तथा शत्रुओं को वश में करता है। इसके कारण शारीरिक स्वास्थ्य में वृद्धि होती है। मिरगी आदि रोग हीरा धारण करने से दूर होते हैं। वह पारस्परिक सद्भावना में वृद्धि करने वाला, वैवाहिक सम्बन्ध को स्थायी बनाने वाला तथा धारणा शक्ति की वृद्धि करने वाला भी माना जाता है।

हीरे की भस्म आदि का सेवन करने से—मृगी, अतिसार, संग्रहणी, पागलपन, नपुंसकता, वायु-प्रकोप, वीर्य की कमी, आधासीसी, मन्दाग्नि, हिस्टीरिया, भगन्दर, अन्धत्व, प्रमेह, राजयक्ष्मा, सूखा रोग, हृदय रोग, पक्षाघात, मोतियाबिन्द, श्वेत प्रदर, फेफड़े के रोग तथा कष्टर्तव आदि रोगों में लाभ होता है।

अंगूठी में जड़वाने के लिए हीरा जितना अधिक वजनी हो, उतना ही शुभ रहता है, परन्तु यह 1 रत्ती से कम वजन का नहीं होना चाहिए। जिस अंगूठी में

हीरा जड़वाया जाए, उसमें सोने का वजन भी कम-से-कम 7 रत्ती होना आवश्यक है। यदि सोने का वजन और अधिक हो तो शुभ रहता है। हीरे को सदैव स्वर्ण की अंगूठी में ही जड़वाना चाहिए। शुक्रवार के दिन जब भरणी, पूर्वाफाल्गुनी अथवा पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र हों अथवा शुक्र वृष, तुला या मीन राशि पर हो, तब सूर्योदय से प्रातः 10 बजे के बीच सोने की अंगूठी में हीरा जड़वाएं। तत्पश्चात् अंगूठी के हीरे में शुक्र की प्राणप्रतिष्ठा करके अंगूठी को अपने दाएं अथवा बाएं हाथ की अनामिका अंगुली में धारण करें। अंगूठी धारण करने वाले शुक्रवार के साथ ही पुष्य नक्षत्र भी हो तो वह मुहूर्त सर्वोत्तम रहता है।

हीरे को जिस दिन अंगूठी में जड़वाया जाता है, उस दिन से आरम्भ करके 7 वर्ष तक यह रत्न धारणकर्त्ता पर अपना प्रभाव प्रदर्शित करता है, तत्पश्चात् प्रभावहीन हो जाता है।

गुरु (बृहस्पति)

बृहस्पति को देवताओं का गुरु माना गया है। यह पुरुष जाति, पीतवर्ण, बड़े उदर तथा स्थूल शरीर वाला ब्राह्मणवर्ण, आकाशतत्व वाला, ईशान दिशा का स्वामी, समधातु, वृद्ध तथा सत्वगुण वाला शुभ ग्रह है। गुरु की राशि "धनु" तथा "मीन" है। धनु राशि पर यह होता है। यह कर्क राशि के 20 अंश तक उच्च, मकर राशि के 5 अंश तक नीच तथा धनु राशि में मूल त्रिकोणस्थ माना जाता है।

मेष, सिंह कन्या तथा वृश्चिक इसकी मित्र राशियां हैं। वृष, मिथुन और तुला शत्रु राशियां हैं। यह सूर्य के साथ सात्विक चन्द्रमा के साथ राजस, मंगल के साथ तामस तथा बुध और शुक्र के साथ शत्रुतापूर्ण व्यवहार रखता है। ग्रहों की नैसर्गिक मैत्री में सूर्य, चन्द्र तथा मंगल इसके मित्र माने गये हैं।

शनि, राहु, केतु सम तथा बुध और शुक्र शत्रु हैं। गुरु जिस भाव में स्थित होता है, वहां से पंचम, सप्तम भाव तथा नवम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है। यह उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, पुनर्वसु, पूर्वाभाद्रपद तथा विशाखा नक्षत्रों में शुभ फलदायक तथा आर्द्रा, स्वाति एवं शतभिषा आदि नक्षत्रों में अशुभ फलदायक होता है।

यह अपनी महादशा में कफ तथा चर्बी आदि पर प्रभाव डालता है। यह गुरुवार को उत्तरायण कर्क, वृश्चिक, धनु, कुम्भ तथा मीन राशि एवं लग्न में अधिक बलवान् माना जाता है। यह यदि चन्द्रमा के साथ बैठा हो तो चेष्टावली होता है। केन्द्रस्थ बृहस्पति को समस्त दोषों को दूर करने याला कहा गया है। द्वितीय भावस्थ गुरु विशेषबली होता है।

बृहस्पति के द्वारा इन्द्रिय-निग्रह, विद्या, ग्रह, शुभ कार्य, कीर्ति, पवित्र व्यवहार, राज्यसम्मान, यश, प्रतिष्ठा, पुत्र-पौत्रों, आध्यात्मिक सुख, ज्ञान, स्वास्थ्य, बुद्धि, विवेक, धर्म-कर्म, न्याय, लक्ष्मी, धन आदि विषयों का विचार किया जाता है। यह उदारता उच्चाभिलाषी, शान्त स्वभाव, पुरोहितत्व मन्त्रितत्व, सिद्धान्तवादिता, उदारता राजनीति, सम्मान, पति का कल्याण तथा बड़े भाई का भी द्योतक है। इसे हृदय का कारक भी माना गया है।

मनुष्य शरीर पर इसका अधिकार कमर से जंघा तथा चर्बी तथा जीभ पर माना जाता है। इसके द्वारा कफ, क्षय, सूजन, मूर्च्छा, कान तथा हृदय-सम्बन्धी रोगों का विचार किया जाता है।

गुरु स्वर्ण, कांस्य, धान, गेहूं, जौ, चना, दाल, ऊन, मोम, पीतवर्ण के पुष्प, फल एवं वस्त्र, घृत, धनिया, हल्दी, प्याज, लहसुन तथा अश्व का अधिपति है। इसका अधिदेवता, इन्द्र, ऋतु हेमन्त, धातु स्वर्ण तथा प्रतिनिधि पशु अश्व माना गया है। इस ग्रह को सम्मानदायक, कोमल बुद्धि वाला, सम्पत्ति प्रदायक तथा मानव का हितैषी माना जाता है। यह अपनी स्थिति के अनुरूप ही फल प्रदान करता है।

बृहस्पति 40 वर्ष की अवस्था में अपने शुभ अथवा अशुभ प्रभाव को प्रदर्शित करता है।

"गुरु" का रत्न "पीला पुखराज" है। गुरु निर्बल, अथवा अशुभ हो तो पुखराज धारण करना शुभ होता है।

पुखराज के अभाव में उसके उपरत्न सोनेला, सोहनमक्खी, कहरुवा आदि को धारण करने से आंशिक रूप में शुभ फल प्राप्त होता है।

"गुरु" का मंत्र इस प्रकार है—**ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः।**

जिन जातकों की जन्मकुण्डली में गुरु निर्बल हो उनके लिए पुखराज अथवा पुखराज के उपरत्नों को धारण करना शुभ रहता है। पुखराज अथवा गुरु के अन्य उपरत्नों को धारण करने से गुरु का प्रभाव कम होता है तथा शुभ प्रभाव की वृद्धि होती है।

पुखराज का रंग पीला होता है। हल्के और गहरे रंग के अनुसार इसकी मुख्यतः 5 किस्में पायी जाती हैं—हल्दी जैसे रंग का, केशर जैसे रंग का, नींबू के छिलके जैसे रंग का, कमरख जैसे रंग का, सोने जैसे रंग का, कुछ पुखराज श्वेत रंग के होते हैं और उनमें पीली झांई-सी मारती है। एकदम श्वेत रंग के पुखराज को "चन्द्रमणि" कहा जाता है।

श्रेष्ठ पुखराज में निम्नलिखित विशेषताएं पायी जाती हैं—चिकनापन,

चमकदार, पानीदार, पीले रंग का, पारदर्शी, व्यवस्थित किनारों वाला, जो पुखराज उत्तम पीली कान्ति वाला हो, हाथ में लेने पर भारी प्रतीत हो, पारदर्शी धब्बों से रहित, सम अंग वाला, स्पर्श में चिकना, चमकदार, छिद्ररहित तथा चम्पा अथवा अमलतास के पुष्प के समान पीतवर्ण हो उसे श्रेष्ठ बताया गया है। सामान्यतः पुखराज रंगरहित तथा पानी के समान स्वच्छ होते हैं। जिनमें पीलेपन की आभा हो, वे ही उत्तम माने जाते हैं।

हल्के हरे तथा हल्के नीले रंग की आभा वाले पुखराज भी कभी-कभी मिलते हैं, परन्तु गुलाबी अथवा लाल आभा वाले पुखराज बहुत दुर्लभ माने जाते हैं।

अन्य रत्नों की भाँति पुखराज के भी नकली रत्न तैयार किए जाते हैं। असली तथा नकली पुखराज की परीक्षा के लिए निम्नलिखित विधियों को प्रयोग में लाना चाहिए–

असली पुखराज को यदि सफेद रंग के स्वच्छ वस्त्र पर रखकर धूप में देखा जाए तो कपड़े पर पीले रंग की झांई-सी दिखायी देती है।

असली पुखराज को चौबीस घण्टे तक दूध में पड़ा रहने पर भी उसकी चमक में कोई अन्तर नहीं आता है।

असली पुखराज चमकदार होता हैं और उसमें गाय के दूध जैसा रंग होता है।

विषैले कीड़े ने जिस जगह काटा हो, वहां पुखराज घिसकर लगाने से यदि विष तुरन्त उतर जाए तो उसे असली समझना चाहिए।

असली पुखराज की अपेक्षा नकली का अंग नरम होता है।

असली पुखराज को यदि कसौटी पर घिसा जाए तो उसका रंग और अधिक बढ़ जाता है।

नकली पुखराज के रंग में रूखापन होता है और उसकी चमक भी कांच के समान होती है।

पुखराज यदि दोषयुक्त हो तो उसे धारण करने पर शुभ के स्थान पर अशुभ फल ही अधिक प्राप्त होता है, अतः दोषी पुखराज धारण करना वर्जित है।

सुन्न–जिस पुखराज में चमक न हो, उसे "सुन्न" कहा जाता है। ऐसा रत्न स्वास्थ्य के लिए हानिकारक माना गया है।

जालक–जिस पुखराज में जाल चिह्न हो, वह सन्तान पक्ष के लिए हानिकारक होता है।

चीरा–जिस पुखराज में एक खड़ी लकीर-सी दिखायी दे, वह बन्धु-बांधवों से विरोध कराता है।

श्वेत बिन्दु-युक्त–जिस पुखराज में सफेद रंग की एक अथवा अनेक बूंदें हों वह मृत्युकारक माना जाता है।

दूधक–जिस पुखराज का दूधिया रंग हो, उसे धारण करने से शरीर में चोट लगती है।

छींटेदार–जिस पुखराज में एक से अधिक रंग के छींटे दिखायी देते हों, वह चिन्ता, शोक एवं रोगों को उत्पन्न करने वाला माना जाता है।

अबरखी–जिस पुखराज का रंग अभ्रक जैसा हो, वह रोग देने वाला माना जाता है।

लाल बिन्दु-युक्त–जिस पुखराज में लाल रंग की बूंद हो, वह धन-धान्य को नष्ट करने वाला माना जाता है।

गड्ढेदार–जिस पुखराज में गड्ढा हो, वह दरिद्रता देने वाला होता है।

काले बिन्दु-युक्त–जिस पुखराज में काले रंग की बूंद अथवा काला धब्बा हो, उसे हानिकर माना जाता है।

श्वेत बिन्दु-युक्त–जिस पुखराज में सफेद रंग की एक अथवा अनेक बूंदें हों वह मृत्युकारक माना जाता है।

स्पर्श में बालू के समान किरकिरा, दो छिद्रयुक्त, मलिन, बदरंग, रंगहीन, हल्का, चमकहीन, ऊंचा-नीचा, रक्त-पीत मिश्रित रंग का, श्वेत-पीत मिश्रित रंग अथवा मुनक्का जैसे रंग का पुखराज भी अशुभ माना जाता है।

निम्नलिखित प्रकार के पत्थरों को पुखराज का उपरत्न माना जाता है–

सोहनमक्खी–यह पत्थर भारत में गण्डक नदी के क्षेत्र तथा श्रीलंका, तिब्बत एवं काबुल में पाया जाता है। यह हल्का तथा भारी दोनों प्रकार का होता है।

सोनेला–यह पत्थर भारतवर्ष में हिमालय तथा क्षिप्रा नदी के तटवर्ती प्रदेश एवं तुर्किस्तान में पाया जाता है। यह सुनहरा, श्वेत, चिकना तथा चमकदार होता है। इसमें पुखराज जैसी झलक पायी जाती है। इसे कुछ लोग सुनहला भी कहते हैं।

कहरुवा–यह पत्थर बर्मा, चीन तथा ईरान में पाया जाता है। यह चमकदार, चिकना, हल्का पीले रंग का होता है।

घिया कपूरी–यह पत्थर ईरान में ही अधिक पाया जाता है, इसे अग्नि में जलाया जाए तो चिरचिराहट जैसी आवाज उत्पन्न होती है।

पुखराज को आभूषणों में जड़वाकर धारण किया जाता है। ग्रहपीड़ा-निवारणार्थ

अंगूठी में जड़वाया जाता है तथा विभिन्न रोगों की चिकित्सा के लिए भी प्रयोग में लाया जाता है। इस प्रकार इसके अनेक उपयोग हैं।

पुखराज धारण करने से बल-बुद्धि, आयु, स्वास्थ्य, यश, कीर्ति, अन्न, धन आदि की वृद्धि होती है। कन्या के विवाह में यदि अनावश्यक विलम्ब हो रहा हो तो वह पुखराज धारण करने से दूर हो जाता है। यह आध्यात्मिक विचारों को पुष्ट करता तथा भूत-प्रेत आदि की बाधा एवं रोगों का शमन करता है। पुखराज धारण करने से पागलपन का भी निवारण होना बताया जाता है।

पुखराज की भस्म अथवा पिष्ठी का सेवन करने से—एकान्तिक ज्वर, पीलिया, दमा, अर्श, खांसी, मुख की दुर्गन्ध, नेत्र-रोग, दन्त-रोग, हृदय-रोग, गुर्दे के रोग, कुष्ठ-रोग, नक्सीर, जलन, मंदाग्नि बसन, विषक्रिया, कफ, वायु-विकार, रक्तचाप, आंतों की सूजन, सिरदर्द, जले-कटे ब्रण, पित्तज्वर, रक्तस्राव, पित्त, खांसी, मिचली, विशूचिका, रक्त-विकार आदि रोगों में लाभ होता है।

अंगूठी में जड़वाने के लिए पुखराज जितना अधिक वजनी हो उतना ही शुभ रहता है, परन्तु वह 4 रत्ती से कम वजन का नहीं होना चाहिए। इसके अतिरिक्त 6, 11 अथवा 15 रत्ती वजन का पुखराज भी वर्जित माना गया है। 5, 7, 8, 10, 12, 14 रत्ती का विशेष शुभ माना जाता है। पुखराज को हमेशा सोने की अंगूठी में ही जड़वाना चाहिए, किसी अन्य धातु में नहीं। अंगूठी के लिए, सोने का वजन भी 8, 10, 12 या 14 रत्ती होना चाहिए। गुरुवार के दिन जब पुष्य नक्षत्र हो तब प्रातःकाल पुखराज जड़ित सोने की अंगूठी तैयार कराएं, फिर अंगूठी में बृहस्पति की प्राणप्रतिष्ठा करके सन्ध्या से पूर्व शुभ समय में अंगूठी को दाएं हाथ की तर्जनी अथवा अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए। अंगूठी धारण करने वाले दिन गुरुवार तथा पुष्य नक्षत्र हो तो अत्युत्तम रहता है, अन्यथा शुभ मुहूर्त होना तो आवश्यक है ही। अंगूठी पहनने के बाद दान देना चाहिए। इससे गुरु के अरिष्ट-कारक प्रभाव की शान्ति होती है।

बुध

सौर मण्डल में केवल "बुध" को ही "युवराज" का पद प्राप्त है। इसे चन्द्रमा का पुत्र माना गया है। ग्रहों की नैसर्गिक मैत्री में चन्द्रमा अपने पुत्र बुध से मित्रता रखता है, परन्तु बुध अपने पिता चन्द्रमा से शत्रुता रखता है।

पृथ्वी से बुध की दूरी 36, 84, 146 मील मानी जाती है। इसका व्यास 300 मील है। यह सूर्य के अत्यधिक समीप है, यह सूर्योदय के कुछ पल पूर्व ही उदय

तथा सूर्यास्त के बाद ही अस्त हो जाता है। इसका तापक्रम 3500 सेण्टीग्रेड तक रहता है, परन्तु जब यह सूर्य से दूर तथा पृथ्वी के समीप होता है, तब इसका तापक्रम घट जाता है। सौर मण्डल का यह सबसे छोटा ग्रह है। इसकी गति प्रति सेकण्ड लगभग 30 मील है।

सूर्य की प्रदक्षिणा करने में इसे लगभग 88 दिन लगते हैं, सामान्यतः यह एक राशि में 25 दिन तक भ्रमण करता है, जन्मकुण्डली में इसकी स्थिति प्रायः सूर्य के साथ अथवा एक भाव आगे-पीछे ही रहता है। सूर्य के साथ होने पर यह अस्त माना ज़ाता है। बुध की नपुंसक जाति, घास के समान हरित वर्ण, वात-पित्त एवं कफ प्रकृति-युक्त, रजोगुणी, पृथ्वी तत्व वाला, मस्तिष्क से वर्णिक परन्तु जाति से शूद्र, हास्य-व्यंग्यप्रिय, सुन्दर एवं प्रसन्न मुद्रा वाला, क्षीण शरीर तथा उत्तर दिशा का स्वामी माना गया है। यह पक्षी के समान आकार वाला, मित्र स्वभाव वाला माना गया है।

''बुध'' की स्वराशियां कन्या तथा मिथुन हैं। यह कन्या राशि के 15 अंश तक, उच्च मीन राशि के 15 अंश तक, नीच तथा कन्या राशि के 26 अंश तक मूल त्रिकोणस्थ माना जाता है। सूर्य, शुक्र, राहु तथा केतु के साथ यह मित्रभाव, मंगल, गुरु तथा शनि के साथ समभाव तथा चन्द्रमा के साथ शत्रुभाव रखता है। निसर्ग मैत्रीचक्र में सूर्य इसके साथ समभाव रखता है, मंगल तथा गुरु इसमें शत्रुता रखते हैं तथा चन्द्रमा, शुक्र, शनि, राहु और केतु मित्रता रखते हैं। यह जन्मकुण्डली के जिस भाव में स्थित होता है वहां से सप्तमभाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है। ''बुध'' मिथुन, कन्या तथा धनु राशि में बली होता है। वृष, सिंह और तुला इसकी मित्र राशियां हैं। कर्क शत्रु राशि है।

यह शुक्र के साथ राजसिक तथा चन्द्रमा के साथ शत्रुवत् व्यवहार करता है। यह आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती, रोहिणी, हस्त तथा श्रवण नक्षत्रों पर शुभ एवं आर्द्रा, स्वाति, पुष्य, अनुराधा, चित्रा, मघा एवं मूल नक्षत्रों पर अशुभ फल देता है। धनु तथा मीन राशि में निर्बल माना जाता है। यह गुरु तथा पूर्ण चन्द्रमा के साथ बैठकर शुभ फल तथा राहु, केतु, शनि अथवा मंगल के साथ बैठकर अशुभ फल देता है। शुक्र के साथ बैठकर मिश्रित फल देता है तथा सूर्य के साथ अस्त माना जाता है।

चौथे घर में होने पर यह निष्फल हो जाता है। यह जिस ग्रह के साथ बैठता है, वैसा ही फल देने लगता है, परन्तु यदि यह अकेला हो तो शुभ ग्रह माना जाता है।

यह मुख्यतः बुद्धि, वाणी तथा व्यवसाय का कारक है। इसके द्वारा ज्योतिष, शिल्प विज्ञान, कानून, चिकित्सा, उच्चस्तरीय तार्किकता, कूटनीति, पाण्डित्य, क्रीड़ा,

खेलकूद, सम्पादन, प्रकाशन, लेखनयुक्त-कौशल्य, अभिनय, एकाउण्टेन्सी, इन्जीनियरिंग अध्यापन, शिक्षण, सत्य, मैत्री, मूर्तिकला आदि विषयों का विचार किया जाता है। यात्रा तथा साक्षी के सम्बन्ध में भी इसी से विचार करते हैं। मतिभ्रम, रक्तहीनता, नाड़ी-कम्पन, गुप्त रोग, वात-रोग, श्वेत कुष्ठ, संग्रहणी, फेफड़ों के रोग, श्वास, दमा, मुख तथा नासिका-सम्बन्धी रोग, स्नायु, सिरदर्द, शूल, मंदाग्नि आदि रोगों का विचार भी बुध के द्वारा ही किया जाता है। शरीर पर कंधे तथा गर्दन पर इसका अधिकार माना जाता है। बुध प्रायः 35 वर्ष की अवस्था में अपने शुभ अथवा अशुभ प्रभाव को प्रदर्शित करता है।

"बुध" का रत्न "पन्ना" है। जन्मकुण्डली में बुध निर्बल अथवा अशुभ हो तो "पन्ना" धारण करना शुभ फलदायक होता है।

"बुध" का मंत्र इस प्रकार है—**ॐ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।**

जिन लोगों का जन्मकुण्डली में "बुध" निर्बल हो, उनके लिए पन्ना अथवा पन्ने के उपरत्नों को धारण करना शुभ रहता है।

पन्ना अथवा बुध के अन्य उपरत्नों को धारण करने से बुध का अशुभ प्रभाव कम होता है तथा शुभ प्रभाव की वृद्धि होती है।

पन्ने में कई प्रकार के दोष पाए जाते हैं, सामान्यतः दोषी पन्ने को धारण करना अशुभ फलदायक होता है।

पन्ने का रंग हरा होता है। हल्के और गहरे रंगभेद के अनुसार इसकी मुख्यतः 5 किस्में पायी जाती हैं; जैसे—सिरल के रंग का, तोते के पंख जैसे रंग का, हल्के रंग का, मोर के पंख जैसे रंग का। मखमली घास के समान हरे रंग का पन्ना सबसे सुन्दर तथा श्रेष्ठ माना जाता है।

श्रेष्ठ पन्ने में निम्नलिखित विशेषताएं पायी जाती हैं—

चिकनापन, वजन में हल्का, अच्छे घाट का, अच्छी चमक का, स्वच्छ परिदशापन, हरा रंग उत्तम कोटि के कोणयुक्त, स्निग्ध, लच्चदार, चारों ओर किरणें बिखेरने वाला, स्वतः के प्रकाश से प्रदीप्त, पानी की भांति स्वच्छ, कोमल जो टेढ़ा-मेढ़ा न हो तथा बहुरंगी पन्ना अशुभ माना जाता हैं।

अन्य रत्नों की भांति नकली पन्ने भी तैयार किए जाते हैं। नकली पन्ने प्रायः कांच से बनाए जाते हैं। असली तथा नकली पन्ने की परीक्षा के लिए निम्नलिखित विधियों को प्रयोग में लाया जाता है—

असली पन्ने को यदि सान पर चढ़ाया जाए तो वह चमक उठता है। असली पन्ने को यदि लकड़ी पर घिसा जाए तो उसमें चमक कुछ कम हो जाती है, जबकि

नकली पन्ने की लकड़ी पर रगड़ने से उसकी चमक बढ़ जाती है, असली पन्ने की ओर यदि देखा जाए तो आंखों में शीतलता का अनुभव होता है, असली पन्ने को यदि पानी से भरे हुए कांच के गिलास में डाल दिया जाए तो पानी में हरे रंग की किरणें भी निकलती दिखायी देती हैं, असली पन्ने को यदि किसी श्वेत स्वच्छ वस्त्र के ऊपर कुछ ऊंचाई पर रखा जाए तो वस्त्र हरे रंग का दिखायी देने लगता है। असली पन्ने को हाथ में लेने पर हल्का प्रतीत होता है, असली पन्ने को हाथ में लेकर यदि सूर्य के सामने किया जाए तो उसकी छाया हरे रंग की पड़ती है।

पन्ना दोषयुक्त हो तो उसे धारण करने पर शुभ के स्थान पर अशुभ फल ही प्राप्त होते हैं, पन्ने में दोष के विषय में निम्नानुसार समझ लेना चाहिए—

दुरंगा—जिस पन्ने में दो तरह के रंग दिखायी दें वह बल तथा बुद्धि का नाशक माना जाता है।

स्वर्णकांति दोषी—जिस पन्ने का रंग सोने जैसा हो अथवा जिसका मुंह पीला हो, वह अनेक कष्टों की वृद्धि करता है।

रूक्ष—जिस पन्ने में से देखने पर आकाश का रंग फटा हुआ-सा दिखायी दे। ऐसा पन्ना पशु-धन को नष्ट करने वाला कहा गया है।

धब्बेदार—जिस पन्ने में काले रंग के धब्बे दिखायी दें, वह स्त्री के लिए घातक माना जाता है।

धुन्ध—जिस पन्ने का रंग अबरसी तथा नेत्र रज के समान डोरेदार हो वह वंश-वृद्धि के लिए हानिकारक माना जाता है।

गांझा—जो पन्ना चमकरहित हो तथा जो पलटने पर सुन्न-सा दिखायी दे, वह धन-हानि करने वाला माना जाता है।

जालक—जिस पन्ने में जाल जैसा हो, वह शारीरिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक माना जाता है।

मध्य बिन्दु दोषी—जिस पन्ने में शहद के रंग की बूंद हो, वह माता-पिता के लिए कष्टप्रद कहा गया है।

लाल बिन्दु—जिस पन्ने में लाल रंग की बूंद हो, वह सुख-सम्पत्ति को नष्ट करने वाला कहा गया है।

चीरा—जिस पन्ने में एक सीधी रेखा अथवा अनेक पतली-पतली रेखाएं दिखायी दें, वह धननाशक कहा गया है।

गड्ढ़ा—जिस पन्ने में गड्ढ़ा जैसा दिखायी दे, वह शस्त्राघात का भय उपस्थित करने वाला होता है।

पीला बिन्दु–जिस पन्ने में पीले रंग की बूंद हो, वह पुत्रनाशक कहा गया है।

पन्ने के उपरत्न दो हैं–(1) टोडा, (2) बेरुज।

उक्त दोनों उपरत्न चमकदार हरे रंग के नरम तथा चिकने होते हैं। ये सफेद तथा पीली आभा वाले भी पाए जाते हैं। भारत में हिमालय, विन्ध्याचल, गिरनार, आबू पर्वत तथा नर्मदा नदी एवं बर्मा में यह प्रचुर मात्रा में पाया जाता है।

पन्ना को आभूषणों में धारण किया जाता है। ग्रहपीड़ा-निवारणार्थ अंगूठी में जड़वाकर रखा जाता है तथा विभिन्न रोगों की चिकित्सा के लिए इसे भस्म-पिष्ठी आदि रूप में भी प्रयोग में लाया जाता है। इस प्रकार इनके अनेक उपयोग हैं।

पन्ना धारण करने से बल बृद्धि एवं शरीर की पुष्टि होती है। यह रत्न अन्न, धन, सम्पत्ति तथा वंश की वृद्धि करता है। इसे धारण करने से जादू-टोना, टोटका, नजर, मिरगी, पागलपन आदि से रक्षा होती है, यह स्वप्नदोष-नाशक है। गर्भवती स्त्री की कमर में पन्ना बांध देने से प्रसव सुखपूर्वक होता है। यह रत्न सुख और आरोग्य की वृद्धि करने वाला माना जाता है।

पन्ने की भस्म अथवा पिष्ठी का सेवन करने से पथरी, गुर्दे के विकार, बवासीर, रक्त-विकार, पित्त-ज्वर, गुदा की गांठें, ज्वर, रक्तस्राव, आधासीसी, संग्रहणी, खांसी, वमन, विष, सन्निपात, दमा, शोध, अपच, पाण्डु आदि रोगों में लाभ होता है।

यह वीर्यवर्द्धक है। शारीरिक शक्ति एवं सौन्दर्य में वृद्धि कर, अम्ल, पित्त, जलन, मिचली, मृदुज्वर आदि को दूर करता है।

अंगूठी में जड़वाने के लिए जितना अधिक वजनी हो उतना ही शुभ रहता है, परन्तु वह 3 रत्ती से कम वजन का नहीं होना चाहिए। पन्ना हमेशा सोने की अंगूठी में ही जड़वाना चाहिए तथा अंगूठी से सोने का वजन भी कम-से-कम 3 रत्ती अवश्य होना चाहिए। 6 रत्ती स्वर्ण की अंगूठी अधिक शुभ मानी गयी है। मिथुन अथवा कन्या राशि, आश्लेषा, ज्येष्ठा अथवा रेवती नक्षत्र तथा बुध अथवा सूर्य नवमांश में बुध हो तो पन्ना धारण करना श्रेष्ठ फलदायक माना गया है। इन्हीं राशि नक्षत्र, बुधवार में प्रातः सूर्योदय से लेकर 10 बजे के मध्य सोने की अंगूठी तैयार करवाकर उसमें पन्ना जड़वाना चाहिए। अंगूठी तैयार हो जाने के बाद निम्नलिखित मंत्र द्वारा अंगूठी अभिमंत्रित करें–

ॐ बु बुधाय नमः।

पन्ने को जिस दिन अंगूठी में जड़वाया जाता है, उस दिन से आरम्भ करके 2 वर्ष तक वह रत्न धारणकर्त्ता पर अपना पूर्ण प्रभाव प्रदर्शित करता है, तत्पश्चात् वह प्रभावहीन हो जाता है।

मंगल

सौर मण्डल में मंगल को ''सेनापति'' का पद प्राप्त है। इसे ''युद्ध का देवता'' भी कहा जाता है। पृथ्वी से मंगल की दूरी 6, 25,00,000 मील मानी जाती है, परन्तु यह ग्रह हर पंद्रहवें वर्ष पृथ्वी के निकट भी जाता है। इसका व्यास 4115 मील है, सूर्य की परिक्रमा करने में इसे लगभग 687 दिन लगते हैं। यह ग्रह पूर्व में उदय होकर पश्चिम में अस्त होता है। एक राशि पर भ्रमण करने में इसे प्रायः डेढ़ मास का समय लगता है। मंगल की कक्षा बुध से 2 लाख योजन ऊपर मानी गयी है। यदि यह वक्री न हो तो एक-एक राशि को डेढ़ महीने भोगता हुआ कुल 18 महीने में सम्पूर्ण राशि का भ्रमण पूरा कर लेता है। यह कभी-कभी वक्री भी हो जाता है। अतः इसे सम्पूर्ण राशियों पर भ्रमण करने में कुछ अधिक समय भी लग जाता है। मंगल पुरुष जाति, रक्तवर्ण, पित्त प्रकृति, उग्र स्वभाव, क्षत्रिय वर्ण, अग्नि तत्व-प्रधान, रात्रिबली, दक्षिण दिशा का स्वामी तथा तमोगुण-प्रधान, तेजस्वी, अशुभ पापग्रह माना जाता है। पापग्रह होने पर भी यह ओजस्वी है। मंगल की राशियां ''मेष'' तथा ''वृश्चिक'' हैं। यह मकर राशि में उच्च, कर्क राशि में नीचे तथा मेष राशि के 3 अंश तक मूल त्रिकोणस्थ माना जाता है, सूर्य, चन्द्र तथा गुरु इसके मित्र; शुक्र और शनि सम तथा बुध, राहु और केतु शत्रु हैं। यह जन्मकुण्डली में चतुर्थ, सप्तम तथा अष्टम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है। ''मंगल'' मीन, वृश्चिक, कुम्भ, मकर तथा मेष राशि एवं दशम भाव में बलवान् होता है। मृगशिरा, चित्रा तथा धनिष्ठा इसके अपने नक्षत्र हैं।

सिंह, धनु तथा मीन राशियों से इसकी मित्रता है तथा कन्या एवं मिथुन शत्रु राशियां हैं। यह गुरु के साथ सात्विक, सूर्य के साथ राजस तथा बुध के साथ शत्रु भाव रखता है। यह तीसरे तथा छठे स्थान में बली, दशम स्थान में बलहीन हो जाता है। मंगल के द्वारा साहस, पराक्रम, धैर्य, स्फूर्ति, आत्मविश्वास गुण, रोग, शत्रु, जाति, शौर्य, वीरता, चालाकी, बड़े भाई का सुख, ईमानदारी, दरिद्रता, भाई-बहिन दुर्घटना, आघात, छल-कपट, झूठ, उत्तेजना, मकान, कृषि, पशु, धन, चोरी, क्रय-विक्रय आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

क्रोध, घृणा, आकस्मिक घटना, अग्नि, कर्म, दृढ़ता उत्पात, क्रीड़ा, खेल तथा अनैतिक प्रेम का यह ग्रह प्रतिनिधित्व करता है। शल्योपचार, सेना पुलिस शस्त्र-निर्माण, दुराचार तथा चोरी का कार्य करने वाले लोगों का यह प्रतिनिधि है।

प्रशासनिक योग्यता, वैज्ञानिक विषय, राजनीतिक क्षेत्र का नेतृत्व, सामाजिक क्षेत्र का कार्य, प्रभाव, प्रयत्न एवं अधिकारों का सदुपयोग, अनुशासनप्रियता एवं

विद्युत शक्ति के सम्बन्ध में भी इसी ग्रह के द्वारा विचार किया जाता है। मंगल ग्रह लाल वर्ण की वस्तुओं, मूंगा, स्वर्ण, तांबा, केशर, कस्तूरी, गुड़, लाल मसूर, शस्त्र, मिट्टी, मैनसिल, पारा, हरताल आदि का अधिपति है।

मानव-शरीर पर पेट से पीठ तक तथा फेफड़े, नाक, कान एवं शारीरिक बल से इसका सम्बन्ध रहता है। संक्रामक रोग, चेचक, लाल दाने, प्लेग, रक्त-विकार, रक्त-सुख, क्षय, शस्त्राघात, गर्मी, कफ पित्त, अग्निभय तथा ग्रन्थि रोगों का यह कारक माना जाता है।

''मंगल'' प्रायः 32 वर्ष की अवस्था में अपने शुभ अथवा अशुभ प्रभाव को प्रदर्शित करता है।

''मंगल'' का रत्न मूंगा है। जन्मकुण्डली में मंगल निर्बल अथवा अशुभ हो तो ''मूंगा'' धारण करना शुभ होता है।

''मंगल'' का मंत्र इस प्रकार है—ॐ **क्रां क्रीं क्रौ सः भौमाए नमः।**

जिस जातक की जन्मकुण्डली में मंगल निर्बल हो, उनके लिए मूंगा अथवा मूंगे की माला या इसके उपरत्नों को धारण करना लाभदायक रहता है।

जिन लोगों का जन्म 1 अप्रैल से 14 मई के बीच अथवा 15 नवम्बर से 4 दिसम्बर के बीच हुआ हो, उन्हें मूंगा धारण करना शुभ होता है।

मूंगे में कई प्रकार के दोष भी पाए जाते हैं, सामान्यतः दोषी मूंगे को धारण करना अशुभ होता है।

मूंगे का रंग लाल होता है। हल्के और गहरे रंगभेद के अनुसार इसकी कई किस्में होती हैं; जैसे—गहरे लाल रंग, सिन्दूरिया रंग, हिंगुल वर्ण, गेरुआ रंग, इसके अतिरिक्त गुलाबी, सफेद, काले, भूरे, धूसर वर्ण वाले मूंगे भी पाए जाते हैं, परन्तु लाल रंग समूह के मूंगों का ही व्यवहार किया जाता है।

मूंगे में निम्नलिख़ित विशेषताएं भी पायी जाती हैं—गोल, लम्बा, सीधा, चिकना अथवा ब्रण आदि के रहित, मोटा, चमकदार, पके हुए फल जैसे रंग का, कोणदार, मुख्यतः त्रिकोण, औसत से कुछ अधिक वजनी अर्थात् भारी। सिन्दूरी, हिंगुल अथवा शिगरफ के रंग से मिलते-जुलते मूंगे भी, यदि उक्त गुणयुक्त हों, तो शुभ तथा श्रेष्ठ माने जाते हैं।

अन्य रत्नों की भांति मूंगे भी नकली तैयार किए जाते हैं। नकली मूंगे कांच से बनाए जाते हैं।

असली मूंगे को यदि गाय के दूध में डाल दिया जाए तो उसमें लाल रंग की झाईं-सी दिखने लगती है, जबकि नकली मूंगे को डालने पर दूध में ऐसा नहीं होता।

मूंगे को यदि रक्त में डाल दिया जाए तो उसके चारों ओर गाढ़ा रक्त जमा हो जाता है। मूंगे को घिसने पर कांच की तरह आवाज आती है। मूंगा वजन में भारी होता है। आईग्लास से देखने पर नकली मूंगे में महीन तथा मोटे रवे स्पष्ट दिखाई देते हैं। मूंगे को धुनी हुई साफ रूई के ऊपर धूप में रख दिया जाए तो थोड़ी देर में उस रूई में आग लग जाती है।

''मूंगा'' यदि दोषयुक्त हो तो उसे धारण करने पर शुभ के स्थान पर अशुभ फल प्राप्त होता है, अतः दोषी मूंगा धारण करना वर्जित है। मूंगे में 9 प्रकार के मुख्य दोष पाए जाते हैं–

गड्ढेदार–गड्ढेदार मूंगा धारण करना दुःखों की वृद्धि करने वाला सिद्ध होता है।

अंग-भंग–टूटा हुआ अथवा कहीं कटा-छंटा हुआ मूंगा धारण करने से सुख-सम्पत्ति की हानि होती है।

छिद्रयुक्त–छेदवाला मूंगा शारीरिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक सिद्ध होता है।

घुना हुआ–घुना हुआ मूंगा धारण करने से आधासीसी तथा शरीर में दर्द उत्पन्न होता है।

चीरेदार–जिस मूंगे में चीरा-सा लगा हो, उसे धारण करने पर शस्त्र द्वारा चोट लगती है।

लाखी–जिस मूंगे का रंग लाख जैसा हो, वह चोरों का भय उत्पन्न करता है। टेढ़ा, पतला, खांचेदार, रूखा, काला, हल्का सफेद, जिसमें चूना हो तथा धूसर वर्ण के मूंगे भी निम्नकोटि के माने जाते हैं तथा ऐसे मूंगों का धारण करना अशुभ कहा गया है।

दुरंगा–जिस मूंगे में दो रंग मिले हों, वह सुख-सम्पत्ति का नाशक माना जाता है।

काले धब्बेवाला–जिस मूंगे में काले धब्बे हों, वह किसी आकस्मिक दुर्घटना का शिकार बनाने वाला होता है।

सफेद छींटोंवाला–जिस मूंगे में सफेद छींटे हों, वह रोगवृद्धिकारक होता है।

मूंगे के पौधे की जड़ में से जो अलग पतली शाखाएं निकलती हैं, उन्हें संगमूंगी कहा जाता है। ये शाखाएं हल्की होती हैं। इनका रंग लाल होता है तथा इनमें बहुत-से छिद्र भी होते हैं, परन्तु ये मूंगे के समान ही प्रभावकारी होते हैं।

मूंगे के दानों की मालाएं बनायी जाती हैं तथा उसे अंगूठी में जड़वाया जाता

है। विभिन्न रोगों की चिकित्सा के लिए भस्म तथा पिष्ठी के रूप में भी प्रयोग में लाया जाता है।

मूंगा धारण करने से हृदय रोग, मिरगी तथा नजर-सम्बन्धी दोष दूर होते हैं। यदि छोटे बालकों के गले में मूंगा पहना दिया तो सूखा, मैली एवं पेटदर्द आदि रोगों से मुक्त हो जाते हैं। गर्भिणी स्त्री के पेट पर मूंगा घिसकर लगाने से गर्भपात रुक जाता है और ठीक समय प्रसव होता है। जिस व्यक्ति के पास मूंगा हो, उसे भूत-प्रेत, चुड़ैल, डाकिनी आदि का भय नहीं रहता। मूंगे की भस्म का सेवन करने से रक्त विकार, मन्दाग्नि, प्लीहा, पेट का दर्द, हृदय रोग, वायु-विकार, कफ-विकार, मिरगी, खांसी, शारीरिक दुर्बलता, अम्लपित्त, खूनी पेचिश, बवासीर, आंतों में वृण, रक्त-विकार, बिगड़ा हुआ जुकाम, यक्ष्मा, रक्तमेह, मृत्रकृच्छ, अत्यधिक पसीना आना तथा रात्रि में पसीना आना आदि रोग दूर होते हैं। खुजली, चर्मरोग, कुष्ठ, स्नायुविक-अवसन्नता, मानसिक अवसन्नता आदि विकारों में भी इसका विविध प्रकारों से प्रयोग किया जाता है।

मंगलवार के दिन जब मेष अथवा वृश्चिक राशिगत चन्द्रमा हो, उस दिन अथवा मंगलवार को मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा अथवा धनिष्ठा में से कोई नक्षत्र हो, तब प्रातःकाल सोने की अंगूठी बनवाकर, उसमें मूंगा जड़वाना चाहिए। मूंगे को अंगूठी में इस प्रकार जड़वाना चाहिए कि उसका निचला भाग अंगुली को स्पर्श करता रहे। यदि किसी मंगलवार को मंगल मकर राशि में हो तो उस दिन अंगूठी तैयार करवाना और भी अधिक शुभ माना गया है। रवि-मंगल के योग में सोने की अंगूठी में तथा चन्द्र-मंगल के योग में चांदी की अंगूठी में मूंगा जड़वाना चाहिए। अंगूठी के तैयार हो जाने पर, प्रातः 10 बजे के बाद भौम यज्ञ करें। प्राणप्रतिष्ठा कर, उसे बायें हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण कर लें तथा ब्राह्मण को यथाशक्ति दक्षिणा दें। उक्त विधि से धारण की गयी मूंगे की अंगूठी मंगलकृत अनिष्ट प्रभाव को दूर कर, मनवांछित फल प्रदान करती है।

चन्द्रमा

चन्द्रमा पृथ्वी से, 2,38,000 मील की दूरी पर है। इसका व्यास 2453 मील है। यह पश्चिम दिशा में उदय होकर पूर्व में अस्त होता है। यह सौर मण्डल का सर्वाधिक द्रुतगामी ग्रह है। यह एक राशि पर लगभग सवा दो दिन रहता है तथा 2183 मील प्रति घण्टे की चाल से चलता हुआ 27 दिन 6 घंटा 43 मिनट 11 सेकण्ड में सम्पूर्ण राशिचक्र का भ्रमण पूरा कर लेता है। पहले विद्वानों का विश्वास

था कि चन्द्रमा पृथ्वी का ही एक भाग है, परन्तु आज के निष्कर्षों के अनुसार, चन्द्रमा को अन्य ग्रहों का भांति ही एक स्वतन्त्र ग्रह के रूप में स्वीकार किया जाने लगा है। चन्द्रमा स्त्री जाति श्वेतवर्ण, कफ-वात प्रकृति, वायव्य दिशा का स्वामी तथा सत्वगुण-प्रधान ग्रह माना जाता है। इसे मन का स्वामी माना जाता है। चन्द्रमा की राशि "कर्क" है। यह "वृष" राशि में उच्च तथा मूल त्रिकोणस्थ एवं वृश्चिक राशि में नीच माना जाता है। सूर्य तथा बुध चन्द्रमा के नैसर्गिक मित्र हैं। बुध को चन्द्रमा का पुत्र माना जाता है। चन्द्रमा बुध से मित्रता मानता है, परन्तु बुध चन्द्रमा को अपना शत्रु मानता है। मंगल, शुक्र, शनि तथा गुरु—इन चारों ग्रहों से चन्द्रमा समभाव रखता है तथा राहु और केतु इन दोनों से चन्द्रमा को शत्रुता है। जन्मकुण्डली के जिस भाव में चन्द्रमा स्थित होता है, वहां से सातवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है।

मेष, तुला, वृश्चिक तथा मीन लग्न में स्थित चन्द्रमा योगकारक होता है। रोहिणी, हस्त, श्रवण, पुनर्वसु, विशाखा एवं पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रों पर स्थित चन्द्रमा श्रेष्ठ फलदायक होता है। कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी, आश्लेषा, ज्येष्ठा, उत्तराषाढ़ा तथा रेवती नक्षत्र पर स्थित चन्द्रमा भी शुभ फल देता है। यह चतुर्थ स्थान में बली तथा मकर से 6 राशियों में चेष्टाबली होता है।

चन्द्रमा मन-चित्तवृत्ति, शारीरिक पुष्टि, राजा, सम्पत्ति, माता-पिता तथा चतुर्थ भाव का कारक है। यह सौभाग्य, गार्हस्थ-सुख, देश-प्रेम, भावनात्मक-सहानुभूति, कल्पनाशक्ति, सौन्दर्य, विद्या तथा ज़नसाधारण का प्रतिनिधित्व करता है।

यह पारिवारिक जीवन, व्यक्तिगत कार्य, नेत्र दृष्टि तथा मन एवं मस्तिष्क पर प्रभाव डालता है। मानव-शरीर में गले से हृदय तक अण्डकोश एवं गर्भ आदि पर चन्द्रमा का आधिपत्य माना जाता है। यह स्त्री वर्ग एवं पिंगला नाड़ी का प्रतिनिधित्व करता है। शुभ चन्द्रमा भ्रमणशील, साहसी व्यक्तियों, राज्यभक्ति, माताओं, बच्चों, कोमलता एवं दयालुता का प्रतिनिधित्व भी करता है।

यह मनुष्य के हाव-भाव, स्वभाव, मन की गति, मानसिक स्थिति एवं अड़ोस-पड़ोस की स्थिति का भी परिचायक है। वैयक्तिक चरित्र, गुण विचार, भाव, उद्वेग, विचार-प्रक्रिया, व्यक्तित्व आदि को चन्द्रमा के ही अधीन माना जाता है। चन्द्रमा, यात्री, शिकारी, मछुए, मद्य, वैश्या, न [illegible], औषधी, मोती, जलोत्पन्न वस्तुओं के व्यवसायी तथा परिचायिका का प्रतिनिधि भी है। शुभ चन्द्र, नेत्र-रोग, अस्थिर मस्तिष्क, अस्थिर मन, मानसिक पीड़ा, आलस्य, स्त्रीजन्य-रोग, स्त्रियों से प्राप्त व्याकुलता, शरीर में कैल्शियम का अभाव, मूत्रकृच्छ, पोलियो-दोष, कफ-दोष,

जल-दोष आदि रोगों के विषय में चन्द्रमा द्वारा विचार किया जाता है। चन्द्रमा मोती, चांदी, श्वेत वस्त्र, नमक, श्वेत पुष्प, मधु, चावल, मिश्री, गन्ना, कृषि, श्वेत बैल तथा स्त्री के आश्रय आदि से होने वाले लाभ का भी प्रतिनिधित्व करता है। चन्द्रमा 25 वर्ष की अवस्था में अपने शुभ अथवा अशुभ प्रभाव को प्रदर्शित करता है।

चन्द्रमा का रत्न मोती है। जन्मकुण्डली में चन्द्रमा निर्बल हो तो "मोती" धारण करना शुभ फलदायक होता है। चांदी का चन्द्रमा भी श्रेयस्कर बतलाया गया है। मोती के अभाव में सफेद रंग का पुखराज चन्द्रमा के अन्य उपरत्नों को धारण करने से भी शुभ फल प्राप्त होता है। सीप भी पहना जा सकता है।

"चन्द्रमा" का मंत्र इस प्रकार है—ॐ **श्रीं श्रीं श्रीं सः चन्द्राए नमः।**

जिन लोगों की जन्मकुण्डली में "चन्द्रमा" निर्बल हो, उसके लिए मोती अथवा चन्द्रमा के उपरत्नों को धारण करना शुभ रहता है। मोती अथवा चन्द्रमा के अन्य उपरत्नों को धारण करने से चन्द्रमा का अशुभ प्रभाव कम होता है तथा शुभ प्रभाव की वृद्धि होती है।

"मोती" में कई प्रकार के दोष भी पाए जाते हैं। सामान्यतः दोषी मोती को धारण करना अशुभ फलकारक होता है।

प्राचीन भारतीय ग्रंथों में मोती-प्राप्ति के आठ मुख्य स्थान बताए हैं और इसकी गणना "जैविक रत्नों" में की गयी है। मोतियों की इन आठ मुख्य किस्मों में से पहली 7 किस्में अलभ्य हैं। मैंने उन्हें कभी नहीं देखा है। अनेक बार प्रयास करने पर भी असफलता ही मिली है। (1) गजमुक्ता, (2) शंखमुक्ता, (3) शक्तिमुक्ता, (4) सर्पमुक्ता, (5) शूकरमुक्ता, (6) मीनमुक्ता, (7) वंशमुक्ता, (8) मेघमुक्ता।

(1) गजमुक्ता—यह मोती ऐरावत वंश के हाथियों के मस्तक में पाया जाता है। जिन हाथियों का जन्म उत्तरायण सूर्य में सोमवार अथवा रविवार के दिन पुष्य अथवा श्रवण नक्षत्र में हुआ हो, उन्हीं के कण्ठ-कपोल, कुम्भस्थल अथवा मस्तक में यह मोती उत्पन्न होता है। इसका आकार आंचले के फल के बराबर तथा रंग सूर्य-चन्द्र की मन्द प्रभा के समान होता है। यह मोती गोल, स्निग्ध, सुडौल तथा तेजयुक्त होता है।

"गजमुक्ता" सब प्रकार के मोतियों में श्रेष्ठ है। यह मोती जिस स्थान पर रहता है, वहां कोई विघ्न नहीं टिक पाता। सब ओर प्रसन्नता और शान्ति देने वाला है।

(2) शंखमुक्ता—यह मोती समुद्र के पांच जन्मजाति के शंखों में पाया जाता है। आकार-प्रकार से अण्डे के बराबर तथा रंग हल्का पीला अथवा नीला होता है।

यद्यपि इसमें विशेष चमक नहीं होती, तथापि यह देखने में सुडौल तथा सुन्दर होता है। इस मोती में यज्ञोपवीत की भांति तीन धारियां भी पायी जाती हैं। यह भी किसी भाग्यशाली व्यक्ति को ही बड़ी कठिनाई से मिल पाता है।

"शंखमुक्ता" अचल लक्ष्मी देने वाला, सम्मानदायक, सुख-सम्पत्ति प्रदायक तथा समस्त मनोभिलाषाओं की पूर्ति करने वाला बताया जाता है। इसे विद्वानों ने दारिद्रय एवं पापनाशक भी कहा है।

(३) **शक्तिमुक्ता**—यह मोती समुद्र में पायी जाने वाली सीपियों के गर्भ से निकलते हैं तथा इन्हें बड़ी संख्या में प्राप्त भी किया जाता है।

कहा जाता है कि स्वाति नक्षत्र में होने वाली वर्षा की बूंदें जब समुद्र में गिरती हैं और उनका जल उस सीप के गर्भ में पहुंचता है, उसी में मोती उत्पन्न हो जाता है, इन मोतियों पर चन्द्रमा का पूर्ण प्रभाव पाया जाता है। सीप के मोती छोटे-बड़े आकार में, गोल, लम्बे, चपटे तथा सुडौल—अनेक किस्म के पाए जाते हैं। ये चांदनी के समान, उज्ज्वल, चमकदार, स्निग्ध तथा अत्यन्त सुकुमार होते हैं। इन्हें बींधा भी जा सकता है। ये सफेद हल्के पीले, गंदुमी तथा काले रंग के भी पाए जाते हैं। बड़े गोल चमकदार मोती को अच्छी श्रेणी का माना जाता है।

विभिन्न तत्वों की न्यूनाधिकता के कारण इन मोतियों के रूप-रंग आदि में अन्तर आ जाता है।

"आकाश तत्व" वाले मोती सुन्न तथा वजन में हल्के होते हैं।

"अग्नि तत्व" वाले मोतियों की कान्ति रक्तिम होती है।

"भूमि तत्व" वाले मोती भारी होते हैं।

"वायु तत्व" वाले मोती नीली आभा वाले, गर्जनशील तथा लहरदार होते हैं।

"जल तत्व" वाले मोती निर्मल तथा चमकदार होते हैं।

असली मोती सदैव समुद्र की सीपों में पाया जाता है।

नकली मोती कांच से तैयार किए जाते हैं। सीप, शंख आदि पदार्थों से भी नकली मोती बनाए जाते हैं। नकली मोतियों में मोमभरे दाने, जिन्हें मछली के ऊपर कठोर आवरण द्वारा तैयार किए गए द्रव में डुबाकर बनाया जाता है, देखने में अधिक आकर्षक प्रतीत होते हैं; परन्तु मोती अधिक टिकाऊ नहीं होते।

असली मोती में निम्नलिखित विशेषताएं पायी जाती हैं—

चिकनापन, निर्मलता, उज्ज्वलता, चन्द्रमा के समान कान्ति, कोमलता, सुडौलता, गोलाई, हल्कापन।

अच्छा मोती चन्द्रमा जैसी दीप्ति बिखेरता है, वह पूरी तरह गोल, ठोस तथा

चिकना होता है। उसकी चिकनाहट में **परछाईं स्पष्ट** दिखायी देती है।

(4) **सर्पमुक्ता**—यह मोती वासुकी **वंश के** सर्पों के मस्तक में पाया जाता है। इसी को कुछ लोग ''नागमणि'' के नाम से भी पुकारते हैं। जिस सर्प के मस्तक में यह मोती होता है, हल्के नीले रंग का तेजस्वी प्रकाशयुक्त तथा गोल आकार का होता है।

''सर्पमुक्ता'' किन्हीं भाग्यशाली लोगों को ही मिल पाता है, यह मोती जिस स्थान पर उपस्थित रहता है, वहां धन-सम्पत्ति, सन्तान तथा समस्त मनोभिलाषाओं की पूर्ति हो जाती है।

(5) **शूकरमुक्ता**—यह मोती वाराह वंश के शूकर के मस्तिष्क में उत्पन्न होता है। यह अत्यन्त सुन्दर, चमकदार रंगों में पीलापन लिए हुए भटकटका के फल के आकार जितना गोल तथा कठिनाई से प्राप्त होता है।

शूकरमुक्ता भी किसी भाग्यशाली को ही मिल पाता है। इस मोती को वाक्‌सिद्धि, स्वरसिद्धि तथा सम्पत्तिदायक बताया गया है। गर्भवती स्त्री इस मोती को धारण करे तो यह अवश्य ही पुत्र को जन्म देती है।

(6) **मीनमुक्ता**—यह मोती समुद्र में रहने वाली मछलियों के पेट से प्राप्त होता है। इसका रंग पीला तथा आकार धुंधली के बराबर का होता है। करोड़ों-अरबों में से किसी एक विशेष मछली के उदर में यह मिल पाता है।

''मीनमुक्ता'' क्षयरोग तथा अन्य अनेक प्रकार के रोगों को दूर कर देने की सामर्थ्य रखता है।

(7) **वंशमुक्ता**—बांस के जंगलों के किसी बांस में जब स्वाति, पुष्य, अथवा श्रवण नक्षत्र में होने वाली वर्षा का जल भीतर जा पहुंचता है तब इस मोती का जन्म होता है। इस मोती का आकार बेर के फल के बराबर गोल होता है। यह हल्के रंग का अत्यन्त कोमल तथा चमकदार होता है, इसे बींधा नहीं जा सकता। यह मोती भी किसी सौभाग्यशाली व्यक्ति को ही प्राप्त हो पाता है।

''वंशमुक्ता'' अक्षय सम्पत्ति, यश, मान-प्रतिष्ठा, भाग्योदय, पद-वृद्धि, राज्यपक्ष से समस्त सुख, ऐश्वर्य तथा समस्त मनोभिलाषाओं को देने वाला बताया जाता है।

(8) **मेघमुक्ता**—इसे ''आकाशमुक्ता'' भी कहते हैं। यह मोती बादलों से उत्पन्न होता है। पुष्य अथवा श्रवण नक्षत्र वाले रविवार के दिन वर्षा होने पर एकाध मोती वर्षा-जल के साथ ही पृथ्वी पर कभी गिरता है और वह किसी भाग्यशाली को ही प्राप्त होता है।

यह मोती मेघवर्ण, बिजली के समान चमकदार, गोल अत्यधिक कान्तियुक्त तथा परम सुन्दर होता है।

"मेघमुक्ता" समस्त मनोभिलाषाओं की पूर्ति करने वाला बताया गया है। यह भी कहा जाता है कि जिस व्यक्ति के पास यह मोती होता है उसे जीवन में अनेक बार अक्षय धन की प्राप्ति होती है।

अच्छे मोती में न तो किसी प्रकार की रेखाएं होती हैं और न वह कहीं पर चोट खाया हुआ होता है। श्रेष्ठ मोती में शहद मिश्री तथा चन्दन के टुकड़े जैसी तीन प्रकार की झांई पायी जाती हैं।

असली-नकली मोती की पहचान के लिए निम्नलिखित विधियों को परखें—

एक कांच के स्वच्छ गिलास में पानी भरकर, इसमें मोती डाल दें, अगर पानी में किरणें-सी निकलती दिखाई दें तो मोती को असली समझना चाहिए।

धान की भूसी को कपड़े में भरकर उसमें मोती डाल दें तथा खूब मलें। अधिक मलने पर यदि मोती नकली होगा तो उसका चूरा हो जाएगा और यदि असली होगा तो उसमें और चमक आ जाएगी।

जमे हुए घी में असली मोती रखने से घी पिघल जाता है।

चावलों में मोती को रखकर रगड़ने से असली मोती की चमक में वृद्धि होती है, जबकि नकली मोती की चमक कम हो जाती है।

असली मोती में किया जाने वाला सूराख इकसार होता है, जबकि कल्चर मोती का सूराख बीच से चौड़ा होता है।

नकली मोती पर एसिड का कोई प्रभाव नहीं होता।

नमक मिश्रित तथा तेलयुक्त गरम पानी में मोती को रात भर भीगने दें। इस क्रिया से यदि मोती असली होगा तो उसका रंग नहीं बदलेगा।

"मोती" यदि दोषयुक्त हो तो उसे धारण करने पर शुभ के स्थान पर अशुभ फल ही प्राप्त होता है, अतः दोषी मोती को धारण करना वर्जित है। मोती में निम्न प्रकार के दोष बताए जाते हैं—

सुन्न—जिस मोती में चमक न हो, उसे "सुन्न" कहा जाता है। ऐसा मोती धारण करने से दरिद्रता की वृद्धि होती है।

गड्ढेदार—जिस मोती में गड्ढा दिखायी दे, वह धन के लिए हानिकारक होता है। चटका या टूटा हुआ—जो मोती टूटा हुआ हो वह कष्टप्रद, हानिदायक कहा गया है।

चोभ—जिस मोती में चोंच जैसी हो, उसे "चोभ" कहा जाता है। यह मोती

पुत्र को कष्ट देने वाला तथा वंश की हानि करने वाला कहा गया है।

चपटा–जो मोती चपटा हो, वह सुख-सौभाग्य को नष्ट करने वाला एवं चिन्ताओं की वृद्धि करने वाला होता है।

रेखादार–जिस मोती के गर्भ में एक लम्बी-सी रेखा दिखायी दे, वह दुःख को बढ़ाने वाला होता है।

लहरदार–जिस मोती के बीच लहरदार रेखा दिखायी दे, वह धन-हानि देने वाला होता है।

मसादोषी–जिस मोती में कहीं छोटा-सा काला धब्बा हो उसे मसादोषी कहते हैं। ऐसा मोती स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है।

लवा–जो मोती दुर्वल अंग वाला हो, उसे लवा कहते हैं। ऐसा मोती बल तथा बुद्धि को नष्ट करने वाला कहा जाता है।

छालादोषी–जिस मोती में छाला-सा उठा हुआ दिखायी दे, वह धन-सम्पत्ति को नष्ट करता है।

काकदोषी–जिस मोती की गर्दन में काले रंग का धब्बा हो, उसे "काकदोषी" कहते हैं। ऐसा मोती अपयश दिखाने वाला होता है।

त्रिकोण–जिस मोती में तीन कोण हों, वह बलवीर्य एवं नपुंसकताकारक होता है।

चतुष्कोण–जो मोती चपटा तथा चार कोणों वाला हो, वह पत्नी के लिए विनाशकारी सिद्ध होता है।

गरजदार–जिस मोती के ऊपरी तल में दरार हो अर्थात् कटा हुआ हो, वह अनेक प्रकार के दुःख देने वाला होता है।

काला–जिस मोती में काले रंग की झांई हो, वह अपयश दिखाता है।

तामुक–जिस मोती का रंग तांबे जैसा हो, वह भाई-बन्धु एवं कुटुम्ब का नाशक होता है।

लाल मुख–जिस मोती का रंग मूंगे की भांति लाल हो, वह धन नष्ट करने वाला होता है।

मटिया–जिस मोती के भीतर मिट्टी हो वह निष्फल होता है।

यह झिल्ली के समान झीनी होती है तथा मध्य भाग काठ के समान होता है, इन पर परतें कम पायी जाती हैं। इस कारण झिल्ली पर काली आभा भी दिखायी देती है। ऐसे मोती सरलता से बिंध जाते हैं, परन्तु ये शुभ फलदायक अथवा मूल्यवान् नहीं होते।

मोती को आभूषणों में जड़वाया जाता है तथा मोती का बुरादा "पाऊडर" के रूप में **प्रयोग करने से** शारीरिक सौन्दर्य एवं कान्ति की अत्यधिक वृद्धि होती है।

मोती धारण करने से शारीरिक तेज, रूप, सौन्दर्य, कांति, बल, ज्ञान एवं बुद्धि की वृद्धि होती है। **यह** पापवृत्ति को नष्ट करता है तथा धन, यश, सम्मान एवं प्रभुत्व दिलाकर अनेक प्रकार की मनोंकामनाओं की पूर्ति भी करता है।

चिकित्सा शास्त्र में मोती का उपयोग अनेक रोगों को दूर करने के लिए किया जाता है। इसका सेवन करने से हृदय रोग, मानसिक व्याधियां, रक्तचाप, मूर्च्छा, उन्माद आदि पेशाब में जलन, अर्श अर्थात् बवासीर, पथरी, दन्तरोग, पायरिया आदि; मुंह के रोग, उदर-विकार, पेट आदि; जोड़ों का दर्द तथा फोड़ा-फुंसी आदि में लाभ होता है। शरीर में गरमी की अधिकता हो तो मोती धारण करना शुभ रहता है। जिस स्त्री को पेट-सम्बन्धी बीमारियां रहती हों, उसके लिए मोती धारण करना अत्यन्त लाभकारी सिद्ध होता है। मोती का अंजन नेत्ररोगनाशक जाना जाता है। बुद्धि तथा स्मरण शक्ति की वृद्धि के लिए इसे अत्यन्त उपयोगी पाया गया है। वायु-विकार, पाचनशक्ति की दुर्बलता, रक्तार्श, मूत्रकृच्छ, पेशाब में जलन, संग्रहणी, श्वेत तथा रक्त प्रदर, शकर, क्षय, थकावट, निर्बलता, ज्वर, कैंसर, बलगमी खांसी, पित्त, पथरी, मस्तिष्क ज्वर, थकावट तथा शारीरिक निर्बलता में मोती का उपयोग बहुत लाभकारी सिद्ध होता है।

मोती में 90 प्रतिशत चूना होने के कारण कैल्शियम की कमी से उत्पन्न होने वाले रोगों में यह बहुत लाभ करता है। मोती को त्रिदोषनाशक माना गया है।

होम्योपैथी, ऐलोपैथी, यूनानी तथा वैद्यक आदि सभी चिकित्सा पद्धतियों में इसका अनेक प्रकार से औषधीय उपयोग किया जाता है। आयुर्वेद के अनेक प्रसिद्ध औषधीय योग मोती के द्वारा ही तैयार होते हैं। मोती की सीपमुक्ता शक्ति भी अनेक रोगों में इसके प्रतिनिधि के रूप में प्रयोग की जाती है।

मोती के उपरत्न के रूप में सफेद "पुखराज" को ग्रहण किया जाता है। मोती की तुलना में सफेद पुखराज अल्प मूल्यवान् होता है। अतः जो लोग मोती न खरीद सकें, वे मोती के प्रतिनिधि के रूप में पुखराज को भी धारण कर सकते हैं। मोती का एक अन्य उपरत्न सीप भी है। यह आकार में छोटा तथा रंग में चांदी की भांति उज्ज्वल श्वेत होता है। ज्योतिषीय दृष्टि से सीप को मोती की तुलना में आधा अथवा कुछ और भी कम प्रभावकारी माना जाता है।

मोती का एक और उपरत्न "शंख जोड़" है। यह दक्षिणावर्त शंख का जोड़ा

है, जो समुद्र से प्राप्त होता है। "शंख जोड़" घर में रखने तथा पूजन करने से धन-धान्य आदि की वृद्धि होती है।

अंगूठी में जड़वाने के लिए मोती का वजन 2, 4, 6 अथवा 11 रत्ती होना चाहिए। 7 अथवा 8 रत्ती वजन का मोती अंगूठी में जड़वाने के लिए अशुभ माना जाता है। पूर्वोक्त वजन का मोती लेकर उसे चांदी की अंगूठी में जड़वाना चाहिए। जिस प्रकार चन्द्रमा का रत्न मोती है, उसी प्रकार चन्द्रमा की धातु चांदी मानी गयी है। अतः चांदी की अंगूठी में मोती जड़वाना ही पूर्ण फलदायक सिद्ध होता है।

स्वर्ण की अंगूठी में भी मोती जड़वाया जा सकता है, परन्तु वह अधिक उपयोगी नहीं रहता। अन्य किसी धातु में मोती को नहीं जड़वाना चाहिए। स्वर्ण विजातीय धातु है।

चन्द्रमा के लिए मोती की अंगूठी बायें हाथ की कनिष्ठिका अथवा तर्जनी अंगुली में धारण की जाती है। गुरुवार अथवा रविवार के दिन जब पुष्य नक्षत्र हो तब प्रातः सूर्योदय से 10 बजे के बीच के समय में अंगूठी का निर्माण कराना चाहिए। जब अंगूठी तैयार हो जाए, तब जिस सोमवार को पुष्य, रोहिणी, हस्त अथवा श्रवण नक्षत्र हों, उस दिन प्रातः 10 बजे के उपरान्त निम्नलिखित विधि-विधानानुसार अंगूठी को धारण करना चाहिए। अगर चन्द्रमा पर पाप ग्रहों की दृष्टि होती हो तो मोती को चांदी की अंगूठी में जड़वाकर पूर्वोक्त विधि से रोहिणी नक्षत्र में ही धारण करना अधिक शुभ रहता है।

सूर्य (रवि)

"सूर्य" सब ग्रहों का राजा है। नवग्रहों में इसे सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। पृथ्वी सहित अन्य सभी ग्रह, तारे, नक्षत्र आदि सूर्य की परिक्रमा करते रहते हैं। इसे "काल पुरुष" भी कहा जाता है। यह पूर्व दिशा में उदय होकर पश्चिम दिशा में अस्त होता है। "सूर्य" का अधिकांश भाग हाइड्रोजन गैस से निर्मित है। इसका तापमान एक लाख डिग्री फारेनहाईट माना जाता है। आधुनिक खगोलशास्त्रियों के मतानुसार, पृथ्वी से सूर्य की दूरी लगभग सवा करोड़ मील, इसका व्यास पृथ्वी से लगभग 109½ गुणा मतान्तर से 9200 मील, परिमाण पृथ्वी से 1, 300,000 गुणा तथा भार पृथ्वी से 3,30,000 गुणा अधिक माना जाता है। सम्पूर्ण आकाशीय राशि चक्र के परिभ्रमण में इसे लगभग 365 दिन 6 घण्टे का समय लगता है।

सूर्य की किरणों को सूर्य से पृथ्वी तक आने में बीस मिनट का समय लगता

है। यह पुरुष जाति, रक्तवर्ण, पिता प्रकृति तथा पूर्व दिशा का स्वामी माना जाता है। सूर्य की राशि सिंह है। यह "मेष" राशि में उच्च तथा तुला राशि में नीच तथा सिंह राशि में मूल त्रिकोणस्थ माना जाता है। चन्द्रमा, मंगल तथा बृहस्पति इसके नैसर्गिक मित्र हैं; बुध सम है तथा शुक्र, शनि, राहु और केतु शत्रु है। इसके नक्षत्र कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी तथा उत्तराषाढ़ा हैं।

सूर्य आत्मा, पिता, शारीरिक गठन, आरोग्य, शक्ति, प्रभार, तेज, राज्य, शासनाधिकार, राजकीय अनुग्रह, प्रताप, लक्ष्मी एवं मन्दिर का कारक माना जाता है। इसके द्वारा जातक के वैयक्तिक आचरण, बौद्धिक विकास, व्यक्तित्व, ऐश्वर्य, प्रभुत्व, सत्वगुण, आत्मविश्वास, अधिकार, पराक्रम, महत्वाकांक्षा, प्रसिद्धि, यश-कीर्ति आदि का विचार किया जाता है।

इसका चिकित्सा एवं पदार्थ विज्ञान से गहरा सम्बन्ध है। उदासी, शोक, अपमान, तिरस्कार आदि विषयों का विचार भी इसी के द्वारा किया जाता है। मानव शरीर के मेरुदण्ड पर सूर्य का विशेष प्रभाव है। इसके अतिरिक्त यह हृदय, क्लेश, कलेजा, मस्तिष्क, सिर, स्नायु, नेत्र; रक्त, अस्थि आदि शारीरिक, अवयवों पर भी प्रभाव रखता है। अजीर्ण, पाण्डु रोग, हैजा, ज्वर, मधुमेह, भगन्दर, सिरदर्द, मन्दाग्नि, अतिसार, क्षय, स्त्री विकार तथा मानसिक रोगों के विषय में सूर्य द्वारा विचार किया जाता है।

सूर्य राजा, राज्याधिकारी, रईस, कुलीन, प्रसिद्ध तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति, सैनिक, जौहरी, नाट्य कलाकार, स्वर्णकार, औषध विक्रेता एवं निर्माता वर्ग के लोगों का प्रतिनिधित्व करता है। इसका मुख्य द्रव्य "तांबा" है, परन्तु यह स्वर्ण मूंगफली, बादाम, नारियल, गरीगोला, सरसों, बीज, पुष्प, धान्य, तृण, ऊन, पशमीना, लाल पुष्प, लाल चन्दन तथा लाल वर्ण की गौ का भी प्रतिनिधित्व कारक स्वामी है।

सूर्य 24 वर्ष की अवस्था में अपने शुभ अथवा अशुभ प्रभाव को प्रदर्शित करता है।

सूर्य का रत्न "माणिक्य" है। जन्मकुण्डली में सूर्य निर्बल हो तो "माणिक्य" धारण करना शुभ फलदायक होता है। "लालड़ी" आदि सूर्य के उपरत्न हैं। "माणिक्य" के अभाव में उपरत्नों को धारण करने से भी आंशिक रूप में शुभ फल प्राप्त होता है।

"सूर्य" का मंत्र इस प्रकार है—**ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं सः सूर्याय नमः।**

माणिक्य अथवा अन्य सूर्य रत्नों को धारण करने से सूर्य का अशुभ प्रभाव कम होता है तथा शुभ प्रभाव की वृद्धि होती है।

"माणिक्य" में कई प्रकार के दोष भी पाए जाते हैं, सामान्यतः दोषी-माणिक्य को धारण करना अशुभ फलकारक होता है।

"माणिक्य" का मुख्य रंग लाल होता है। हल्के और गहरे रंग भेद के अनुसार इसकी कई किस्में होती हैं; जैसे—(1) शिगरफ जैसे रंग का, (2) सिन्दूर जैसे रंग का, (3) बीरवधुटी जैसे रंग का (4) लाख जैसे रंग का, (5) लाल कमल जैसे रंग का, (6) गुलाबी रंग का आदि।

माणिक्य "कुरून्दम समूह" का रत्न है। माणिक्य की छटा सबसे अलग होती है। कठोरता में हीरे के बाद माणिक्य का ही दूसरा स्थान है।

माणिक्य की निम्नलिखित 5 जातियां बतायी गयी हैं—

प्रद्यराग—जो माणिक्य तप्त-स्वर्ण की भांति लाल रंग का, चमकदार, प्रदीप्त-अग्नि के समान वर्णवाला, सूर्य की किरणों की भांति रश्मियां फैलाने वाला, खूब चिकना तथा कोमल होता है। **सौगन्धिक**—जो माणिक्य सारस तथा चकोर की आंख अथवा अनारदाना अथवा किशुक पुष्प जैसे वर्ण का हो, उसकी "सौगन्धिक" संज्ञा है। **नीलगन्धि**—जो माणिक्य मूंगा, आलता, ईगुर अथवा कमल की भांति कुछ नीलाभ कान्तियुक्त चमकदार हो, वह "नीलगन्धि" संज्ञक होता है। **कुरूबिन्द**—जो माणिक्य पक्ष राग तथा "सौगन्धिक" जैसी आभा वाला, परन्तु आकार में लघु एवं पानीदार हो, उसकी "कुरूबिन्द" संज्ञा कही गयी है। **जामुनिया**—जो माणिक्य लाल कनेर के पुष्प एवं लाल जामुन जैसे वर्ण एवं आभायुक्त हो, उसे "जामुनिया" कहा जाता है।

अच्छे माणिक्य में निम्नलिखित विशेषताएं पायी जाती हैं—चिकना, पारदर्शक, अच्छी कान्ति, अच्छा पानी, कोमलता, भारीपन, सुडौलता, लाल रंग, आकार में बड़ा, गोल तथा लम्बा माणिक्य उत्तम श्रेणी का होता है। कबूतर के खून जैसे वर्ण का माणिक्य जिसमें बैंजनी आभा भी हो, सर्वोत्तम माना जाता है। असली माणिक्य को हाथ में लेने पर वह कुछ भारी-सा प्रतीत होता है तथा उसके कारण हाथ में हल्की-हल्की गरमी का अनुभव होता है।

अन्य रत्नों की भांति माणिक्य भी नकली तैयार किए जाते हैं। नकली माणिक्य की रासायनिक-संरचना, आकृति, बनावट तथा चमक आदि भी असली माणिक्य जैसी ही होती है। असली माणिक्य की पहचान के लिए निम्नलिखित परीक्षण विधियों को प्रयोग में लावें—

यदि चांदी की थाली में मोतियों के साथ एक असली माणिक्य रख दिया जाए, फिर उसे सूर्य के सामने किया जाए तो चांदी काली तथा उसमें रखे हुए सभी मोती

लाल रंग के दिखायी देने लगते हैं।

असली माणिक्य को यदि कमल की कली पर रख दिया जाए तो वह खिल उठती है।

असली माणिक्य को यदि किसी कांच के बर्तन में रख दिया जाए तो उसमें चारों ओर हल्की लाल किरणें-सी निकलती दिखायी देती हैं।

यदि चांदी की थाली में असली माणिक्य को रखकर, वह थाल सूर्य के सामने किया जाए तो थाल का रंग लाल दिखायी पड़ता है।

असली माणिक्य कुछ सुर्खी लिए होता है। इस रूख के द्वारा असली-नकली की पहचान की जाती है। असली माणिक्य को यदि रूख की ओर से देखा जाएगा तो उसमें सुर्खी प्रतीत होगी और यदि बगल से देखा जाएगा तो रंग में भिन्नता प्रतीत होगी।

यदि गाय के दूध में असली माणिक्य डाल दिया जाए तो दूध का रंग गुलाबी दिखायी देता है।

असली माणिक्य की अपेक्षा नकली माणिक्य वजन में कुछ हल्का होता है।

यदि माणिक्य में चीरा हो तो पहचान की विधि यह है कि असली रत्न की चीर में कोई चमक नहीं होगी, परन्तु नकली रत्न की चीर के भीतर भी वैसी ही चमक होगी, जैसी कि कांच के चीर में होती है। असली रत्न की चीर टेढ़ी-मेढ़ी होती है।

यदि किसी माणिक्य में बिन्दु हो, तो यदि रत्न असली होगा तो वे भुनके उसी रंग के होंगे तथा गोल नहीं होंगे, जबकि नकली के भुनके गोल, रूखे, श्वेतवर्ण और पीले होते हैं।

यदि किसी माणिक्य में दूधक हो और उसमें नीलापन हो तथा वह चलता हुआ न होकर, स्थिर हो तो उसे नकली समझना चाहिए। असली माणिक्य का दूधक चलता हुआ प्रतीत होता है।

माणिक्य यदि दोषयुक्त हो तो उसे धारण करने पर शुभ के स्थान पर अशुभ फल ही प्राप्त होता है, अतः दोषी माणिक्य धारण करना वर्जित है। माणिक्य में निम्न 11 प्रकार के दोष पाए जाते हैं–

गड्ढ़ा–जिस माणिक्य में गड्ढा हो, वह अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न करने वाला तथा शरीर के लिए दुर्बलता कारक होता है।

सुन्न–जिसमें चमक नहीं होती, उस माणिक्य को "सुन्न" दोषयुक्त माना जाता है। इस दोष वाले माणिक्य को धारण करने से भाइयों के सम्बन्ध में अथवा

भाइयों के द्वारा पीड़ा होती है।

मटमैला–जिस माणिक्य का रंग मटमैला हो, वह पुत्रोत्पत्ति में बाधक तथा उदर-विकार देने वाला होता है।

धूम्रवर्ण–जिस माणिक्य का रंग धुएं के रंग जैसा हो, उसे धारण करने से देवी-प्रकोप का भय रहता है।

दूधक–जिस माणिक्य का रंग दूध जैसा हो, उसे धारण करने से चित्त में बेचैनी रहती है।

त्रिशूल–जिस माणिक्य में त्रिभुज, त्रिकोण अथवा त्रिशूल जैसी आकृति हो अथवा सफेद, काले या शहद के रंग के छींटे हों, उसे धारण करने से सन्तानोत्पति में बाधा आती है तथा अपयश, धननाश, दुःख एवं अल्पायु की प्राप्ति होती है।

चीरित–जिस माणिक्य में क्रॉस जैसा चिह्न हो अथवा चीरा लगा हो, उसे धारण करने पर किसी शस्त्र द्वारा चोट लगने की प्रबल सम्भावना रहती है।

जालक–जिस माणिक्य में आड़ी-तिरछी रेखाओं से युक्त जाल जैसा चिह्न हो, उसे धारण करने वाले के घर में अनेक प्रकार के उपद्रव तथा कलह का निवास बना रहता है।

दोरंगा–जिस माणिक्य में दो प्रकार के रंग दिखायी दें, उसे धारण करने वाले व्यक्ति के पिता को कष्ट होता है, साथ ही वह स्वयं भी दुःखी रहता है।

काली आभा–श्वेत अथवा कृष्ण आभायुक्त माणिक्य अपयश देने वाला, धन का विकास करने वाला सिद्ध होता है।

बहुदोषी–जिस माणिक्य में पूर्वोक्त एक से अधिक प्रकार के दोष हों, उसे "बहुदोषी" कहा जाता है। बहुदोषी माणिक्य आकस्मिक एवं अकल्पित दुर्घटनाओं को जन्म देकर मृत्युकारक सिद्ध होता है।

माणिक्य का उपरत्न "लालड़ी" है। यह निम्नलिखित 10 रंगों में पायी जाती है। माणिक्य के अभाव में "लालड़ी" को धारण किया जाता है।

गहरी लाल, रक्तिम, आतसी, बदला, दक्षिणी, अतिलस, गुलगु, जोगिया, विनोती, मोतिया।

"माणिक्य" को रत्नाभूषणों में जड़वाकर धारण किया जाता है, ग्रह-पीड़ा-निवारणार्थ इसे अंगूठी में जड़वाया जाता है तथा विभिन्न रोगों की चिकित्सा के लिए इसे भस्म एवं पिष्ठी के रूप में भी प्रयोग में लाया जाता है।

माणिक्य धारण करने से भय, व्याधि एवं दुःखों से छुटकारा मिलता है तथा धन-धान्य, रत्न, सम्पत्ति, यश एवं सुख की प्राप्ति होती है। यह वंशवृद्धिकारक

भी माना जाता है। इसे घर में रखने से अग्नि, चोर, शत्रु तथा रोगों का भय दूर होता है तथा विभिन्न प्रकार के रोग-कीटाणु भी नष्ट होते हैं।

माणिक्य की भस्म का सेवन करने से संग्रहणी, अतिसार, खूनी दस्त, खूनी बवासीर, अजीर्ण, रक्त-विकार, वायु-प्रकोप, खांसी, खुश्क बलगम, हिचकी, सिर-दर्द, पेटदर्द, शारीरिक अंगों का दर्द तथा नपुंसकता, क्षयरोग, चक्षुरोग, विष क्रिया तथा व्रण आदि रोगों में लाभ होता है। दुर्बलता रोग, पक्षाघात, आंत का उतरना, रक्तप्रवाह में अनियमितता आदि रोगों में भी माणिक्य का प्रयोग किया जाता है।

अंगूठी में जड़वाने के लिए माणिक्य जितना अधिक वजनी हो उतना ही अधिक शुभ रहता है, परन्तु उसका तौल 3 रत्ती से कम नहीं होना चाहिए। जिस अंगूठी में माणिक्य जड़वाया जाए, उसमें सोने की मात्रा भी 5 रत्ती से कम नहीं होनी चाहिए, यदि अधिक हो सके तो शुभ है, सोने में तांबा मिलवाना भी आवश्यक है। यों, सूर्य की धातु तांबा ही है। यदि सोना न ले सकें तो केवल तांबे की अंगूठी में भी माणिक्य जड़वाकर पहना जा सकता है। सोने में तांबे के अतिरिक्त अन्य कोई धातु नहीं मिलवानी चाहिए।

अंगूठी में माणिक्य अथवा उसके लालड़ी आदि किसी उपरत्न को इस प्रकार जड़वाना चाहिए कि उसका निचला भाग त्वचा को स्पर्श करता रहे। दाएं हाथ की अनामिका अंगुली को सूर्य की अंगुली माना जाता है, अतः अंगूठी ऐसी बनवानी चाहिए जो दाएं हाथ की अनामिका अंगुली में आ जाए। अंगूठी जिस दिन तैयार हो जाए वह दिन केवल रविवार होना चाहिए। यदि उस दिन पुष्य नक्षत्र हो तो सर्वोत्तम है; अन्यथा जिस रविवार को कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी एवं उत्तराषाढ़ा—इनमें से कोई नक्षत्र हो, उस दिन प्रातः से 12 बजे के मध्य अंगूठी तैयार करवानी चाहिए। पूर्वोक्त नक्षत्र तथा दिन में जब अंगूठी तैयार हो जाए तो उसी दिन, नक्षत्र तथा समयावधि में और यदि ऐसा होना सम्भव न हो तो फिर अगले किसी रविवार को जब कभी पुष्य, कृत्तिका उत्तराफाल्गुनी अथवा उत्तराषाढ़ा नक्षत्र हो जब 6 से 12 बजे के बीच रत्नजड़ित अंगूठी को यथा विधि-पूजन, हवन आदि करने के पश्चात् धारण करना चाहिए।

माणिक्य अथवा उसके किसी भी उपरत्न को जिस दिन अंगूठी में जड़वाया जाता है, उस दिन से आरम्भ करके 4 वर्ष तक रत्न धारणकर्त्ता पर अपने प्रभाव प्रदर्शित करता है, तत्पश्चात् वह प्रभावहीन हो जाता है।

प्रिय पाठकों! रत्न-विज्ञान के विषय में जो कुछ भी ज्ञान मेरे पास एकत्रित था, बिना किसी लाग-लपेट के आपकी सेवा में अर्पित कर दिया है। इसमें कैसा

क्या है? इसका निर्णय अब आप पर है। प्रारम्भ में यह पुस्तक आपको अजीब-सी लगेगी, लेकिन एक बार पढ़ने के बाद आप सब कुछ सिलसिलेवार समझ जाएंगे। इस पुस्तक में मैंने प्राचीन काल से लेकर आज तक की समस्त खोजों को समाहित करने का प्रयत्न किया है। यह पुस्तक मैंने एक नये ढंग और नये क्रम से लिखी है। आशा है आपको मेरा रत्न खण्ड पसन्द आएगा।

रत्न का चयन करना वास्तव में सबसे दुष्कर कार्य है। रत्नों का चयन करने से पहले रत्न खण्ड को भली-भांति पढ़ें, फिर रत्नों का या उपरत्नों का चयन करें। आपको बहुत ही लाभ होगा।

रत्न वास्तव में मनुष्य के कल्याण के लिए ही हमारे पूर्वजों ने खोजे थे। इनका उपयोग विज्ञान सम्मत है। हमारे ऋषि-मुनियों, मनीषियों ने मानसिक और शारीरिक व्यवस्थाओं को ध्यान में रखकर ही रत्न विज्ञान प्रस्तुत किया था।

वास्तव में रत्न विज्ञान की अभी और बहुत-सी मंजिलें हैं, जिनसे हमारा परिचय अभी नहीं हो सका है। उस पर निरंतर अनुसंधान चल रहे हैं। सम्भव है कुछ वर्षों के बाद रत्न विज्ञान हमारे दैनिक जीवन का एक अभिन्न अंग बन जाए या फिर चिकित्सा का एक सशक्त माध्यम बनकर रह जाए अथवा मनुष्य की मानसिक, शारीरिक उन्नति का एक सशक्त सरल आकार बन जाए, इस विषय में रत्न विज्ञान से बहुत आशाएं हैं।

अब मैं इस पुस्तक के अत्यन्त महत्वपूर्ण खण्ड "रुद्राक्ष खण्ड" की ओर चलूंगा। आज रुद्राक्ष की उपयोगिता और महत्व सर्वविदित है, इसमें मुझे और कुछ नहीं कहना। आप रुद्राक्ष खण्ड पढ़ें और स्वयं निर्णय करें।

मेरा केवल इतना ही निवेदन है—आप भगवान शिव के प्रिय फल रुद्राक्ष में आस्था और विश्वास रखें। लाभ में समय अवश्य लग सकता है; पर होगा अवश्य, यह लगभग निश्चित है।

□□□

4 रत्नों का रसायनिक विश्लेषण

रत्नों के भौतिक गुण जैसा कि उनका भार, कड़ापन उनका औसत निकालकर दिया गया है। रत्नों का ठोसपन मोहस स्केल द्वारा दिखाया गया है। यह एक ऐसा स्केल है जो कि धातु के ठोसपन की श्रेणी में रखने में मदद करता है।

जिसका मूल्यांकन 3½ इत्यादि औसत कठोरता को दर्शाता है। हल्के तौर पर कठोर रसायनिक संगठन पर निर्भर करता है। इसलिए उसको तालिका द्वारा दर्शाया गया है। विशिष्ट भार का मूल्यांकन रत्नों के घनत्व के लक्षणों को बतलाता है और उन्हीं का औसत निकालकर दिया गया है। तालिका इस प्रकार है—

नाम यौगिक एवं संगठन	स्वरूप	दोहरीवर्तन सूची	प्रत्यावर्तन सूची	विशिष्ट भार	कठोरता और
एक्राइट (टुरमेलिन)	तिकोना	0.018	1.62-1.64	3.06	7½
N.A. $(Li, Al)_3 Al_6 (BO_3)_3 Si_6 O_{18} (OH)_4$					
ऐगेट (काल्सीडोनी)	तिकोना	0.004	1.53-1.54	2.61	7
SiO_2					
एलवाइट	तीन असम कोण	0.009	1.54-1.55	2.64	6
$(Na, Ca) Al Si_3 O_8$					
एलमैनडाईन	त्रिघातीय	-	1.76-1.83	4.00	7½
$Fe_3 Al_2 (SiO_4)_3$					
अम्बर मुख्यतः	विना किसी विशिष्ट आकृती के	-	1.54-1.55	1.08	2½
$C_{10} H_{16} O$					
एम्बलीगनाइट तीन	असमकोण.	0.026	1.57-1.60	3.02.	6
L|A|(F.OH) PO_4					
एमेथिस्ट	तिकोना	0.009	1.54-1.55	2.65	7
SiO_2					

एन्डैलुसाइट $Al_2 SiO_5$	टूटे-फूटे कोण	0.010	1.63-1.64	3.16	7½
एन्ड्राइटगारनेट $Ca_3 Fe_2 (SiO_4)_3$	त्रिघातीय	-	1.85-1.89	3.85	6½
एन्गलसाइट $PbSO_4$	टूटे-फूटे कोण	0.017	1.87-1.89	6.35	3
ऐपेट $Ca (F.Cl) Ca_4 (PO_4)_3$	षट्कोण	0.003	1.63-1.64	3.20	5
एक्वामरिन $Be_3 Al_3 (SiO_3)_6$	षट्कोण	0.006	1.57-1.58	2.69	7½
एरागोनाइट $Ca CO_3$	टूटे-फूटे कोण	0.155	1.53-1.68	2.94	3½
एवैनडराइन क्वार्ट्ज SiO_2	तिकोना	0.009	1.54-1.55	2.65	7
एक्जीनाइट $CaFeMg BAl_2 Si_4 O_{15} (OH)$	तीन असम कोण	0.011	1.67-1.70	3.28	7
एज्युराइट $Cu_3 (OH)_2 (CO_3)_2$	एक असम कोण	0.110	1.73-1.84	3.77	3½
वैराइट $BaSO_4$	टूटे-फूटे कोण	0.012	1.63-1.165	4.45	3
वैनटोट $BaTiSi_3 O_9$	षट्कोण	0.047	1.76-1.80	3.67	6½
वैराइलोनाइट $NaBePO_4$	एक असम कोण	0.009	1.55-1.56	2.83	5½
ब्लड स्टोन (चैल सेडनी) SiO_2	तिकोना	0.004	1.53-1.54	2.61	7
ब्राजीलानाइट $Al_3 Na (PO_4)_2 (OH)_4$	एक असम भाग	0.021	1.60-1.62	2.99	5½
ब्राउन क्वार्ट्ज SiO_2	तिकोना	0.009	1.54-1.55	2.65	7

कैलसाइट $CaCO_3$	तिकोना	0.172	1.48-1.66	2.71	3
कारनेलान SiO_2	तिकोना	0.004	1.53-1.54	2.61	7
कैसीडेराइट SnO_2	चार कोण	0.100	2.00-2.10	2.95	6½
सैलेस्टाइन $SrSO_4$	टूटे-फूटे कोण	0.010	1.62-1.63	3.98	3½
सैरूसाइट $PbCO_3$	टूटे-फूटे कोण	0.274	1.80-2.08	6.51	3½
चेलसेडनी SiO_2	तिकोना	0.004	1.53-1.54	2.61	7
एम्राल्ड बराइल $Be_3\ Al_2\ (SiO_3)_6$	षट्कोण	0.006	1.57-1.58	2.71	7½
एनस्टेटी $Mg_2\ Si_2O_6$	टूटे-फूटे कोण	0.010	1.66-1.67	3.27	5½
एजीडोट $Ca_2\ (Al, Fe)_3\ (OH)\ (SiO_4)_3$	एक असम कोण	0.035	1.74-1.78	3.40	6½
इयूक्लेज $Be\ (Ai, OH)\ SiO_4$	एक असम कोण	0.019	1.65-1.67	3.10	7½
फायर एगेट कालसीडोनी SiO_2	तिकोना	0.004	1.53-1.54	2.61	7
फ्लुराइट CaF_2	त्रिघातीय	-	1.43	3.18	4
गोल्ड Au	त्रिघातीय	-	-	19.30	2½
मोशोनाइट $Be_3\ Al_2\ (SiO_3)_6$	षट्कोण	0.008	1.58-1.59	2.80	7½
ग्रोसुलर $Ca_3\ Al_2\ (SiO_4)_3$	त्रिघातीय कोण	-	1.69-1.73	3.49	7

जिप्सम $CaSO_4\ 2H_2O$	एक असम कोण	0.010	1.52-1.53	2.32	2
हेमबेरगाइट $Be_2\ (OH)\ BO_3$	टूटे-फूटे कोण	0.072	1.55-1.63	2.35	7½
हयेन $(Na, Ca)_{4-8}\ Al_6\ Si_6\ (O,S)_{24}\ (SO_4\ Cl)_{1-2}$	त्रिघातीय	-	1.50 मध्यमान	2.40	6
हेलयोडर $Be_3\ Al_2\ (SiO_3)_6$	षट्कोण	0.005	1.57-1.58	2.80	7½
हेमॉट $Fe_2\ O_3$	तिकोना	0.280	2.94-3.225	5.20	6½
चाटोयन्ट क्वार्ट्ज SiO_2	तिकोना	0.009	1.54-1.55	2.65	7
चरिसोवेरिट $Be\ Al_2\ O_4$	टूटे-फूटे कोण	0.009	1.74-1.75	3.71	8½
क्रिसोल्ला $(Cu, Al)_2\ H_2\ Si_2\ O_5\ (OH)_4\ n\ H_2\ O$	एक असम कोण	0.030	1.57-1.63	2.20	2
क्रिसोफ्रेम (कलसीडोनी) SiO_2	तिकोना	0.004	1.53-1.54	2.61	7
सीटराइट SiO_2	तिकोना	0.009	1.54-1.55	2.65	7
कोरल $Ca\ CO_3\ (arC_3\ H_{48}\ N_9\ O_{11})$	तिकोना	-	1.49-1.66	2.68	3
डैन बुराइट $Ca\ B_2\ (SiO_4)_2$	टूटे-फूटे कोण	0.006	1.63-1.64	3.00	7
डैटोलाइट $Ca\ (B, OH)\ SiO_4$	एक असम कोण	0.044	162-1.65	2.95	5
डायमन्ड C	त्रिघातीय	-	2.42	3.52	10
डायोप्साइट	एक असम कोण	0.029	1.66-1.72	3.29	5½
डायोप्टेज $CuO\ SiO_2\ H_2O$	तिकोना	0.053	1.67-1.72	3.31	5

डोलोमाइट $CaMg(CO_3)_2$	तिकोना	0.179	1.50-1.68	2.85	3½
ड्रावटे (टुरमेलिन) $NaMg_3Al_6(BO_3)_3Si_6O_{18}(OH)_4$	तिकोना	0.018	1.61-1.63	3.06	7½
ड्यूमोटटाइराइस $Al_7(BO_3)(SiO_4)_3O_3$	टूटे-फूटे कोण	0.037	1.69-1.72	3.28	7
मैलाचिट $Cu_2(OH)_2CO_3$	एक असम कोण	0.025	1.85मध्यमान	3.80	4
मीरस्थाउम $Mg_4Si_6O_{15}(OH)_2 6H_2O$	एक असम कोण	-	1.51-1.53	1.50	2½
माइक्रोक्लाइन $KAlSi_3O_8$	तीन असम कोण	0.008	1.52-1.53	2.56	6
मिल्कीक्वार्ट्ज SiO_2	तिकोना	0.009	1.54-1.55	2.65	7
मूनस्टोन (ओरथोक्लेजक्लेज) $KAlSi_3O_8$	एक असम कोण	0.005	1.52-1.53	2.57	6
मोरगेनाइट $Be_3Al_2(SiO_3)_6$	षट्कोण	0.008	1.58-1.59	2.80	7½
नेफराइट (जेट) $Ca_2(Mg, Fe)_5Si_3O_{22}(OH)_2$	एक असम कोण	0.027	1.61-1.63	2.96	6½
ओबसीडियन मुख्यतः SiO_2	विना किसी विशिष्ट आकृति	-	1.48-1.51	2.35	5
ओलीगोक्लेज $(Na, Ca)(AiSi)_4O_8$	तीन असम कोण	0.007	1.54-1.55	2.64	6
ओनेक्स SiO_2	तिकोना	0.004	1.53-1.54	2.61	7
ओपल $SiO_2 nH_2O$	विना किसी विशिष्ट आकृति	-	1.37-1.47	2.10	6
ओरथोक्लेस $KAlSi_3O_8$	एक असम कोण	0.005	1.51-1.54	2.56	6

पादपारवस्था (कोरर्डम) N_2O_3	तिकोना	0.008	1.76-1.77	4.00	9
पर्ल $CaCO_3$ $C_3H_{18}N_9O_{11}$ ^nH_2O	टूटे-फूटे कोण	-	1.53-1.68	2.71	3
हेसोनाइट $Ca_3 Al_2 (SiO_4)_3$	त्रिघातीय	-	1.73-1.75	3.65	7½
होवलाइट $C_2B_5 SiO_9 (OH)_5$	एक असम कोण	0.022	1.58-1.59	2.58	3½
हाइपरथेन (Fe, Mg) SiO_3	टूटे-फूटे कोण	0.010	1.65-1.67	3.35	5½
इन्डीकोलाइट Na (Li, Al)$_3$ $Al_6 (BO_3)_3 Si_6 O_8 (OH)_4$	तिकोना	0.018	1.62-1.64	3.06	7½
आयोलाइट $Mg_2 Al_4 Si_5 O_{18}$	टूटे-फूटे कोण	0.010	1.53-1.55	2.63	7
आइर्वी $Ca_5 (PO_4)_3 (OH)$	विना किसी विशिष्ट आकृति	-	1.53-1.54	1.90	2½
जेडेट (जेड) Na (Al, Fe) $Si_2 O_6$	एक असम कोण	0.012	1.66-1.68	3.33	7
जेसपर SiO_2	तिकोना	0.004	1.53-1.54	2.61	7
जैट लिग्नाइट	विन्सकिनी विशिष्ट आकृति	-	1.64-1.68	1.33	2½
कार्नरूपाइन Mg_4 (Al, Fe)$_6$ (Si, B)$_4$ O_{21} (OH)	टूटे-फूटे कोण	0.013	1.66-1.68	3.32	6½
क्यान्ट $Al_2 SiO_5$.	तीन असम कोण	0.017	1.71-1.73	3.68	5 या 7
लेबराड्राइट (Na, Ca) (Al, Si)$_4$ O_8	तीन असम कोण	0.010	1.56-1.57	2.70	6
लेपिसलेगुली (Na, Ca)$_8$ (Ai, SI)$_{12}$ O_{24} (SO_4) Cl_2 $(OH)_2$	भिन्न	-	1.50 मध्यमान	2.80	5½

लेजूलाइट	एक असम कोण	0.031	1.61-1.64	3.10	5½
$Mg\,Al_2\,(PO_4)_2\,(OH)_2$					
रूबेलाइट	तिकोना	0.018	1.62-1.64	3.06	7½
$Na\,(Li.Al)_3\,Al_6\,(BO_3)_3\,Si_6\,O_{18}\,(OH)_2$					
रूबी	तिकोना	0.008	1.76-1.77	4.00	9
$Al_2\,O_3$					
रूटाइल	चार कोण	0.287	2.62-2.90	4.25	7
TiO_2					
सैफायर	तिकोना	0.008	1.76-1.77	4.00	9
$Al_2\,O_3$					
सरद	तिकोना	0.004	1.53-1.54	2.61	7
SiO_2					
सरडोनिक्स	तिकोना	0.004	1.53-1.54	2.61	7
SiO_2					
स्केपोलाइट	चार कोण	0.020	1.54-1.58	2.70	6
$Na_4\,Al_3\,Si_9\,O_{24}\,Cl\text{-}Ca_4\,Al_6\,Si_6\,O_{24}\,(CO_3.SO_4)$					
स्कीलाइट	चार कोण	0.017	1.92-1.93	6.10	5
$CaWO_4$					
स्कोरी (टुरमेलिन)	तिकोना	0.018	1.62-1.67	3.06	7½
$NaFe_3\,Al_6\,(BO_3)_3\,Si_6\,O_{18}\,(OH)_4$					
सरपेन्टाइन	एक असम कोण	0.001	1.55-1.56	2.60	5
$Mg_6\,(OH)_8\,Si_4\,O_{10}$					
शैल	भिन्न	-	1.53-1.69	1.30	2½
$CaCO_3$ and $C_{32}\,H_{48}\,N_2\,O_{11}$					
सलीमेनाइट	टूटे-फूटे कोण	0.019	1.66-1.68	3.25	7½
$Al_2\,SiO_5$					
सिल्वर	त्रिघातीय	-	-	10.50	2½
Ag					
सिन्हालाइट	टूटे-फूटे कोण	0.038	1.67-1.71	3.48	6½
$Mg\,(Al.Fe)\,BO_4$					
स्मिथसोनाइ	तिकोना	0.230	1.62-1.85	4.35	5
2n CO_3					

सोडालाइट $3 Na Al SiO_4 NaCl$	त्रिघातीय	-	1.48 मध्यमान	2.27	5½
स्पैसरटाइन (गार्सेट) $Mn_3 Al_2 (SiO_4)_3$	त्रिघातीय	-	1.79-1.81	4.16	7
स्फैलेराइट (Zn, Fe) S	त्रिघातीय	-	2.36-2.37	4.09	3½
स्पाइनल $Mg Al_2 O_4$	त्रिघातीय	-	1.71-1.73	3.60	8
स्पोडुमेन $Al (SiO_3)_2$	एक असम कोण	0.015	1.66-1.67	3.18	7
स्टाउरोलाइट $(Fe, Mg, 2n)_2 Al_9 (Si, Al)_4 O_{22} (OH)_2$	टूटे-फूटे कोण	0.013	1.74-1.75	3.72	7
टाफेइट $Be Mg_3 Al_8 O_{16}$	षट्कोण	0.004	1.72-1.77	3.61	8
टकटीनेस Mainly SiO_2	विना किसी विशिष्ट आकृति	-	1.48-1.51	2.40	5
टाइटानाइट $Ca TiSiO_5$	एक असम कोण	0.120	1.84-2.03	3.53	5
टोपाज $Al_2 (F, OH)_2 SiO_4$	टूटे-फूटे कोण	0.010	1.62-1.63	3.54	8
टुग्टुपाइट $Na_4 Al Be Si_4 O_{12} Cl$	चार कोण	0.006	1.49-1.50	2.40	6
टरक्याइज $Cu Al_6 (PO_4)_4 (OH)_8 5 H_2O$	तीन असम कोण	0.040	1.61-1.65	2.80	6
उवारोनाइट (गारनेट) $Ca_3 Cr_3 (SiO_4)_3$	त्रिघातीय	-	1.86-1.87	3.77	7 1/2
पैरिडोट $(Mg, Fe)_2 SiO_4$	टूटे-फूटे कोण	0.036	1.64-1.69	3.34	6½
पैटालाइट $Li_2 O Al_2 O_3 8SiO_2$	एक असम कोण	0.014	1.50-1.51	2.42	6
फैनाकाइट $Be_2 SiO_4$	तिकोना	0.015	1.65-1.67	2.96	7½

फोस्फोफालाइट	एक असम कोण	0.021	1.59-1.62	3.10	3½
$2n_2 (Fe, Mn) (PO_4)_2\ 4\ H_2O$					
प्लास्मा	तिकोना	0.004	1.53-1.54	2.61	7
SiO_2					
प्लैटिनम	त्रिघातीय	-	-	21.40	4
Pt					
प्रेज	तिकोना	0.004	1.53-1.54	2.61	7
SiO_2					
प्रेहनाइट	टूटे-फूटे कोण	0.016	1.61-1.64	2.87	6
$Ca_2\ Al_2\ Si_3\ O_{10}\ (OH)_2$					
पाइराइट	त्रिघातीय	-	-	4.90	6
$Fe\ S_2$					
पाइरोप (गारनेट)	त्रिघातीय	-	1.72-1.76	3.80	7¼
$Mg_3\ Al_2\ (SiO_4)_3$					
रोडोक्रोसाइट	तिकोना	0.220	1.60-1.80	3.60	4
$MnCO_3$					
रोडोनाइट	तीन असम कोण	0.014	1.71-1.73	3.60	6
$(Mn. Fe, Mg\ Ca)\ SiO_3$					
राकक्रिस्टल (क्वार्ट्ज)	तिकोना	0.009	1.54-1.55	2.65	7
SiO_2					
रोज क्वार्ट्ज	तिकोना	0.009	1.54-1.55	2.65	7
SiO_3					
वेसुवाइनाइट	चार कोण	0.005	1.70-1.75	3.40	6½
$Ca_6\ Al\ (Al.OH)\ (SiO_4)_5$					
वाटरमैलन टुरमेलिन	तिकोना	0.018	1.62-1.64	3.06	7½
$Na\ (Li, Al)_3\ Al_6\ (BO_3)_3\ Si$					
जिरकान	चार कोण	0.059	1.93-1.98	4.69	7½
$ZrSiO_4$					
ज्यासाइट	टूटे-फूटे कोण	0.010	1.69-1.70	3.35	6½
$Ca_2\ (Al.OH)\ Al_2\ (SiO_4)_3$					

❑❑❑

5 रत्न कैसे अभिमन्त्रित करें ?

मानव-जीवन लगातार नवग्रहों से ही संचालित होता है, और ये समस्त ग्रह आकाशमण्डल में निरन्तर अपनी धुरी पर घूमते हुए निर्दिष्ट समय में पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगाते रहते हैं। यह सुविदित है कि प्रत्येक ग्रह की स्वयं की किरणें होती हैं। पृथ्वी के चारों ओर घूमते समय न्यूनाधिक रूप में इन ग्रहों की रश्मियां पृथ्वी पर पड़ती हैं। उदाहरणार्थ, ग्रीष्मकाल में सूर्य ठीक हमारे ऊपर होता है, अतः उसकी किरणें सीधी पृथ्वी पर पड़ती हैं। इन सीधी किरणों के प्रभाव से सभी व्याकुल हो जाते हैं और गर्मी के कारण पसीना निकलने लगता है। इसके विपरीत सर्दी की ऋतु में जब सूर्य थोड़ा तिरछा होता है तो उससे उत्पन्न किरणें भी तिरछी पड़ती हैं, फलस्वरूप उसकी तीव्रता का आभास भी कम होता है। इसी प्रकार सौर पथ पर चक्कर लगाते प्रत्येक ग्रह की किरणें पृथ्वी पर पड़ती रहती हैं। जो ग्रह ठीक ऊंचा होता है उसकी किरणें भी तीव्रता से जातक कर पड़ती हैं और जो ग्रह तिरछा अथवा दूर होता है उसकी किरणें भी कम जातक को प्रभावित कर पाती हैं।

इस प्रकार जब बालक मां के गर्भ से पहले पहल पृथ्वी के वायुमण्डल में प्रवेश करता है तो उस समय वह अरश्मियुक्त होता है, परन्तु ज्योंही वह जन्म लेकर वायुमण्डल के सम्पर्क में आता है, त्योंही उस समय समस्त ग्रहों की रश्मियों का प्रभाव उसके शरीर पर छा जाता है। उस समय जिस ग्रह की रश्मियां घनीभूत होती हैं, उस ग्रह का प्रभाव उस बालक पर सर्वाधिक होता है और जिस ग्रह की रश्मियां हल्की होती हैं, उस ग्रह का प्रभाव उस बालक पर कम ही होता है। इस प्रकार पहले पहल बालक का जिन रश्मियों से स्पर्श होता है, वह उसके साथ जीवन पर्यन्त रहता है।

सुधि पाठकों! रत्नों को खरीद लेना सरल बात है, पर उसमें प्राणप्रतिष्ठा करना एक दुष्कर और श्रमसाध्य कार्य है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि जितने भी रत्न, मणियां हैं, उन सब की उत्पत्ति केवल धरती से होती है। यह हमारी पृथ्वी के ही जल, थल व पहाड़ों में से प्राप्त होते हैं। इसीलिए ही पृथ्वी को रत्नगर्भा भी कहा जाता है। ऐसी धरती जिसके गर्भ में रत्नों का भण्डार भरा हो, सागर का दूसरा नाम रत्नाकर भी है।

अब आप यह सोचेंगे, कि रत्न अपना प्रभाव किस प्रकार दिखलाते हैं? रत्नग्रह की रश्मियां खींचकर जातक के भीतर पहुंचाता है। इस तरह वह रत्न अपने ग्रह की पॉवर (शक्ति) मानव के अंदर बढ़ा देता है। अर्थात् वह ग्रह मनुष्य के मन-मानस पर प्रभाव डालने लगता है। परिणाम यह होता है कि अगर वह ग्रह व्यक्ति को शुभत्व देता है तो वह उस ग्रह से सम्बन्धित रत्न पहनने के कारण जातक को और अधिक शुभत्व प्रदान करेगा, अर्थात् रत्न के कारण ग्रह की शुभता में वृद्धि हो जाएगी। इसके विपरीत अगर वह ग्रह अशुभ फल देने वाला है और रत्न धारण करने के कारण उस ग्रह की शक्ति बढ़ गयी तो वह अपना अशुभ फल बढ़ा देगा जो जातक के लिए कष्टकारक हो जाएगा, अर्थात् अगर यह सूत्र मान लिया जाए कि रत्न अपने ग्रह से सम्बन्धित शक्ति को जातक के भीतर बढ़ाते हैं तो स्वयं सिद्ध हो जाएगा कि शुभ ग्रह शुभता और अशुभ ग्रह अनिष्टकारी फल देगा। ज्योतिषाचार्यों का दूसरा सिद्धान्त यह है कि जो ग्रह अशुभ है, उससे सम्बन्धित रत्न धारण कर लेने से वह ग्रह मनुष्य के ऊपर अपना प्रभाव कम कर देता है, अर्थात् अशुभ शक्ति कम करके शुभ फल देने लगता है।

सामान्य ज्योतिष-प्रेमियों में ही नहीं, अच्छे-अच्छे विद्वान् ज्योतिषी में भी यह भ्रांति है कि अशुभ ग्रह से सम्बन्धित रत्न धारण करने से ग्रह होता है। अर्थात् उस अशुभ ग्रह की शक्ति कम हो जाती है। मैं इस बात को कदापि स्वीकार नहीं करता क्योंकि यह अवैज्ञानिक सिद्धान्त है।

अब यह प्रश्न भी उत्पन्न होता है, कि कौन-सा रत्न धारण करें? इस विषय में दो विचार उत्तम हैं। पहला तो यह कि जन्मकुण्डली में जो ग्रह सर्व शुभत्व प्रदाता एवं कारक है उसे ही जीवन भर धारण किए रहें। दूसरा विचार यह है कि महादशा में जिस ग्रह की दशा चल रही हो और वह शुभत्व देने वाला ग्रह है तो उससे सम्बन्धित रत्न ही धारण करें। अगर वह ग्रह लग्नेश या राशीश हो तो उसे निश्चित रूप से धारण करें। अगर अशुभ ग्रह की दशा चल रही हो तो उसकी प्रत्यंतर दशा में जो

शुभ प्रदाता ग्रह आने वाले हों उनके या किसी एक को बारी-बारी से उनकी अन्तर्दशा में उन्हीं के रत्नों को धारण करते रहें। इस तरह आप अच्छे ग्रहों का अच्छा फल बुरे ग्रह की महादशा में भी उठा सकते हैं। यह मेरा अपना विचार है, आप किसी ज्योतिषी से मिलकर शंका-निवारण कर रत्न धारण कर सकते हैं।

अब प्रश्न यह उत्पन्न होता है, कि क्या एक साथ अनेक रत्न धारण कर सकते हैं? आपने भी एक ही जातक को कई अंगुलियों में कई प्रकार के रत्न धारण किए हुए देखा होगा। ऐसे व्यक्ति भूल करते हैं। पहले तो एक ही रत्न धारण करना चाहिए, अगर दो या दो से अधिक शुभ ग्रह कुण्डली में शुभ फल दे रहे हों तो यह विचार करके रत्न धारण करें कि वे ग्रह जिनके रत्न आप धारण करने जा रहे हैं वे आपस में मित्र हैं, शत्रु हैं या अधिशत्रु हैं। मित्र ग्रहों के रत्नों को एक साथ धारण कर सकते हैं, परन्तु आपस में शत्रु ग्रहों के रत्नों को एक साथ धारण नहीं करना चाहिए, वरना वे अशुभ फल देंगे। सूर्य, मंगल, बृहस्पति मित्र हैं अतः यदि कुण्डली में इनकी स्थिति अच्छी है तो आप माणिक्य, मूंगा, पीला पुखराज पहन सकते हैं। शनि, बुध, शुक्र मित्र हैं इनके रत्न हीरा, पन्ना, नीलम एक साथ पहन सकते हैं, परन्तु शुक्र, बृहस्पति शुभ ग्रह होते हुए भी एक-दूसरे के शत्रु हैं इनके रत्न आप कभी भी एक साथ नहीं पहन सकते हैं।

उपर्युक्त विवेचन से एक बात तो स्पष्ट हो गयी होगी कि रत्नों का जातक के शरीर एवं मन पर किस वैज्ञानिक विधि से प्रभाव पड़ता है। अब यह आप पर निर्भर करता है कि आप विचार कर ही कोई रत्न धारण करें। हां, किसी ज्योतिषी से परामर्श ले लेना उचित होगा। उसे भी वैज्ञानिक आधार पर आपकी कुण्डली देखकर पूर्ण चिंतन कर रत्नों के धारण करने का परामर्श देना चाहिए।

अब मैं प्राणप्रतिष्ठा पर आता हूं। मान लें, कोई स्त्री गर्भधारण करती है। यह सूचना शुभ हो सकती है, पर अगर उस गर्भस्थ शिशु में प्राण ही ना आएं अर्थात् उसमें प्राणों की प्रतिष्ठा न हो तो उसे विवश होकर गर्भपात कराना पड़ता है। इसी प्रकार प्राणप्रतिष्ठा ना होने पर रत्न नपुंसक अथवा मृत होकर रह जाते हैं। वह न लाभ देते हैं और ना ही हानि।

पाठकों ने रत्नों की उत्पत्ति से लेकर उसके इतिहास तथा उपयोग के विषय में अन्य पत्रिकाओं के साथ पुस्तकों में भी पढ़ा होगा। फिर यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से लेख का शीर्षक पढ़ते ही उभरेगा कि कौन-सी नई बात इस लेख में रत्नों से सम्बन्धित लिखी गयी है। लीक से हटकर और बहुत-सी भ्रांतियों को दूर करके

पाठकों को नवीन ज्ञान तथा दिशा निर्देश देना ही मेरा उद्देश्य है। मेरे इस लेख का आधार खगोल शास्त्र और वैज्ञानिकता ही है।

इन्हीं बातों का उत्तर, समाधान और विश्लेषण प्रस्तुत करके पाठकों को रत्न धारण का वैज्ञानिक व तार्किक आधार दे रहा हूं।

किसी भी ग्रह के रत्न में जब तक प्राणप्रतिष्ठा नहीं की जाती वह रत्न निरर्थक-सा होता है तथा उसके पहनने से कोई लाभ नहीं होता, क्योंकि पत्थर तो पत्थर ही है, अतः रत्न धारण करने वाले जातक को चाहिए कि शुभ मुहूर्त में प्राणप्रतिष्ठा करा देनी चाहिए। अन्य बातें पहले ही लिखी जा चुकी हैं, अब केवल प्राणप्रतिष्ठा की विधि दी जा रही है।

सर्वप्रथम रत्न धारण करने वाला स्नान कर, पूर्व की तरफ मुंह कर बैठ जावे एवं दाहिने हाथ में जल, कुमकुम, चावल, दूर्वा एवं दक्षिणा लेकर संकल्प करे—

ॐ विष्णुः विष्णुः श्रीमद्भागवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य, श्री ब्राह्मणो द्वितीय परार्धे श्री श्वेत वाराह कल्पे सप्तमे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशति में कलियुगे कालिप्रथमचरणे भारतवर्षे भरतखंडे जम्बू द्वीपे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तेक देशे कन्याकुमारिका क्षेत्रे श्री महानद्योगंगा यमुनयोः पश्चिमे तटे नर्मदायां उत्तरे तटे विक्रम शके बौद्धावतारे देव ब्राह्मणानां सन्निधो प्रभवादि अमुक संवत्सरे अमुकायने अमुक नक्षत्रे अमुक राशिस्थिते चन्द्रे अमुक राशिस्थिते सूर्ये अमुक राशिस्थिते देवगुरो शेषेसु ग्रहेषु यथायथा स्थान स्थितितेषु सत्सु एवं ग्रह गुण विशेषण विशिष्टतायां पुण्यतिथौ अमुक गौत्रोऽमुकशर्माहं ममात्मन श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फलवाप्तये ममकलत्रादिभिः सह सकलाधि व्यादि निरसनपूर्वक दीर्घायुष्य बलपुष्टि नेरुज्यादि अमुक ग्रह सम्बंधे अमुक रत्ने प्राणप्रतिष्ठा सिध्यर्थ करिष्ये।

इसके पश्चात् हाथ में जल-अक्षत लेकर प्राणप्रतिष्ठा मंत्र पढ़ें—

ततो जलेन प्रक्षाल्य प्राण-प्रतिष्ठा कुर्यात्।। प्रतिमायाः कपलौ दक्षिण पाणिना स्पष्ट्वा मंत्राः पठनीयाः।। अस्य श्री प्राणप्रतिष्ठा मंत्रस्य विष्णुरुद्रौ ऋषी ऋग्यजुः सामान्छिदांसि प्राणख्या देवता।। ॐ आं बीजं ह्रीं शक्तिः क्रां कीलयं यं रं लं वं शं षं सं हं हं सः एतः शक्तयः मूर्ति प्रतिष्ठापन विनियोगः।। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं हं सः देवस्य प्राणाः इह प्राणाः पुरुच्चार्य देवस्य सर्वेनिन्द्रयाणी इहः। पुनरुच्चार्य देवस्य त्वक्पाणि पाद पायु परस्थादीनि इहः। पुनरुच्चार्य देवस्य वाङ् मनश्चक्षुः श्रोत्र घ्राणानि इह्मगत्य सुखेन चिरं तिष्ठतु स्वाहा।। प्राणप्रतिष्ठा विधाय ध्यायेत्।। ववं प्राणप्रतिष्ठा कृत्वा षोडशोपचारैः पूज्येत्।।

इस प्रकार प्राणप्रतिष्ठा कर विधिपूर्वक रत्न की पूजा कर अभिषेक करके मुद्रिका धारण करें।

प्राणप्रतिष्ठा के उपरान्त अंगूठी को कच्चे दूध, मिश्री, शुद्ध घी देसी, गंगा-जल, मधु और फूल के घोल में डालकर रख दें। स्नानादि से निवृत होकर धूप-अगरबत्ती दिखाकर बतलायी गयी अंगुली में पहन लें। दिन व समय विद्वान् ज्योतिषी से पूछ लें।

राशि व ग्रह के अनुसार रत्नधारण विधान

राशि	स्वामीग्रह	अनुकूल रत्न	अपेक्षित वजन
मेष	मंगल	मूंगा	छः कैरेट
वृष	शुक्र	हीरा	चार कैरेट
मिथुन	बुध	पन्ना	पांच कैरेट
कर्क	चन्द्रमा	मोती	पांच कैरेट
सिंह	सूर्य	माणिक्य	सवा दो कैरेट
कन्या	बुध	पन्ना	छः कैरेट
तुला	शुक्र	हीरा	तीन कैरेट
वृश्चिक	मंगल	मूंगा	आठ कैरेट
धनु	बृहस्पति	पुखराज	ग्यारह कैरेट
मकर	शनि	नीलम	नौ कैरेट
कुम्भ	शनि	नीलम	नौ कैरेट
मीन	बृहस्पति	पुखराज	ग्यारह कैरेट
ग्रह	राहु	गोमेद	ग्यारह कैरेट
ग्रह	केतु	लहसुनिया	आठ कैरेट

जन्म-रत्न क्या हैं?

कौन-कौन-सी जन्म-तारीख के लिए कौन-सा रत्न भाग्यवान् है, इस विषय में बहुत दिनों से मतभेद था, पर अब यह सर्वत्र माना जाता है। जन्म-रत्न अग्रांकित हैं—

जन्म मास	जन्म-रत्न
जनवरी	गार्नेट
फरवरी	ऐमीथिस्ट
मार्च	ब्लड स्टोन या एक्वामेरीन
अप्रैल	हीरा, सफेद जिरकन
मई	पन्ना
जून	मोती, बदल चन्द्रकान्त
जुलाई	माणिक्य (माणक)
अगस्त	सारडोनिक्स या पेरीडॉट
सितम्बर	नीलम, नीली
अक्तूबर	उपल, बदल, टूर्मेलीन
नवम्बर	पीला पुखराज, बदल सुनैला
दिसम्बर	फिरोजा, बदल लाजवर्त

अन्त में आप यह विश्वास रखें, ज्योतिष शास्त्र में रत्नों का महत्वपूर्ण स्थान है। रत्नों का प्रयोग अनिष्टकारक ग्रहों के प्रभाव को रोकने के लिए किया जाता है। ग्रहों का प्रभाव जातक के जीवन पर अबाध गति से पड़ता है। प्रत्येक ग्रह रश्मियों द्वारा मनुष्यों पर प्रभाव डालता है। अगर इनके अशुभ प्रभाव से बचना हैं तो अभिमंत्रित राशि-रत्न अवश्य ही धारण करें।



6 आप यह भी समझ लें

क्या आप जानते हैं, इस सम्पूर्ण सृष्टि में रंगविहीन कुछ भी नहीं है? हर वस्तु का अपना एक रंग है। यह बात अलग है, कि हम देख अथवा समझ नहीं पाते हैं। मैंने एक बार पूछा, क्या कोई बतला सकता है, कि विश्व में कोई ऐसी वस्तु है, जिसका कोई रंग नहीं है, एक व्यक्ति ने कहा पानी का कोई रंग नहीं है। मैंने कहा, गलत, पानी का भी रंग है। यह बात अलग है कि वह भ्रम उत्पन्न करता है। कहीं वह नीला है, तो कही सफेद तो कहीं काला। हमारे जो साथी बद्रीनाथ गए हैं वह गंगा और यमुना का अन्तर प्रत्यक्ष देख सकते हैं। मेरे कहने का उद्देश्य यह है कि संसार की प्रत्येक वस्तु रंगीन है। दुनिया रंगीन, दुनिया में रहने वाले रंगीन उनके सपने रंगीन और तो और प्रकृति तक रंगीन है।

वेदों में ऋग्वेद ही पहला वेद है और ऋग्वेद के पहले ही मंत्र में रत्न का प्रयोग किया गया है। इसमें अग्नि को **''रत्नधातमम्''** कहा गया है। पूर्व वैदिक काल में अग्नि के महत्व को सरलतापूर्वक जाना जा सकता है और अग्नि के दस महत्व को उजागर करने के लिए अगर अग्नि को रत्न का नाम दिया जाए तो रत्नों का महत्व स्वयं ही सिद्ध हो जाता है। रत्न की परिभाषा इस प्रकार दी गयी है—**रमते अस्मिन् मनः**। जों हमारे मन में रमण करे, वही रत्न है। मन को भाने वाली, रत्नों की, इस विशिष्टता के कारण ही हम अपनी जाति के श्रेष्ठ व्यक्ति को रत्न कहने लगे—**''रत्नं स्व जाति श्रेष्ठोपि''**।

आयुर्वेद में रत्नों के रासायनिक गुणों को पहचानकर रसायन अर्थात् औषधि के रूप में रत्नों का उपयोग किया गया। ज्योतिष शास्त्र में रत्नों का उपयोग ग्रहों के प्रभाव से पीड़ित व्यक्तित्व के उपचार के लिए किया जाता है। हमारे शरीर, मस्तिष्क तथा मन के विकार रत्नों के द्वारा दूर किए जाते हैं। रत्नों का उपयोग न केवल विकृतियों से बचने के लिए वरन् स्वस्थ जातक को और अधिक ऊर्जावान् बनाने के लिए भी किया जाता है।

अव प्रश्न यह है कि हमारे शरीर में विकृतियां क्यों आती हैं और इन विकृतियों का उपचार रत्नों द्वारा किस प्रकार सम्भव हो पाता है? ज्योतिष शास्त्र हमें यह बताता है कि हम जन्म से लेकर मृत्यु तक आकाशीय ग्रह, नक्षत्रों और उनकी किरणों से निरंतर प्रभावित होते रहते हैं। आकाशीय किरणों की भूमिका हमारे जीवन में उसी क्षण से शुरू हो जाती हैं, जिस क्षण गर्भधारण का आरम्भ होता है। भ्रूणावस्था में भी ये किरणें हमें प्रभावित करती रहती हैं और जन्म के बाद भी हम प्रति पल इनसे प्रभावित होते हैं। इन किरणों की पहले विभिन्न ग्रहों से अन्तःप्रतिक्रिया होती है और इस प्रतिक्रिया के बाद कुछ किरणें हमारी ऊर्जा को बढ़ाती हैं, तो कुछ किरणें हमारे शरीर में विकृति का कारण बन जाती हैं। रत्नों के द्वारा इन किरणों को शरीर तक पहुंचने से पूर्व ही नियंत्रण में ले लिया जाता है।

स्मरण रखें हमारे जीवन में जब-जब जिस रंग की अधिकता होगी, तब-तब उस रंग से होने वाले रोग हमें घेर लेंगे, उपचार के लिए हमें उस रंग को संतुलित करना पड़ेगा। वज्र-भस्म आज भी कैंसर जैसे रोग में लाभकारी है।

रत्नों में किरणों को नियंत्रित करने की क्षमता इसलिए होती है कि प्रत्येक रत्न एक विशिष्ट प्रकार का रासायनिक यौगिक होता है। अलग-अलग रत्नों में अलग-अलग प्रकार की किरणों को अवशोषित करने की क्षमता होती है। रत्न किरणों को अवशोषित करके उन्हें हमारे शरीर के भीतरी भागों में पहुंचाते हैं, जिससे हमारी क्षमता बढ़ती है और हमारा विकास होने लगता है। अगर कोई किरण किसी ग्रह से टकराकर हमारी क्षमताओं में वृद्धि करने के गुणों से भर जाती है और किसी कोण विशेष के कारण हमारे शरीर तक बहुत कम मात्रा में पहुंच पाती है तो विशेष प्रकार के रत्न से हम उन किरणों की शरीर तक पहुंचने वाली मात्रा को बढ़ा देते हैं। इसके विपरीत अगर कोई किरण मात्रा की अधिकता के कारण हानि पहुंचाने वाली होती है और किसी ग्रह से प्रभावित होकर और भी अधिक हानिकारक बन जाती है तो हम किसी विशेष रत्न के द्वारा उसकी आवश्यकता से अधिक मात्रा को शरीर के भीतर जाने से रोकते हैं और अपेक्षित मात्रा में शरीर में प्रवेश करने वाली उस किरण को रत्न से छानकर शुद्ध कर लिया जाता है।

कोई भी ग्रह किसी भी जन्मपत्रिका में शुभ तथा अशुभ प्रभाव दे सकता है। जन्मलग्न वही होता है जिस समय शिशु मां के गर्भ से जन्म लेता है। 27 नक्षत्रों को बारह राशियों में विभक्त किया जाता है। एक नक्षत्र के चार चरण होते हैं। एक राशि नौ चरण की होती है। प्रतिदिन रात अर्थात् 60 घटी या 24 घण्टों में

बारह राशियों की बारह लग्न होती हैं। सूर्योदय के समय वही लग्न होगी जिस राशि पर सूर्य स्थित होगा। लगभग सवा दो घण्टे की एक लग्न होती है। 92 राशियों में 92 लग्न। जन्मसमय की लग्न को जन्मलग्न चक्र कहते हैं—और चन्द्रमा जिस राशि में होता है वही राशि जातक की जन्मराशि होती है। 27 नक्षत्रों में से जिस नक्षत्र में जन्म हुआ है वह उस शिशु का नक्षत्र होता है। उस नक्षत्र के जिस चरण में उसका जन्म हुआ है उसका जो अक्षर है उसी अक्षर से उस जातक की राशि का नाम पड़ता है। इस प्रकार जन्मलग्न, जन्मराशि बनती हैं। राशियों के अंक निर्धारित किए गए हैं। उनके क्रम के अनुसार जो एक राशि विशेष का प्रतिनिधित्व करते हैं, इसे समझ लें, जहां अंक लिखें वह क्रमशः यह राशियां मानें।

उल्लेखनीय है, ग्रहों की स्थिति सब पर एक समान नहीं होती। आज तक पूर्णतः शत-प्रतिशत एक ही प्रकार की जन्मकुण्डलियां मैंने नहीं देखी हैं। जुड़वां शिशुओं में पहली दृष्टि में समानता भले ही दिखायी पड़े, परन्तु सूक्ष्म गणित में नवमांश, दशमांश कुण्डली में अन्तर अवश्य ही आ जाता है। यही है विधाता की रचना, जो लौकिक होते हुए भी अलौकिक है। यही है बारह राशियों और 9 ग्रहों का विचित्र प्रभाव। अब यह विचारणीय बात है कि क्या ग्रहों को प्रभावित करने या उनके प्रभाव से बचने के लिए रत्नों का सहारा लिया जाना चाहिए, तो किस प्रकार वे हमारे लिए सहायक हो सकते हैं?

रत्नों द्वारा उपचार से हम किसी भी प्रकार की विकृति से स्वयं को बचा सकते हैं। शरीर हो या मस्तिष्क, हमारा अंग-प्रत्यंग कॉस्मिक किरणों और ग्रहों के साथ पारस्परिक प्रतिक्रिया करते हुए विकसित होता रहता है। अगर हमारा शरीर निर्बल है तो रत्नों के द्वारा इन किरणों को मनचाही मात्रा और मनचाहे रूप में प्राप्त करके अपने शरीर की किसी भी प्रकार रत्नों के द्वारा मस्तिष्क को अधिक-से-अधिक तेज और उपजाऊ बनाया जा सकता है।

रत्न—उपचार की सीमा यह है कि हम अपना द्रव्य गुण नहीं बदल सकते हैं। लेकिन द्रव्य गुण को विकसित करने वाले मुख्य घटक, कॉस्मिक किरणों को रत्नों की सहायता से अपने नियंत्रण में लेकर प्रत्येक जीव को उसके विकास की निजी क्षमताओं के चरम बिन्दु तक अवश्य पहुंचाया जा सकता है। इसके लिए हमें ऐस्ट्रोफिजिक्स की तरह ऐस्ट्रोजेनेटिक्स जैसे विषय को जन्म देकर उसे अधिक-से-अधिक विकसित करने का प्रयास करना चाहिए। आने वाले समय में अगर जेनेटिक्स ज्योतिष शास्त्र से जुड़ सके तो हमारी आने वाली पीढ़ी अधिक

स्वस्थ, सक्षम और सफल सिद्ध होंगे और ज्ञान की इन दो शाखाओं का मिलना सम्पूर्ण मानवता के लिए एक वरदान बन जाएगा।

आज भी ऐसे बहुत सारे रोग हैं जो आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के सम्पूर्ण प्रयत्नों के बावजूद ठीक नहीं हो सकते। कैंसर और एड्स जैसे रोग इसका प्रमाण हैं। साइनस और पाइल्स जैसी बीमारियां हैं, जिनकी शल्य चिकित्सा के पश्चात् भी समाप्त हो जाने का दावा नहीं किया जा सकता। गैस्ट्राइटिस जैसी आम तौर पर देखी जाने वाली बीमारियों का भी स्थायी समाधान आधुनिक चिकत्सा विज्ञान की पकड़ में आज तक नहीं आया है। इन रोगों की चिकित्सा रत्नों द्वारा सम्भव है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि रत्नों के प्रभाव को हम गम्भीरता से परखने की कोशिश करें। यह अनुभव सिद्ध है कि रत्नों द्वारा स्पर्श मात्र से शरीर के तापमान को नियंत्रित किया जा सकता है। अगर शरीर के तापमान को हम रत्नों द्वारा नियंत्रित कर सकते हैं, साइनस, टॉन्सिलाइटिस, गैस्ट्राइटिस और फिशर, पाइल्स जैसी बीमारियों को मूल से समाप्त किया जा सकता है, तो कोई आश्चर्य नहीं कि आने वाले दिनों में एड्स जैसे रोगों की चिकित्सा भी सम्भव हो जाए।

जिस ग्रह ने अपनी रश्मियों, वाइब्रेशन एवं गुरुत्वाकर्षण का प्रभाव डाला वही प्रभाव जातक के जीवन, उसके व्यक्तित्व, स्वभाव, गुण-दोष, धन-सम्पत्ति, सर्विस, व्यवसाय, लाभ-हानि, मित्र, शत्रु, पुत्र, पत्नी, पुत्री, माता-पिता, भाई-बहिन यहां तक कि सम्पूर्ण पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक तथा पद-प्रतिष्ठा आदि से लेकर मृत्यु और मृत्यु के पश्चात् की गति तक का निश्चय कर देता है। अगर सारांश में कहा जाए तो यह कहेंगे कि जातक के पूर्वजन्म से लेकर आगामी जन्म का इतिहास जन्म समय ही ग्रह रच देते हैं।

संक्षेप में, कहूं तो यह शारीरिक मानसिक संरचना की भिन्नता के कारण हैं ग्रह। ग्रहों के प्रभाव में समस्त प्राणी तभी आ जाते हैं, जब वह इस धरती में पहली बार जन्मते हैं। मानव पर ग्रहों का प्रभाव उसी क्षण पड़ जाता है और वही प्रभाव उसकी बाहरी संरचना, आंतरिक संरचना और मानसिक संरचना का निर्माण अपनी तीन प्रबल शक्तियों से करता है—(1) गुरुत्वाकर्षण, (2) कम्पन, (3) प्रत्येक ग्रह के यह गुण तो होते ही हैं, परन्तु किसी में कोई गुण कम होता है और कोई गुण अधिक होता है। यह उस ग्रह की पृथ्वी से दूरी एवं स्थिति पर निर्भर करता है।

रत्नों में भी चुम्बकत्व शक्ति, कम्पन एवं रश्मियां होती हैं। अतः इनका सम्पर्क ग्रहों जैसा ही होता देखा गया है। आप किसी भी अच्छे रत्न की रश्मियों को स्वयं

देख सकते हैं। कम्पन और चुम्बकत्व शक्ति की बात है तो आप यह जान लें कि अब भौतिक विज्ञान ने यह सिद्ध कर दिया है कि हर वस्तु में अपनी एक चुम्बकत्व शक्ति होती है। यहां तक कि, एक अणु में भी होती है और परमाणु में भी होती है, तो फिर रत्नों में क्यों नहीं होगी? अतः सिद्ध है कि प्रत्येक रत्न में चुम्बकत्व शक्ति होती है। अब कम्पन के होने का प्रश्न है तो इसके दो पहलू आप प्रयोग में लाकर देख सकते हैं। एक यह, कि किसी रत्न को आप हथेली पर रखें, मुट्ठी में बंद करें फिर कान के पास तक ले जाएं। आपको स्वयं रत्न की कम्पन शक्ति पता चल जाएगी। हां यह क्रियाएं शांतचित्त होकर एकाग्र मन से, सम्पूर्ण आत्मिक शक्ति के साथ श्रवणेन्द्रिय पर केन्द्रित करके करें। वैज्ञानिक सिद्ध कर चुके हैं कि एक अणु में भी इलेक्ट्रॉन तथा प्रोट्रॉन गतिशील रहते हैं। जो गतिशील है या जिसमें कुछ गतिशील है उसमें कम्पन है और अगर कम्पन है तो स्वर भी है। भले ही वह हमें साफ सुनायी पड़े या न पड़े। इस प्रकार ग्रहों का और रत्नों का सम्बन्ध स्पष्ट होता है। अगर कुछ नहीं समझ में आता तो इतना समझ लें कि ग्रहों में रश्मियां होती हैं और रत्नों में भी रश्मियां होती हैं। रश्मियां हर ग्रह की अलग-अलग रंगों की होती हैं और उसी तरह ग्रहों में भी अलग-अलग रंग की रश्मियां होती हैं।

अब प्रश्न यह शेष है, कि हम कौन-सा रंग प्रयोग करें और कौन-सा रत्न धारण करें? यह आप निम्न तालिका से जान सकते हैं–

जन्मांक के अनुसार, उपयोगी रत्नों का चुनाव

जन्म-तारीख	स्वामीग्रह	उपयुक्त रत्न	रंग
1, 10, 19, 28	सूर्य	माणिक्य	लाल
2, 11, 20, 21	चन्द्रमा	मोती	सफेद (हाफ)
3, 12, 21, 30	बृहस्पति	पीला पुखराज	पीला
4, 13, 22, 31	यूरेनस	गोमेद	गहरा काला मिला लाल
5, 14, 23	बुध	पन्ना	हरा
6, 15, 24	शुक्र	हीरा	सफेद
7, 16, 25	नेपच्यून	लहसुनिया	भूरा
8, 17, 26	शनि	नीलम	नीला
9, 18, 27	मंगल	मूंगा	लाल

जन्म-तारीख के अनुसार शुभ रत्नों का चुनाव

जन्म-तारीख	राशियां	उपयुक्त रत्न
15 अप्रैल से 14 मई	मेष	मूंगा
15 मई से 14 जून	वृषभ	हीरा
15 जून से 14 जुलाई	मिथुन	पन्ना
15 जुलाई से 14 अगस्त	कर्क	मोती
15 अगस्त से 14 सितम्बर	सिंह	माणिक्य
15 सितम्बर से 14 अक्तूबर	कन्या	पन्ना
15 अक्तूबर से 14 नवम्बर	तुला	हीरा
15 नवम्बर से 14 दिसम्बर	वृश्चिक	मूंगा
15 दिसम्बर से 14 जनवरी	धनु	पीला पुखराज
15 जनवरी से 14 फरवरी	मकर	नीलम
15 फरवरी से 14 मार्च	कुम्भ	गोमेद
15 मार्च से 14 अप्रैल	मीन	लहसुनिया

अब तक यह बात भली प्रकार समझ में आ गयी होगी कि ग्रहों का रत्नों से आपसी सम्बन्ध तो कुछ भी हो, किन्तु जातक के लिए उनका महत्वपूर्ण महत्व है; क्योंकि उनमें भी वही शक्तियां छिपी हैं जो ग्रहों के भीतर हैं।

❑❑❑

7 रत्नों का संसार जीवन को दे संवार

रत्नों के विषय में किसी ने क्या खूब कहा है—

"एक पत्थर की भी तकदीर संवर सकती है।
शर्त इतनी है कि सलीके से संवारा जाए।।"

बहुमूल्य पत्थर जिन्हें हम 'रत्न' कहते हैं, यह रत्न रंग-बिरंगे सज्जात्मक पत्थरों का अपने आकर्षक सौन्दर्य तथा उपयोगिता के कारण प्राचीन काल से ही मानव सभ्यता के साथ निकट का सम्बन्ध बना है। मानव ने इनका भरपूर प्रयोग किया है।

रत्नों की सुन्दरता को स्पष्ट करने तथा उनकी त्रुटियों को दूर करने के लिए उन्हें तराशा जाता है। रत्नों को तराशने व सुन्दर डिजाइनों में परिवर्तित करने की कला को आर्ट ऑफ लैपीडरी कहते हैं। सर्वप्रथम रत्नों को तराशने का आविष्कार केवल हीरे के लिए ही किया गया था और सबसे पहले विश्व के सामने इस विधि का परिचय लुईस डी वेरग्येम ने कराया था। हालांकि भारत में हीरों को काटने और तराशने का काम दूसरे हीरे या हीरे के चूर्ण द्वारा एक घूमते हुए लोहे के पहिए (चक्के) पर किया जाता है। तराशने के साथ ही साथ हीरा पॉलिश भी होता चला जाता है। रत्न विशेषज्ञ एक साधारण पत्थर को रगड़, काट और सुन्दर डिजाइन में परिवर्तित करने के पश्चात् आभूषणों में फिट करने के योग्य बना देते हैं और एक साधारण-सा पत्थर मूल्यवान् रत्न बन जाता है।

तराशे हुए भागों के नाम इस प्रकार होते हैं—टेबल, क्राउन, मेखला और क्यूलेट। ऊपरी सतह को टेबल कहते हैं, उसके नीचे बने हुए पहल क्राउन तथा उसके नीचे के जोड़ को जहां क्राउन फलक समाप्त होकर निचले फलक शुरू होते हैं मेखला कहते हैं। तत्पश्चात् निचले फलक और उसके सबसे आखिरी सिरे को क्यूलेट कहते हैं। यह चौड़ा भी हो सकता है। रत्नों में प्रयोग होने वाली तराशें अग्र प्रकार हैं—

डायमन्ड प्वाइन्ट—इसमें प्राकृतिक आवटोहेड्रल मणिभों को उनके प्राकृतिक रूप में ही तराश कर पॉलिश कर दिया जाता था।

कैबोकोन तराश—यह प्राचीन तराश है। काफी समय तक यह रंगीन पत्थरों की एक अति लोकप्रिय तराश रही है, परन्तु आज यह केवल कुछ ही रत्नों; जैसे अल्मनडाइन गार्नेट, लहसुनिया, स्टारस्टोन्ज, अपारदर्शक और अर्धपारदर्शक रत्नों तक ही सीमित होकर रह गयी है। जैसे अब भी माणिक व पन्ने के लिए प्रयोग की जाती है।

कैबोकोन तराश का मुख्य रूप शिखर पर से गोल, उन्नतोदर, पीठ पर से सपाट और शेष बिना पहल के सादा रहने देना है।

दुहरा उत्तल कैबोकोन—इसमें नीचे व ऊपर दोनों ओर की सतह घुमावदार और उन्नतोदर होती है, परन्तु दोनों के कोणों में भिन्नता होती है। इसमें एक सतह दूसरी की तुलना में अधिक गोलाई लिए हुए होती है। कुछ स्टारस्टोन्ज तथा मूनस्टोन्ज में ऊपरी सतह ढालू होती है। क्राइसोबेरिल लहसुनिया भी इसी तराश में तराशे जाते हैं।

सरल कैबोकोन तराश—इसमें ऊपरी सतह घूमी हुई और निचली सतह सपाट होती है। बहुत-से अपारदर्शक रत्न; जैसे फिरोजा, स्फटिक, लहसुनिया और कभी-कभी अल्मेन्डाइन इसी तराश में तराशे जाते हैं।

अवतल-उत्तल कैबोकोन तराश—इसमें निचली सतह अवतल तथा मेखला पतली होती है। यह तराश प्रायः गहरे रंगों के पत्थरों के लिए ही होती है; जैसे गहरे रंग के कारबंकल जोकि बहुत ही गहरे रंग के होते हैं। खोखली कैबोकोन तराश में शिखर उन्नतोदर तथा निचला भाग नतोदर होता है।

सिंगल तराश—इसमें 17 फलक होते हैं। एक शिखर, आठ ऊपरी फलक एवं आठ निचले फलक। यह तराश छोटे आकार के रत्नों में प्रयोग की जाती है।

डबल तराश—इसमें 58 फलक होते हैं। 33 ऊपरी फलक तथा 25 निचले फलक। यह तराश हीरों में प्रयोग की जाती है।

गुलाब तराश—यह तराश अब केवल छोटे हीरों में ही प्रयोग की जाती है या फिर रंगीन रत्नों या छोटे रत्नों को बड़े रत्नों के साथ लगाना हो, तो उसके लिए भी प्रयोग की जाती है।

ज्वलन्त तराश—यह तराश आजकल बहुत अधिक प्रयोग की जाती है। इससे रत्नों की चमक-दमक में बढ़ोतरी हो जाती है। इसमें 58 फलक होते हैं।

आधुनिक ज्वलन्त तराशें—इसमें ज्वलन्त तराश में कुछ परिवर्तन करके नई-नई

तराशों को जोड़ा किया गया है जिससे भार की बचत तथा फलकों की संख्या में भी वृद्धि हुई है, जिससे रत्नों की सुन्दरता और चमक पहले की अपेक्षा और भी अच्छी तरह उभर कर सामने आने लगी है।

जुबली तराश—इसमें फलकों की संख्या 88 होती है।

मल्टी स्टार तराश—इस तराश में विशेषकर पीले स्फटिक तराशे जाते हैं। टेबल फलक के चारों ओर बहुत-से स्टार पहल तराशे जाते हैं। साधारणतः इसमें क्यूलेट नहीं होती है।

जिरकन कट—यह तराश प्रायः गोमेद के लिए ही है। वैसे तो यह ज्वलन्त तराश की ही तरह होती है, परन्तु इसमें ज्वलन्त की अपेक्षा फलकों का एक सेट अधिक होता है।

मरक्वायज तराश—इसमें 58 पहल होते हैं।

एमराल्ड, स्टेप—इसमें कुल मिलाकर 58 पहल होते हैं। एक टेबल 24 ऊपरी पहल, मेखला पहल आठ और निचली पहल 24 तथा एक क्यूलेट।

मिश्रित तराश—इसमें ऊपरी भाग ज्वलन्त तराश का और निचला किसी अन्य तराश का होता है।

फ्रेंच स्टार तराश—यह मिश्रित तराश जैसी ही तराश है।

जाल या गद्दा तराश—इसमें रत्नों को कुछ चपटा तराशा होता है और उसमें अनेकों की एक या अधिक लाइन मेखला के समानान्तर रखी जाती है।

ट्रिलिएन्ट तराश—इसमें केवल 22 पहल होते हैं।

बेगूएटी—इसमें 17 पहल होते हैं।

पोलकी—एक टेबल और निचले भाग में तीन फलक। कुल मिलाकर इसमें चार फलक होते हैं।

पाश्चात्य पोलकी—इसमें ऊपर एक फलक और नीचे 24 फलक। कुल मिलाकर 25 फलक होते हैं।

अण्डाकार ज्वलन्त तराश—इसमें 8 पहल होते हैं।

जवाहरात तौलने के लिए वजन की जो इकाई प्रयोग की जाती वह कैरेट कहलाती है। एक ग्राम का पांचवां भाग अथवा 0.200 ग्राम भार एक कैरेट कहलाता है।

मीट्रिक भार ग्राम इकाइयों में इस प्रकार है—

1 मिलीग्राम	=	1 ग्राम का हजारवां भाग
1 ग्राम	=	1000 मिलीग्राम
1 किलोग्राम	=	1000 ग्राम

1 ग्राम (1000 मिलीग्राम)	=	5 मीट्रिक कैरेट
100 सेन्ट	=	1 कैरेट
500 मिलीग्राम	=	2.5 कैरेट
200 मिलीग्राम	=	1 कैरेट
100 मिलीग्राम (0.10 ग्राम)	=	0.50 कैरेट
50 मिलीग्राम	=	0.25 कैरेट
20 मिलीग्राम	=	0.10 कैरेट
10 मिलीग्राम (0.010 ग्राम)	=	0.05 कैरेट
5 मिलीग्राम	=	0.025 कैरेट
2 मिलीग्राम	=	0.010 कैरेट
1 मिलीग्राम	=	0.005 कैरेट

औंस की पूरी तालिका निम्न प्रकार है–

24 ग्रेन	=	1 पेनी भार
20 पेनी भार (480 ग्रेन)	=	1 औंस
12 औंस (5760 ग्रेन)	=	1 पौंड

वजन के लिए एक और इकाई प्रयोग की जाती है जो कि एवरडोपाइज कहलाती है। उसकी तालिका इस प्रकार है–

16 ड्राम	=	1 औंस
16 औंस (437.1/2ग्रेन)	=	1 पौंड
14 पौंड	=	1 स्टोन
28 पौंड	=	1 क्वार्टर
4 क्वार्टर (112 पौंड)	=	1 हन्ड्रेडवेट
20 हन्ड्रेडवेट	=	1 टन

आज कैरेट इकाई अन्तर्राष्ट्रीय तौर पर प्रयोग की जाती है, फिर भी यहां कुछ देशों में प्रचलित वहां की इकाइयों के विषय में थोड़ा-सा जान लेना ठीक ही रहेगा–

1 रत्ती	=	0.91 कैरेट
1 तोला	=	58.18 कैरेट
1 मैगेलिन	=	1.75 कैरेट
64 रत्ती	=	1 तोला

रत्ती को कैरेट में परिवर्तित करने के लिए इसे दस से गुणा करके ग्यारह से भाग देते हैं।

जयपुर (राज्य) के भार इस प्रकार हैं–

20 बिस्वा	=	1 रत्ती
24 रत्ती	=	1 टांक
64.75 रत्ती	=	1 भरी (तोला)

मुम्बई–

पाव आना भर	=	रत्ती का 64वां भाग
आधा आना भर	=	रत्ती का 32वां भाग
एक आना भर	=	रत्ती का 16वां भाग
16 आना भर	=	1 रत्ती
24 रत्ती	=	1 टांक
62 रत्ती	=	1 तोला

पश्चिमी बंगाल–

20 बिस्वा	=	1 रत्ती
24 रत्ती	=	1 टांक
64 रत्ती	=	1 भरी (तोला)

हीरा–रंगहीन, पारदर्शक तथा अच्छी द्यूति वाला पांच कैरेट का हीरा 25,000 रुपये प्रति कैरेट मूल्य का होता है। इससे कम भार वाला 12000–15000 रुपये प्रति कैरेट का होता है। हल्के आसमानी रंग का हीरा ऊंचा मूल्य रखता है। कुछ जौहरी उसको रंगहीन हीरे से अधिक उत्तम श्रेणी का मानते हैं, तो कुछ कम।

पुखराज–यह प्रायः सुनेहला से भ्रमित होता है। इसका मूल्य 200 रुपये प्रति कैरेट तक होता है। जिस श्रेणी का माल होगा उसी के अनुसार उसका मूल्य होगा। सफेद पुखराज की कीमत भी इसी प्रकार होती है।

सफेद पुखराज–देखने में (कांच) क्रिस्टल जैसा होता है। बहुत मामूली-सी नीलाहट लिए होता है; जैसे बिल्लौर को नील दे दिया गया हो। सफेद पुखराज तथा क्रिस्टल में अन्तर यह होता है कि क्रिस्टल सदैव ज्वलन्त तराश, आक्टाहेड्रन या राउन्ड होता है जबकि सफेद पुखराज चौकोर शेप में होता है।

लहसुनिया–यह बिल्ली की आंख जैसा होता है। इसका मूल्य 125 रुपये प्रति कैरेट तक होता है। काला लहसुनिया ब्लैक स्टार की तरह काला पत्थर होता है, परन्तु इसमें मूनस्टोन की भांति बीच में केवल एक लाईन आती है। इस लाईन का रंग हरापन लिए हुए होता है।

मूंगा–यह जोगियाई, लाल, भूरे तथा सिन्दूर के रंग का होता है। इसका मूल्य

20–100 रुपये प्रति कैरेट तक होता है।

फिरोजा–यह फिरोजी रंग का अपारदर्शक रत्न होता है। इस पर पॉलिश होने के बाद अगर तेल लग जाए तो सब पॉलिश खराब हो जाती है।

माणिक–इसके अच्छे रत्नों की कीमत एक लाख रुपये प्रति कैरेट तक भी पहुंच जाती है तथा 25–30 हजार रुपये प्रति कैरेट भी होती है और कम भी। यह लाल रक्त के रंग का पत्थर होता है और पारदर्शक होता है।

पारदर्शक का कोई-कोई नग गार्नेट से धोखा खा जाता है। इसकी मध्यम श्रेणियों का मूल्य 25 रुपये से 900 रुपये प्रति कैरेट तक होता है। इससे भी अधिक मूल्यवान् पाया जाता है। जिसमें पारदर्शकता बिल्कुल स्वच्छ हो, कोई समावेश न हो तो अत्यंत मूल्यवान् होता है।

नीलम–यह मोर के रंग का सर्वोत्तम माना जाता है। यह नीले रंग का चमकदार व पारदर्शक रत्न होता है। यह गहरे नीले, हल्के नीले या मध्यम नीले रंग का होता है। इसका मूल्य 1000 रुपये प्रति कैरेट तक होता है। इससे अधिक मूल्यवान् भी पाया जाता है।

पन्ना–यह केवल हरे रंग का होता है। यह काफी मूल्यवान् रत्न होता है जो 800 रुपये प्रति कैरेट तथा इससे भी अधिक भाव का होता है। जिसमें समावेश कम-से-कम हो या बिल्कुल न हो तथा स्वच्छ व एक रंग का हो वह मूल्यवान् होता है। हल्के रंग का पन्ना कम मूल्य का होता है। यह 100 रुपये प्रति कैरेट तक का होता है।

माणिक, नीलम व पन्ना, यह तीनों अगर हल्के रंगों में होते हैं तो इनका मूल्य लगभग एक समान ही होता है।

आपने प्रायः देखा होगा कि सड़कों के किनारे कुछ लोग एक कपड़े या शोकेस में रत्न लगाकर बैठे रहते हैं। उनके पास रत्नों को तराशने व पॉलिश करने वालों के यहां का कूड़ा होता है अर्थात् उन लोगों के यहां जो रत्न रद्द करके निकाल दिए जाते हैं उनको यह लोग सस्ते दामों में खरीदकर बहुत महंगे दामों पर बेचते हैं।

अकीक सस्ता पत्थर है तथा आप अगर कभी पत्थरों को ध्यानपूर्वक देखें तो उनमें भी यह पत्थर आपको काफी संख्या में पड़े हुए नजर आ जाएंगे। जौहरी या रत्न तराश केवल इतना ही करते हैं कि उनको तराश कर पॉलिश कर देते हैं और यह पत्थर अकीक रत्न कहलाने लगता है तथा मूल्यवान् हो जाता है।

यह सड़क छाप रत्न विक्रेता इसके 100 रुपये तक तथा कभी-कभी इससे भी अधिक मूल्य ले लेते हैं, इसलिए रत्न हमेशा विश्वसनीय स्थानों से ही खरीदना चाहिए।

रत्न खरीदते समय एक बात अवश्य याद रखनी चाहिए कि भले ही वह निम्न श्रेणी का हो परन्तु रंग में सुन्दर तथा पॉलिश में चमकदार होना चाहिए।

उपल–यह सफेद होता है। इसमें लाल, पीले तथा हरे आदि रंगों की चमकियां होती हैं जो प्रकाश में झिलमिलाती हैं। यह काले रंग का भी होता है। अच्छे-से-अच्छा 90 रुपये प्रति कैरेट होता है।

रत्नों के विषय में जानकारी प्राप्त करने के पश्चात् यह स्वाभाविक ही है कि आप इनको खरीदकर पहनना भी चाहेंगे, परन्तु एक विचार उन्हें यह परेशान कर सकता है कि इन्हें प्राप्त कहां से किया जाए। फिर इनके विषय में एक धारणा यह भी है कि ये अत्यन्त मूल्यवान् होते हैं अतः इनको धारण करने में केवल धनिक ही समर्थ हो सकते हैं, जबकि ऐसा नहीं है। निःसंदेह यह मूल्यवान् होते हैं तथा कुछ रत्नों का मूल्य तो लाखों रुपयों में होता है, परन्तु आपको यह जानकर शायद आश्चर्य हो कि एक साधारण व्यक्ति भी अगर रत्नों को धारण करना चाहे तो वह इसमें समर्थ हो सकता है।

आप रत्नों की जोड़ इस प्रकार कर सकते हैं, कई बार दो या तीन जोड़ वाले पत्थर इस प्रकार जुड़े हुए होते हैं कि इनको सरलतापूर्वक नहीं देखा जा सकता, परन्तु इनको पानी या तेल में डालकर तिरछे कोण से देखने से उनके जोड़ों के रंग को साफ-साफ देखा जा सकता है। अगर वह रत्न एक ही भाग का नहीं है बल्कि दो-तीन जोड़ों से बना है तो उसको उबलते पानी में डालकर रखने या अल्कोहल में डाल देने से उसके यह भाग अलग-अलग हो जाएंगे। पराबैंगनी किरणों के प्रकाश में देखने पर असली रत्न दिन के प्रकाश की भांति दीखने के बजाए अधिक गहरा और काला-सा दिखायी देता है, परन्तु नकली रत्न और पत्थर हल्का काला या कालिमायुक्त दिखायी देता है। नकली रत्नों और पत्थरों का रंग हर स्थान पर एक-जैसा होता है, परन्तु वास्तविक लाल व नीलम का रंग एक ही पत्थर के विभिन्न भागों में कम या अधिक दिखायी देते हैं। इस विधि से दूसरे श्वेत रत्नीय पत्थरों या कांच को सरलतापूर्वक पहचाना जाता है।

इसी प्रकार माणिक्य और नीलम को भी इन किरणों के प्रयोग से उन्हीं के रंग के अन्य रत्नीय पत्थरों से स्पष्टतया पृथक् किया जा सकता है। उपल और क्राइसोबेरील पर जब ये रश्मियां डाली जाती हैं तो वे कम पारदर्शक दिखाई देते हैं। स्फटिक वर्ग के पत्थर फेल्सपार व पुखराज इन रश्मियों के पड़ने पर अर्धपारदर्शक प्रतीत होते हैं। बेरिल, एलमेन्डाइन गार्नेट, जिरकन और सब प्रकार के कांच इन किरणों के पड़ने पर बिल्कुल अपारदर्शक लगते हैं।

जो आन्तरिक प्रकाशीय प्रभाव माणिक, नीलम तथा पुखराज में नजर आता है और जिसको रेशम कहा जाता है, कृत्रिम रत्नों की चमक शीघ्र समाप्त हो जाती है। कृत्रिम रत्नों को स्पर्श करने से वह अधिक स्निग्ध प्रतीत होंगे, परन्तु प्राकृतिक रत्नों में चिकनापन नहीं होता। असली रत्न को पृथ्वी पर घिसने से आवाज नहीं निकलती, जबकि इमीटेशन को घिसने से खुरचने जैसी आवाज निकलती है।

अल्पमोती रत्नों की नकल कांच से बनायी जाती है, जबकि मूल्यवान् की नकल पाऊडर से बनायी जाती है। कांच में चमकीलापन होता है, परन्तु कांच और प्राकृतिक रत्न के चमकीलेपन में भिन्नता यह होती है कि प्राकृतिक में समावेश होता है चाहे वह बहुत बारीक ही क्यों न हो और नंगी आंखों से नजर न आता हो। इसको सूक्ष्मदर्शी लैन्स से देखा जा सकता है। जिन नकली पत्थरों में समावेश बनाया भी जाता है तो इन पत्थरों को घुमाने से वह समावेश रुका हुआ नजर आता है, जबकि असली में यह समावेश रत्न को घुमाने से चलता हुआ-सा अनुभव होता है।

नकली रत्न हल्का होता है, जबकि प्राकृतिक रत्न वजन में भारी होता है। फिरोजा और मूंगे का इमीटेशन वजन में प्राकृतिक से भारी होता है। जो नकली रत्नों में कई बार वायु के गोल बुलबुले उनको बनाते समय रह जाते हैं, परन्तु असली रत्नों और जमीन से निकाले गए कीमती पत्थरों को सूक्ष्मदर्शी यंत्र से देखने पर अगर कोई बुलबुला रह भी जाए तो गोल के बजाए वह अनियमित होगा।

असली नीलम और माणिक को अगर कुछ समय तक टकटकी लगाकर देखते रहें तो उनका प्रभाव नेत्रों की मांसपेशियों और मस्तिष्क की तन्त्रिकाओं पर ठण्डा होगा और उससे उनमें शक्ति-सी प्रतीत होगी, परन्तु बनावटी व नकली माणिक और नीलम से मस्तिष्क में ठण्डक और शक्ति अनुभव नहीं होगी, बल्कि उनको निरन्तर देखते रहने से आंखों के पट्ठे थक और तन जाते हैं।

रत्नों को सूक्ष्मदर्शी यंत्र से देखने पर अगर रेखाएं दिखायी दें, तो प्राकृतिक और असली रत्नों में तो वह सीधी लाईन की तरह होती हैं, परन्तु नकली रत्नों में यह रेखाएं टेढ़ी होती हैं।

नकली रत्न को सूक्ष्मदर्शी यंत्र से देखने पर उनके भीतर छोटे-छोटे कण टेढ़ापन लिए दिखायी देते हैं; परन्तु असली व प्राकृतिक रत्नों के ऐसे कण छोटे-बड़े साइज के और अनियमित होते हैं।

मेयोलीन आयोडाइड के डाइल्यूट सॉल्यूशन में असली रत्न को डाल देने पर वह उस घोल की तह में डूब जाते हैं, परन्तु इमीटेशन रत्न उसके ऊपर तैरने लग जाते हैं। ध्यान से देखने पर नकली रत्नों का रंग असली से भिन्न होता है। नकली

पत्थर देखने में असली से अधिक सुन्दर दिखायी देते हैं।

हमारे ज्योतिषियों द्वारा निर्मित यहां कुछ ऐसे रत्नों की तालिका दी जा रही है जिनका सम्बन्ध व्यवसायों से है। निम्न तालिका देखने वाला अपने व्यवसाय से सम्बन्धित रत्नों का चुनाव करके उन्हें धारण कर सकता है–

व्यवसाय	रत्न
फिल्म प्रोड्यूसर, डायरेक्टर, वितरक	हीरा
राजनीतिज्ञ, सामाजिक कार्य करने वाले	माणिक, मूंगा
कलाकार, संगीतकार, गीतकार अस्पतालों के डॉक्टर, अभिनेता, कर्मचारी	हीरा, मोती, सफेद पुखराज
लेखक, कारागार में कार्य करने वाले	पन्ना, माणिक
शासकीय अधिकारी	नीलम, मूंगा
बैंक, बैंकिंग सम्बन्धी कार्य, वाणिज्य सम्बन्धी व्यक्ति, गणित से आजीविका कमाने वाले, सेल्स व इन्कमटैक्स विभाग के अधिकारी	पन्ना
लोहे, पटसन तथा कोयले के व्यापारी	मूंगा, नीलम
जज, मजिस्ट्रेट, फौज के अधिकारी, मुन्सिफ	माणिक
वकील, प्रोफेसर	मूंगा, पन्ना
कमीशन एजेन्ट, आढ़ती	मूंगा, पुखराज

उपरोक्त तालिका को देखकर अगर कोई जातक अपने लिए सही रत्न चुनने में उलझन अनुभव करता हो, तो उसे इन सब कष्टों से बचने के लिए नौ-के-नौ रत्नों की अंगूठी बनवा लेनी चाहिए, जिससे प्रत्येक ग्रह के फल स्वयं ही अनुरूप रहेंगे और उस पर कोई भी विपत्ति नहीं आएगी।

नीचे दिए हुए वजनों से कम का रत्न कोई लाभ नहीं पहुंचाता–

माणिक–कम-से-कम तीन रत्ती का होना चाहिए।

हीरा–कम-से-कम एक से डेढ़ रत्ती का होना चाहिए।

नीलम–कम-से-कम चार रत्ती का होना चाहिए।

पन्ना–कम-से-कम तीन रत्ती से छह रत्ती का होना चाहिए।

पुखराज—कम-से-कम तीन रत्ती से चार रत्ती का होना चाहिए। 6, 11 या 15 रत्ती का कभी नहीं पहनना चाहिए।

मोती—कम-से-कम 4, 6, 2 या 11 रत्ती का होना चाहिए, परन्तु 7 अथवा 8 रत्ती का कभी नहीं पहनना चाहिए।

मूंगा—कम-से-कम छह रत्ती से आठ रत्ती का होना चाहिए, परन्तु 5 या 14 रत्ती का कभी नहीं पहनना चाहिए।

गोमेद—कम-से-कम 4 से 6, 11 या 13 रत्ती का होना चाहिए, परन्तु 7, 10 या 16 रत्ती का कभी नहीं पहनना चाहिए।

लहसुनिया—कम-से-कम 4 रत्ती से 7 रत्ती का होना चाहिए, परन्तु 13 रत्ती का कभी नहीं पहनना चाहिए।

एक बार खरीदकर तथा अभिमन्त्रित करने के पश्चात् धारण किए गए रत्नों का प्रभाव कब तक बना रहता है उसका विवरण इस प्रकार है—

माणिक—अंगूठी में जड़वाने के दिन से चार वर्ष तक प्रभावशाली रहता है।

पन्ना—अंगूठी में जड़वाने के दिन से तीन वर्ष तीन दिन तक प्रभावशाली रहता है।

हीरा—पहनने के दिन से सात वर्ष तक प्रभावशाली रहता है।

नीलम—पहनने के दिन से पांच वर्ष तक प्रभावशाली रहता है।

मोती—पहनने के दिन से दो वर्ष दो महीने तक प्रभावशाली रहता है।

पुखराज—पहनने के दिन से चार वर्ष चार महीने तक प्रभावशाली रहता है।

गोमेद—पहनने के दिन से तीन वर्ष तक प्रभावशाली रहता है।

लहसुनिया—पहनने के दिन से तीन वर्ष तक प्रभावशाली रहता है।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि रत्नों की खरीददारी प्रमुख रूप से "भाग्य जगा देने वाले रत्न" समझकर की जाती है। हालांकि बहुत-से लोग इन्हें प्रतिष्ठा का प्रतीक मानते हुए इनका आभूषणों में भी प्रयोग करते हैं। इनका थोड़ा-बहुत प्रयोग चिकित्सा कार्यों में भी होता है, परन्तु इस क्षेत्र में उपरत्न ही प्रयोग किए जाते हैं। रत्न व्यवसायी को यह भी जानकारी होनी चाहिए कि इन दोनों क्षेत्रों में कब और किस प्रकार रत्नों का प्रयोग करना चाहिए, ताकि वह अपने ग्राहकों का सही मार्गदर्शन करके उनको अपना माल बेच सके। अतः प्रस्तुत पुस्तक में मैंने उपरोक्त विषयों पर भी पर्याप्त प्रकाश डाल दिया है। मेरा विश्वास है कि रत्नों में रुचि रखने वाले समस्त पाठकों को चाहे वे इनको किसी भी परिपेक्ष्य में देखते हों—यह पुस्तक पढ़कर सन्तोष मिलेगा।

□□□

8 रुद्राक्ष का विवरण

रुद्राक्ष के जन्मदाता भगवान शंकर हैं। रुद्र का अर्थ है—शिव और अक्ष का अर्थ है—वीर्य या रक्त, अश्रु। रुद्र+अक्ष मिलकर "रुद्राक्ष" बना है। यह बेर के आकार का दाना होता है। यह प्रायः तीन रंगों में होता है—लाल, मिश्रित रंग और काला। यह नेपाल, आसाम और मलेशिया में होता है। नेपाल का रुद्राक्ष बड़े आकार का होता है। मलेशिया का रुद्राक्ष मटर के दाने के आकार का होता है।

प्राचीनकाल से भारत के पौराणिक ग्रन्थों में रुद्राक्ष का वर्णन और माहात्म्य वर्णित रहा है। अनेक ग्रन्थों में इसका वर्णन पाया जाता है और बहुत-से साधु-संन्यासी इसे धारण करते आ रहे हैं। सिर पर, बाजुओं पर या गले में रुद्राक्ष की माला धारण करने का विधान चला आ रहा है...धार्मिक समाज के लिए रुद्राक्ष नई बात या कोई बड़ा आश्चर्य नहीं है। रुद्राक्ष में धारियां होती हैं। इन धारियों को मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह धारियां एक की संख्या से लेकर चौदह तक होती हैं। सामान्य तौर पर पंचमुखी रुद्राक्ष बहुतायत से पाए जाते हैं। जब दो रुद्राक्ष एक-दूसरे से जुड़ जाते हैं, तो इनको गौरीशंकर कहा जाता है अर्थात् शिव और गौरी का संयुक्त रूप। जब तीन जुड़ जाते हैं तो "पाट" कहलाते हैं अर्थात् शिव, पार्वती और गणेश। इस प्रकार के रुद्राक्ष कम ही मिलते हैं। रुद्राक्ष का वृक्ष अमरूद के वृक्ष के समान छोटा होता है। बेर या अमरूद के समान इसके पत्तों की जड़ों में हरे रूप में वह निकलता है। उस समय बहुत कच्चा होता है।

आठ-दस माह में सूखकर कठोर हो जाता है और गिर पड़ता है। अलग-अलग धारियां और रंग स्वयं प्राकृतिक रूप में बनते हैं। एक ही वृक्ष में एक से अनेक मुख वाला रुद्राक्ष मिल सकता है। वृक्ष के नीचे से इनको बीना जाता है। मुख के अनुसार छांट-छांट कर अलग-अलग रखा जाता है। वृक्ष से तोड़ा नहीं जाता है।

रुद्राक्ष में छिद्र नहीं होता है। वाराणसी में विशेष रूप से इनमें मुख बनाए जाते हैं, तब यह माला में पिरोए जाते हैं। उनमें छेद बनाना भी एक विचित्र कला

है और हर कोई व्यक्ति उस कार्य को नहीं करता है। यह ऐसा कौशल है, जो परिश्रम से सीखना पड़ता है।

रुद्राक्ष को फल माना गया है, पर यह एक मात्र ऐसा फल है, जो खाया नहीं वरन् केवल पहना जाता है। इस आधार पर यह फल की भी श्रेणी में नहीं आता है। यह किसी देवी-देवता को अर्पित भी नहीं किया जाता है। यह श्रद्धा के साथ शरीर पर ही धारण किया जाता है।

॥पष्यन्नपि निषिद्धांश्च तथा श्रृव्वन्नपि स्मरन्॥
॥जिघ्रान्नपि तथा धारनन्प्रतपन्नपि संततम्॥
॥कुर्वन्नपि सदा गच्छन्नि सृजन्नपि मसव॥
॥रुद्रासधारणदेव सर्वयापनं लित्यते॥

रुद्राक्ष का वर्णन अनेक प्राचीन धार्मिक पौराणिक ग्रन्थों में आया है। रुद्र जाबिलोपनिषद्, शिवपुराण, उड्डीश तंत्र, यज्ञपुराण इनमें प्रमुख हैं। तंत्र-मंत्र में भी रुद्राक्ष का बड़ा महत्व है। रुद्राक्ष की माला का अपना विशेष महत्व है। पूजा-पाठ और देवी-देवताओं की उपासना में इसका अपना महत्व है। यह माला अत्यन्त पवित्र मानी जाती है।

रुद्राक्ष की पहचान है, वह जल में तैरता नहीं है वरन् डूब जाता है। घुन लगा, कीड़ों का खाया, टूटा-फूटा या छीलकर बनाया गया रुद्राक्ष धारण नहीं करना चाहिए। रुद्राक्ष के समान एक फल और होता है—"भद्राक्ष"....इससे धोखा होता है। भद्राक्ष पानी में डूबता नहीं है और प्रायः टेढ़ा-मेढ़ा होता है। इसको सरलता से पहचाना जा सकता है। रुद्राक्ष भगवान शंकर का प्रिय आभूषण है। रुद्राक्ष धार्मिक और वैज्ञानिक दृष्टि से महत्वपूर्ण नाना प्रकार के फल देने वाला एक चमत्कारी फल है। इसका नाना प्रकार से जीवन के अनेक महत्वपूर्ण कार्यों के लिए उपयोग होता है।

सीधी खड़ी धारियों को रुद्राक्ष के मुख कहा जाता है; जितनी धारियां होंगी, रुद्राक्ष उतने ही मुखी कहा जाएगा। यह धारियां एक से लेकर चौदह तक शुभ मानी गयी हैं। इन मुखों के अनुसार ही रुद्राक्ष का महत्व होता है। एक से लेकर चौदह मुखों तक प्रत्येक रुद्राक्ष की अपनी गरिमा, महत्व और उपयोग है। विभिन्न पुराणों और धार्मिक ग्रन्थों के आधार पर इसके मुखों का महत्व इस प्रकार है—

॥एकवत्र शिवः साक्षात् ब्रह्महत्यां व्यत्रोहति॥

एकमुखी रुद्राक्ष को साक्षात् शिव ही माना गया है। इसमें स्वयं शिव विराजते हैं और इसको धारण करने वाला ब्रह्महत्या जैसे महापाप से भी मुक्त हो जाता है।

॥द्विवक्त्रो देव देव्यौस्या द्विविधं नाशायेदद्यम॥

दोमुखी रुद्राक्ष देवी-देवता का स्वरूप है। इसके धारण करने से विविध पापों का नाश होता है और धारक जीवन पर्यन्त सुखी रहता है।

॥त्रिवक्त्रस्त्वनलः साक्षात्स्त्रीहत्यां दहति क्षजात्॥

तीनमुखी रुद्राक्ष अग्नि का रूप होता है। वह स्त्री-हत्या का पाप क्षमा कर देने तक की क्षमता रखता है। धारक अग्नि के समान तेजस्वी हो जाता है।

॥चतुर्ववत्रः स्वयं ब्रह्मा नरहत्यां व्यपोहति॥

चतुर्मुखी रुद्राक्ष याने चार धारी वाला रुद्राक्ष ब्रह्मा के समान होता है। यह नरहत्या जैसे पाप का भी नाश करता है।

पंचमुखी रुद्राक्ष बहुत महिमावाला माना गया है। अधिकतर यह रुद्राक्ष सरलता से मिल भी जाता है। यह बहुतायत में होता है। इसके सम्बन्ध में कहा गया है—

॥पञ्चवक्त्रः स्वयं रुद्रः कालाग्निनमि नामतः॥

॥अभक्ष्यभक्षणोद् भूतैरगम्यागमनोद्मवैः॥

॥मुच्यते सर्वपापैस्तु पचवकत्रस्य धारणात्॥

पंचमुखी रुद्राक्ष स्वयं कालाग्नि नामक रुद्र है। वह अभक्ष्य-भक्षण और अगम्यागमन के पाप का हरण करने वाला है। इस रुद्राक्ष के धारण करते ही सब पाप मिट जाया करते हैं। यह अत्यन्त प्रभावशाली और महिमामय माना गया है।

॥षडवक्त्रः कार्तिकेयस्तु स धार्योदक्षिणे करे॥

॥ब्रह्महत्यामिः पापैर्मुच्यते नात्र संशयः॥

छःमुखी रुद्राक्ष में साक्षात् "कार्तिकेय" विराजमान रहते हैं।

यह ब्रह्महत्या तथा अन्य पापों का मोचन करने वाला है। इस रुद्राक्ष को सदा दाहिने हाथ में धारण करना चाहिए। इसका स्थान यही बतलाया गया है। अन्य स्थान पर इसे धारण नहीं करना चाहिए।

॥सप्तवक्त्रो महाभागो ह्यनंगी नाम नामतः॥

॥तद्धारणन्मुच्यते हि स्वर्णस्तेयादि पातकैः॥

सप्तमुखी रुद्राक्ष को भाग्यशाली कहा गया है। यह स्वयं कामदेव का रूप है। इसको धारण करने पर चोरी आदि पापों से छुटकारा होता है। स्त्रीसुख भरपूर मिलता है। इसे धारण करने वाला स्त्रियों के आकर्षण का केन्द्र बनता है। इससे वशीकरण भी होता है। मोहन तो यह स्वयं करता है।

॥अष्टवस्त्रो महासेवः साक्षादेवो विनायकः॥

॥अन्नकूटं तूलकूटं स्वर्णकूटं तथैव च॥

॥दुष्टान्वस्त्रियं वाथ संस्पृशश्च मुरुस्त्रियम्॥

॥एवमादीन पापानि हंति सर्वाणि धारणात्॥
॥विहनास्तस्य प्रणश्यंति याति चांते परम् पद्म॥

अष्टमुखी रुद्राक्ष विनायक देव स्वरूप माना गया है। इसको धारण करने से अन्न, रूई, स्वर्ण का ढेर लग जाता है, दुष्ट स्त्रियों तथा गुरु-पत्नी के साथ किया गया पाप मिट जाता है। समस्त विघ्न-बाधाएं मिटती हैं। परमपद की प्राप्ति होती है। इसको धारण करने से सभी लाभ व गुण प्राप्त होते हैं।

इसी प्रकार नौमुखी रुद्राक्ष के विषय में कहा गया है—

॥नववक्त्रो भैरवस्तुं धारयेद्वामबाहुके॥
॥भुक्तिमुक्ति प्रदः प्रोक्तो मम तुल्यबलो भवेत्॥
॥भ्रूण हत्यासहस्त्राणि ब्रह्महत्या शतानि च॥

यह रुद्राक्ष भैरव का स्वरूप है। इसको बायीं भुजा पर बांधना चाहिए। यह योग और मोक्ष दोनों ही देने वाला है। इसको धारण करने वाला भैरव के समान बलशाली होता है। प्रायः पहलवान लोग इसको धारण करते हैं। मल्लयुद्ध में वह बराबर कुश्ती जीतते हैं।

दशमुखी रुद्राक्ष साक्षात् भगवान हैं। इसके धारण से सभी दुष्ट ग्रह, पिशाच, बैताल, ब्रह्मराक्षस आदि का भय दूर हो जाता है। यह अत्यन्त गुणकारी और लाभदायक माना गया है।

॥अश्वमेध सहस्त्रस्य वाजपेयशतस्य च॥
॥गवां शतसहस्त्रस्य सम्यग्दत्तस्य यत्फलम्॥
॥तत्फलं लभते शीघ्रं वक्त्रेकादशधारणात्॥

एकादश रुद्राक्ष एकादश रुद्रों का रूप है। इसे शिखा पर धारण करने से सहस्त्र अश्वमेध यज्ञ और शत वाजपेय यज्ञ और एक लाख गाय दान करने के बराबर पुण्य का लाभ होता है। इससे फल शीघ्र प्राप्त होता है। यह पवित्र रुद्राक्ष माना गया है।

॥द्वादशास्यस्य रुद्राक्षास्यैव कर्णे तु धारणात्॥
॥आदि व्यास्तोषिता नित्यं द्वादशास्ये व्यवस्थिताः॥
॥गोमेधे चाश्वमेधे च यत्फल तदवाप्नुयात्॥
॥शृंगिणां शास्त्रिणां चव याघ्रदिनां भयं नहि॥
॥न च व्याधिभयंतस्य नैव आधि प्रकीर्तितः॥
॥न च किंचितभयं तस्य न व्याधि प्रर्वतते॥
॥न कुतांश्चतभयं तस्य सुखी चैवेश्वरो भवेत्॥

॥हस्त्यश्वसृगमा जर्रि सर्प मूषकदर्दुरान्॥
॥खरांश्चश्व शृगालांश्च हत्वा वहुविद्यानपि॥

द्वादशमुखी रुद्राक्ष को कानों पर धारण करने से द्वादश आदित्य प्रसन्न होते हैं। अश्वमेधादि सभी यज्ञों का फल मिलता है। सींग वाले जीव, शस्त्रधारियों, व्याघ्र आदि हिंसक पशुओं का तनिक भी भय नहीं होता है। सभी प्रकार की शारीरिक-मानसिक पीड़ा मिट जाती हैं। रोग से मुक्ति प्राप्त होती है और ऐश्वर्ययुक्त सुखी जीवन मिलता है। यह बड़ा शक्तिशाली और तेजस्वी रुद्राक्ष माना गया है। इसको धारण करने वाला अत्यन्त तेजस्वी और आकर्षक बन जाता है। सर्वत्र उसे मान-सम्मान प्राप्त होता है।

॥रसो रसायन चैव तस्य सर्व प्रसिद्धयति॥
॥तस्यैव सर्वभोग्यानी नात्र कार्या विचारणा॥
॥मातरं पितरं चैव भ्रातरं वा निहंतियः॥
॥मुच्यते सर्व पापेभ्यो धारणातस्य षण्मुख॥

हे पुत्र! यदि त्रयोदशमुखी रुद्राक्ष उपलब्ध हो जाए, तो उसको धारण करने वाला कार्तिकेय के समान हो जाता है। यह रुद्राक्ष सभी अर्थ और सिद्धियों की पूर्ति करता है। इसे रसायन की सिद्धि देने वाला और सभी प्रकार का यश प्रदान करने वाला कहा जाता है। इसको धारण करने वाला सभी प्रकार के भोग्य पदार्थों का सेवन करता है। उसकी सभी इच्छाएं स्वयं पूरी हो जाती हैं। यह परम प्रतापी तेजस्वी रुद्राक्ष है।

॥किं मुने वहुनोक्तेन वर्णनेन पुनः पुनः॥
॥पूज्यते सततं देवैः प्राप्यते च परा गतिः॥
॥रुद्राक्ष एकः शिरसा धार्यो भक्तया द्विजोत्तमैः॥

हे वत्स! यदि चतुर्दशमुखी रुद्राक्ष प्राप्त हो जाए तो उसे सदैव मस्तक पर धारण करने वाला शिव समान हो जाता है। देवता उसकी पूजा करते हैं। वह परमगति को प्राप्त होता है। केवल ब्राह्मण ही इस रुद्राक्ष को धारण करने का अधिकारी है। यह रुद्राक्ष स्वयं भगवान शंकर धारण करते हैं।

रुद्राक्षों के भिन्न-भिन्न मुखों का फल-वर्णन करने के उपरान्त "रुद्राक्ष माला" के भी सिद्धान्त और नियम बतलाए गए हैं। कुछ मालाएं तो अत्यन्त दुर्लभ हैं; जैसे एकमुखी से लेकर चौदहमुखी रुद्राक्ष तक की माला अथवा सम्पूर्ण माला एकमुखी रुद्राक्ष की। प्रायः पंचमुखी रुद्राक्ष की मालाएं ही प्राप्त होती हैं।

मुखों के सम्बन्ध में सावधानी की भी बहुत आवश्यकता है, क्योंकि आजकल

अनेक चालाक व्यवसायी नकली रुद्राक्ष बनाते हैं। अन्य मुख मिटाकर एकमुखी रुद्राक्ष बना दिया जाता है। उसके मुख कम कर दिये जाते हैं अतएव सावधानी के साथ परीक्षण कर ही लेना चाहिए। किसी रुद्राक्ष विशेषज्ञ के परामर्श से लें तो और उत्तम है।

एकमुखी, नौ से चौदहमुखी तक रुद्राक्ष मिलना अत्यन्त कठिन हैं। एकमुखी रुद्राक्ष अत्यन्त मूल्यवान् और दुर्लभ है। यह अत्यन्त चमत्कारी होता है। यह शायद ही किसी के पास हो। एकमुखी रुद्राक्ष अरबों रुद्राक्षों में से कठिनता से मिलता है। अतएव पंचमुखी रुद्राक्ष की ही माला ठीक रहती है।

छब्बीस दानों की माला सिर पर, पचास की हृदय पर, सोलह की भुजा पर तथा बारह रुद्राक्षों की माला मणिबंध पर धारण करें।

एक सौ आठ दानों की, पचास दानों की माला धारण करने या उससे जाप करने पर अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है।

एक सौ आठ मनकों की माला धारण करने से अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है। इसका धारक शिवलोक को प्राप्त होता है।

इस प्रकार रुद्राक्ष के मुखों और मालाओं की महिमा का वर्णन अनेक शास्त्रों में किया गया है। सभी ग्रंथ एक स्वर में रुद्राक्ष की महत्ता को स्वीकार करते हैं। इनको बड़ा पवित्र और पूजनीय माना गया है। रुद्राक्ष का सदा आदर करना और पवित्रता बनाए रखना आवश्यक है। रुद्राक्ष का अपमान या अपेक्षा अहितकर है। अगर रुद्राक्ष का उपयोग नहीं करना है, पूजन-पाठ या धारण नहीं करना है, तो श्रद्धापूर्वक किसी पवित्र स्थान पर रख देना चाहिए।

रुद्राक्ष को रखने का सर्वोत्तम स्थान मन्दिर माना गया है। माला को किसी खूंटी आदि पर कभी न लटकाएं। कार्य होने पर देवालय में रख दें। रुद्राक्ष माला को धूप, नैवेद्य आदि दिखलाते रहना चाहिए। स्थान स्वच्छ रखना चाहिए। रुद्राक्ष का अभिषेक सदा गंगाजल से या गाय के कच्चे दूध से करना चाहिए। रुद्राक्ष को रगड़ना साफ करना वर्जित है। रंगना भी निषिद्ध है। रुद्राक्ष को कभी अपवित्र या जूठे हाथ से नहीं स्पर्श करें। शौचादि के समय हाथ न लगाएं। रुद्राक्ष धारण कर रखा है, तो स्त्री-प्रसंग के समय उसको उतारकर रख दें। रुद्राक्ष को कभी होठों से लगाकर जूठा न करें। उस पर तेल, घी आदि न पड़ने दें; न ही अगरबत्ती या धूप का धुआं लगने दें। देवता की एक छोटी-सी मूर्ति के समान सदा इसकी पवित्रता और गरिमा बनाए रखें। पूरी श्रद्धा और विश्वास बनाए रखें। इस प्रकार रुद्राक्ष अत्यन्त फलदायी होता है। अपवित्र एकमुखी रुद्राक्ष तक व्यर्थ है। इस बात का सदैव ध्यान रखें।

रुद्राक्ष को धारण करने से शक्ति और स्फूर्ति बनी रहती है। रुद्राक्ष का यह प्रमुख गुण है। उसकी ऊर्जा में वही शक्ति है। श्रद्धा और विश्वास के कारण और अधिक फल मिलता है। रुद्राक्ष गुणों की खान है और मनुष्य के लिए यह एक वरदान भी है। रुद्राक्ष का धार्मिक, सामाजिक और शारीरिक रूप से बड़ा महत्व है।

शिव पुराण में कहा गया है—रुद्राक्ष की माला धारण किए मनुष्य को देखकर समस्त देवतागण प्रसन्न होते हैं।

सब मालाओं में सर्वश्रेष्ठ माला रुद्राक्ष की माला मानी गयी है। रुद्राक्ष की माला का जप, तंत्र-मंत्रादि में बड़ा ही उपयोग है। इसके बिना कोई भी जप पूर्ण नहीं होता है। रुद्राक्ष के मनके मंत्र आदि की गणना में काम आते हैं। इनकी संख्या सात होती है। माला के मनकों पर अंगुलियां फेरते रहने पर मन एकाग्र रहता है।

पूजा-पाठ, तंत्र-मंत्र, जप-तप में अनेक प्रकार की मालाओं का प्रयोग होता है। माला की पवित्रता और निर्माण पर बड़ा ध्यान दिया गया है। मनमाने ढंग से इसका निर्माण वर्जित है।

''अक्षमालिकोपनिषद्'' में प्रजापति और ग्रह संवाद में इसका बड़ा ही रोचक विवरण दिया गया है। प्रजापति ने इस पर पर्याप्त प्रकाश डाला है। इसमें भेदविधि, लवण, सूत्र, अक्षर, प्रतिष्ठा आदि का भी विवरण दिया गया है।

मालाएं इस प्रकार की होती हैं—

प्रवाल	सोना
मोती	चन्दन
स्फटिक	पुत्र जीविका
शंख	कमल
चांदी	रुद्राक्ष

यह सभी मालाएं ''अ'' ''क्ष'' पर्यन्त अक्षरों से अभिमन्त्रित कर धारण की जाती हैं। इनमें 3 सूत्र होते हैं—सोना, चांदी, तांबा। मनके के छेद में सोना, दाएं भाग में चांदी, बाएं भाग में तांबा होना चाहिए। मुख-से-मुख और पूंछ-से-पूंछ मिलाकर मनके योजित किए जाते हैं। इनमें छेद वाला सूत्र ब्रह्मा, दाएं भाग वाला शैव और बाएं भाग वाला वैष्णव कहलाता है। मुख सरस्वती, पूंछ गायत्री, छेद विद्या है और गांठ प्रकृति है तथा स्वर सात्विक होने के कारण श्वेत है। जो स्पर्श है, वह सत् और तम के मिश्रण से मुक्त होने पर पीला और राजस होने के कारण लाल है।

रुद्राक्ष की माला के द्वारा जपने से मंत्र समस्त फलों के देने वाले होते हैं।

रुद्राक्ष की माला भी तीन प्रकार की कही गयी है।

रुद्राक्ष की माला एक सौ आठ मनकों की और सत्ताइस मनकों की बनाएं तो श्रेष्ठ है। अन्य प्रकार की मालाएं अधम मानी गयी हैं।

माला बनाते समय यह बहुत ध्यान देने योग्य बात है, कि सभी दाने एकसमान, स्वच्छ और देखने में सुन्दर हों। कोई दाना खराब न हो। छोटे-बड़े, असमान मनकों की माला बनाना निषेध है। माला का सूत कुंआरी कन्याओं द्वारा बनाया गया हो, तो वह सर्वोत्तम माना गया है। माला के सम्बन्ध में चारों वर्णों की माला का रंग इस प्रकार बतलाया गया है–

ब्राह्मण	श्वेत वर्ण
क्षत्रिय	लाल वर्ण
वैश्य	(पीला) पीत वर्ण
शूद्र	काला वर्ण

वैसे सभी अनुष्ठानों में लाल वर्ण की माला के प्रयोग का विधान बतलाया गया है।

कार्यानुसार भी वर्णभेद बतलाया गया है–

शान्ति	श्वेत
वशीकरण	लाल
अभिचार	काला

ऐश्वर्य तथा मोक्ष की प्राप्ति के लिए रेशमी धागे की माला का प्रयोग करना उचित है। माला का सूत तिगुना करके पुनः तिगुना करना चाहिए। मनका पिरोते समय "अ" से "क्ष" तक एक अक्षर का उच्चारण आवश्यक है। "अक्षमालिकोपनिषद्" में इस विधि का स्पष्ट निर्देश इस प्रकार वर्णित है–

पांच गायों के दूध से अथवा पंचगव्य (गोमूत्र, दूध, दही, घृत, गोमय) से सूत का प्रक्षालन करें। गन्ध मिश्रित जल से अष्टग्रंथों से स्थापित करें। "मणिशिला" नामक धातुयंत्र भी सूत रखकर मनके डाले जा सकते हैं। अक्षत पुष्पों से मनकों का पूजन कर "अ" से "क्ष" तक के अक्षरों के द्वारा उनको अभिमन्त्रित कर माला बनाएं।

(1) ॐ हे अंकार! तुम मृत्युजेता एवं सर्वव्यापक हो। इस मनके में प्रतिष्ठित हो जाओ।

(2) ॐ हे आंकार! तुम आकर्षण शक्ति से सम्पन्न और सर्वव्यापक हो, इस दूसरे मनके में प्रतिष्ठित हों।

(3) ॐ हे इंकार! तुम पुष्टिकारक और क्षोभ का हरण करने वाले हो, अतः इस तीसरे मनके में आओ।

(4) ॐ हे अंकार! तुम स्वर में प्रसाद गुण उत्पन्न करने वाले हो। सर्वथा स्वच्छ हो। इस चौथे मनके में बैठो।

(5) ॐ हे उंकार! तुम समस्त शक्तियों के प्रदाता हो। अत्यन्त सार रूप हो। इस पांचवें मनके में स्थापित हों।

(6) ॐ हे ऊंकार! तुम उच्चाटन करने वाले तथा दुस्सह हो। इस छठे मनके में प्रतिष्ठित हों।

(7) ॐ हे ऋंकार! तुम चित्त में क्षोभ और चंचलता उत्पन्न करने वाले हो। इस सप्तम भाव मनके में स्थापित हों।

(8) ॐ हे ऋंकार! तुम सम्मोहन करने वाले और उज्ज्वल हो। इस आठवें मनके में स्थापित हों।

(9) ॐ हे लृंकार! तुम विद्वेष उत्पन्न करने वाले तथा अत्यंत गुप्त हो। इस नवें मनके में बैठो।

(10) ॐ हे लृंकार! तुम मोह उत्पन्न करने वाले हो। इस दसवें अक्ष में स्थापित हों।

(11) ॐ हे एंकार! तुम सभी को अपने वश में करने वाले और सात्विक शुद्ध हो। आओ इस ग्यारहवें अक्ष में स्थापित हों।

(12) ॐ ऐंकार! तुम शुद्ध सात्विक पुरुषों को भी वश में करने वाले हो। इस बारहवें अक्ष में प्रतिष्ठित हों।

(13) ॐ हे ॐकार! तुम समस्त वाङ्मय रूप (सभी अक्षरों में समूह) शुद्ध हो। इस तेरहवें अक्ष में बैठो।

(14) ॐ हे ॐकार! तुम सर्व वाङ्मय को वश में करने वाले तथा शान्त हो। आओ इस चौदहवें अक्ष में विराजो।

(15) ॐ हे अंकार! तुम हाथी आदि को भी वश में कर लेते हो। मोहित करने में समर्थ हो। इस पन्द्रहवें अक्ष में बैठो।

(16) ॐ हे अःकार! तुम मृत्यु विनाशक हो एवं रौद्र रूप हो। आओ, इस सोलहवें अक्ष (मनके) में बैठो।

(17) ॐ हे कंकार! तुम सब विषों का हरण करने वाले और कल्याणदायक

हो। इस सत्रहवें मनके में स्थापित हों।

(18) ॐ हे खंकार! तुम सब क्षोभों को उत्पन्न करने वाले और व्यापक हो। आओ इस अठारहवें दाने पर बैठो।

(19) ॐ हे गंकार! तुम समस्त विघ्नों के शमनकर्त्ता और महान् हो। इस उन्नीसवें मनके में आकर विराजो।

(20) ॐ हे घंकार! तुम सौभाग्यदायक और स्तम्भन करने वाले हो। कृपा कर इस बीसवें दाने पर बैठो।

(21) ॐ हे ङकार! तुम सब प्रकार के विषों का प्रभाव हरण करने वाले हो इस इक्कीसवें दाने में स्थापित हों।

(22) ॐ हे चंकार! तुम क्रूरतापूर्वक अभिचार को नष्ट कर सकते हो। इस बाईसवें मनके पर विराजो।

(23) ॐ हे छंकार! तुम भूतनाशक तथा भीषण हो। इस तेईसवें दाने पर विराजो।

(24) ॐ हे जंकार! तुम कृत्यादि नष्ट करने वाले तथा दुर्धर्ष हो। इस चौबीसवें मनके पर आकर स्थित हों।

(25) ॐ हे झंकार! तुम भूतों के नाशक हो। इस पच्चीसवें दाने पर कृपापूर्वक आ जाओ।

(26) ॐ हे अंकार! तुम मृत्यु को भी परास्त (मर्दन) करने वाले हो। इस छब्बीसवें मनके पर स्थापित हों।

(27) ॐ हे टंकार! तुम समस्त व्याधियों का हरण करने वाले हो। सौम्य हो। इस सत्ताईसवें मनके पर आकर बैठो।

(28) ॐ हे ठंकार! तुम चन्द्रमा के समान हो। कुपया इस अट्ठाईसवें दाने पर विराजो।

(29) ॐ हे डंकार! तुम गरुड़ स्वरूप, शोभामय और विषनाशक हो। इस उनतीसवें मनके पर प्रतिष्ठित हों।

(30) ॐ हे ढंकार! तुम सौम्य और सभी प्रकार की सम्पत्तियां देने वाले हो। इस तीसवें दाने पर आकार विराजो।

(31) ॐ हे णंकार! तुम समस्त सिद्धियों के देने और मोह उत्पन्न करने वाले हो। इस इकतीसवें मनके पर स्थापित हों।

(32) ॐ हे तंकार! तुम धन-धान्यादि सम्पत्तियों के दाता एवं प्रसन्न रहने वाले हो। इस बत्तीसवें अक्ष (दाने) पर बैठो।

(33) ॐ हे थंकार! तुम धर्म की प्राप्ति कराने वाले और स्वच्छ हो। इस तैंतीसवें मनके पर स्थापित हों।

(34) ॐ हे दंकार! तुम पुष्टि के बढ़ाने वाले और देखने में प्रिय हो। इस चौंतीसवें दाने पर स्थित हों।

(35) ॐ हे धंकार! तुम विष और ज्वर को नष्ट करने वाले हो। महान् हो। इस पैंतीसवें मनके पर प्रतिष्ठित हों।

(36) ॐ हे नंकार! तुम शान्त, भोग-मोक्ष प्रदायक हो। इस छत्तीसवें अक्ष पर आकर विराजो।

(37) ॐ हे पंकार! तुम विषों और विघ्नों के नाशक तथा भव्य हो। इस सैंतीसवें अक्ष पर स्थापित हों।

(38) ॐ हे फंकार! तुम अणिमादि अष्ट सिद्धियों के दाता, ज्योतिस्वरूप हो। इस अड़तीसवें मनके पर विराजो।

(39) ॐ हे बंकार! तुम सभी दोषों को दूर करने वाले एवं शोभन हो। इस उनतालीसवें मनके पर बैठो।

(40) ॐ हे भंकार! तुम भूत बाधा को शान्त करने वाले और भयानक हो। इस चालीसवें दाने पर आकर विराजो।

(41) ॐ हे मंकार! तुम विद्वेषी को मोहित करने वाले हो, इकतालीसवें अक्ष पर आकर प्रतिष्ठित हों।

(42) ॐ हे यंकार! तुम सर्वव्यापक और पवित्र हो। इस बयालीसवें मनके पर अपना अधिकार करो।

(43) ॐ हे रंकार! तुम दाह उत्पन्न करने वाले एवं विकृत रूप हो अथवा कृपया तैंतालीसवें दाने पर विराजो।

(44) ॐ हे लंकार! तुम विश्व के भरणकर्त्ता और तेजस्वी हो। इस चवालीसवें अक्ष पर आकर सुस्थापित हों।

(45) ॐ हे बंकार! तुम सबके तृप्तिकर्त्ता तथा स्वच्छ हो। इस पैंतालीसवें मनके पर प्रतिष्ठित हों।

(46) ॐ हे शंकार! तुम समस्त फलों के प्रदाता हो। पवित्र हो। इस छियालीसवें दाने पर आकर बैठो।

(47) ॐ हे षंकार! तुम उज्ज्वल, धर्म, अर्थ, काम को देने वाले हो। इस सैंतालीसवें दाने पर बैठो।

(48) ॐ हे संकार! तुम समस्त पदार्थों के कारण, समस्त वर्णों से सम्पन्न हो। इस अड़तालीसवें मनके पर विराजो।

(49) ॐ हे हंकार! तुम सर्व वांङ्मय (समस्त अक्षर समूह) तथा निर्मल हो। कृपा कर उनचासवें दाने पर अधिकार करो।

(50) ॐ हे क्षंकार! तुम समस्त शक्तियों के प्रमुख हो। इस पचासवें मनके पर सुस्थापित हों।

ॐ हे क्षंकार! तुम परात्पर तत्व का प्रकाश करने वाले और परम ज्योतिस्वरूप हो। इस शिखामणि में प्रतिष्ठित हों।

इस प्रकार मनकों को अभिमन्त्रित करना चाहिए, अ से क्ष तक पचास मनकों को भावित कर फिर क्ष से अ तक वापिस जाएं। एक बार सीधा और एक बार उलटा भावित करें।

"क्ष" को सुमेरू अथवा प्रधान मनका माना गया है।

प्रत्येक मनके को पिरोते समय उसके मध्य में गांठ देना आवश्यक नहीं है। अगर गांठ दें तो ढाई या तीन फेरे की दें अथवा ब्रह्म ग्रंथि गांठ (ब्रह्म ग्रंथि 3.1/2 फेरे की होती है) सुमेरू को ब्रह्म ग्रंथि से बांधना अनिवार्य है। रुद्राक्ष का मुख ऊंचा और पूंछ नीची होती है, इस प्रकार मुख और पूंछ को आप सरलता से पहचान सकते हैं। माला बनाते समय मुख-से-मुख, पूंछ-से-पूंछ मिलाकर बनाना चाहिए। पिरोने के लिए सोने, चांदी, तांबे के तार का प्रयोग कर सकते हैं, पर लोहे के सूत्र का प्रयोग न करें। माला तैयार होने पर उसका संस्कार होता है। पीपल के नौ हरे ताजे साफ पत्ते लाएं। एक पत्ता बीच में रखकर आठ पत्ते इस प्रकार रखें कि अष्टदल कमल-सा बन जाए। अब माला बीच में रख 'ॐ क्षंकार' पर्यन्त के श्लोकों का जप करें और पंचगव्य से उसका प्रक्षालन करें।

इसके पश्चात् अगर, चंदन, इत्र से प्रक्षालन कर निम्न मंत्र का जाप करें। तत्पश्चात् धूप दिखाते हुए पूजन करें।

अब रुद्र गायत्री मंत्र से लेपन करें—

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम्।
ॐ भर्गो देवस्य धीमहि ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

इसके पश्चात् प्रत्येक मनके पर दृष्टिपात कर कम से कम दस बार ईशान मंत्र का जाप करें।

इतना करने के पश्चात् माला में जाप कर प्रतिदिन प्रतिष्ठा करें।

मंत्र-जाप के साथ ही "ॐ नमः शिवाय" का उच्चारण कर माला गले में डालकर भगवान शिव का ध्यान करें। ध्यान के उपरान्त आसन त्याग दें। आपकी माला विधिवत् अभिमन्त्रित हो गयी; इसे चाहें तो आप सदैव धारण कर सकते हैं, माला

को जब भी उतारकर रखना हो, स्वच्छ और पवित्र स्थान पर अथवा देवालय में रखें। माला खूंटी पर लटकाकर न रखें। यह सिद्ध की गयी माला अनेक प्रकार के कार्यों में आती है। इस माला के द्वारा प्रत्येक मनोरथ के लिए किया गया जप अवश्य सफल होता है। तांत्रिक इसी माला से जप कर सिद्धि प्राप्त करते हैं।

प्रत्येक रुद्राक्ष का एक पृथक् देवता और उसका मन्त्र होता है। यदि इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए रुद्राक्ष धारण और मन्त्रों का जाप किया जाए तो विशेष लाभ होता है। निम्न तालिका इसी विषय से सम्बन्धित है–

रुद्राक्ष की श्रेणी	सम्बन्धित देवता	जपमंत्र
चौदहमुखी रुद्राक्ष	शिव-हनुमान	ॐ नमः
तेरहमुखी रुद्राक्ष	कार्तिकेय-इन्द्र	ॐ ह्रीं नमः
बारहमुखी रुद्राक्ष	बारह आदित्य	ॐ क्षीं रौं नमः
ग्यारहमुखी रुद्राक्ष	रुद्र (ग्यारह) इन्द्र	ॐ हीं हुम् नमः
दसमुखी रुद्राक्ष	विष्णु (दशावतार)	ॐ हीं नमः
नौमुखी रुद्राक्ष	दुर्गाजी (नौ रूप)	ॐ हीं हुम् नमः
आठमुखी रुद्राक्ष	बटुक भैरव	ॐ हुम् नमः
सातमुखी रुद्राक्ष	सप्तर्षि सप्तमातृकाएं	ॐ हुम् नमः
छःमुखी रुद्राक्ष	कार्तिकेय	ॐ हीं हुम् नमः
पांचमुखी रुद्राक्ष	कालाग्नि रुद्र	ॐ हीं नमः
चारमुखी रुद्राक्ष	साक्षात् ब्रह्मा	ॐ हीं नमः
तीनमुखी रुद्राक्ष	अग्नि	ॐ क्लीं नमः
दोमुखी रुद्राक्ष	अर्धनारीश्वर	ॐ नमः
एकमुखी रुद्राक्ष	भगवान शिव	ॐ हीं नमः

रुद्राक्ष की ग्रह-नक्षत्र तालिका इस प्रकार है–

रुद्राक्ष-राशि-नक्षत्र तालिका

क्रम सं.	नक्षत्र	स्वामीग्रह	राशि	धारणीय रुद्राक्ष
(1)	अश्विनी	केतु	मेष	नौमुखी
(2)	भरणी	शुक्र	वृष, तुला	छःमुखी, तेरहमुखी
(3)	कृत्तिका	सूर्य	सिंह	एकमुखी, बारहमुखी व गौरीशंकर मुखी

(4)	रोहिणी	चन्द्र	कर्क	दोमुखी
(5)	मृगशिरा	मंगल	मेष, वृश्चिक	त्रिमुखी
(6)	आर्द्रा	राहु	मकर	आठमुखी
(7)	पुनर्वसु	बृहस्पति	धनु, मीन	पांचमुखी
(8)	पुष्य	शनि	मकर, कुम्भ	सातमुखी
(9)	आश्लेषा	बुध	मिथुन, कन्या	चारमुखी
(10)	मघा	केतु	सिंह	नौमुखी
(11)	पूर्वाफाल्गुनी	शुक्र	वृष, तुला	छःमुखी, तेरहमुखी
(12)	उत्तराफाल्गुनी	सूर्य	सिंह	एक व बारहमुखी व गौरीशंकर
(13)	हस्त	चन्द्र	कर्क	दोमुखी
(14)	चित्रा	मंगल	मेष, वृश्चिक	तीनमुखी
(15)	स्वाति	राहु	मकर	आठमुखी
(16)	विशाखा	बृहस्पति	धनु, मीन	पांचमुखी
(17)	अनुराधा	शनि	मकर, कुम्भ	सातमुखी
(18)	ज्येष्ठा	बुध	मिथुन, कन्या	चारमुखी
(19)	मूल	केतु	धनु	नौमुखी
(20)	पूर्वाषाढ़ा	शुक्र	वृष, तुला	छः व तेरहमुखी
(21)	उत्तराषाढ़ा	सूर्य	सिंह	एक व बारहमुखी
(22)	श्रवण, धनि०	चन्द्र	कर्क	दोमुखी
(23)	धनिष्ठा	मंगल	मेष, वृश्चिक	तीनमुखी
(24)	शतभिषा	राहु	मकर	आठमुखी
(25)	पूर्वाभाद्रपद	बृहस्पति	धनु, मीन	पांचमुखी
(26)	उत्तराभाद्रपद	शनि	कुम्भ	सातमुखी
(27)	रेवती	बुध	मिथुन, कन्या	चारमुखी

प्रयोग

अभिमन्त्रित रुद्राक्ष की माला के द्वारा अनेक मंत्रों का जाप कर अनेक प्रकार के लाभ उठाए जा सकते हैं। वैसे भी रुद्राक्ष को शरीर के विभिन्न अंगों पर धारण करना लाभदायक होता है। वैज्ञानिक परीक्षण भी इस बात को प्रमाणित कर चुके हैं कि रुद्राक्ष हृदय रोग में बहुत लाभदायक है। उच्च रक्तचाप को रोकता है।

वैसे साधारण रूप से भी रुद्राक्ष धारण करना लाभदायक है, लेकिन यदि मंत्र-

शक्ति (विधान) के साथ धारण किया जाए तो और भी अधिक लाभदायक है। मंत्र द्वारा रुद्राक्ष सिद्ध कर देने पर स्वयं अभूतपूर्व विलक्षण शक्ति आ जाती है। शोक, रोग, चोट, बाहरी प्रभाव, विष प्रहार, असौन्दर्य, बांझपन, नपुंसकता आदि नष्ट हो जाते हैं। वशीकरण, आकर्षण ग्रहबाधा, दारिद्रयबाधा, राज्यसम्मान, राजकोप आदि अनेक प्रकार के संकट में सदा उद्धारक है। शास्त्रों में नाना प्रकार के मंत्र विधान दिए गए हैं।

कुछ प्रमुख मंत्र विधान इस प्रकार हैं—गायत्री मंत्र अत्यंत चमत्कारी और सिद्धिदायक होते हैं। प्रमुख गायत्री मंत्र के अलावा अन्य देवताओं के भी गायत्री मंत्र रुद्राक्ष उपासना द्वारा सिद्ध कर आप उनका लाभ उठा सकते हैं।

गायत्री मंत्रों की रुद्राक्ष द्वारा उपासना करने पर मनोवांछित फल प्राप्त होते हैं। विघ्न-बाधाएं और दारिद्रय का नाश होता है। जीवन खुशहाल होता है।

नीचे कुछ विशिष्ट गायत्री मंत्र प्रस्तुत हैं—

ॐ एकदंष्ट्राय विद्महे
वक्रतुण्डाय धीमहि।
तन्नो बुद्धिः प्रचोदयात् ॥

ब्रह्मा गायत्री—

ॐ चतुर्मुखाय विद्महे
हंसारूढाय धीमहि
तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात् ॥

विष्णु गायत्री—

ॐ नारायणाय विद्महे
वासुदेवाय धीमहि।
तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ॥

रुद्र गायत्री—

ॐ पंचवक्त्राय विद्महे
महादेवाय धीमहि।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥

नृसिंह गायत्री—

ॐ उग्रनृसिंहाय विद्महे
वज्रनखाय धीमहि।
तन्नो नृसिंहः प्रचोदयात् ॥

वरुण गायत्री–

ॐ जलबिम्बाय विद्महे
नील पुरुषाय धीमहि।
तन्नो वरुणः प्रचोदयात् ॥

गणेश गायत्री–

ॐ सहस्त्रोनेत्राय विद्महे
वज्रहस्ताय धीमहि।
तन्नो इन्द्रः प्रचोदयात् ॥

राम गायत्री–

ॐ दशरथये विद्महे
सीतावल्लभाय धीमहि।
तन्नो रामः प्रचोदयात्॥

राधा गायत्री–

ॐ वृषभानुजाये विद्महे
कृष्णाप्रियायै धीमहि।
तन्नो राधा प्रचोदयात् ॥

कृष्ण गायत्री–

ॐ देवकीनन्दनाय विद्महे
वासुदेवाय धीमहि
तन्नो कृष्णः प्रचोदयात् ॥

दुर्गा गायत्री–

ॐ दुर्गा-दैव्यै विद्महे
शक्तिरूपाय धीमहि।
तन्नो दुर्गा प्रचोदयात् ॥

यम गायत्री–

ॐ सूर्यपुत्राय विद्महे
महाकालाय धीमहि।
तन्नो यमः प्रचोदयात् ॥

लक्ष्मी गायत्री–

ॐ महालक्ष्म्यै विद्महे
विष्णुप्रियायै धीमहि।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥

सीता गायत्री–

ॐ जनकनन्दिन्यै विद्महे
भूमिजायै धीमहि।
तन्नो सीता प्रचोदयात् ॥

हनुमान गायत्री–

ॐ आंजनेयाय विद्महे
वायुपुत्राय धीमहि।
तन्नो मारुतिः प्रचोदयात् ॥

तुलसी गायत्री–

ॐ श्री तुलस्यै विद्महे
विष्णुप्रियायै धीमहि।
तन्नो वृन्दा प्रचोदयात् ॥

सरस्वती गायत्री–

ॐ सरस्वत्यै विदमहे
ब्रह्मपुत्रयै धीमहि।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥

उपर्युक्त सभी गायत्री मंत्र सिद्धि के लिए प्रत्येक का सवा लाख की संख्या में जप आवश्यक है। दशांश हवन का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश ब्राह्मण भोजन कराना होता है।

इनमें लक्ष्मी गायत्री धन के लिए, सीता और राधा गायत्री पति के शुभ और दीर्घ जीवन की कामना के लिए, यम गायत्री भाई की दीर्घायु, सुख-सौभाग्य के लिए, तुलसी गायत्री संतान के लिए और सरस्वती गायत्री कला की उपासना के लिए श्रद्धापूर्वक करने पर निश्चित रूप से फल मिलता है।

गणेश गायत्री विद्या-परीक्षा में सफलता के लिए, ब्रह्मा गायत्री दीर्घ जीवन के लिए, विष्णु गायत्री उत्तम स्वास्थ्य के लिए, रुद्र गायत्री शत्रु पर विजय के लिए, नृसिंह गायत्री राजदंड से रक्षा के लिए, वरुण गायत्री खेतों में वर्षा के लिए, राम गायत्री पत्नी के स्वास्थ्य और सौन्दर्य के लिए, कृष्ण गायत्री पत्नी का सदैव सुख पाने के लिए, हनुमान गायत्री कुश्ती, मल्लयुद्ध या आक्रमण से रक्षा, युद्ध में विजय के लिए; इन्द्र गायत्री राजपद, राजसम्मान की प्राप्ति के लिए सिद्ध की जा सकती है। रुद्राक्ष उपासना द्वारा यह सब गायत्री मंत्र सिद्ध करने पर अभूतपूर्व फल प्राप्त होता है। सिद्ध की हुई रुद्राक्ष की माला के जाप द्वारा यह शक्तियां साधक को

कायाकल्प कर देती हैं। रुद्राक्ष उपासना के द्वारा कुछ महत्वपूर्ण मंत्र विधान प्रस्तुत हैं। रुद्राक्ष महिमा और विभिन्न तंत्र-मंत्र के ग्रंथों से इनका संकलन किया गया है।

इन मंत्रों का प्रतिदिन ब्रह्ममुहूर्त में पवित्र होकर ग्यारह बार जप करने से उल्लिखित फल प्राप्त होता है। यदि ऐसा न कर सके तो रुद्राक्ष का एक शुद्ध दाना चाहे वह जितने भी मुखी हो, हाथ में लेकर शिवजी का ध्यान कर इच्छित कामना-दायक मंत्र का इक्कीस बार जप करें और श्रद्धापूर्वक वह रुद्राक्ष कण्ठ में या दाहिनी भुजा में धारण कर लें। फल अवश्य प्राप्त होगा। यह विश्वास रखें।

अगर आप को गांव, देहात में, जंगली इलाके में जाना है और वहां सर्प-भय है अथवा घर या बाहर कहीं सर्पदंश का भय है, तो यह मंत्र सिद्ध करें—

समु ते हन्वा हनू।
सं ते जिव्हया जिव्हां
सम्वास्नाह आस्यम्॥

उक्त मंत्र की उपर्युक्त दोनों विधानों में से किसी एक विधान द्वारा सिद्धि कर लेने पर सर्पदंश का भय कदापि न होगा। सर्प पास ही नहीं फटकेगा।

जाने-अनजाने किसी प्रकार का भयंकर पाप हो गया हो या कोई ऐसा कार्य कि जिसका आप प्रायश्चित्त करना चाहें तो निम्न मंत्र से रुद्राक्ष उपासना करें—

ॐ विश्वानि देव सवित
दुरितानि परासुव।
यद् भद्रं तन्न आसुव॥

विधि अनुसार यह जप करने से पाप का नाश हो जाता है और उसका फल नहीं भोगना पड़ता है। प्रायश्चित्त स्वीकार कर क्षमा प्राप्त हो जाती है।

किसी को आप अपने वश में करना चाहते हैं या उससे इच्छानुकूल कोई कार्य कराना चाहते हैं, तो निम्नलिखित वशीकरण मंत्र की सिद्धि करें—

ॐ अभि त्वा मनुजातेन
दधामि मम वाससा।
यथासो मम केवलो
नान्यासां कीर्तयाश्चन॥

इस मंत्र की रुद्राक्ष से उपासना करने पर आपके वश में वह व्यक्ति आ जाएगा, जो कार्य सम्पन्न कर सकता है।

हृदय रोग या ज्वरादि जैसी शारीरिक व्याधियों से यदि आप अथवा कोई अन्य

बहुत पीड़ित रहता है, तो निम्नलिखित मंत्र को रुद्राक्ष उपासना द्वारा सिद्ध कर मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं।

इस सिद्धि से पीड़ित व्यक्ति को अवश्य लाभ होगा। उसका स्वास्थ्य ठीक रहेगा और ज्वरादि व्याधियों से उसको शीघ्र मुंक्ति मिल जाएगी।

सुखी जीवन कौन नहीं चाहता है? इसके लिए मनुष्य कैसे-कैसे पापड़ नहीं बेलता है, पर रुद्राक्ष उपासना के द्वारा मनुष्य अपने दोनों लोक सुधार सकता है। इहलोक में सुख प्राप्त करने के साथ-साथ इस सिद्धि द्वारा वह परलोक भी सुधार सकता है। उसके लिए रुद्राक्ष उपासना द्वारा यह मंत्रसिद्धि करें—

ॐ उभाभ्यां देव सवितः
पवितेण सेवन च।
अस्मान् पुनीहि चक्षसे ॥

अपने जीवन में ऐश्वर्य-प्राप्ति के लिए ईश्वर की कृपा हेतु निम्नलिखित मंत्र रुद्राक्ष उपासना द्वारा सिद्ध कर अपनी मनोकामना पूरी कर सकते हैं—

ॐ इन्द्र जुषस्व प्रवहा
याहि शूर हरिभ्याम्।
पिबा सुतस्य मतेरिह
सधोश्चकानश्चारूर्मदाय ॥

यह मंत्र सभी प्रकार के ऐश्वर्य प्रदान करने वाला अचूक मंत्र है। अनेक ग्रंथों में इसका उल्लेख किया गया है।

यदाकदा शत्रु इतना बलवान् और कष्ट देने वाला हो जाता है कि जीवन दूभर हो जाता है। ऐसी दशा में उस पर अंकुश लगाना आवश्यक है।

ॐ वनस्पते वीड्वगें हि भूया
अस्मत्सखा प्रतरणः सुबीरः
गोभिः सन्नओ असि वीलय
स्वाअस्थाता ते जयतु जेत्वानि ॥

इसकी सिद्धि प्रबल-से-प्रबल शत्रु भी परास्त हो जाता है तथा वह किसी प्रकार की हानि नहीं पहुंचा सकता है।

यदाकदा अचानक व्यापार में घाटा ही घाटा होने लगता है अथवा धन नष्ट हो जाता है, सम्पत्ति का विनाश होने लगता है। ऐसे अवसर पर निराश न हों, घबराएं नहीं और धैर्य न खोएं। अग्रलिखित मंत्र रुद्राक्ष उपासना के द्वारा सिद्ध कर घाटा रोक, नष्ट सम्पत्ति पुनः प्राप्त करें—

ॐ अग्नेड अंगिरः शतः से
सन्त्वावृतः सहस्त्र तड़पावृतः।
अंधा पोषस्य पोषणं पुनर्नो
नष्टमा कृधि पुनर्नो रयिमाकृषि ॥

यह मंत्र बड़ा प्रभावशाली और निश्चित रूप से लाभदायक है। यह व्यापार में वृद्धि भी करता है। हर प्रकार के व्यापार में इसके द्वारा लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

यश के लिए सभी लालायित रहते हैं। यदि आप अपने कार्य या व्यापार से यश प्राप्त करने के इच्छुक हैं, तो रुद्राक्ष उपासना द्वारा यह मंत्र सिद्ध करें—

ॐ मित्रस्य चर्षणीधूतोः
वो देवस्य सानसि।
द्युम्नं चित्रश्रवस्तमम् ॥

यदि आप पर कोई संकट आने की अथवा आप अपना जीवन हर प्रकार से सुरक्षित रखना चाहते हैं, आप पर कोई भी बुरा समय न आए तो निम्नलिखित मंत्र साधना करें—

ॐ त्रयः देवा एकादश
त्रयस्त्रि देवा सुराधसः।
बृहस्पतिः पुरोहिता देवस्य सवितुः सर्वे।
देवा देवेरवन्तु मा॥

इस मंत्र-सिद्धि के उपरान्त आपके जीवन में किसी भी प्रकार का खतरा, संकट, देहिक, दैविक, भौतिक नहीं आ सकता है। जीवन सदैव निरापद रहता है।

अगर आप अपना सर्व प्रकार से कुशलमंगल चाहते हैं, कार्य में निश्चित सफलता के लिए निम्न मंत्र को रुद्राक्ष उपासना द्वारा सिद्ध करें—

ॐ शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु
शं नो अर्वन्तः श्म्नु सन्तु गावः।
शं नः ऋभवः रु छृतः सुहस्ताः
शं नो भवन्तु पितरो हवेषु ॥

यह सभी प्रकार से मंगल करने वाला एक प्रभावशाली मंत्र है। इसे सिद्ध कर आप अपना जीवन मंगलमय बना सकते हैं।

अगर आप इसकी इच्छा रखते हैं कि आपका स्वास्थ्य सदैव बना रहे, कान्ति बनी रहे तो निम्न मंत्र सिद्ध करें—

ॐ सं वर्चसा पयसा सं तनूभि
रगन्महि मनसां सं शिवेन।

यह आपके लिए प्रभावी और सुन्दर मंत्र है। इसके द्वारा आप अपना स्वास्थ्य तथा पौष्टिकता बनाए रख सकते हैं। जीवन आपका नीरोगता से भरा रहता है।

आपके हृदय में अगर कोई कामना है और वह पूरी होने में आपको बाधा अथवा कठिनाई अनुभव हो रही है अथवा वह पूरी नहीं हो पा रही है, तो इस मंत्र की रुद्राक्ष उपासना द्वारा सिद्धि कर आप अपनी कामना पूरी कर सकते हैं। कामना-सिद्धि के लिए यह मंत्र बड़ा सटीक है—

ॐ इष्टो यज्ञो भृगुभिराशीर्दा वसुभिः।
तस्य न इष्टस्य प्रीतस्य द्रविणेहागमेः
इष्टो अग्नि रहिषु पिपतु न इष्ट इदं हविः।
स्वर्गेव देवेभ्यो नमः॥

इस मंत्र के द्वारा आप अपनी प्रत्येक मनोकामना प्रसन्नतापूर्वक बिना किसी अवरोध या बाधा के पूरी कर सकते हैं। इस मंत्र का उल्लेख अनेक ग्रंथों में है।

आपका चेहरा एकदम मुरझा गया है, कान्तिहीन हो गया है, तो इच्छित तेज-प्राप्ति के लिए आप निम्न मंत्र साधना अभिमन्त्रित रुद्राक्ष माला के द्वारा करें। आपका चेहरा तेजस्वी और कमल के समान खिल जाएगा—

ॐ राजन्ये दुन्दुभावायताया
मश्वस्य वाजे पुरुषस्य मायो।
इन्द्रं या देवि सुभगा
अजान-सा न ऐतु वर्चसा सन्विदाना॥

इस मंत्र से आपका चेहरा सदा आकर्षक बना रहेगा। झुर्रियां नहीं पड़ेंगी। आंखों के नीचे की कालिख भी न बनेगी। आपका चेहरा हमेशा आकर्षक बना रहेगा।

मनुष्य सदा किसी-न-किसी भय का शिकार बना रहता है। सभी प्रकार के भय और शंकाओं से मुक्ति पाने के लिए निम्न मंत्र सिद्ध करें—

ॐ उपावीरस्यूष दैवान्यै वीविशः
प्रागुरुशिजो बाहयान देव श्वष्टर्वसु
रम रम हव्याते स्वदन्ताम्।

इसके साथ यह मंत्र भी सिद्ध करें।

ॐ इदमृच्छेयोअवसानभागां शिवं से
धावापृथिवी अभूताम्।
असपत्नाः प्रदिशो मे भवन्तु न वे त्वा
द्विष्मो अभयं नो अस्तु॥

यह मंत्र जीवन में अभ्युत्थान के लिए है। दोनों प्रकार के मंत्र सिद्ध कर लेने पर किसी प्रकार का भय, शंका कभी न होंगे और जीवन में भी उन्नति प्राप्त होगी। इन दोनों मंत्रों का संयुक्त जाप कर साधना में सिद्धि भी प्राप्त कर सकते हैं।

यदाकदा अनुकूल पत्नी न मिलने के कारण जीवन बड़ा दुःखमय हो जाता है। पत्नी को त्यागना भी मुश्किल होता है। ऐसी स्थिति में पत्नी की अनुकूलता प्राप्त करने का भी उपाय है। यदि अविवाहिता है तो इस सिद्धि के लिए आप प्रयत्न करें तो अनुकूल पत्नी मिलती है। मंत्र इस प्रकार है—

ॐ यथेदं भूम्या आधि तृणं
वातो मथायति।
एदा मध्यामि ते मनो यथा मां
कामिन्यसो यथा मन्नापगा असः॥

इसके जाप से साधक को मनोनुकूल पत्नी तथा विवाहित की प्रतिकूल हो गयी पत्नी अनुकूल हो जाती है। अन्न और धन कौन प्राप्त नहीं करना चाहता—और इस मंत्र के द्वारा आप सफलता प्राप्त कर सकते हैं—

ॐ धृतेनाज्जन्ततं पथो देवयानान्
प्रजानन्वाज्यपेतु देवान्।
अनु त्वा सप्त प्रदिशः सचन्ता वह
स्वधामस्यै यजमानाम देहि॥

यह मंत्र अन्न और धन की सदा वृद्धि करने वाला है। भण्डार कभी खाली नहीं होगा और जीवन ऐश्वर्यपूर्ण रहेगा। प्रभावशाली मंत्रों का उल्लेख अनेक ग्रंथों में आया है। रुद्राक्ष उपासना द्वारा यह अतिशीघ्र और प्रभावी रूप में सिद्ध हो जाता है।

शरीर के किसी भाग में कीड़े पड़ गए हों, घाव में कृमि आदि हो गए हों और औषधि प्रयोग के द्वारा लाभ न हो रहा हो, तो निम्न मंत्र की साधना करें—

ॐ अस्येन्द्र कुमारस्य क्रिमीन्
धनपते.......................जहि।

हता विश्वा अरातय उग्रेण
वचसा.....................मम॥

इस सिद्धि के द्वारा कृमि नाश होते हैं। गौ, भैंस आदि के अधिक कृमि पड़ जाते हैं। ऐसे उपयोगों से पशुओं का कष्ट निवारण भी इसके द्वारा कर सकते हैं।

अगर आप प्रचुर सम्पत्ति के इच्छुक हैं। इस मंत्र की रुद्राक्ष उपासना के द्वारा सिद्धि करें। आपको धन प्राप्त होगा। इससे अकस्मात् धन-प्राप्ति का योग भी प्रबल बनता है।

ॐ इष्कतरिंरमध्वरस्य प्रश्वेतसं
क्षयन्तं च राधसो महः।

यह मंत्र बड़ा प्रभावी है। साधना पूरी होने के उपरान्त यह अपना चमत्कार अवश्य दिखलाता है।

यदि आप दीर्घायु के इच्छुक हैं, तो आपकी अकाल मृत्यु नहीं होगी और आप पूर्णायु भोग सकते हैं, यदि इस मंत्र की उपासना करें—

ॐ अन्विदनुमते त्वंमन्याते
शं च नस्कृधि।
कृत्वे दक्षाय नो हिनु प्रण
आर्यूषि च तारिखः॥

यह मंत्र आयु-वृद्धि के लिए है। दीर्घ जीवन के इच्छुक स्त्री-पुरुष इसकी साधना कर सकते हैं।

आपका जीवन सदा सुखमय रहे, उसमें किसी प्रकार का दुःख न हो, दुःख आए तो तत्काल उनका विनाश हो, इस हेतु यह मंत्र साधना की जा सकती है—

ॐ या ते रुद्र शिवाय
तनुः शिवाय विश्वाहा भेषजी।
शिवा कस्तम भेषजीतया
नो मूड जीवसे॥

इस साधना के फलस्वरूप आपका जीवन सदा सुखी रहेगा। दुःख आपके पास फटकने का नाम न लेगा। किसी प्रकार का संकट भी न आएगा।

जीवन में कभी-कभी अक्षम्य अपराध जाने-अनजाने में हो जाया करता है। तब मन ग्लानि और पश्चात्ताप से इस प्रकार भर जाता है कि सुख-शान्ति और मन का चैन नष्ट हो जाता है। ऐसी दशा में मानसिक शांति और उस अपराध के लिए क्षमादान हेतु अग्र मंत्र साधना करें—

चकुनीललोहिते...................।
आमं मांसं कृत्यां यां
चक्रुस्तया.................कृत्या
कृतो.....................जहि।

यह सिद्धि आपका जीवन पूर्ववत् कर देगी और उस अपराध का फल भी नहीं भोगना पड़ेगा।

भविष्य सुखद और सुन्दर बने, वर्तमान जीवन में परिवर्तन आए। अतएव सुखमय भविष्य के हेतु निम्न रुद्राक्ष उपासना कर मंत्र जपें—

ॐ सत्यं च मे श्रद्धा च मे
जगच्च मे धनं च मे विश्वं
च मे महश्च में क्रीड़ा च मे
मोदश्च से जातं च मे
जानिष्यमाणं च मे सूक्त
च मे सुकुतं च मे
यज्ञेन.................कल्पन्ताम्॥

यह साधना आपके लिए बड़ी कल्याणकारी है।

यदि आप श्रेष्ठ वृष्टि चाहते हैं, तो निम्न मंत्र साधना से श्रेष्ठ दृष्टि का योग बन सकता है—

ॐ समीक्षयन्तु तविषाः
मुदानवोअपां...............रसा
औषधिमिः सचन्ताम।
वर्षस्य सर्गा महन्तु
भूमिपूथग् जायन्तामोषधयो विश्वरूपाः॥

इस उपासना के द्वारा अच्छी वर्षा करायी जा सकती है। फसल उत्तम प्राप्त हो सकती है।

अगर आपका कोई अपना अभीष्ट है तो उसकी प्राप्ति हेतु निम्नलिखित जप रुद्राक्ष द्वारा कर आप अपनी मनोकामना पूरी कर सकते हैं—

ॐ ऊर्जो नपातं च
स हिनांयमस्युदशिम हव्यदातये।
भुवद्वाजेध्ववविता भुवद् वृधः
उत आता तनूनाम।

इस प्रकार आप रुद्राक्ष की माला के द्वारा अपनी अनेक कामनाएं पूरी कर सकते हैं। अपना जीवन नाना प्रकार के सुखमय रूप से बिता सकते हैं। रोग, शोक और संकट से छुटकारा पा सकते हैं। जप के द्वारा उत्पन्न मानसिक और भौतिक ऊर्जा के कारण इच्छित मार्ग प्रशस्त हो ज़ाते हैं, उस प्रकार का अनुकूल वातावरण अपने आप बन जाता है। आपकी मानसिक और शारीरिक क्षमता इस प्रकार हो जाती है कि आपका कार्य बन जाता है। मंत्रादि और जप का विधान ध्वनि विधान पर आधारित है। इस कारण इनका अनुकूल प्रभाव पड़ता है।

यह सम्पूर्ण क्रियाएं विज्ञान सम्मत हैं। अंधविश्वास और धार्मिक कट्टरता या ढोंग का प्रश्न ही नहीं है। मन की शक्ति "ब्रह्म" मानी गयी है और यह शक्ति विश्व की सबसे बड़ी शक्ति है। इससे बड़ी शक्ति अन्य नहीं है। मन की शक्ति के समक्ष सब कुछ तुच्छ है। इसी कारण जब मन किसी विषय पर एकाग्र होता है, तो वह अपनी शक्ति का चमत्कार दिखलाता है। मंत्र और जप के द्वारा मन को एकाग्र किया जाता है। इसी कारण यह बनाए गए हैं। अब विश्वास करना न करना आप पर है। इसके बावजूद इनके द्वारा लाभ होता आया है।

शिव-पूजन

मूले कल्पद्रुमस्य द्रुतकनकनिभं चारूपद्मासनस्थं,
वामांकारुढगौरी निबिड कुचभराभोगगाढोपगूढम्।
सर्वालंकारकांतं वरपरशु मृगाभीति हस्तं त्रिनेत्रं,
वंदे बालेन्दुमौलि गजवदनगुहाश्लिष्टपार्श्व महेशम्।

साम्ब परमेश्वरं ध्यायामि।	(ध्यान)
आवाहयामि। परमेश्वराय नमः।	(आह्वान)
आसनं समर्पयामि।	(आसन)
पाद्यं समर्पयामि।	(पाद्य)
अर्घ्यं समर्पयामि	(अर्घ्य)
आचमनीयं समर्पयामि।	(आचमन)
मधुपर्क समर्पयामिः।	(मधु)
स्नानं समर्पयामिः।	(स्नान)
वस्त्रालंकारान् समर्पयामि।	(वस्त्र-अलंकार)
आचमनीयं समर्पयामि।	(आचमन)
यज्ञोपवीतं समर्पयामि।	(यज्ञोपवीत)

गंधान् धारयामि। (सुगंधित द्रव्य, इत्र, चंदन, केशर, कस्तूरी)

ॐ भावाय देवाय नमः।

ॐ शर्वाय देवाय नमः।

ॐ ईशानाय देवाय नमः। परमेश्वराय नमः नानाविध परिमलपत्र-पुष्पाणि समर्पयामि।

ॐ पशुपतये देवाय नमः।

ॐ रुद्राय देवाय नमः। (विल्व-पत्र, तुलसी, शमी-पत्र, दूर्वादल, भृंग-पत्र, कमल, जूही, चंपक, बेला, अर्क, धतूरा आदि पुष्प चढ़ाएं)

ॐ उग्राय देवाय नमः।

ॐ भीमाय देवाय नमः।

ॐ महते देवाय नमः।

तीन पंचाक्षरी साम्ब परमेश्वर श्री पादुकां पूज्यामि तर्पयामि नमः इति त्रिः संतर्पयेत।

परमेश्वराय नमः। धूपमाघ्रापयामि (धूप)

दीपं दर्शयामि (दीपक)

नैवेद्यं समर्पयामि। (मिष्ठान्न)

मध्ये-मध्ये पानीयं। (बीच-बीच में जल)

हस्तप्रक्षालनं। (हाथ धुलाना)

पादप्रक्षालनं। (पैर धुलाना)

आचमनीयं। (आचमन)

ताम्बूलं च समर्पयामि। (पान)

कर्पूरनीराजनं दर्शयामि। (आरती)

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।

प्रदक्षिणनमस्कारन् समर्पयामि। (परिक्रमा-नमस्कार)

समस्त राजोपचार देवोपचारान् समर्पयामि।

अनया पूजया भगवान्सर्वदेवात्मकः साम्बपरमेश्वरः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥

अभीष्ट सिद्धिं मे देहिं शरणागतवत्सले।
भक्तया समर्पये तुभ्यं चतुरायतनार्चना॥

(इति सामांयाध्योंदकेन देव्या वामहस्ते पूजां समर्पयेत्)

शिव-पूजन की विधि

पवित्र होकर आचमन-प्राणायाम करके, संकल्प बोलकर; संकल्प के अंतिम वाक्य में ''श्री साम्ब सदाशिव प्रीत्यर्थम गणपत्यादि सकल देवता-पूजनपूर्वक श्री भवानी शंकर पूजनमहं करिष्ये'' बोलकर संकल्प छोड़कर आह्वान मंत्रों से मूर्तियों के समीप पुष्प छोड़ें। मूर्ति न हो, तो केवल आह्वान करके पूजन करें।

गणेश-पूजन

आह्वायामी पूजार्थम् रक्षार्थम् च मम क्रतोः
इहागत्य गृहाण त्वं पूजां यागं च रक्ष मे॥

(पूजन करके यह प्रार्थना करें–)

लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

पार्वती-पूजन

हेमाद्रि तनयां देवी वरदां शंकर प्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाभ्यहम्॥

(पूजन करके यह प्रार्थना करें–)

ॐ अंबे अंबिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन्।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥

नंदीश्वर-पूजन

आयं गौःपृश्निरक्रमीदसदंमातरं पुरः पितरं च प्रयन्त्स्वः।

(पूजन करके यह प्रार्थना करें–)

प्रैतु वाजी कनिक्रदन्नाद द्रासभः पत्वा।
भरन्नग्निम्पुरीष्यं मा पाद्यायुषः पुरा॥

वीरभद्र-पूजन

भद्रं कर्णेभिः श्रणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैः रंगे स्तुष्टुवा सस्तनू भिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥

(पूजन करके यह प्रार्थना करें–)

भद्रो नो अग्निराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रो अध्वरः।
भद्रा उत प्रशस्तया ॥

कार्तिकेय-पूजन

यदक्रंद प्रथमं जायमाने उद्यंत्समुद्रादुत वा पुरीषात्।
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन् ॥

(पूजन करके यह प्रार्थना करें–)

यत्र बाणाः सं पतंति कुमारा विशिखा इव।
तन्न इंद्रो बृहस्पतिरदितिः शर्म यच्छतु विश्वाहा शर्म यच्छंतु ॥

श्री कुबेर-पूजन

कुविदंग यवमंतो यवं चिद्यथा दांत्यनुपूर्वं वियूय।
इहेहैषां कुणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम उक्तिं यजंति ॥

(पूजन करके यह प्रार्थना करें–)

वयं सोमव्रते तव मनस्तरूषु विभ्रतः प्रजावंतः सचेमहि ॥

कीर्तिमुख पूजन

असवे स्वाहा। व्यसवे स्वाहा। विभवे स्वाहा। विवस्वते स्वाहा। गणश्रिये स्वाहा। गणपतये स्वाहा। विभुवे स्वाहा धिपतये स्वाहा। शूषाय स्वाहा। सूंपर्याय स्वाहा। चन्द्राय स्वाहा। ज्योतिषे स्वाहा। मलिम्लुचाय स्वाहा। दिवापतये स्वाहा॥

(पूजन करके यह प्रार्थना करें–)

आजेश्च में सहश्च मे आत्मा च मे तनूश्च मे शर्म च
मे वर्म च मेऽगांनि च मेऽस्थीनि च मे परुंषि च मे
शरीराणि च मे आयुश्च में जरा च मे यज्ञेन कल्पंताम् ॥

जलहरी के सर्प का पूजन करने के पश्चात् शिव-पूजन करना चाहिए।

ध्यानः

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं।
रत्ना कल्पोज्जवलांगं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसंनम् ॥
पद्मासीनं समंतात स्तुतिममरगणैर्व्याघ्रिकृत्तिं वसानं।
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥

पाद्यः

ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे।
अथो ये अस्य सत्वानोऽहंतेभ्योऽकरं नमः॥ (पाद्यं समर्पयामि)

अर्घ्यः

ॐ गायत्री त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पंक्तया सह।
बृहत्युष्णिहा ककुप्सूचीभिः शम्यन्तु त्वा॥ (अर्घ्यं समर्पयामि)

आचमनः

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधि पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बंधनांमृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥
(आचमनीयं समर्पयामि)

स्नानः

ॐ व्वरुणयोत्तम्मानमसि व्वरुणस्य स्कंभ्भसर्ज्जनीस्थो व्वरुणस्य-ऋतसदंयसि व्वरुणास्य ऋतसदनमसि व्वरुणस्य ऋतसदनमासीद ॥

दुग्धस्नानः

गोक्षीरधामन् देवेश गोक्षीरेण मया कृतम।
स्नपनं देवदेवेश गृहाण शिव शंकर।
(दुग्धस्नान समर्पयामि, पुनः जलस्नान)॥

घृतस्नानः

सर्पिषा देव देवेश स्नपनं क्रियते मया।
उभाकांत गृहणेदं श्रद्धया सुरसत्तम।
(घृतस्नानं समर्पयामि, पुनः जलस्नानं समर्पयामि)॥

मधुस्नानः

इदं मधु मया दत्तं तव तुष्ट्यर्थमेव च।
गृहाण शंभो त्वं भक्तया मम शन्तिप्रदो भव
(मधुस्नानं समर्पयामि, पुनः जलस्नान)॥

शर्करास्नानः

सितया देवदेवेश स्नपनं क्रियते मया।
गृहण शंभो मे भक्तया सुप्रसन्नो भव प्रभो।
(शर्करास्नानं समर्पयामि, पुनः जलस्नान)॥

पंचामृतस्नानः

पंचामृतं मयानीतं पयोदधि समन्वितम्।
घृतं मधु शर्करया स्नानार्थम् प्रतिगृह्यताम् ॥
(पंचामृतस्नानं समर्पयामि) ॥

शुद्धोदकस्नानः

ॐ· शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः (शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि)।

जलधारा द्वारा अभिषेक

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः बाहुभ्यामुत ते नमः...1... .
या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपाप काशिनी।
तया नस्तन्नवा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि...2...
यामिषुं गिरिशिंत हस्ते बिभर्ष्यस्तवे शिवां गिरित्र तां कुरु मह्सिंसीः पुरुष जगत्...3...
शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छावदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मंसुमना असत्...4...
अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहींश्च सर्वान् जंभयन् सर्वाश्च यातुधांयोऽधराचीः परासुव...5...
असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमंगलः ये चैनं रुद्रा-अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्त्रशोऽवैषांहेड ईमहे ...6...
असौयोवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति... 7...
नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरन्नमः ...8...
प्रमुंच धन्वनस्त्मुभयोरात्न्योर्ज्याम। याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो व्वप...9...
विज्यं धनुः कपार्दि विशल्यो बाणवांऽउत। अनेशंनस्य या इषव आभुरस्य निषंगधिः...10...

या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः। यतास्मान्विश्वक्तस्त्वमय मया परिभुज ...11...
परि ते धंवनो हेतिरस्मान् वृणक्तु विश्वतः अथो य इषुधिस्तवारे अस्मिनिधेहि तम्... 12...
अवतत्त्य धनुष्ट्वंसहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्यशलयानां मुखा शिवो नः सुमना भव ...13...
नमस्ते आयुधायानातताय धृष्णवे। उमाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धंवने...14...
मा नो महांतमुत मा नो अर्भक मा न अक्षंतमुत मा न उक्षितमुत मा न उक्षितम्। मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तंवो रुद्र रीरिषः...15...
मा नस्तोके तनये मा न आयुषिमा नो गोषुं मा नो अश्वेषु रीरिषः मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीहे विषमंतः सदमित्वा हवामहे...16... (अभिषेकं समर्पयामि)

वस्त्र-उपवस्त्र : ॐ प्रमुंच धंवनस्त्वमुभयो रात्र्योर्ज्याम्।
याश्च ते हस्त जषवः परा ता भगवो व्वप॥
(वस्त्रमुपवस्त्रैं समर्पयामि, आचमनीय)

आभरण : ॐ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवांनउत।
अनेशंनस्य या इषव आभुरस्य निषंगधिः॥
(आभरणं समर्पयामि)

यज्ञोपवीत : ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो व्वेन आवः।
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्टाः सतश्च योनिमसतश्चव्विवः॥
(यज्ञोपवीतं समर्पयामि, आचमनीय)

गंध : ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः।
शर्व्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकंठाय च॥
(गंध समर्पयामि)

अक्षत : ॐ नमः शंभवाय च भयोभवाय च नमः शंकराय च।
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥
(अक्षतान् समर्पयामि)

पुष्प : ॐ नमः पर्याय चावार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च।
नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च नमः शष्प्याय च फेंयाज च॥
(पुष्पाणि समर्पयामि)

पुष्पमाला : नाना पंकजपुष्पैश्च ग्रथितां पल्लवैरपि।
बिल्वपत्रयुतां माला गृहाण सुमनोहरम्॥
(पुष्पमालाम् समर्पयामि)

विल्व-पत्र : ॐ नमो बिल्मिने च कर्वाचने च नमो वर्मिणे च व्वरुथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुंदुभ्याय चाहनन्याय च ...1...
दर्शनं विल्वपत्रस्य स्पर्शनं पाप नाशनम् घोरपातक संहारं बिल्वपत्रंशिवार्पणम्...2...
त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुधम् त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्....3...
अखण्डेर्बिल्वपत्रैश्च पूजये शिवशंकरम्। कोटि कन्या महादानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ...4...
गृहाण बिल्वपत्राणि सपुष्पाणि महेश्वर। सुगंधीनो भवानीश शिव त्वं कुसुमप्रिय ...5... (बिल्वपत्रं समर्पयामि)

तुलसी मंजरीः ॐ शिवो भव प्रजाभ्यो मानुषीभ्यस्त्वंमर्मान्गिरः। मा द्यावापृथिवी अभि शोचीर्मान्तरिक्षम्मावनस्पती न॥
(तुलसी मंजरी समर्पयामि)

दूर्वाः ॐ काण्डात् काण्डात्प्रेरोहंती पुरुषः पुरुषस्परि। एवा नो दुर्वे सहस्रेण शतेन च॥ (दूर्वान्कुरान् समर्पयामि)

शमी-पत्र : अमंगलानां शमनीं शमनीं दुष्कृतस्य च। दुःस्वप्न नाशिनीं धन्यां प्रपद्येऽहं शमी शुभाम्॥
(शमी पत्राणि समर्पयामि)

आभूषण : वज्रमाणिक्य वैदूर्य मुक्ता विद्रुम मण्डितम्। पुष्पराग समायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्यताम्॥
(आभूषण समर्पयामि)

सुगंध-तैल : अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः। हस्तघनो विश्वा वायुनानि व्विद्वान् पुमांपुमांसं परिपातु व्विश्वतः॥
(सुगंधित द्रव्याणि, समर्पयामि)

धूप : ॐ नमः कपार्दे ने च व्युप्तकेशाय च नमः सहस्रक्षाय च शतधंवने च नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च॥
(धूपमाध्रापयामि)

दीप : ॐ नमः आशवे चाजिराय च नमः शीघ्रयाय च शीभ्याय च नमः ऊर्म्याय चावस्व न्याय च नमो नादेयाय च द्वीप्याय च॥
(दीपं दर्शयामि, हस्तप्रक्षालनम्)

नैवेद्य : ॐ नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चाप रजाय च नमो-मध्यमाय चाप्रगल्भ्याय च नमो जघंयाय च बुध्न्याय च॥

(नैवेद्य निवेदयामि)

मध्ये-पानीयं : ॐ नमः सोभ्याय च प्रतिसर्याय च नमो याम्याय च क्षम्याय च। नमः श्लोक्याय चावसान्याय च नम उर्वर्याय च खल्याय च॥

(मध्ये पानीयं समर्पयामि)

ऋतुफल : फलानि यानी रम्याणि स्थापितानि तवाग्रतः।
तेन मे सुफला वाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥

(ऋतुफलानि समर्पयामि)

आचमन : त्रिपुरांतक दीनार्तिनाश श्रीकंठ शाश्वत।
गृहणाचमनीयं चे पवित्रोदक कल्पितम्॥

(आचमन समर्पयामि)

अखण्ड : कूष्माण्डं मातुलिंगं च नारिकेल फलानि च।
ऋतुफल : रम्याणि पार्वतीकांत सोमेश प्रतिगृह्यताम्॥

(अखण्ड ऋतुफलं समर्पयामि)

तांबूल : ॐ इसा रुद्राय तवंसे कपार्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः।
पूंगीफल : यथा शमशद्द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्॥

(तांबल पूंगीफल समर्पयामि)

दक्षिणा : न्यूनातिरिक्त पूजायां संपूर्ण फलहेतवे।
दक्षिणां कांचनी देव स्थापयामि तवाग्रतः॥

(द्रव्य-दक्षिणां समर्पयामि)

आरती : कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेंद्र हारम।
सदा वसंतं हृदयारविंदे भवं भवानि सहितं नमामि॥

शिवार्चन विधि

शिव का अर्थ, कल्याणकारक है। आस्तिक जनता उनका पूजन शास्त्रीय विधान से करके अपना कल्याण करती आयी है। विधि विपरीत कार्य करने से उसका सुफल न होकर कुफल भी होता है।

अतः समानता के आवेश में आकर वेद-मंत्रों से शिवलिंग का पूजन प्रत्येक जनसाधारण को नहीं करना चाहिए। जिन शास्त्रों के आधार पर हम भगवान की सत्ता स्वीकार करते हैं, उन्हीं प्रकरणों में वर्णित अधिकारी भेद को स्वीकार न कर

हम अपना ही अकल्याण करते हैं।

ज्योतिर्मात्र स्वरूपाय निर्मल ज्ञान चक्षुषे।
नमः शिवाय शान्ताय ब्रह्मणे लिंग मूर्तये॥

(ज्योति मात्र जिनका स्वरूप है, निर्मल ज्ञान ही जिनका नेत्र है, जो लिंग स्वरूप ब्रह्म हैं, उन परमशांत कल्याणमय भगवान् शिव को नमस्कार है)।

वेद-मंत्रों से पूजन अनुष्ठान एवं ओंकार मंत्र का जप केवल यज्ञोपवीतधारी को ही करना चाहिए, अन्य को नहीं।

छह अक्षरों का मंत्र (षडक्षर मंत्र) "ॐ नमः शिवाय" का जप या इसके मंत्र के द्वारा शिव का पूजन केवल यज्ञोपवीतधारी, ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य को करना चाहिए। अन्य स्त्री, शूद्र और यज्ञोपवीत संस्कार-विहीन ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य को केवल "पंचाक्षर" मंत्र "नमः शिवाय" का ही जप करना उनके कल्याण का मूल है।

तस्मात् सर्वप्रदो मंत्रः सोऽयं पंचाक्षरः स्मृतः।
स्त्रीभिः शूद्रैश्च संकीर्णैर्धार्यते मुक्तिकांक्षिभिः॥

(स्कंद पुराण ब्रह्मोत्तर खंद 1/20)

मोक्ष की इच्छा की पूर्ति इसी मंत्र से जीव की होती है। इस मंत्र के लिए दीक्षा, होम, संस्कार, तर्पण, समय-शुद्धि तथा गुरुमुख से उपदेश आदि की आवश्यकता नहीं है।

"शिव" यह दो अक्षर का मंत्र ही बड़े-बड़े पापों का नाश करने वाला है।

नास्य दीक्षा न होमश्च न संस्कारों न तर्पणम्।
न कालो नोपदेशश्च सदा शुचिरयं मनुः॥

(स्कंद पुराण ब्रह्मोत्तर खण्ड 1/21)

सर्वसाधारण मनुष्य को सदा "नमः शिवाय" मंत्र का जप करके अपना कल्याण करना चाहिए। शिवार्चन की भी साधारण पद्धति इसी लोक-कल्याण की भावना से नीचे दी जाती है, किसी विवाद की इच्छा से नहीं।

स्नान के अनंतर धोती पहनकर, अंगौछा बाएं कंधे पर रखकर, आसन पर बैठकर; भगवान शिव की मूर्ति के समक्ष हाथ जोड़कर ध्यान करें—

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारु चन्द्रावतंसं।
रत्नाकल्योज्जवलांग परशुमृगवराभीनिदृस्त प्रसन्नम्॥
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैः व्याघ्रकृतिंदसानम्।
विश्वाद्यं विश्ववन्ध्यं निखिल भयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

इस श्लोक को पढ़कर "ध्यानार्थे अक्षतान् समर्पयामि" कहकर चावल छोड़ दें। फिर आसन के लिए चावल, पुष्प या कुशा भगवान के सामने रखकर निम्न श्लोक को पढ़ें—

विष्टरं विष्टरेणै च मयादत्तं च वै प्रभो।
शान्त्यर्थम् तव देवेश वरदो भव में सदा॥

तत्पश्चात् हाथ में या अर्घे में जल लेकर भगवान को पाद्य दें।

मयादत्तं तु ते पाद्यं पुष्प गन्ध समन्वितम्।
गृहाणदेव देवेश प्रसन्नो वरदो भव॥

हे देव देवेश! मेरे द्वारा आपको समर्पित गंध-पुष्पयुक्त यह पाद्य आप ग्रहण करें तथा प्रसन्न होकर मेरे लिए फलदायक और वरदायक बनें। इस प्रकार भगवान के पांव पखारें।

फिर अर्घे में जल लेकर उसमें चंदन, पुष्प आदि डालकर अर्घ्य दें और निम्न श्लोक पढ़ें अथवा केवल "नमः शिवाय" मंत्र बोलकर "अर्घ्यम् समर्पयामि" कहें।

अर्घ्योसि त्वमुमाकान्त त्वर्घ्येणानेन वै प्रभो।
गृहाण त्वं मयादत्तं प्रसन्नो भव शंकर॥

उमाकांत प्रभो! आप इस अर्घ्य द्वारा पूजन करने योग्य हैं। भगवान शंकर, मेरे द्वारा दिए हुए अर्घ्य को आप ग्रहण करें और मुझ पर प्रसन्न रहें।

भगवान के सामने जल छोड़कर आचमन कराएं।

आचमनं मयादत्तं तव विश्वेश्वर प्रभो।
गृहाण परमेशान तुष्टो भव ममाद्य वै॥

इसके बाद "नमः शिवाय" बोलकर शिवलिंग को जल से स्नान कराएं तथा गाय का दूध चढ़ाएं।

गोक्षीरधाम देवेश गोक्षीरेण मया कृतम्।
स्नपनं देवदेवेश गृहाण परमेश्वर॥

पुनः जल से स्नान कराएं। इसके बाद दही मलकर स्नान कराने का मंत्र बोलें।

रुद्राक्ष द्वारा रोग-निवारण

रुद्राक्ष एक चमत्कारी फल है। जप, तप, मंत्र साधना, तंत्र प्रयोग में इसका उपयोग और महत्व तो है ही पर औषधि रूप में भी यह अपना चमत्कार रखता है। इसका नाना प्रकार की औषधियों में भी प्रयोग होता है। इसमें इस प्रकार का गुण है। अनुभवी वैद्य आज भी रुद्राक्ष का औषधि रूप में प्रयोग करते हैं। जहां

तक सम्भव हो सका है मैंने उनके अनुभूत प्रयोग ही संकलित किए हैं।

सर्वप्रथम उसका वाह्य धारण उपयोग प्रस्तुत है। बिना साधना के भी केवल उसका धारण मात्र इस प्रकार लाभदायक है।

रुद्राक्ष धारण द्वारा उच्च रक्तचाप का नियंत्रण तो अब प्रमाणित है; पर शरीर के भिन्न-भिन्न भागों पर इसके धारण द्वारा जो लाभ बिना, जप-सिद्धि के बिना किया जाता है वह इस प्रकार है—

शारीरिक दृष्टि से अशक्त, वृद्ध अवस्था के कारण असमर्थ या अन्य किसी कारण से विगत अध्यायों में उल्लिखित प्रयोग न कर सकें तो उनके लिए यह लाभदायक है।

शरीर के जिस भाग में वातरोग या किसी प्रकार का स्नायुविक कष्ट है, तो उसी ओर की भुजा में रुद्राक्ष को काले या लाल धागे से बांध लें। लाभ होगा।

शरीर के निम्नलिखित भागों पर रुद्राक्ष धारण से जो लाभ होते हैं, उनका उल्लेख इस प्रकार है—

शिखा

आजकल शिखा रखने का चलन प्रायः समाप्त के बराबर है। फिर भी शिखा-स्थल के बालों में एक रुद्राक्ष बांधकर रखने से सिरदर्द, आंखें धुंधलाना, नजला-जुकाम, दिमागी कमजोरी आदि से बचाव होता है। साथ ही सिर पर चोट लगने की सम्भावना भी कम रहती है।

कण्ठ

कण्ठ में केवल एक या तीन रुद्राक्ष धारण करने से गले के समस्त रोग खत्म होते हैं। टॉन्सिल नहीं बढ़ता है। स्वर का भारीपन मिटता है।

भुजाएं

दाहिनी भुजा पर बांधने से वीर्य बढ़ता है। बालरोग का प्रकोप भी नहीं होता।

बायीं भुजा पर धारण करने से शरीर का वामांग स्नायुविक रोग का विकार नहीं होता। रक्त संचार सुचारु रूप से होता है।

दोनों भुजाओं पर रुद्राक्ष धारण से धारक कभी पक्षाघात का शिकार नहीं बनता। यह रुद्राक्ष धारण का विशेष गुण है। वैज्ञानिक भी इस तथ्य से प्रभावित हैं।

कमर

कमर में दो-तीन रुद्राक्ष बांध लेने से कमर में पीड़ा नहीं होती है। महिलाओं के लिए वहां बांधना बड़ा लाभदायक है। प्रसवादि भी सरलता से होता है। स्त्रियां प्रदर रोग तथा अनियमित मासिक से अपना बचाव कर सकती हैं।

वृद्धावस्था में कमर झुकने या टेढ़ी होने की सम्भावना भी कम रहती है। कमर में बराबर शक्ति बनी रहती है। दर्द आदि से राहत मिलती है। कमर से नीचे के किसी भी भाग पर रुद्राक्ष धारण करना पाप है और इसका सर्वत्र निषेध किया गया है।

रुद्राक्ष के कुछ और प्रयोग

रुद्राक्ष संस्कृत में, इसी उच्चारण के साथ अन्य भारतीय भाषाओं में भी "रुद्राक्ष" ही कहा जाता है। इसका वृक्ष बौना होता है। पत्ते हरे होते हैं। लगने वाला फल भूरा होता है। यही फल आगे चलकर भूरे, लाल, कृष्ण आदि वर्णों के रुद्राक्ष में बदल जाता है। फल जब तक कच्चा रहता है, उस पर धारियां नहीं बनती हैं। जैसे-जैसे सूखता जाता है वैसे-वैसे धारियां बनती जाती हैं और नोकें निकलना शुरू ही जाती हैं। कच्चे फल पर किसी भी उपाय से धारियों में परिवर्तन नहीं लाया जा सकता है। कच्चा फल तोड़ लेने पर सूख जाने पर न धारियां बनती हैं और न दाने निकलते हैं वरन् सिकुड़कर वह ऐसा हो जाता है कि उसको रुद्राक्ष ही नहीं कह सकते हैं। रुद्राक्ष नेपाल में मिलता है। थोड़ा-थोड़ा थाईलैण्ड, इण्डोनेशिया, सिंगापुर एवं मलाया में है। नेपाल का रुद्राक्ष निम्न माना गया है। यह आकार में बड़ा होता है।

रुद्राक्ष के समान ही उसके आसपास एक और वृक्ष होता है। इसमें रुद्राक्ष के समान फल लगते हैं। इनका रंग भूरा होता है। यह "भद्राक्ष" होता है। इसकी मुख्य पहचान है कि यह जल में डूबता नहीं है, वरन् तैरता रहता है। यह हल्का चपटा होता है।

रुद्राक्ष की प्रकृति गर्म और तर है। कुछ ग्रंथों में इसे ठण्डी प्रकृति का भी बतलाया गया है। खाने पर इसका स्वाद कडुवा होता है। रुद्राक्ष नीम के समान कृमिनाशक और ओजप्रद है। वात, पित्त, कफ को शांत करता है। चर्म रोग की भी इसे एक उत्तम औषध माना गया है। कुष्ठ रोग भी इससे शान्त होते हैं। दाद, खाज, छाजन, फुंसी, फोड़ा पर बहुत ही लाभ होता है। जल जाने पर जलन शांत

करता है और फफोले नहीं पड़ने देता। त्वचा-सम्बन्धी रोगों पर भी इसका लेप बड़ा गुणकारी है। रुद्राक्ष औषधि के रूप में अन्य वस्तुओं के साथ भी बड़ा लाभकारी है।

वास्तव में रुद्राक्ष एक वरदान ही है।

जल

रुद्राक्ष द्वारा अभिमन्त्रित जल के अलावा भी साधारण रूप से रुद्राक्ष डुबोया जल गुणकारी औषधि का कार्य करता है। गंगाजल उत्तम इसलिए माना गया है कि अधिक समय तक वह पीने के काम आता है। फिर भी असमर्थता के कारण साधारण स्वच्छ जल भी काम में लाया जा सकता है, पर जल तीन दिन से अधिक रखना उचित नहीं है। आवश्यकता पड़ने पर नया जल तैयार कर सकते हैं।

जल के रुद्राक्ष योग इस प्रकार हैं—

बेचैनी, घबराहट और मतली पर—

एक प्रहर अर्थात् कम से कम 3 घण्टे तक शुद्ध जल में रुद्राक्ष के एक या अधिक दाने डाल दें। डालने से पूर्व उनको धोकर स्वच्छ कर लें। तीन घण्टे बाद रुद्राक्ष निकाल लें, हाथ से नहीं। पानी किसी और बर्तन में डाल दें। कम जल रह जाने पर रुद्राक्ष निकाल लें। यह जल फेंक दें। पहले निकाले गए जल का उपयोग करें।

अकारण ही यदि बेचैनी, घबराहट या मतली महसूस हो अथवा किसी रोग के कारण यह दशा हो तो दो-तीन चम्मच उपरोक्त पानी पिला दें। बेचैनी, घबराहट, मतली शान्त हो जाएंगी। उल्टियां हो रही हों तो उल्टी के बाद थोड़ा-सा उपरोक्त जल पिला दें। आगे उल्टियां न होंगी।

आंखों में जलन है, धुंधला-सा दीख रहा हो, आंखें गड़ाकर ज्यादा देर तक काम करने के कारण स्पष्ट न दीख रहा हो, एक के स्थान पर दो आकृतियां दीख पड़ रही हों, तो इसी जल के छींटे मारकर आंखें पोंछकर कुछ पल के लिए बंद करके फिर खोलेंगे तो सब कुछ साफ दिखलायी पड़ेगा। सिर में पीड़ा का अनुभव करें तो दो बूंद उक्त जल दोनों कानों में डाल लें। कुछ पल बाद आराम आ जाएगा। आंखों की जलन भी शांत करता है।

सर्दी, जुकाम

सर्दी, जुकाम का प्रकोप होने पर थोड़ा-सा पानी नाक के दोनों छिद्रों से सुड़क

लें। दो-चार छींकें आ जाएंगी और सर्दी, जुकाम का प्रकोप खत्म हो जाता है। नाक फूटने पर भी ऐसा ही करें। यह जल बंद नाक को भी खोलता हैं।

कान–

कान पक गया हो, सुनहरी हो, कम सुनाई पड़ता हो, तो प्रतिदिन इस जल की कुछ बूंदें दोनों कानों में डालें। बतलाया गया है कि इससे लाभ होता है। कान के दर्द पर काम करता है। मवाद का आना रोकता है।

सफाई–

गम्भीर घाव, पक गए फोड़े-फुंसी को इस जल से धोने पर पूरी खराबी दूर हो जाती है, गन्दगी दूर हो जाती है। यही जल स्नान करने वाले जल में मिलाकर स्नान करने से शरीर नीरोग रहता है। चरणामृत की भांति प्रतिदिन प्रातःकाल दो घूंट पीने से भी स्वास्थ्य ठीक रहता है।

हृदय रोग पर भी इस प्रकार रुद्राक्ष जल पीने से लाभदायक बतलाया गया है।

चेचक

चेचक का रोग बड़ा खतरनाक और शरीर को कुरूप कर देने वाला होता है। इसे दैवी प्रकोप मानकर प्रायः इसका उपचार नहीं किया जाता है। कभी-कभी यह रोग बड़ा उग्र रूप धारण कर लेता है अैर बड़े-बड़े दाने निकल आते हैं जो फूटने पर बड़ा कष्ट देते हैं।

असह्य वेदना और जलन होने पर रुद्राक्ष मिश्रित औषध का प्रयोग करें।

रुद्राक्ष और काली मिर्च के समान भार को लेकर कूट-पीस कर कपड़े में छान लें। इसे बासी पानी के साथ तीन दिन तक पिलायें, इससे लाभ होगा। रोगी को चैन आयेगा।

चेचक के दाग चेहरा भद्दा कर देते हैं। कच्चे नारियल के दूध में एक प्रहर तक रुद्राक्ष का एक दाना डाल दें। बाद में दाना निकालकर इस दूध की मालिश चेहरे पर करें। एक-डेढ़ माह के प्रयोग से दाग भर जाएंगे और चेहरे पर चमक आ जावेगी।

विष

किसी भी प्रकार का विष हो अथवा असावधानीवश या जानबूझकर पान कर

लिया गया हो तो निम्नलिखित रुद्राक्षयुक्त औषधि दें। निश्चित रूप से विष नाश होना बतलाया गया है।

रुद्राक्ष के भार की चार भाग अधिक ककोड़ा की जड़ लेकर एक लीटर पानी में डालकर खौलाएं। जब दशांश रह जाए तो उसका दुगुना गाय का घी लेकर यह काढ़ा पीड़ित को पिला दें। विष का प्रभाव नष्ट हो जाता है।

बवासीर

रुद्राक्ष के भार का चार गुना अपामार्ग के बीज लेकर उपरोक्त विधि से काढ़ा बनाएं। दस-बारह बूंद मात्रा में प्रतिदिन खाने से हर बवासीर को यह ठीक करता है। सभी प्रकार के बवासीर पर यह गुणकारी है। कांच निकलना एवं गुप्त गुदा रोग भी ठीक करता है।

ज्वर

सभी प्रकार के ज्वर में रुद्राक्ष योग से बनी यह दवा प्रयोग करने की सलाह दी गयी है–

रुद्राक्ष	महुआ
मुलेठी	पन्नाख
खस	नीलकमल
खरेटी की जड़	कम्मारी
फालसा	मुनक्का

उपर्युक्त सभी प्रत्येक 25 ग्राम की मात्रा में लेकर चौगुने स्वच्छ जल में मिलाकर मिट्टी के पात्र में ढंक कर रख दें। प्रातःकाल छानकर साफ बोतल में भर लें। पांच ग्राम सेवन कराएं। हर प्रकार के ज्वर को यह शान्त करता है। प्यास, वमन, चक्कर आना, मूर्च्छा आदि में लाभदायक है। स्त्रियों के हिस्टीरिया नामक रोग को भी शान्त करता है।

एक और तरीके से आप औषधि तैयार कर सकते हैं–

रुद्राक्ष	महुआ
पितापापड़ा	आडूसा
मुनक्का	धनिया

उपर्युक्त सभी प्रत्येक 25 ग्राम की मात्रा में लेकर सबको पीसकर चूर्ण बना लें। चौगुने पानी में डालकर मिट्टी के पात्र में रखें। प्रातःकाल छान लें। शक्कर के साथ रोगी को 5-7 ग्राम की मात्रा में सुबह-शाम दें। यह भी लाभदायक औषधि है।

रक्त प्रदर

रक्त प्रदर स्त्री का शारीरिक स्वास्थ्य, सौन्दर्य सब कुछ नष्ट कर देता है। वह नकारा हो जाती है। यह एक खतरनाक रोग है।

रुद्राक्ष	1 भाग
चौलाई की जड़	2 भाग
रसौत	2 भाग

मात्रा में लेकर चूर्ण बना, 4 गुने जल में मिलाएं। मिट्टी के पात्र में रात भर रखें, सुबह छानकर चावल के धोवन के साथ 10 ग्राम की मात्रा में सेवन कराएं। कुछ दिनों में ही प्रदर रोग शान्त हो जाता है।

रुद्राक्ष के अन्य प्रयोग

रुद्राक्ष के अन्य प्रयोग भी बतलाए गए हैं। इनमें रुद्राक्ष मिश्रित लेपों का बड़ा ही महत्व बतलाया गया है। निर्धारित मात्रा में निर्देशित औषधियों के साथ इसका लेप बनाकर लगाने से लाभ होना बतलाया गया है। इस बात का ध्यान रखें कि रात्रि में लेप का प्रयोग न करें। मोटा लेप सूख जाने पर हटा दिया करें। पतला लेप हो तो उस पर नया लेप चढ़ा दें। यह क्रिया सावधानी से करें।

रात्रि में लेप लगाना निषेध है।

नाना प्रकार के ग्रंथों में रुद्राक्ष के अन्य औषध-प्रयोग इस प्रकार हैं–

- नीम की पत्तियों के साथ रुद्राक्ष की पत्तियां पानी में डालकर औटाएं। फिर इस जल से घाव धोकर रुद्राक्ष पीसकर उस पर बुरक दें। किसी भी प्रकार का कोई भी घाव जिस्म पर कहीं भी क्यों न हो, ठीक हो जाएगा।
- रुद्राक्ष को जल के द्वारा चंदन की तरह घिसें। इस लेप को फुंसियों पर लगाएं। फुंसियां ठीक हो जाएंगी। रक्त-दोष या एलर्जी के चकत्ते पड़ने पर यही लेप प्रयोग करें।
- रुद्राक्ष, बावची इन दोनों का एक भाग हरताल गोमूत्र के साथ पीसकर लगाने से सफेद कुष्ठ नाश होता है। चेहरे या शरीर पर सफेद दाग हों तो नियमित रूप से एक-दो माह लेप लगाने से वह मिटाए जा सकते हैं।
- रुद्राक्ष और बावची को नीम के साथ पीसकर लेप बनायें। इसे लगाने से खुजली ठीक हो जाती है।

- मवाद वाली खुजली के घाव गहरे हों तो रुद्राक्ष और नीम की डण्डी पानी के साथ पीसकर लेप बनाकर लगाएं। आराम मिलेगा।
- गलित कुष्ठ के रोगों में यह लेप बनाएं–

रुद्राक्ष	वायविडंग	हुरहुर
काली मिर्च	कूट	पठानी लोध
मैनसिल	बच	

यह सब समान मात्रा में लेकर गोमूत्र के साथ पीसकर लेप बनाकर लगाएं। गलित कुष्ठ ठीक होता है, यह लगातार लम्बे समय तक प्रयोग करना पड़ता है।

- रुद्राक्ष, खस, लाल चन्दन, कमल की डण्डी, लालकमल, नीलकमल के फूल, आमला, हरड और अनन्तमूल को पानी के साथ पीसकर लेप बनाकर लगाने से पित्त मिटता है।
- श्वेत कुष्ठ का एक और लाभदायक लेप इस प्रकार बनाएं–रुद्राक्ष, कूट, पिपली, मकोय, पंवार के बीज समान भाग में लेकर पानी के साथ घोंटकर गोलियां बनाएं। इन गोलियों को छाया में सुखा लें। काले नर बकरे के मूत्र में पीसकर श्वेत कुष्ठ पर लगाने से वह दूर हो जाता है।
- हरिद्रा, रुद्राक्ष और हरी दूब को समान भाग में लेकर छाछ के साथ पीसकर लेप बनाएं। यह लेप दाद-खाज-खुजली, शीत पित्त और कृमिरोग पर अत्यन्त लाभकारक बतलाया गया है।
- कभी-कभी सिरदर्द बहुत परेशान करता है। आदमी एकदम टूट जाया करता है। रक्त पित्त का रोग भी दुःखदायी होता है। इसके लिए रुद्राक्ष, खस, मुलहठी, चन्दन, खरेटी, व्याघ्रनखी और नीलकमल का पुष्प समान मात्रा में लेकर दूध में पीसकर लेप बना लें। इस लेप को माथे पर लगाएं। आराम आएगा।
- वयः संधि काल से लेकर यौवन के उतार तक प्रायः गालों या गर्दन पर कुछ सफेद चिट्टे-चिट्टे दाग बन जाते हैं। इनको सेंहुआ कहते हैं। प्रायः यह दाग बड़े भद्दे लगते हैं और चेहरे का सौन्दर्य बिगाड़ देते हैं।
- रुद्राक्ष, आमला, यवक्षार और राल समान मात्रा में कांजी के साथ पीसकर लेप बना लें और दाने वाले स्थानों पर लगाएं। कुछ ही दिनों में दाग मिट जाएंगे।
- रुद्राक्ष, खस, कमल की डण्डी, लाल चन्दन, कमल का फूल, नीलकमल का फूल, हरड़ और आमला का अनन्त मूल के साथ समान मात्रा में

पानी से पीसकर लेप बनाएं। यह लेप छाती पर लगाने से खांसी, दमा की हूक, कुकर खांसी तथा छाती के दर्द को शान्त करता है। इस लेप के लगाने से छोटे-बड़ों की खांसी का प्रकोप शान्त होता है।

- चोट, मोच या अन्य किसी कारणवश शरीर के किसी भी भाग में सूजन आ गयी हो, तो रुद्राक्ष, सांठी सोंठ, देवदारू, सहजना और सफेद सरसों समान मात्रा में लेकर कांजी के साथ पीसकर लेप बनाकर उस स्थान पर लगाएं। सूजन ठीक हो जाएगी। सूजन वाला अंग सामान्य हो जाता है।
- सूखी खुजली और दाद बड़े कष्टदायक होते हैं। खुजलाते-खुजलाते परेशान हो जाते हैं, रोग शान्त नहीं होता है। अतएव रुद्राक्ष, हरड़, वन तुलसी, पंवाड़ के बीज तथा सेंधा नमक समान मात्रा में लेकर मुट्टा के साथ पीसकर लेप बनाकर पीड़ित अंग पर लगाएं। निश्चित रूप से शान्ति मिलेगी और बीमारी भी बराबर प्रयोग के कारण ठीक हो जाएगी।
- विषैला बरसाती कोई कीड़ा, बिच्छू, ततैया आदि के काट लेने पर उसका विष बड़ा कष्ट देता है। प्रायः देश का कांटा टूटकर फंसा रह जाता है। ऐसी दशा में रुद्राक्ष, कलिहारी, मूली के बीज, अतीस, कड़वी तुम्बी के बीज तथा तोरई के बीज समान मात्रा में लेकर कांटी के साथ पीसकर लेप बनाकर लगाएं। टूटा डंक स्वतः बाहर आ जाएगा और विष का प्रभाव भी धीरे-धीरे जाता रहेगा।
- खांसी के साथ ढेरों बलगम निकलता है। वृद्धावस्था में यह अधिक होता है। खांसते-खांसते पीड़ित का बुरा हाल हो जाता है। ऐसी दशा में रुद्राक्ष, राल, रेणुका, लोध, मूर्वा, गुलहरो, पद्माख, सिरस का फूल, नीले कमल का फूल समान भार में लेकर लेप लगाएं। सौ बार गाय के धोए दूध को मिलाकर छाती पर लगाएं। उक्त खांसी से शीघ्र आराम मिलेगा। बलगम का प्रकोप भी शान्त पड़ जाएगा।
- प्रायः कुछ घाव इस प्रकार के होते हैं कि उनमें कीड़े पड़ जाया करते हैं। कुछ घावों से बेतरह दुर्गन्ध भी आने लगती है या इस प्रकार सड़ जाया करते हैं कि देखने मात्र से घिन लगती है। इस प्रकार के घावों पर रुद्राक्ष, हल्दी, मुलहठी, दारू हल्दी, लाल चन्दन, सिरस की छाल, तगर, जटामासी, छोटी इलायची के बीज, कूट, समान भार में लेकर चूर्ण बनाएं। पानी मिला गाढ़ा लेप बना लें। इसके बाद 2/5 भाग गाय का घी मिलाकर

इस लेप को लगाएं। कीड़े मर जाएंगे, और घाव भी साफ हो जाएगा।

- रुद्राक्ष, रास्ना, नीला कमल, लाल चंदन, कमल, मुलहठी, देवदारू और खरेटी समान मात्रा में लेकर चूर्ण बनाएं तब गोघृत और गो-दूध मिलाकर लेप बनाकर छाती पर लगाने से कफ की अधिकता कम होती है।
- शरीर पर हो गयी फुंसियां या फोड़े पक गये हों, तो असह्य पीड़ा होती है। रुद्राक्ष, पिप्पली, रसौत और काली मिर्च समान भाग लेकर पानी में पीसकर लेप बनायें। इस लेप को लगाने से शीघ्र आराम मिलता है और फुंसी-फोड़े फूट जाते हैं।
- रुद्राक्ष, मंजीठ, खस, पद्माख, कनेर की जड़ और घमासा एक बराबर भार में लेकर लेप बनाएं। शुद्ध गोघृत भी मिला दें। इसको गले और छाती पर लगाएं। सूखी खांसी का प्रकोप शान्त हो जाएगा।
- हाथों में होने वाली खुजली बड़ी कष्टदायक और मवादभरी होती है। दोनों हथेलियां मानो सड़ गयी सी लगती हैं। ऐसे में रुद्राक्ष, वायविडंग, स्वर्णक्षीरी, गंधक, कूट, सिंदूर समान मात्रा में लेकर धतूरे, नीम और पान के साथ लेप बना लें और इसे लगाएं। एक सप्ताह में ही फर्क पड़ जाएगा। लगातार प्रयोग से उक्त रोग से छुटकारा मिल जाएगा।

आग से जलने पर

अग्नि दाहक होती है। इस जीवन में एक भी व्यक्ति ऐसा न मिलेगा, जिससे कभी-न-कभी इस दाहकता से थोड़ी या अधिक चोट न खाई हो। कभी-कभी अग्नि के कारण मनुष्य बेहद पीड़ित हो जाता है। आग से जल, दहक, झुलस गया शरीर का अंग बड़ी जलन पैदा करता है। मनुष्य को मर्मांतक पीड़ा होती है।

रुद्राक्ष इस सम्बन्ध में एक उपयोगी औषधि है। यह शीतलता प्रदान करता है। जल गया अंग भी शीघ्र भर देता है। विभिन्न ग्रन्थों में इसके तीन उपयोग बतलाए गए हैं—

- रुद्राक्ष, गेरू, गिलोय, लाल चन्दन, वंशलोचन समान भार में लेकर चूर्ण बनाएं। गोघृत का प्रयोग कर लेप बना लें। आग से जल गए भाग पर लगाएं। शीतलता होगी। साथ ही कुछ दिनों में घांव भरकर त्वचा भी ठीक हो जाएगी। जलने का निशान भी न रहेगा।
- रुद्राक्ष को पीसकर नारियल के तेल में मिलाकर लेप बनाएं। जल गए स्थान पर लगाने से तत्काल जलन शान्त होती है और आराम मिलता है।

- रुद्राक्ष, सफेद चन्दन, गिलोय—इन तीनों को बराबर
के पानी में पीसें। समान मात्रा में नारियल का तेल
गए स्थान पर लगाएं। जलन नहीं होगी और शीघ्र

शिरोरोग

सिरदर्द एक आम रोग है। अक्सर प्रत्येक व्यक्ति इस
होता रहता है। यह कई प्रकार का होता है। रुद्राक्ष द्व
इस प्रकार बतलाया गया है—

- रुद्राक्ष, पद्माख, कमल, लाल चन्दन की जड़ समान म
के साथ पीस लें। फिर इसके लेप को लगाएं। इससे सर्द
नष्ट हो जाता है।
- रुद्राक्ष को पानी के साथ घिसकर उसी में देशी कपूर
माथे पर लेप करने से हल्की सिर-पीड़ा, सिर में खुज
देता है।
- रुद्राक्ष, मुलहटी, कूट, अनन्त, पिप्पली, नीलकमल,
कांजी के साथ पीसकर अरण्डी के तेल में मिलाकर ले
आधासीसी तथा गर्मी से होने वाले सिरदर्द में भी श
- रुद्राक्ष, कूट, तगर, सौंठ, देवदारू, खस को कांजी के
का तेल मिलाकर लेप बनाएं। इस लेप को माथे पर
कारण उत्पन्न सिरदर्द ठीक हो जाता है।
- रुद्राक्ष और कूट को कांजी में पीसकर अरण्डी के तेल
पर लेप करते ही आराम हो जाएगा। तीव्र सिरदर्द से तु
है।
- रुद्राक्ष, कूट, देवदारू, सौंठ और पावण्ड के बीज सम
मूत्र के साथ पीसें। हल्का-सा गुनगुना कर लेप करें
लाभ होता है।
- रुद्राक्ष, सफेद चन्दन, नीलकमल समान भाग में मि
गर्मी के कारण उत्पन्न सिरदर्द में लाभ देता है।
- रुद्राक्ष, शतावरी, दूब, नीलकमल, पुनर्नवा, काले तिल
पानी में पीसकर लेप बनाएं। इसे माथे पर लगाने से
उत्पन्न सिरदर्द, कनपटी का दर्द दूर हो जाता है।

सौन्दर्यवर्धक प्रयोग

- कुछ स्त्री-पुरुष के शरीर से पसीना ऐसा आता है कि दुर्गन्ध बहुत आती है। ऐसे लोग रुद्राक्ष, दालचीनी, लाल चन्दन, कुलथी और कूट समान भार में लेकर पानी मिलाकर उबटन बनाएं। उसका शरीर पर लेप करें। सूख जाने पर स्नान करें। किसी प्रकार के साबुन का इस्तेमाल न करें। कुछ समय के उपरान्त शरीर से उठने वाली दुर्गन्ध समाप्त हो जाएगी।
- रुद्राक्ष, कूट, करड़ और देशी पान के पत्ते जल के साथ पीसकर उबटन बनाएं। इसका प्रयोग करने से भी शरीर की दुर्गन्ध नाश होती है।
- रुद्राक्ष से चार गुना अधिक बादाम की गिरि, मसूर की दाल, इतने ही गुलाबजल के साथ पीसकर चेहरे पर लेप करें। सूख जाने पर धो डालें। इसके नियमित प्रयोग से सौन्दर्य निखार पर आता है।
- रुद्राक्ष, बच, पठानी धनिया, लोध समान भाग में पीसें और चेहरे पर लेप करें। कील-मुंहासे मिट जाएंगे।
- कील-मुंहासे सौन्दर्य बिगाड़ देते हैं। रुद्राक्ष, काली मिर्च, वंशलोचन को समान मात्रा में लेकर लेप बनाकर चेहरे पर लगाएं। इससे मुंहासे ठीक होते हैं।
- इसी प्रकार रुद्राक्ष, पठानी लोध, बच, सफेद सरसों और सेंधा नमक का लेप बनाकर चेहरे पर लगाने से कील-मुंहासे मिटते हैं।
- रुद्राक्ष, लाल चन्दन, वट के पीले पत्ते, कूट, चमेली के पत्ते समान भाग में पीसकर उबटन बनाएं। यह रंग उजला करता है, चेहरे पर तेज लाता है।
- रुद्राक्ष और मंजीठ समान मात्रा में पीसकर चूर्ण बनाएं। शुद्ध मधु, मक्खन बराबर मात्रा में मिलाकर लेप बनाएं और चेहरे पर लगाएं। सूख जाने पर मुंह धो डालें। यह कील-मुंहासों को मिटाकर चेहरा सुन्दर बनाता है।
- रुद्राक्ष और अर्जुन की छाल पीसकर चूर्ण बनाएं। बारीक कपड़े में छानें फिर बराबर मात्रा में शहद-मक्खन मिलाकर चेहरे पर मालिश करें। इससे सौन्दर्य में बहुत निखार पर आ जाता है।

गुप्त रोग

- गुप्त रोग अत्यन्त कष्टदायक होते हैं। इन सब में उपदंश सबसे घातक

रोग है। यह अपना फैलाव कर जीवन दुश्वार कर देता है। रुद्राक्ष का औषधि रूप में प्रयोग कर इस घातक रोग से छुटकारा पाया जा सकता है। ग्रन्थों में तीन प्रकार के उपदंश का उपचार रुद्राक्ष द्वारा बतलाया गया है।

- रुद्राक्ष भार में दो गुनी हरड़, रसौत और सिरस की छाल चौगुने भार की मात्रा में लेकर कूट-पीसकर चूर्ण बनाएं। कपड़े में छानकर शहद मिलाकर के घावों पर लगाएं। इससे शीघ्र स्वास्थ्य लाभ होगा। उपदंश मिट जाएगा।
- रुद्राक्ष की चार गुनी त्रिफला की भस्म शहद में मिलाकर लेप बनाएं। इसके उपयोग से उपदंश मिटता है। त्रिफला को लोहे की कढ़ाई में डालकर हल्की आग पर चढ़ा दें। जलकर भस्म हो जाएगा। यही भस्म काम में लाएं।
- रुद्राक्ष के भार से पांच गुनी कनेर की जड़ पानी के साथ पीसकर लेप बनाएं। इसे उपदंश पर लगाने से उपदंश मिटता है। पीड़ा को शांत करता है।

केशों के लिए

रुद्राक्ष द्वारा स्त्री-पुरुष के केशों का उपचार भी सम्भव है। केश घने लम्बे काले हो सकते हैं। सफेद बाल काले किए जा सकते हैं। अवांछित बालों को हटाया भी जा सकता है।

- रुद्राक्ष = 1 ग्राम पलाश का क्षार = 5 ग्राम
  हरताल = 5 ग्राम शंख चूर्ण = 15 ग्राम
  इन सबको खरल में डालकर कूट-पीस लें। फिर मदार के पत्तों का रस मिलाकर घोटें। जब लेप बन जाए तो जहां के बाल उड़ाने हों, वहां लगा दें। कुछ देर बाद रगड़कर पोंछ डालें। उस स्थान के बाल साफ हो जाएंगे।
- रुद्राक्ष, हरड़, बहेड़ा, आमला, भृंगराज, लोहचूर्ण और काली मिट्टी समान मात्रा में लेकर चूर्ण बनाएं। इसे ईख के रस में घोलकर मिट्टी के पात्र में भरकर दफना दें। एक माह के बाद निकालकर प्रयोग करें। असमय में सफेद हो गए बालों को यह काला कर देता है। तीन-चार माह तक नियमित प्रयोग करने पर बाल स्थायी रूप से काले हो जाते हैं।
- लोह का चूर्ण त्रिफला के काढ़े में खूब औटाने पर एकदम मिट्टी के समान

हो जाता है। वही लौहचूर्ण उपरोक्त विधि के अनुसार ही इसे अपनाएं।

- रुद्राक्ष, आमला, हरड़, बहेड़ा, भांगरा, लौहचूर्ण (उपरोक्त) नीचे कमल के पत्ते समान भाग में लेकर भेड़ी के मूत्र में पीसकर बालों पर लगाने से सफेद बाल काले हो जाते हैं।
- रुद्राक्ष 50 ग्राम, बहेड़ा, हरड़, आमला प्रत्येक 200 ग्राम कमलनाल और छिलका अनार प्रत्येक 250 ग्राम खूब कूट-पीस लें और भांगरे के 3-½ लीटर पानी में डालकर लोहे के पात्र में भर लोहे का ढक्कन लगा, जमीन में दफना दें। एक माह बाद निकालकर बालों पर लगाएं। समान भाग बकरी का दूध मिलाकर बालों में लेप करें। अरण्डी के पत्तों से इनको ढक-लपेटकर सो जाएं। प्रातः उठकर स्नान कर धो डालें। कुछ ही बार के प्रयोग से बाल स्थायी रूप से काले हो जाते हैं। जड़ से भी काले आने लगते हैं।
- रुद्राक्ष, बहेड़ा, बड़ी हरड़ एक दाना, आमला तीन, आम की गुठली का भीतरी भाग, पांच नग और दस ग्राम लौहचूर्ण पानी के साथ पीस लें। रात को यह लेप खोलकर खुले आकाश के नीचे रख दें। प्रातःकाल इस लेप को लगायें। इस लेप से भी बाल काले होते हैं।

केश घने, लम्बे और काले करने के भी उपाय हैं। निम्नांकित प्रयोगों के द्वारा केश घने और लम्बे होना बतलाया गया है। कुछ दिनों के प्रयोग के उपरान्त केश घने, लम्बे हो जाते हैं और बालों का झड़ना बन्द हो जाता है। विभिन्न ग्रन्थों में बतलाए गए नुस्खे इस प्रकार बनाना बतलाया है–

- रुद्राक्ष से चार गुना अधिक गोखरू, तिल के फूल लेकर चूर्ण बना, कपड़े से छान लें। फिर गोघृत मिलाकर लेप बना लें। इसके प्रयोग से बाल ठीक तो रहेंगे ही। घने, लम्बे होंगे और बालों का झड़ना भी बन्द हो जाएगा।
- केश रेशम से मुलायम घने और काले करने के लिए रुद्राक्ष, मुनक्का, मुलहटी, कमल समान मात्रा में लेकर कूट-छानकर गाय का दूध मिला दें। बाद में तिल्ली-तेल तथा गोघृत इस प्रकार मिलाएं कि लेप बन जाए। इसके प्रयोग से केश अवश्य रेशमी, घने, मुलायम होंगे।
- रुद्राक्ष से चार गुनी मात्रा में गुंजाफल चूर्ण बना, कपड़े में छानें। शुद्ध मधु में मिलाकर लेप बनाएं। यह भी लाभदायक लेप है।

कई बार देखा गया है, सिर पर कई जगह के बाल झड़ जाया करते हैं। ऐसा हो तो निम्नलिखित दवाओं में से किसी एक दवा का प्रयोग करें—

- रुद्राक्ष का महीन चूर्ण बनाकर कड़वे परवल में पत्तों के रस में मिलाकर लेप करें। इसका कुछ समय तक प्रयोग करने पर उड़ गए स्थान के बाल फिर आने लगते हैं।
- रुद्राक्ष का चूर्ण शहद और कटेरी का रस मिलाकर उस स्थान पर लगाएं, जहां के बाल उड़ गए हों। इसके प्रयोग से फिर बाल आने लगते हैं।

प्रायः शरीर के किसी भाग में सूजन आ जाया करती है। यह वात, पित्त और कब्ज होती है। रुद्राक्ष का औषध रूप में प्रयोग कर इसका उपचार किया जा सकता है। इसके उपचार विभिन्न ग्रन्थों में निम्न प्रकार बतलाए गए हैं—

- रक्त-प्रकोप से उत्पन्न सूजन के उपचार के लिए रुद्राक्ष, हल्दी, दारूहल्दी, दूब, पुनर्नवा, हरड़, रसौत, गैरुख, खस, पठानी लोध, सफेद चन्दन, पद्माख, लाल चन्दन समान मात्रा में लेकर पानी मिला, पीसकर लेप बनाएं। पीड़ित भाग पर लगाने से लाभ होता है।
- सर्दी के कारण शरीर का कोई अंग फूल गया हो, सूजन आ गयी है, तो रुद्राक्ष, देवदारू, सोंठ, जटामासी, अरगी बिजौरू, रास्ना की जड़, समान मात्रा में लेकर पानी के योग से पीसकर लेप बनाकर सूजन पर लगाएं। निश्चित लाभ होगा।
- रुद्राक्ष, सहजन की छाल, पिप्पली, बालू, हरड़, पुरानी खल, समान मात्रा में लेकर गोमूत्र के साथ पीसकर लेप बनाएं और इसको गर्म कर पीड़ित अंग पर लगाएं, कफ के कारण उत्पन्न सूजन को तत्काल समाप्त कर देता है।
- पित्त-दोष से उत्पन्न सूजन का उपचार करने के लिए रुद्राक्ष, मुलहठी खस, दूर्बा, पद्माख, नरसल की जड़, नेत्र बाला, कमल, लाल चंदन समान मात्रा में लेकर पानी के द्वारा पीसकर लेप बनाएं। पित्त के कारण उत्पन्न सूजन पर बड़ा लाभदायक है।

काढ़ा

रुद्राक्ष का काढ़ा भी बनता है। यह अनेक रोगों का शमन करता है। शरीर को नीरोग रखता है। खून साफ रखता है। नाना प्रकार के उपद्रवों को शान्त करता है। शरीर स्वस्थ, फुर्तीला, तेजस्वी बना रहता है। निम्नलिखित क्वाथ हैं—

- रुद्राक्ष, किशमिश, हरड़ और आडूसा की जड़ की छाल समान भार में

लेकर बत्तीस गुने जल में डालकर आग पर चढ़ा दें और उसे खौलने दें और 1/8 अंश रह जाने पर उतार लें। शुद्ध शहद मिलाकर 2 से 3 ग्राम की मात्रा में प्रातःकाल सेवन करें। सांस की बीमारी, खांसी और रक्त-पित्त में लाभदायक है।

- रुद्राक्ष, शुण्ठी, कुटकी, गिलोय, दारूहल्दी, पुनर्नवा, नीम की छाल—इन सबको समान मात्रा में लेकर पीस लें और उपरोक्त विधि के अनुसार जल मिलाकर काढ़ा (क्वाथ बनाएं), गुनगुना पिलाएं। श्वास, पीलिया, पेट तथा पसलियों के दर्द में लाभदायक है। सर्वांग शोथ में भी गुणकारी बतलाया गया है।
- रुद्राक्ष, देवदारू, चित्रक, शुण्ठी, गिलोय, दारूहल्दी, हरड़, धारंगी, पुनर्नवा समान मात्रा में लेकर उपरोक्त विधि से काढ़ा बनाकर सेवन करें-कराएं। हाथ-पैर, चेहरे, उदर पर होने वाली सूजन में गुणकारी है। कफ की बीमारी मिटा देता है।

अन्य उपचार

रुद्राक्ष के अन्य औषध-प्रयोग जिनका उल्लेख ग्रंथों में किया गया है, उनका विवरण प्रस्तुत है—

- रुद्राक्ष, बालू, ईंट का चूर्ण, लौह-चूर्ण, गोबर समान मात्रा में लेकर गोमूत्र के साथ पीसें। गुनगुना कर भीतरी चोट या मोच खा गए अंग पर लगाएं। तत्काल लाभ होगा।
- रुद्राक्ष, मूली के बीज, अलसी के बीज, सहजन के बीज समान भार में लेकर चूर्ण बनाएं। कपड़े से छान लें। खट्टी छाछ मिलाकर लेप बनाएं। गंडमाला, गलगंड और अर्बुद रोग पर यह लेप लगाने से उनका नाश होता है।
- रुद्राक्ष, गेहूं, जौ, निर्गुण्डर, एरंड-मूल और सहजन की छाल समान मात्रा में लेकर पानी मिलाकर लेप बनाएं। गुनगुना कर लगाएं। यह कारवंकल जैसे फोड़े को ठीक कर देने वाली अचूक औषधि बतलायी गयी है।
- रुद्राक्ष से दो गुनी मुलेठी, शर्करा और धान की खील दोनों चार गुनी मिलाकर पीसें। घी में लगाकर लेप करें। बरसाती फोड़े-फुंसी तुरन्त ठीक करता है।
- रुद्राक्ष की मात्रा से दशमूल की सभी औषधियां दस गुना लेकर पीसें।

लेप बनाएं। गुनगुना कर लगाएं। यह गलगंड पर अचूक है।

- रुद्राक्ष का तीन गुना देवदारू, चार गुनी इन्द्रायण की जड़ लेकर पीसें और गुनगुना कर लेप बनाएं। यह भी गलगंड की उत्तम दवा है।
- कुछ लोगों के नाक-कान छोटे होते हैं, स्तन भी छोटे रह जाते हैं या उभार ही नहीं होता है। नाक, कान या स्तन उभार के लिए यह लेप बनाएं। रुद्राक्ष, तिल, उड़द, कूट, अपामार्ग, जौ, काली मिर्च, तगर, पिप्पली, बड़ी कटेरी के फल, सेंधा नमक, असगंध समान मात्रा में लेकर चूर्ण बना, कपड़े में छान लें। फिर शहद मिलाकर लेप लगाएं। स्तनों पर लगाने से वह बड़े भारी, गोल और सुन्दर बनते हैं। कान, नाक उचित आकार में आते हैं। कई माह तक लेप लगाएं, जब सूख जाए तो घी डालें। रात को लगाकर सो जाएं तो सर्वोत्तम है। सुबह उठकर घी डालें।
- घाव में कीड़े पड़ गए हों तो रुद्राक्ष, नीम की छाल, निर्गुण्डी, करंज की छाल समान मात्रा में लें। पानी के साथ पीसें। लेप बनाकर घाव पर लगाएं। सारे कीड़े मरेंगे और घाव भी भर जाएगा।
- खूनी बवासीर के मस्से बड़ा कष्ट देते हैं। रुद्राक्ष से पांच गुनी तोरई की जड़ लेकर पानी में पीसकर लेप बनाएं। खूनी बवासीर के मस्सों पर लगाने से आराम मिलता है।
- फोड़े-फुंसियां पक न रहे हों, मवाद (पस) बाहर न आ रहा हो, तो बड़ी पीड़ा का सामना करना पड़ता है। ऐसा होने पर रुद्राक्ष, निशोथ, तिल, दन्तीमूल, सेंधा नमक मिलाकर चूर्ण बनाएं। कपड़े से छान लें। शहद मिलाकर लेप बनाएं और प्रयोग करें। तुरन्त पकेगा और मवाद बाहर आ जाएगा। आराम हो जाएगा।
- बवासीर के मस्से बड़ा दुःख देते हैं। उनको मिटाने के लिए यह लेप बनाएं। रुद्राक्ष, करंज की छाल और कडुवी तुम्बी के पत्ते बकरे के मूत्र में मिलाकर पीसकर लेप बनाएं। इसमें थूहर का दूध मिला दें। उसका लेप करने से बवासीर के मस्से गिर जाया करते हैं।
- फीलपांव एक भयानक रोग है। इसके आसार नजर आते ही रुद्राक्ष, एरंड-मूल, सरसों, निर्गुण्डी, धतूरा, सहजन की छाल और पुनर्नवा समान भार में लेकर पानी में पीसकर लेप बनाएं। इसका प्रयोग कर इसे रोक सकते हैं। फीलपांव ही हो गया हो तो इसके नियमित सेवन से इससे छुटकारा पाया जा सकता है।

- पेटदर्द असहनीय हो तो रुद्राक्ष भार से दो गुना कुटकी और मैनफल तीनों को कांजी के साथ पीसकर लेप बनाकर गुनगुना गरम कर नाभि पर लगाएं। उदरशूल पर लाभदायक है।
- गर्मी के मौसम में प्रायः नाक फूट जाती है और रक्त की धारा बहने लग जाती है। रुद्राक्ष को देशी घी में भूनें, फिर चार आमला आग में भूनें तब दोनों को कांजी के साथ पीसकर लेप बना, मस्तक पर लगाएं। नकसीर नहीं होगा और नाक से खून बहना बन्द हो जाएगा।
- रुद्राक्ष से चार गुनी पिप्पली लेकर दोनों को पीसकर चूर्ण बनाएं। कपड़े में छान लें। आवश्यकतानुसार शुद्ध शहद मिला दें। इसे थोड़ा-सा चटा देने पर श्वास, खांसी, तिल्ली रोग, ज्वर दूर होता है। शिशुओं के लिए यह एक गुणकारी औषध है। गला बैठ गया हो तो चाटकर 2 ग्राम पानी पी लें। गला खुल जाएगा।
- पेशाब का रुकना एक खतरनाक बीमारी है। इससे मौत भी हो सकती है। रुद्राक्ष से दो गुना गोखरू की जड़, गोखरू के बीज तथा रुद्राक्ष से चार गुना ककड़ी के बीज कांजी के साथ पीसकर लेप बना पोत पर लगाएं, महिला है तो पेडू पर लगाएं। रुका मूत्र थोड़ी देर में बाहर आ जाएगा।
- चेचक के दाने पक जाने पर पीव पड़ जाने पर रोगी का शरीर खराब हो जाता है। आंखें फूट जाती हैं। ऐसा हो तो रुद्राक्ष का चौगुना फुलाया सुहागा जैतून के तेल में घिसकर लेप बना, दानों पर लगाएं। लाभ होगा।
- रुद्राक्ष, पिण्ड खजूर का गूदा, अफीम समान मात्रा में लेकर पानी के साथ खरल करें। आधी रत्ती की गोलियां बना लें। लगातार दस्त लगने पर एक गोली दिन में तीन बार देने पर रोग ठीक हो जाता है।

यह सब रुद्राक्ष के गुण हैं। हमारी प्राचीन जड़ी-बूटियों में अद्भुत शक्ति है। चिकित्सा में इन सबका बड़ा महत्व है। इनके अटपटे नाम हमें बड़े विचित्र लगते हैं, यह सरलता से पंसारी या आयुर्वेद दवा की दुकानों पर मिल जाती हैं। इनकी आप उपेक्षा न करें। अपनाकर देखेंगे तो इनका चमत्कार आपको दंग कर देगा। अपने प्राचीन विद्वानों पर विश्वास करें। सम्मान के साथ पालन करें। अवश्य लाभ होगा।

प्रिय पाठकों! वास्तव में इस धरती से ही रत्नों, मणियों और रुद्राक्षों की उत्पत्ति होती है। यह हमारी पृथ्वी के ही जल, थल व पहाड़ों में से प्राप्त होते हैं। इसीलिए पृथ्वी को रत्नगर्भा कहा है। ऐसी धरती जिसके गर्भ में रत्नों का भण्डार भरा हो

सागर का दूसरा नाम रत्नाकर भी है। इतना ही नहीं कुछ रत्न तो सागर में ही चट्टानों के रूप में या मोतियों के रूप में मिलते हैं। यह वैज्ञानिक युग है। यहां हर बात को तर्क, प्रयोग और अनुसंधान पर ही आधारित करके किसी भी व्यक्ति को समझाया जा सकता है। इसलिए ज्ञान तो आवश्यक है। मैं यह नहीं कहता कि ज्योतिष शास्त्रों या आयुर्वेद के ग्रंथों में जो कुछ लिखा है; उसे अध्ययन, शोध, प्रयोग एवं वैज्ञानिक अनुसंधान के बिना ही लिख दिया गया है। हमारे मनीषियों ने जो भी निर्णय दिए हैं जो भी लिखा है उसे काफी शोध करने एवं प्रयोग करने के पश्चात् पूर्ण अनुसंधान करके ही लिखा है। फिर भी हमें एक बात को समझकर तर्कसंगत एवं वैज्ञानिक स्वीकार कर ही प्रयोग करना चाहिए। वैज्ञानिक दृष्टि से अपवर्तन एवं परावर्तन सिद्धान्त ही पारदर्शी रत्नों के प्रभावों में प्रयुक्त होता है। विज्ञान के साधारण छात्र भी इसे भली प्रकार समझ सकते हैं।

आज के युग में विज्ञान का योगदान कम नहीं है। रत्न और रुद्राक्ष की प्रामाणिकता स्वयं सिद्ध है। आप स्वयं देखें। आज दुनिया का सबसे सुन्दर रत्न है—एलेग्जेंड्राइट। दुनिया के 12 बेतरह, आकर्षक लोकप्रिय नगीनी में क्राइसोबेरिल भी शामिल है। एलेग्जेंड्राइट क्राइसोबेरिल खनिज परिवार का एक रत्न है। इसमें बेरिलियस रासायनिक तत्व का समावेश होता है। यह सख्त होता है और भली-भांति कटाई के पश्चात् इसकी चमक-दमक देखने योग्य है। लहसुनिया (कैट्स आई) को इसका भाई-बहिन कहते हैं। इसकी सबसे बड़ी विशेषता है कि सूरज की रोशनी में इसका रंग हल्का हरा ही रहता है, जबकि बल्ब के प्रकाश तले इसका रंग स्वयं लाल या भूरा होने लगता है। पहली बार देखने पर अपनी आंखों पर विश्वास करना कठिन हो जाता है।

एलेग्जेंड्राइट का रंगीन दुनिया में झांकना बहुत रोचक है। एलेग्जेंड्राइट का जन्म 1830 में रूस में हुआ था। प्राचीन रूस के शाही रंग लाल और हरा थे, इसीलिए नगीने का नाम सीजर एलेग्जेंडर (द्वितीय) पर रख दिया गया। रूसी खजाने में एलेग्जेंड्राइट जड़ित गहनों का भण्डार है। रूस के उर्त्त इलाके का एलेग्जेंड्राइट तो आज भी बेशकीमती है।

लेकिन अत्याधुनिक गहनों में एलेग्जेंड्राइट की लोकप्रियता बढ़ाने का श्रेय टिपीनी के नगीना विशेषज्ञ जोर्ज कुंज को जाता है। रूस के अतिरिक्त एलेग्जेंड्राइट श्रीलंका, जिम्बाब्वे, ब्राजील और बर्मा में भी पाया जाता है। लेकिन इनमें रंग बदलने की गति कुछ धीमी होती है। भारत के उड़ीसा और मध्य प्रदेश राज्यों में तो इसका प्रचुर भण्डार है। आजकल तो सिथटिक अथवा नकली एलेग्जेंड्राइट भी बाजार में उपलब्ध है।

मूल्य निश्चित करते समय जौहरी सबसे ज्यादा एलेग्जेंड्राइट के रंग बदलने की रफ्तार और तीखेपन पर गौर करते हैं। सुर्ख लाल से हरे रंग में बदलता एलेग्जेंट्राइट वाकई अतिदुर्लभ है। बीच-बीच में भूरा रंग झलकने से भाव गिर जाता है। वैसे 85 से 90 फीसदी रंग बदलने वाले एलेग्जेंड्राइट का भाव एक लाख रुपया प्रति कैरेट के आसपास है। हीरों की भांति एलेग्जेंड्राइट का भाव कट, कलर, कैरेट और कलेरटी पर निर्भर करता है यानी एलेग्जेंड्राइट की कीमत रंग, शुद्धता, कटाई के ढंग और वजन के साथ बढ़ती-घटती है।

सदियों पुरानी मान्यता है कि कैट्स आई की तरह एलेग्जेंड्राइट पहनने से बुरी नजर नहीं लगती। पश्चिमी देशों के लोगों का मानना है कि शुक्रवार को जन्मे जातकों को पहनना शुभ फलदायक होता है। यह एक आधुनिकतम खोज है।

रत्न खनिज, प्राणिज या वानस्पतिक हों उनका या उनमें से किसी एक का प्रयोग हर जातक नहीं कर सकता। क्यों? क्यों का उत्तर है कि एक ही रत्न या मणि हर व्यक्ति को शुभ नहीं होता है, जबकि रुद्राक्ष कोई भी धारण कर सकता है।

खेद का विषय है आज रुद्राक्ष भी नकली, बने हुए मिलते हैं, विशेष रूप से एकमुखी रुद्राक्ष तो बना मिलता ही है। आप एकमुखी नकली रुद्राक्ष से बचें। एकमुखी रुद्राक्ष को शिव का प्रतिरूप, उनका प्रिय आभूषण माना जाता है। शिवजी का प्रभाव तो सभी दानों में रहता है, पर अन्य देवताओं की शक्ति किन्हीं विशेष दानों में रहती है। अतः रुद्राक्ष का महत्व विचारणीय है।

इस दृष्टि से एकमुखी दाना सर्वश्रेष्ठ होता है।

वैसे तो यह अलभ्य होता है, किन्तु जिसे मिल जाए, तो वह निश्चय ही सौभाग्यशाली हो जाता है। एकमुखी रुद्राक्ष का दर्शन, पूजन और धारण करने वाला जातक समस्त बाधाओं और संकटों से मुक्त रहता है। रुद्राक्ष की सभी श्रेणियों में एकमुखी सर्वश्रेष्ठ दाना होता है। मुख्यतः इसे दो आकारों में देखा गया है, गोल और अर्द्धचन्द्राकार।

एकमुखी दाना वास्तविक और शुद्ध होना चाहिए। आजकल नकली एकमुखी दाने देकर लोग बेतरह लूट रहे हैं। अतः सावधान रहना चाहिए। अगर सौभाग्यवश यह दाना कहीं से प्राप्त हो जाए, तो इसे विधिवत् धारण करना चाहिए। इस दाने की पूजा और धारण के समय इसके मंत्र का जप करना लाभकारी होता है। वैसे मात्र "ॐ नमः शिवाय" का जप लाभकारी होता है। एकमुखी रुद्राक्ष साक्षात् शिव है और ब्रह्महत्या को दूर करता है।

जो मनुष्य रुद्राक्ष को धोकर धारण कर जलपान करे, तो वो सर्वपापमुक्त होकर

शिवलोक में पहुंचता है। जो मनुष्य रुद्राक्ष को मंत्र सहित धारण करते हैं, वो शिवलोक में जाकर वास करते हैं। रुद्राक्ष धारण करने से पशु भी शिवलोक को प्राप्त होते हैं, तो फिर मनुष्य की बात को कौन कहे।

जो शिव में चित्त लगाकर रुद्राक्ष धारण करता है वो शिवलोक में शिव के समान नमस्कृत होता है। विद्यावान् या अविद्यावान् कोई भी रुद्राक्ष धारण करे, तो वह शिवलोक को प्राप्त होता है।

एक मुख वाला रुद्राक्ष साक्षात् शिव-रूप है। वो भोग और मोक्षरूपी फलदाता है। जहां रुद्राक्ष की पूजा होती है, वहां से लक्ष्मी दूर नहीं जाती, उपद्रव नष्ट होते हैं और सभी कामनाएं पूर्ण होती हैं।

आपसे पुनः निवेदन है आप भद्राक्ष, नकली बनाएं हुए रुद्राक्ष से बचें। असली, प्राकृतिक और विद्वान् द्वारा बतलाए गए रत्न और रुद्राक्ष पहनकर अपना जीवन संवारें। हां, प्राणप्रतिष्ठा (अभिमन्त्रित) कराना ना भूलें।

रत्नों का मानव-जीवन पर प्रभाव अवश्य पड़ता है। इसको धारण करने के पूर्व योग्य जानकार से सम्पर्क करना आवश्यक होता है। नहीं तो ये शुभ या लाभ पहुंचाने के बजाय अनिष्ट या हानि पहुंचा सकते हैं।

□□□

9 और अब अन्त में..........

प्रत्येक जातक अपना भविष्य, जीवन की महत्वपूर्ण घटनाएं, लाभ-हानि और घात-प्रतिघात जानने के लिए सदैव उत्कण्ठित रहता है। इस भविष्य को पहले से ही जान लेने के लिए हमारे ऋषियों ने कई सिद्धान्त प्रतिपादित किए हैं, जिनमें सामुद्रिक शास्त्र ज्योतिष, ताजिक रमल आदि मुख्य हैं। सामुद्रिक और ज्योतिष मानव की वे प्रारम्भिक वैज्ञानिक उपलब्धियां हैं जिन्हें ऋषि सभ्यता के प्रथम चरण में ही प्राप्त कर चुके थे। प्रत्येक विज्ञान का आधार जिज्ञासा रहा है। इस जिज्ञासा के ही कारण असभ्य और बर्बर मानव सभ्यता के पथ पर चलता हुआ आज अणु युग में प्रवेश पा चुका है, जहां खड़ा रहकर वह न केवल पृथ्वी, अपितु आकाश के छोरों तक भी हाथ मारने लगा है।

भारतीय ज्योतिष पद्धति के अनुसार सात मुख्य ग्रह हैं, जोकि निरन्तर हमारे जीवन को संचालित करते रहते हैं। ये ग्रह हैं—सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि। राहु और केतु दो ऐसे छायाग्रह हैं, जिनका भी प्रभाव हमारे जीवन पर देखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त पाश्चात्य ज्योतिर्विदों ने हर्सल, प्लूटो और नेप्चून—इन तीन ग्रहों की नई खोज की है, परन्तु इनकी गति इतनी धीमी है कि मानव-जीवन पर इनका प्रभाव स्पष्ट देखा नहीं जाता। वस्तुतः नौ ही ग्रह हैं और उनमें भी प्रथम सात ग्रह जातक जीवन के बाहरी और आन्तरिक व्यक्तित्व का संचालन करते रहते हैं।

रत्नों का उपयोग ज्योतिष में दुर्भाग्य को दूर करने, स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करने, इसमें शारीरिक और मानसिक दोनों ही स्थितियां सम्मिलित हैं, में किया जाता है। आयुर्वेद शास्त्र में भी रत्नों की भस्म का प्रयोग आरोग्य प्राप्त करने के लिए व्यापक स्तर पर होता रहा है। आजकल आयुर्वेद में रत्नों का प्रयोग कुछ कम हो गया है क्योंकि रत्नों से जुड़ी कीमत सामान्य व्यक्ति की सीमा से बाहर है। रत्नों की किरणों के द्वारा चिकित्सा पद्धति हाल ही में काफी विकसित हुई है। इस पद्धति की मान्यता है कि विभिन्न रत्नों से विभिन्न रंगों की किरणों का उपयोग स्वास्थ्य लाभ के लिए किया

जा सकता है। उल्लेखनीय बात यह है कि यह विधि अधिक महंगी भी नहीं है।

ज्योतिष विज्ञान में माणिक तेजस्वी ग्रह सूर्य का प्रतिनिधित्व करता है। सूर्य की तेजस्विता और गर्मी से सभी परिचित हैं। माणिक से निकलने वाली तरंगें मूलतः लाल होती हैं और लाल रंग ऊष्मा को दर्शाता है। इस रत्न से निकलने वाली तरंगों से शांति प्रकृति की बीमारियों पर नियंत्रण किया जा सकता है। प्रकृति में लाल रंग आर्द्रता को सुखाता है और स्वयं से ज्वलनशील है। सूर्य शरीर में अस्थियों का प्रतिनिधि है। रक्त विकार, एनीमिया, रक्त की कमी, शारीरिक निर्बलता आदि रोग सूर्य से सम्बन्धित हैं। जब कुण्डली में सूर्य की स्थिति निर्बल होती है तो जातक की अस्थियों के ढांचे में विकृति का संकेत मिलता है। सूर्य आत्मा, राज्य-सम्मान आदि को भी दर्शाता है। अगर जातक की नौकरी, व्यवसाय आदि में संतोषजनक परिणाम नहीं मिल रहे हैं, तो माणिक का उपयोग लाभ प्रदान कर सकता है।

मोती शीत प्रकृति का रत्न है और शीत प्रकृति की नारंगी किरणें बिखेरता है जो ऊष्मा और गर्मी से होने वाले रोगों पर नियंत्रण रखता है। मोती चन्द्रमा का रत्न है। यह सफेद होता है लेकिन इससे निकलने वाली किरणें नारंगी होती हैं। मोती से जो किरणें निकलती हैं उनमें मूलतः जल तत्व अधिक होता है और जिसका प्रभाव जातक के शरीर के जल तत्व पर और रक्त पर पड़ता है।

विश्व में मोती की मांग को देखकर वैज्ञानिकों ने "कल्चर मोती" उत्पन्न करने की विधि का विकास किया। इस विधि का विकास जापान ने किया।

इस विधि में स्वाति नक्षत्र की वर्षा की बूंदों के समान तत्व वाले रासायनिक द्रव्य को समुद्री घोंघे के पेंदे में छिद्र करके भीतर डाल देते हैं तथा घोंघे के आवरण तन्तु से बना एक दाना उसके अन्दर प्रविष्ट कर देते हैं। इस दाने पर घोंघा मुक्ता पदार्थ का आवरण चढ़ाना आरम्भ कर देते हैं। लगभग साढ़े तीन वर्ष में यह कल्चर मोती 10 मिमी० व्यास तक बड़ा हो जाता है। नकली मोती का उल्लेख शुक्रनीति अ० 4 तथा गरुड़ पुराण में भी किया गया है। ये नकली मोती मौमभरे कांच के अथवा ठोस कांच के मुक्ता माला आदि से निर्मित किए जाते हैं। इन नकली मोतियों को मछली के ऊपर के कठोर आवरण द्वारा निर्मित घोल में डुबाने के बाद देखने से असली मोतियों की ही भांति सुन्दर व आकर्षक लगते हैं; परन्तु ये दीर्घायु नहीं होते हैं। नकली मोतियों को नमक मिश्रित तेलयुक्त गरम जल में रात भर डूबा रहने दें और प्रातः सूखे कपड़े में लपेटकर धान से मलने पर रंग बदल जाता है। यही इनकी एक परख है।

अगर रक्त, त्वचा के तन्तु वासा और अस्थियों आदि को जब नमी की आवश्यकता होती है, तब मोती की तरंगें लाभदायक सिद्ध होती हैं। नारंगी किरणें

दमा, बलगम, गठिया, गुरदे की सूजन और स्त्रियों में मासिक धर्म से होने वाली बीमारियों में लाभदायक सिद्ध होती हैं। सौम्य चन्द्रमा मन का कारक है और मानसिक विकारों का प्रारम्भ तभी होता है जब कुण्डली में चन्द्रमा की स्थिति दयनीय हो। चन्द्रमा मन, माता, सुख-शांति और कुछ संदर्भों में जमीन-जायदाद का प्रतिनिधित्व करता है। उक्त क्षेत्र से जुड़ी समस्याओं में मोती का प्रयोग लाभदायक सिद्ध हो सकता है।

मूंगा का ग्रह मंगल है। हालांकि मूंगा लाल रंग का होता है लेकिन इससे निकलने वाली किरणें पीले रंग की होती हैं, जो त्वचा पर गांठें पड़ जाती हैं उनमें उपयोगी होती हैं। शरीर की मांसपेशियों में गांठों के पड़ने से जो दर्द होता है उसे मूंगे से निकलने वाली गरम किरणें लाभ प्रदान करने का काम करती हैं। पीली किरणें मज्जा तन्तुओं को शक्ति प्रदान करती हैं। पीली किरणें पेट सम्बन्धी रोगों, अपच, यकृत में विकृति, डाइबिटीज, (शक्कर) बवासीर, एग्जीमा आदि में लाभदायक सिद्ध होती हैं। कुण्डली में मंगल पराक्रम, भाई, क्रोध, हिंसा, दुर्घटना आदि का सूचक है। जब भी इस क्षेत्र से जुड़ी समस्याएं बार-बार दुःख प्रदान करें, तो मूंगे का उपयोग अधिक लाभ दे सकता है।

पन्ना बुध ग्रह का रत्न है। इससे हरे रंग की किरणें निकलती हैं। पृथ्वी तत्व का रंग हरा है। हरा रंग धनात्मक शक्ति और ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करता है। जातक शरीर में पृथ्वी तत्व हड्डियों, त्वचा, यकृत, गुरदा, आंतें आदि को दर्शाता है। शरीर के ये भारी भाग पन्ना के क्षेत्र में आते हैं। जब शरीर में हरे रंग की कमी होने लगती है तो विभिन्न प्रकार के रोग जातक को घेरने लगते हैं। हरा रंग हृदय सम्बन्धी रोगों—रक्त विकार, अल्सर, सिरदर्द, अस्थमा, चोट, त्वचा सम्बन्धी विकारों के लिए उपयोगी होता है। बुध ग्रह कुण्डली में प्रज्ञा का प्रतिनिधित्व करता है। यूं भी बुध का सम्बन्ध बौद्धिकता से है। कुण्डली में जब भी बुध की स्थिति अशुभ होती है तो जातक कुतर्क की स्थिति में चला जाता है और उसकी उपस्थिति प्रायः असहनीय हो जाया करती है। अगर बालक का मन पढ़ने में न लगता हो या उसकी स्मरण शक्ति ठीक से काम न करती हो तो पन्ने का उपयोग लाभ प्रदान कर सकता है।

गुरु (बृहस्पति) पुखराज रत्न का स्वामी है। पुखराज से हल्के नीले अर्थात् आसमानी रंग की किरणें निकलती हैं। हल्का नीला रंग अन्तरिक्ष का प्रतिनिधित्व करता है, जिस शक्ति के द्वारा जीवन की तमाम गतियां संचालित होती हैं। बृहस्पति को ग्रहों का प्रमुख देवता माना जाता है और बृहस्पति से शुभ ग्रह कोई नहीं है। बृहस्पति जीवन प्रदाता है। शरीर में जितनी भी वसा और ग्रंथियां हैं वे सब बृहस्पति के अन्तर्गत आती हैं और उन्हें ऊर्जा इस रंग से प्राप्त होती है। नीले रंग की किरणें

गले सम्बन्धी रोगों, बुखार, टाइफाइड, प्लेग, एपीलेप्सी, डायसेंट्री, डायरिया आदि बीमारियों में लाभदायक होती हैं। कुण्डली में बृहस्पति भाग्य, सम्पन्नता, विकास, उन्नति, विस्तार आदि का स्वामी है। अगर जन्मकुण्डली से वांछित परिणाम इन दिशाओं में प्राप्त नहीं हो रहे हैं तो पुखराज से लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

हीरे का स्वामी शुक्र ग्रह है और हीरे से निकलने वाली किरणें नीली होती हैं। यह रंग शरीर में मोटी ग्रंथियों, बलगम, शरीर में रिसने वाले स्राव और शुक्राणु का प्रतिनिधित्व करता है। हीरा मूलतः पानी का प्रतिनिधित्व करता है और इसकी प्रकृति धनात्मक शीत है। आयुर्वेद में हीरे की भस्म का उपयोग त्रिदोष, वायु, पित्त और कफ को दूर करने में किया जाता है। यह रंग नाक-कान के रोगों, चेहरे का लकवा, फेफड़े सम्बन्धी रोग, निमोनिया, अस्थमा आदि रोगों में लाभदायक है। शुक्र ग्रह मूलतः सब प्रकार के सुख जिसमें शयन-सुख प्रमुख है प्रदान करता है। अगर कुण्डली में शुक्र की स्थिति अच्छी न हो तो जातक को इस संसार में वैभव, सम्पन्नता, सुख-आराम प्राप्त नहीं होता। ऐसी स्थिति में हीरा पहनना लाभदायक हो सकता है। कहा जाता है, हीरा है सदैव के लिए।

नीलम से बैंगनी रंग की किरणें निकलती हैं। नीलम का स्वामी शनि है। शनि को लेकर आदमी के मन में काफी भ्रांतियां हैं। जहां शनि दुःख और कष्ट देता है वहीं जातक को वैभव, प्रतिष्ठा की पराकाष्ठा भी देता है। प्रकृति में बैंगनी रंग मूलतः वायु तत्व का प्रतिनिधित्व करता है। मानव की त्वचा का रंग बैंगनी होता है लेकिन यह जानने के लिए प्रिज्म द्वारा ही देखना होगा अतः शनि और नीलम त्वचा से उत्पन्न विकारों को दूर कर सकते हैं। बैंगनी किरणों द्वारा मानसिक विकार, एपीलेप्सी, गठिया, ट्यूमर, गुरदा आदि विकारों को दूर किया जा सकता है। नीलम से निकलने वाली किरणें, त्वचा पर एकदम प्रभाव डालती हैं। इसी कारण नीलम का प्रभाव पहनते ही देखा जा सकता है। जब भी कुण्डली में शनि की स्थिति दयनीय होती है तो जातक के कार्यों के बनने में विघ्न-बाधाएं आती रहती हैं। ऐसी स्थिति में नीलम से लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

गोमेद से निकलने वाली किरणें अल्टरा वायलेट होती हैं। गोमेद रत्न का स्वामी राहु है। ये किरणें मूलतः अत्यधिक शीत प्रकृति की होती हैं और इन किरणों का शारीरिक विकारों को दूर करने में तभी प्रयोग करना चाहिए जब शरीर में अत्यधिक गर्मी घर कर गयी हो। ये किरणें हाईपर एसीडिटी, ज्वलनशीलता आदि में उपयोगी होती हैं। राहु-केतु मूलतः ग्रह नहीं हैं, वरन् छाया ग्रह हैं। किसी भी कुण्डली में अगर राहु-केतु की स्थिति अच्छी न हो तो जातक समस्त आयु झंझटों से जूझता रहता है। जब कुण्डली में राहु पीड़ित होता है तो यह भय, पीड़ा, दुःख और अपनी

क्षमताओं को ठीक से न आंकना आदि व्याधाएं देता है। इन स्थितियों में गोमेद मे लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

लहसुनिया से निकलने वाली किरणें लाल रंग की होती हैं। लहसुनिया केतु का रत्न है। लहसुनिया से निकलने वाली किरणों की प्रवृत्ति अत्यधिक गर्मी लिए हुए है और यह असाध्य रोगों में लाभदायक सिद्ध होती है। ये किरणें कैंसर, लकवा, हैजा, त्वचा सम्बन्धी रोगों में लाभदायक सिद्ध होती हैं। ज्योतिष में केतु को आत्मकारक ग्रह माना जाता है। व्यावहारिक स्तर पर यह दर्द प्रदान करता है लेकिन आध्यात्मिक स्तर पर यह जातक को उन्नति के शिखर पर ले जाता है जहां निर्वाण भी सम्भव है। जब केतु कुण्डली में अशुभ होता है तो जातक बिना सोचे-समझे निर्णय करता है और अपने ही फैलाये जाल में स्वयं फंस जाता है। लहसुनिया धारण करने से इस प्रकार की असुविधाओं से बचा जा सकता है।

प्रिय पाठकों! अब आप ही बतलाएं इसमें अवैज्ञानिक क्या है?

वास्तव में होता क्या है, जिस किसी ने चार पुस्तकें पढ़ लीं और थोड़ा लेखन का ज्ञान होने पर लिख डाली पुस्तक। अब वह पुस्तक प्रारम्भिक ज्ञान तो दे सकती है, पर अनुभव की बात देने में वह शून्य ही रहेगी। मेरा बार-बार यह निवेदन है कि आप ऐसे लेखकों को प्रोत्साहन न दें, क्योंकि वह अनुभव के स्थान पर अनुभवहीनता, ज्ञान के स्थान पर अज्ञान और सही धारणा के स्थान पर गलत धारणाएं ही बांट रहे हैं। आप व्यवसायी लेखकों, जाली नामों की पुस्तकों से बचें। इसी में आपका और इस प्राचीन विद्या का कल्याण है।

यूं तो मेरी यह पूरी पुस्तक रत्नों की जानकारी से भरपूर है, फिर भी एक दृष्टि में रत्नों की स्थिति क्या है? पुनः प्रस्तुत है—

ग्रह	रत्न	रंग
सूर्य	माणिक्य	रूबी लाल रंग
चन्द्र	मोती	मूनस्टोन सफेद (नीला मिला जैसा)
मंगल	मूंगा	नारंगी
बुध	पन्ना	मरकत हरा
बृहस्पति (गुरु)	पीला पुखराज	पीला
शुक्र	हीरा	रंगहीन रश्मियां बहुरंगी
शनि	नीलम, नीलमणि	नीला बैंगनी मिला
राहु	गोमेद	गोमूत्र के समान (भूरा, बादामी)
केतु	लहसुनिया	(रंगीन धारियोंवाली सफेद भूरी)

ग्रहों का शुभ और अशुभ प्रभाव तो सभी पर पड़ता है और भिन्नता भी होती है, उसके प्रभावों में। इसीलिए जातक का रूप, वाणी, चाल सब अलग-अलग ही होते हैं। हर मनुष्य चाहता है कि वह ग्रहों के अशुभ प्रभाव को कम कर ले और शुभ प्रभावों को बढ़ा ले। कोई अशुभ प्रभाव तो अपनाना नहीं चाहता किन्तु अधिकांश लोग रत्नों के प्रभावी सिद्धान्त को नहीं समझते। इसलिए वे पण्डितों, ज्योतिषियों, तांत्रिकों के पास जाते हैं। जब परेशान होते हैं वह व्यक्ति शायद ही उक्त लोगों के पास आता है, जो सुखी हैं, सम्पन्न हैं। और प्रगति की सीढ़ियां निरंतर चढ़ता जाता है। आखिर उसे क्या मतलब है—रत्न धारण करने का, वह तो भाग्य से अधिक अपने कर्म को ही सफलता की कुंजी मानता है। एक वस्तु किसी के लिए अमृत है तो किसी के लिए विष। क्यों? क्यों का उत्तर जातक की आंतरिक संरचना तथा मानसिक संरचना पर निर्भर है।

यह पुस्तक का अंतिम भाग है, सारा ज्ञान तो पुस्तक में उपलब्ध है ही, अब केवल इतना ही, उत्तम रत्न अक्सर महंगे होते हैं क्योंकि रत्न विभिन्न खानों द्वारा प्राप्त होते हैं। प्रयोगशालाओं में तो केवल इन्हें तराशा जाता है। उत्तम रत्न वही होता है जो सुन्दर, स्निग्ध धब्बोंरहित और किरणों को ठीक से परावर्तित करने वाला हो। वास्तव में रत्न से अगर लाभ लेना है तो उत्तम ही होना चाहिए। फिर भी प्रत्येक शुद्ध रत्न के उपरत्न भी होते हैं। अगर आप रत्न प्राप्त न कर सकें तो उपरत्न से भी काम चलाया जा सकता है। रत्न को अंगुलियों, गले, हाथ में धारण किया जा सकता है। रत्न को धातु में जड़वाकर धारण करने से पहले उसको हाथ में बांधकर एक दिन परख लेना चाहिए। यदि रत्न धारण करने के पश्चात् किसी भी प्रकार की असुविधा हो तो उसे एकदम निकाल डालें। रत्न को अंगूठी या गले में धारण करने से पहले विधिवत् प्राणप्रतिष्ठा कर लें। लॉकिट अथवा अंगूठी को कच्चे दूध और गंगाजल में तीन-तीन बार स्नान करा लें। रत्नों को बिना किसी योग्य परामर्शदाता को दिखाए धारण करना हानिकारक भी हो सकता है, अतः इस बात का अवश्य ध्यान रखें। क्योंकि रत्नों का मनुष्य-जीवन पर समुचित प्रभाव पड़ता है। रत्न ग्रहों के अनुचित को टालने और उचित प्रभाव को बढ़ावा देते हैं। जिस प्रकार किसी रत्न की परीक्षा कोई जौहरी ही कर सकता है, उसी प्रकार किस ग्रह के लिए कौन-सा रत्न उपयोगी होगा, उस रत्न का क्या प्रभाव होता है, यह कोई विद्वान् ज्योतिषि ही बतला सकता है।

अन्त में रत्नों के विभिन्न नाम अग्र प्रकार हैं—

क्रम सं०	ग्रह	रत्न (भारतीय नाम)	रत्न (अंग्रेजी नाम)
(1)	सूर्य	माणिक	रूबी
(2)	चन्द्र	चन्द्रकान्तमणि, मोती	मूनस्टोन, पर्ल
(3)	मंगल (कुज)	प्रवाल, मूंगा	कोराल
(4)	बुध	पन्ना	इमेराल्ड
(5)	गुरु (बृहस्पति)	पुखराज	टोपाज
(6)	शुक्र	हीरा	डायमण्ड
(7)	शनि	नीलमणि (नीलम)	सेफफायर
(8)	राहु	गोमेद, गोमेदक, शेषमणि	ओनिक्स
(9)	केतु	वैडूर्य	कैट्स आई

अब रुद्राक्ष के विषय में मुझे केवल इतना ही कहना है—

निम्न श्लोक से ज्ञात होता है कि रुद्राक्ष की महिमा निराली है। इसे सभी वर्गों के लोगों को धारण करना चाहिए। ब्राह्मण को चाहिए कि वह रुद्राक्ष को मन्त्रपूर्वक धारण करे। रुद्राक्ष का महत्व इस बात से और बढ़ जाता है कि इसे धारण करने से विपत्तियों का नाश होता है। मन पवित्र और आत्मा शुद्ध होती है।

॥सर्वाप्रमाणं वर्णनां रुद्राक्षाणां च धारणम्॥
॥कर्तव्यं मंत्रतः प्रोक्तः द्विजानां नान्यवर्णिनाम॥

मेरा यह कथन सदैव स्मरण रखें, मैं आपके साथ हूं, आपके लिए हूं—सदैव। मुझे अपने स्नेह और मार्गदर्शन से सींचते रहिए।

धन्यवाद!

—पं. शशि मोहन बहल
"तंत्र सबके लिए मिशन"
डी-4, राधापुरी, कृष्ण नगर (जमुनापार)
देहली—110 051.

A.H.W. MARUTI SERIES



रत्न रंग और रुद्राक्ष

रत्न और रुद्राक्ष का जातक के जीवन पर निश्चित प्रभाव पड़ता है। रत्न ग्रहों के दुष्प्रभाव को टालने, रोकने में भरपूर सहयोग करते हैं। रुद्राक्ष मोक्ष और रोग से मुक्ति प्रदान करते हैं। जिस प्रकार रत्न पारखी रत्न की गुणवत्ता के विषय में जानकारी दे सकता है,
उसी प्रकार किस ग्रह के लिये कौन-सा रत्न उपयोगी होगा?
किस रोग में कौन-सा रुद्राक्ष लाभदायक होगा?
इसकी सटीक जानकारी केवल विद्वान ज्योतिषी ही दे सकता है। पं॰ शशि मोहन बहल ज्योतिष एवं रत्न विज्ञान के जानकार हैं। प्राचीन एवं गोपनीय विधाओं की जानकारी देने की शृंखला मे यह अनमोल पुस्तक प्रस्तुत है। रत्न रंग और रुद्राक्ष पर आधारित एक सम्पूर्ण प्रामाणिक विवेचन जो ज्ञानवर्धक के साथ-साथ आपका मार्गदर्शन भी करेगा।

70/-

卐 मारुति प्रकाशन